# हिन्दुस्तानी कहावत-कोश

# हिन्दुस्तानी कहावत-कोश

Fallon, S.W.

**स्वर्गीय एस० डब्ल्यू० फैलन**

के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'ए डिक्शनरी ऑफ़ हिन्दुस्तानी प्रोवर्ब्स, सेइंग्स, एम्ब्लेम्स, एफोरिज्म्स' का जिसे कैप्टन आर० सी० टेम्पल ने दिल्ली के लाला फकीरचन्द की सहायता से संशोधित किया था, देवनागरी लिपि मे विस्तृत व्याख्या एवं टीका-टिप्पणी सहित नवीन सशोधित एव परिमार्जित संस्करण

हिन्दी सम्पादक
**कृष्णानन्द गुप्त**

**नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया**
**नई दिल्ली**

मार्च १९६८ (चैत्र १८९०)





मूल्य : रु० ११:००
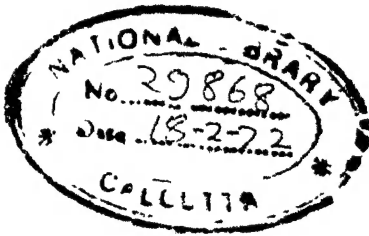
सचिव, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, २३, निज़ामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली - १३ द्वारा प्रकाशित और
सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग द्वारा मुद्रित

## प्रकाशकीय

उन्नीसवीं सदी के कुछ अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं पर बहुत ठोस काम किया। सच बात कही जाए तो भारतीय भाषाओं के आधुनिक गद्य का निर्माण कुछ अंग्रेज़ों की सेवा के बिना संभव न होता। ऐसे ही लोगों में स्व० श्री एस० डब्ल्यू० फैलन का नाम लिया जा सकता है, जिन्होंने यह कहावत-कोश प्रस्तुत किया है। उन्होंने इसके अलावा हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी कोश और हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी तथा अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी विधि-कोश की भी रचना की है। फैलन के पहले इस प्रकार की कोई कृति हिन्दी भाषा के संबंध में मौजूद नहीं थी। यह स्मरण रहे कि फैलन ने इस कोश में मारवाड़ी, पंजाबी, मराठी, भोजपुरी और तिरहुती कहावतों, प्रचलित वाक्य-खंडों, सूत्रों, नीतिवाक्यों का संग्रह किया। इस प्रकार बहुत कुछ जो अन्यथा नष्ट होता, बच गया। कहावतों और मुहावरों में इतिहास के बहुत से तथ्य जीते चले जाते हैं। जिस इलाके में कहावत प्रचलित है, कई बार उसके इतिहास, रीति-नीति पर इन कहावतों, मुहावरों से नई रोशनी पड़ती है।

फैलन के बाद इस ग्रन्थ का संपादन और परिशोधन कप्तान आर० सी० टेम्पल, एफ० आर० जी० एस०, एम० आर० ए० एस० ने किया। उन्होंने दिल्ली-निवासी लाला फकीरचन्द वैश की सहायता ली, जो बंगाल सरकार के प्रथम उर्दू सहायक अनुवादक थे। यह पुस्तक बनारस में मेडीकल हाल प्रेस में छापी गई थी और इसे ई० जे० लज़रस एंड कं०, बनारस तथा ट्यूबर एंड कं०, लन्दन ने १८८६ में प्रकाशित किया। इसका मूल्य दस रुपए रखा गया था।

अब तक यह ग्रन्थ केवल कुछ पुस्तकालयों में दुर्लभ पुस्तक के रूप में मौजूद था। प्रथम बार इसे हिन्दी लिपि में प्रकाशित किया जा रहा है। इसका अनुवाद और संपादन श्री कृष्णानन्द गुप्त ने किया है, जो लोक-साहित्य के अच्छे ज्ञाता हैं।

**बालकृष्ण केसकर**

## व्यवहृत सांकेतिक अक्षरों का निर्देश

| | | |
|---|---|---|
| अं० | = | अंग्रेजी। |
| अ० | = | अरबी। |
| उप० | = | उपदेश। |
| ऊ० दे० | = | ऊपर देखिए। |
| क० | = | कहते है अथवा कही जाती है। |
| कहा० | = | कहावत। |
| कृ० | = | कृषि सबधी। |
| ग्रा० | = | ग्रामीण। |
| दे० | = | देखिए। |
| नी० वा० | = | नीति मूलक वाक्य |
| पं० | = | पजाबी। |
| पाठा० | = | पाठान्तर। |
| प्र० पा० | = | प्रचलित पाठ। |
| पू० | = | पूर्वी। |
| फा० | = | फारसी। |
| भो० | = | भोजपुरी। |
| म० | = | मराठी। |
| मु० | = | मुसलमानी। |
| मुहा० | = | मुहावरा। |
| रा० मा० | = | रामचरित मानस |
| लो० वि० | = | लोक विश्वास। |
| व्य० | = | व्यवसाय संबंधी। |
| सं० | = | सस्कृत। |
| समा० | = | समानता। |
| स्त्रि० | = | स्त्रियों मे प्रचलित। |
| हिं० | = | हिन्दुओं की। |

# हिन्दुस्तानी कहावत-कोश

**अंग्रेज़ की नौकरी और बंदर नचाना बराबर है**
वह एक बहुत मुश्किल काम है।
(बंदर एक बड़ा चंचल और चिड़चिड़े स्वभाव का जानवर होता है। ज़रा भी नाराज़ हो जाए तो या तो अपना खेल दिखाना बंद कर देगा, या मदारी को नोंच-खसोट लेगा। इसलिए कहावत का भाव यह है कि अंग्रेज़ की नौकरी में बहुत सावधान रहने की ज़रूरत पड़ती है। ज़रा चूके कि गए!)

**अंग्रेज़ भी अक्ल के पुतले हैं**
बड़े गुणी हैं।
अक्ल का पुतला =एक मुहा०, बुद्धिमान।

**अंग्रेज़ो राज, तन को कपड़ा न पेट को नाज**
टैक्सों के बोझ से पीड़ित जनता को अच्छी तरह खाना-कपड़ा नही मिलता था।

**अंग्रेज़ों ने चरसा भर ज़मीन से सारा हिन्दुस्तान अपना कर लिया**
अर्थात वे पक्के व्यवसायी और कूटनीतिज्ञ हैं।
चरसा, (चरस) भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है।

**अंडा सिखावे बच्चे को कि चीं-चीं मत कर**
छोटे मुंह बड़ी बात ।

**अंडुवा बैल, जी का जवाल, (ग्रा०)**
स्वतंत्र और उच्छृंखल व्यक्ति के लिए क०।
अंडुवा =बिना बधियाया हुआ बैल। सांड।

**अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवें कोई**
परिश्रम कोई करे, और कोई लाभ उठाए।
अंडे सेना =पक्षियों का अपने अंडों पर गर्मी पहुंचाने के लिए बैठना।

**अंतड़ियां कुल्हू अल्ला पढ़ रही हैं**
अर्थात भूख से आंतें कुलबुला रही हैं।
(कुल-हो-अल्लाह—कुरान के एक सूरा का प्रारंभिक अंश है; जिसे विशेष अवसरों पर पढ़ते हैं।)

**अंतड़ी में रूप बकची में छब। (मु० स्त्रि०)**
रूप आंतों में और छवि बक्से में बंद रहती है।
अर्थात चेहरे की संदरता खाने-पीने और शरीर की सुंदरता वस्त्र-आभूषणों पर निर्भर करती है।

**अंत बुरे का बुरा**
बुरे का अंत बुरा ही होता है। जो किसी का बुरा करता है, अंत में स्वयं उसका बुरा होता है।

**अंत भले का भला**
जो दूसरों के साथ भलाई करता है, अंत में उसका स्वयं भला होता है।

**अंत भला सो भला**
सब बातों को सोचकर अंत में जिस निर्णय पर पहुंचा जाए, उसे ही ठीक मानना चाहिए।
(इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'अंत भला सो गता' अर्थात अत समय जैसी मति होती है, वैसी ही मृत्यु के बाद जीव की दशा होती है।)

**अंदर छूत नहीं, बाहर कहें दुरदुर, (हिं०)**
मन में तो संयम नहीं, पर बाहर से सफाई रखें।
पाखंडी के लिए क०।

**अंधरी गैया, धरम रखवाली, (ग्रा०)**
अंधी गाय धर्म की रक्षा करनेवाली होती है, अर्थात उसकी सेवा से विशेष पुण्य मिलता है। भाव यह है कि दीन-हीन की सेवा करनी चाहिए।

**अंधा कहे मैं सरग चढ़ मूतों और मुझे कोई न देखे**
अनाचारी खुल्लमखुल्ला निंदित आचरण करके चाहता है कि उसके कर्मों का पता किसी को न चले, तो यह कैसे संभव है?

**अंधेरे घर में सांप ही सांप**
अंधेरे में हमेशा इस बात का डर लगा रहता है कि न जाने क्या हो। मन की भयभीत अवस्था।

**अंधे हाफ़िज़, काने नवाब**
जो अंधा है वह हाफ़िज़ और जो काना है वह नवाब!
हाफ़िज़=ऐसा व्यक्ति जिसे कुरान कंठस्थ हो; पंडित।

**अंधों ने गांव मारा, दौड़ियो बे लंगड़े**
अंधे न तो गांव लूट सकते हैं और न लंगड़े दौड़कर मदद कर सकते हैं। हास्यजनक बात।

**अंधों ने बाजार लूटा**
दे० ऊ०।

**अंधों में काना राजा**
मूर्खों में थोड़ा पढ़ा-लिखा ही विद्वान समझा जाता है।

**अइले कुल के अगऊ, दीया बुतैले सगऊ, (पू०)**
किसी अभागी स्त्री को कोसना कि यह आई कुलवंतिन, जिसने घर का दीपक ही बुझा दिया, अर्थात सर्वनाश कर दिया।

**अइले गइले गोड़ हलुकैले, पैले और हलुक, (भो०)**
आने-जाने में पैर टूटे और जब खाने बैठे तो पहले कौर में ही कै हो गई। (मक्खी खा लेने से)
(१) बने-बनाए काम में बाधा पड़ना।
(२) परिश्रम का पूरा लाभ नहीं उठा पाना।

**अइले जोड़ला परखो रे, (पू०)**
किसी सगे-संबंधी के बहुत दिनों बाद आने पर कहते हैं कि 'लो भाई, ये आ गए, पहचानो इन्हें।'

**अइले निहरवा खरचवे के घरवा, ना कोई चीन्हें जाने, नाहीं इतबरवा, (भो०)**
एक ऐसे व्यक्ति का कथन जो परदेश में है और त्यौहार के अवसर पर जिसके पास पैसा नहीं। कह रहा है कि यहां न तो कोई मुझे पहचानता है, और न कोई मेरा यकीन ही करता है, किससे उधार मांगकर त्यौहार का काम चलाऊं?

**अकाल नहीं है काल है**
घोर अकाल के लिए क०।

**अकाल मृत की मुक्ति नहीं**
असामयिक मृत्यु अच्छी नहीं होती।

**अकेलवा गइल मैदान फिरे, लोग कहिल कि हेराय गेले, (भो०)**
कोई स्त्री बाहर शौच फिरने गई, लोगों ने समझा कि खो गई। तात्पर्य, जवान स्त्री की हमेशा मुसीबत रहती है। लोग ज़रा-ज़रा-सी बात में उस पर संदेह करते हैं।

**अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता**
एक अकेला व्यक्ति किसी ऐसे काम को नहीं कर सकता, जिसके लिए बहुत से व्यक्तियों की जरूरत हो।

**अकेला चले न बाट, झाड़ बैठे खाट, (नी० वा०)**
कभी अकेले रास्ता नहीं चलना चाहिए; चारपाई पर बैठने के पहले उसे झाड़ लेना चाहिए।
(वास्तव में यह एक लोक-कहानी का नीतिमूलक वाक्य है, जिसमें एक व्यक्ति एक राजकुमार को उपयुक्त शिक्षा देता है।)

**अकेला पूत कमाई करे, घर का करे या कचहरी करे**
एक अकेला आदमी क्या-क्या कर सकता है?

**अकेला हंसता भला न रोता**
सुख-दुख में जिसका कोई साथी न हो, वह किसी काम का नहीं। अथवा सुख-दुख में सबको शामिल करके रहना चाहिए।

**अकेला हसन रोवे कि कब्र खोवे, (मु०)**
एक आदमी एक साथ दो काम नहीं कर सकता।

**अकेली कहानी गुड़ से मीठी**
एक अकेली वस्तु सबसे श्रेष्ठ तो मानी ही जाएगी, क्योंकि उसकी तुलना में कोई दूसरी अच्छी वस्तु मौजूद नहीं!

**अकेली लकड़ी, न जले न बरे, न उजेरा होय, (स्त्रि०)**
किसी एक अकेली वस्तु (या व्यक्ति) से सामर्थ्य से बाहर आशा नहीं करनी चाहिए।

**अकेली लकड़ी कहां तक जले?**
दे० ऊ०।

**अकेले-दुकेले का अल्लाह बेली**
अनाथ का ईश्वर सहायक होता है।

**अक्ल का दुश्मन**
ज्ञानी मूर्ख।

**अक्ल की कोताही और सब कुछ**
उपहास में मूर्ख या कम समझवाले से क०।

**अक्ल के घोड़े दौड़ाना**
वास्तविकता का विचार न करके केवल कल्पना से काम लेना।

**अक्ल के तोते उड़ गए**
होश-हवास ग़ायब हो गए।

**अक्ल के नाख़ून लो**
अपनी अक्ल को दुरुस्त करो।

**अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरता है**
बुद्धि को तिलांजलि दे रखी है।

**अक्ल चे कुत्रिस्त की पेशे मर्दा बि० आयद, (फ़ा०)**
अक्ल क्या कोई कुतिया है, जो मर्दों के पास आते ही ? अर्थात प्रत्येक व्यक्ति में बुद्धि तो स्वाभाविक होती है, उसे जबर्दस्ती बुलाया नहीं जा सकता।

**अक्ल ना ग्यान, थप्पड़ लाय समझ भियान, (पू०)**
मूर्ख को पिटने से ही अक्ल आती है।

**अक्ल बड़ी कि बहस ?**
तर्क की अपेक्षा बुद्धि से काम लेना अच्छा होता है। (यह कहा० अपने अशुद्ध रूप मे 'अक्ल बड़ी कि भैंस' इस तरह प्रचलित है।)

**अक्लमंद को एक इशारा काफ़ी है**
समझदार इशारे में बात समझ लेता है। उसे बहुत समझाना नहीं पड़ता।

**अक्लमंदों की दूर बला**
समझदारों को कष्ट नहीं भोगना पड़ता।

**अगड़म-बगड़म काठ कठंबर**
फ़ालतू चीज़ों का ढेर।

**अगर कोह टल्ले, न टल्ले फ़क़ीर**
पहाड़ भले ही टल जाए पर फ़कीर नहीं टलता। वह भीख लेकर ही दरवाज़ा छोड़ता है। हठीला व्यक्ति।

**अगर्चे गंदा, मगर ईजाद-ए-बंदा**
...स्या, मगर ... ...य

**अगला करे, पिछले पर आवे**
(१) किसी काम की भलाई-बुराई उन लोगों पर ही आती है, जो उसे अंत में करते हैं।
(२) बड़ों की भूल छोटों को भुगतनी पड़ती है।

**अगला लीपा गया सराहा, अब का लीपा आगे आया**
जब कोई आदमी अपनी किसी पिछली कारगुज़ारी की याद दिलाए, किन्तु वर्तमान में उसका कार्य संतोषजनक न हो, तब क० कि तुम्हारे पिछले काम की सराहना की गई, किन्तु अब तो तुमने सब चौपट कर दिया।

**अगली महली मछली, पछली परधान**
घर में जो जेठी बहू पहले से मौजूद थी, उसे कोई नहीं पूछता, नई बहू आकर घर की मालकिन बन बैठी। जो मुख्य था, वह तो पीछे रह गया और पीछे का मुख्य बन बैठा।

**अगले को घास, न पिछले को पानी**
स्वार्थी या कंजूस के लिए क०, जो किसी को कुछ नहीं देता।

**अगले पानी, पिछले कीच**
काम में शीघ्रता करनेवाले लाभ में रहते हैं। जो कुएं पर पानी भरने जल्दी पहुंच जाते हैं, उन्हें साफ पानी मिलता है, बाद में जानेवालों को तलछट हाथ लगती है।

**अगहन, चूल्हे अदहन**
अगहन के दिन अदहन के उबाल की तरह शीघ्र निकल जाते है, अर्थात छोटे होते हैं।
(अथवा अगहन के दिन इतने छोटे होते है कि चौके-चूल्हे का काम करते-करते निकल जाते हैं)
अदहन—दाल, चावल आदि पकाने का उबलता पानी ।

**अगिल खेती आगे-आगे, पाछिल खेती भागे जोगे, (कृ०)**
खेती में सफलता तभी मिलती है, जब उसका सब काम समय पर किया जाए । विलंब से करने पर यदि कुछ प्राप्त हो जाए, तो समझना चाहिए ...य से मिला।
...=भाग्य के योग से।

**अगम बुद्धी बानिया, पच्छम बुद्धी जाट, (ग्रा०)**
बनिया अक्ल में तेज होता है, और जाट बुद्धू होता है। (मालूम होता है कि यह दृष्टिकोण उस समय कुछ लोगों में था, पर यह कोई चिरन्तन सत्य नहीं।)

**अघाना बगुला, पोठिया तीत**
बगुले का पेट भरा है, इसलिए उसे अब सभी मछलियां कड़वी लग रही हैं। भरा पेट होने पर कोई वस्तु अच्छी नही लगती।
पोठिया = एक जाति की मछली।

**अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बंदे ने**
ईश्वर जो कुछ करता है, सब अच्छा ही करता है। बुरे कर्म तो मनुष्य करता है और उनका फल भोगता है। तात्पर्य यह कि किसी काम के लिए ईश्वर को दोष देना व्यर्थ है।

**अच्छा किया रहमान ने, बुरा किया शैतान ने**
ईश्वर के सब काम अच्छ होते है। बुरे काम तो शैतान करता है। व्यंगोक्ति।

**अच्छी चीज सब को पसंद है**
अच्छी चीज सब चाहते है, अथवा अच्छी चीज की सब प्रशंसा करते है।

**अच्छी भई, गुड़ सत्तरह सेर**
कोई वस्तु जब बहुत सस्ती या आसानी से मिल रही हो, तब क० कि बहुत अच्छा है, लूटो खाओ, मौज उड़ाओ।
(फैलन के जमाने में, यानी सन १८८५ में जब उसका यह कहावत-कोश प्रकाशित हुआ, गुड़ रुपये का दस सेर मिलता था, जैसा कि उसने स्वयं लिखा है।)

**अच्छे घर बयाना दिया**
अच्छे से उलझे! जब कोई अपने से अधिक जबर्दस्त के साथ झगड़ बैठे और उलझन में पड़ जाए, तब क०।
(भले भवन अब बायन दीन्हा, पावहुगे फल आपन कीन्हा। रा० मा०)
बयाना – (१) किसी काम के लिए पेशगी दी जानेवाली रकम।
(२) मिठाई, पूड़ी आदि की वह सौगात, जो कहीं बाहर से आने पर अपने सगेसंबंधियों और इष्ट मित्रों में बांटी जाती है और जिसके बदले में वैसी प्रकार की सौगात पाने की वे आशा रखते हैं।

**अच्छे बुरे में चार अंगुल का फ़र्क है!**
आंख और कान में, यानी देखने और सुनने में, केवल चार अंगुल का अंतर है। कान की सुनी हुई बात सही भी हो सकती है और ग़लत भी। इसलिए जब तक किसी बात को स्वयं अपनी आंख से देख न ले, तब तक केवल सुनकर उस पर विश्वास न करे।

**अच्छे भये अटल, प्रान गये निकल**
अच्छा भर-पेट भोजन किया कि प्राण ही निकल गए।
(१) जब किसी जगह मनचाहा लाभ होने के साथ ही करारी हानि भी हो जाए, तब क०।
(२) बहुत खानेवाले लालची के लिए भी क०।
अटल = तृप्त।
(यह कहावत हंसी में मथुरा के चौबों के लिए प्रयुक्त होती है। पेट भर खा लेने के बाद भी यदि कोई उन्हें चार आने से एक मुहर तक फ़ी लड्डू देने को कहे, तो वे और भी खा लेंगे। खिलानेवाला समझता था कि मैं अपना परलोक बना रहा हूं। उस समय अन्न भी काफ़ी था, पर अब स्थिति बदली है, किन्तु फैलन ने ऐसा ही लिखा है।)

**अच्छे हैं, पर खुदा पाला न डाले**
जब कोई आदमी देखने में भला, पर व्यवहार में बिल्कुल उसके विपरीत हो, तब उसके लिए व्यंग्य में क०।

**अजगर के दाता राम**
ईश्वर अजगर जैसे प्राणी को भी भोजन देता है, जो एक स्थान पर अचल होकर पड़ा रहता है।

**अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल।**
**छछूंदर भी डाले, चमेली का तेल।**
जब किसी मनुष्य को संयोग से कोई ऐसी वस्तु काम में लाने के लिए मिल जाए, जो अपने जीवन में उसने कभी देखी न हो, अथवा जिसके वह बिल्कुल योग्य न हो, तब व्यंग्य में क०।

**अजीरनं को अजीरन ही ठेले, नहीं तो सिर चौहट्टे खेले**
जो जैसा है उसका मुकाबला वैसा ही आदमी कर सकता है। यदि कोई दूसरा करे, तो उसे हानि उठानी पड़ती है।
(लोगो की धारणा है कि अजीर्ण मे खूब भर पेट खाने से लाभ होता है और पिछले अनपचे अन्न को वह बाहर निकाल देता है।)

**अटकल पच्चू 'गैर मुकर्रर**
एक अनिश्चित अथवा केवल अनुमान पर आधारित बात ।
(जोड़ की दूसरी कहा०—अटकलपच्चू डेढ़ सौ या अटकल पच्चू साढ़े बाईस )

**अटका बनिया सौदा दे**
इसलिए देता है कि पिछला उधार वसूल करने का अन्य कोई उपाय उस के पास नहीं होता।
जब कोई आदमी विवश होकर किसी के लिए कुछ करता है, तब क०।

**अटकेगा सो भटकेगा**
(१) जिसकी गर्ज होती है, वह दौड़ता फिरता है। अथवा (२) दुविधा में पड़े और गए।

**अड़ते से अड़ते जाइए, चलते से दूर**
जो लड़ने पर ही उतारू हो, उससे दो-दो हाथ निपट लेना चाहिए, और जो अपना रास्ता जा रहा हो, उसे छेड़ना नहीं चाहिए।

**अड़सठ तीरथ कर आई तुमड़ी, तऊ न गई कड़वाई**
तुमड़ी भले ही तीर्थयात्रा कर आए, किन्तु उसकी कड़वाहट नहीं जाती। जन्मजात स्वभाव नही मिटता।
तूमड़ी=लौकी की जाति का एक फल, जो बहुत कड़वा होता है। साधु लोग उसे पात्र बनाते हैं और साथ लिए फिरते हैं।

**अड़ी पड़ी काजी के सिर पड़ी, (मु०)**
किसी काम की भलाई-बुराई मुख्य आदमी के सिर आकर पड़ती है।

**अढ़ाई दिन की सक्के ने भी बादशाहत कर ली**
जब कोई व्यक्ति हठात किसी ऊंचे पद पर पहुंच कर रोब दिखाता है, तब उससे क०।
(अलिफ लैला में एक किस्सा है जिसमें सक्का नाम का एक भिश्ती ढाई दिन के लिए बादशाह बन जाता है। कहा० उसी से चली।)

**अढ़ाई हाथ की ककड़ी, नौ हाथ का बीज**
अनहोनी बात। दून की हांकना।

**अताई नानखताई, जब जो में आई तोड़ खाई**
प्राकृतिक वस्तु का मनचाहा उपयोग किया जा सकता है।

**अति और नारायन से बैर है**
(१) ईश्वर को अत्याचार पसंद नहीं
(२) हद से बाहर कोई काम अच्छा नहीं होता।

**अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।**
**अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।**
अति किसी चीज की अच्छी नहीं होती।
धुप्प=धूप।

**अदालत का बड़ा नाजुक मुआमला है**
इसलिए कि हर बात में परेशानी होती है, और क्या फ़ैसला हो, इसका भी कुछ ठीक नहीं रहता।

**अधेला न दे, अधेली दे**
तब कहते हैं, जब जहां देना चाहिए वहां न दे; पर व्यर्थ में अधेली दे दे।
अधेला=एक पैसे का आधा हिस्सा।
अधेली=अठन्नी।

**अनकर खेती अनकर गाय, वह पापी जो मारन जाय**
पराया खेत परायी गाय; हमें मतलब क्या जो भगाने जाएं।

व्यर्थ दूसरे के मामले में नहीं पड़ना चाहिए।

**अनकर चुक्कर, अनकर घी, पांड़े बाप का लागा की,** (पू०)

दूसरे का आटा, दूसरे का घी, रसोइये के बाप का खर्च क्या हुआ? दूसरे के माल को बेरहमी से खर्च करना।

**अनकर धन पर लछमी नारायन**

पराये धन पर धन्ना सेठ बनना, अथवा पराया माल उड़ाना।

(भोजन के पहले हिन्दुओं में लक्ष्मीनारायण कहने का रिवाज है। लक्ष्मीनारायण करना = भोजन प्रारंभ करना।)

**अनकर सिर कद्दू बराबर**

काट भी डालो तो हर्ज नहीं।

**अनकर सुघर बर पानी के हलकोर, अपना कुबज बर सतुआ भर कौर**

दूसरे का सुघड़ पति तो पानी के छीटों की तरह तुच्छ और अपना निकम्मा पति सत्तू के कौर की तरह मीठा।

अपनी चीज हमेशा अच्छी होती है, क्योंकि उतनी अपनी तो है।

**अनकर सेंदुर देख आपन कपार फोरे,** (पू०)

दूसरे का सुख देखकर ईर्ष्या करना।

यहां कपार फोड़ने के दो अर्थ हैं:

(१) हाय-हाय करना।

(२) सिर फोड़कर रक्त निकालना, जिसमें अपना ललाट भी दूसरे की तरह लाल हो जाए।

(सेंदुर स्त्रियों के लिए सौभाग्य का चिह्न माना जाता है। सधवा स्त्रियां ही मांग मे सेंदुर भरती है।)

**अनका गोड़वा धोय नाइनियां आपन धोवत लजाय,** (पू०)

अपने हाथ से अपना काम करने से लज्जित होना, पर दूसरे का काम प्रसन्नतापूर्वक करना।

**अनके धन पर चौर राजा**

दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर मौज उड़ाना।

**अनके पनियां मैं भरूं, मेरे भरे कहार**

जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के काम को अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझकर नहीं करना चाहता, तब उसकी ओर से क०।

(तुल०—मोरे पीसे पिसनारी मैं राउर पीसन जाऊं। बुन्दे०)

अनके = दूसरे का।

**अनजान की मिट्टी खराब**

अज्ञान कष्ट का कारण होता है और उसका काम नही बनता।

**अनजान सुजान, सदा कल्यान**

मूर्ख और ज्ञानी, ये दोनों मजे में रहते है।

मूर्ख इसलिए कि उसे भले-बुरे का कोई ज्ञान नही होता इस कारण वह किसी बात की चिन्ता नहीं करता (सब से भले विमूढ़ जिन्हें न व्यापे जगत-गति) और ज्ञानी इसलिए कि वह आगा-पीछा सोचकर हर काम करता है।

**अनदेखा चोर, बाप बराबर**

जिस चोर की चोरी पकड़ी नहीं गई, उसे साहूकार ही माना जाएगा।

**अनदेखा चोर, साले बराबर**

जिस तरह साले से कोई परदा नहीं होता, वह घर में सब जगह बे-रोक-टोक आ-जा सकता है, उसी तरह जिस चोर को चोरी करते नहीं देखा, उससे कुछ कहा नहीं जा सकता, उसे घर में पूरी आजादी रहती है।

**अनदोखी को दोख, जिसकी गती ना मोख**

जो व्यक्ति निरपराधी को अपराध लगाता है, ईश्वर उसे दंड देता है।

गती = सद्गति।

मोख = मुक्ति।

**अनबिरतक बिरत घमलोंर बजाई**

ऐसा ब्राह्मण जिसके कोई जजमानी नहीं होती, झूठमूठ का घंटा बजाता है।

अनबिरतक = जिसके कोई वृत्ति न हो, बिन जजमानी का। भूखा।

बिरत=व्रती, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण।
धमलोर=व्यर्थ का शोरगुल।

**अनैमिले कौं कुशल है**
भेंट न हो, सो ही अच्छा।
जब किसी व्यक्ति से हम दूर रहना चाहते हैं, तब उसके संबंध में क०।

**अनमिले के त्यागी, रांड़ मिले बैरागी**
कोई (औरत) न मिली तो त्यागी, मिल गई तो वैरागी।
जब जैसा अवसर देखा, तब तैसा करना।
त्यागी=विरक्त साधु।
वैरागी=वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।
(वैरागियों में स्त्री रखने का नियम है, त्यागी स्त्री नही रख सकते। इसलिए क०।)

**अनहोत में औलाद**
ग़रीबी में बहुत संतान का होना (अखरता है)।

**अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार**
जो होना है वह होकर रहता है; जो नही होना वह नही होगा।
भाग्यवादियो की उक्ति।

**अनाड़ी का सौदा बारा-बाट**
मूर्ख का कोई काम ढंग से नहीं हो पाता।
बाराबाट होना—मारा-मारा फिरना, नष्ट-भ्रष्ट होना।

**अनाड़ी का सोना बाराबानी**
मूर्ख का सोना हमेशा चोखा!
क्योकि उसे खरे-खोटे की पहचान नहीं होती।
(सराफों की भाषा मे बाराबानी सोना बहुत बढ़िया किस्म के सोने को कहते हैं; ऐसा सोना जो कई बार साफ़ किया गया हो।)

**अनोखी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी भरी पड़ी री**
जब किसी नीच को कोई ऐसी वस्तु मिल जाती है, जो पहले कभी उसके पास न रही हो, तो वह उसका बड़ा घमंड करता है।

**अनोखी जुरवा, साग में शोरवा, (मु० स्त्रि०)**
शोरवा मांस का ही बनता है पर उस मूर्ख स्त्री ने भाजी का ही शोरवा बना दिया।
अनाड़ीपन के लिए क०।
जुरवा=जोरू, स्त्री।

**अनोखे गांव में ऊंट आया, लोगों ने जाना परमेसुर आया**
किसी गांव के लोगों ने ऊट नहीं देखा था। एक बार जब वह उनके गाव में आया, तो उन्होने उसे परमेश्वर समझा।
मूर्ख लोग बिना देखी वस्तु के संबंध में नाना प्रकार की कल्पनाएं करते हैं।

**अनोखे घर कटोरी**
किसी घर में जब कोई ऐसी वस्तु आ जाए, जो पहले न रही हो, और उसका बहुत प्रदर्शन किया जाए, तब क०।

**अन्न धन अनेक धन, सोना रूपा किलेक धन**
अन्न ही सबसे बड़ा धन है, सोना-चांदी उसके सामने कुछ नही।

**अनुख घर में नाती भतार, (पू०)**
जिस घर में नाती का पति की तरह सम्मान हो, उसे सचमुच अनोखा माना जाना चाहिए। अथवा अनोखे घर मे नाती ही पति होता है।
जहां बड़ो के स्थान पर छोटों की अधिक चले, वहां क०।

**अपना-अपना खाना, अपना-अपना कमाना**
एक दूसरे पर आश्रित न रहना। अपना अलग धंधा करना।

**अपना-अपना घोलो, अपना-अपना पिओ**
(१) स्वयं अपना प्रबंध करो; हम किसी की जिम्मेदारी नही ले सकते। अथवा
(२) अपनी विपत्ति स्वयं भुगतो।
(फैलन ने इसका अर्थ विस्तार से नही लिखा। वास्तव में इस कहावत का निकास इस कथा से है—किसी राजस्थानी को कुसुंभा यानी अफ़ीम का घोल पीने की आदत पड़ गई थी। उसने अपने

एक पड़ोसी को भी उसका चस्का लगा दिया। रोज उसे बुलाकर कुसुंमा पिलाता। उसके बाद जब देखा कि अफीम पूरी तरह इसके मुंह लग गई है, तो एक दिन उसके आने पर उसने घर के किवाड़ नही खोले और उपर्युक्त वाक्य कहा।)

**अपना-अपना ढंग है**
हर आदमी का काम करने का अपना तरीका होता है।

**अपना-अपना दुखड़ा सब रोते हैं**
सबको अपनी-अपनी पड़ी है, हरेक अपने दुखों की शिकायत करता है अथवा हरेक को कोई न कोई परेशानी है। दे०—अपनी-अपनी सब...।

**अपना-अपना लहनिया है**
अपना-अपना भाग्य, जिसे जो मिल जाय।
लहनिया = प्राप्य।

**अपना-अपना ही है, पराया-पराया ही है**
जहां अपना आदमी काम आ सकता है, वहां पराया नहीं।

**अपना उल्लू कहीं नहीं गया**
अर्थात हम अपना मतलब तो निकाल ही लेंगे; किसी न किसी को बेवकूफ बना लेंगे।

**अपना कुत्ता बरजो, हम भीख से बाज आए**
जब कोई किसी के पास सहायता के लिए जाए और वहां उल्टा मुसीबत में फंसता जान पड़े तब क०।

**अपना के जुरे ना, अनका के दानी, (भो०)**
स्वय खाने को नहीं दूसरे को दान करने को तैयार।

**अपना के खिड़ी-खिड़ी, दूसरे के खीर पूड़ी, (पू०)**
घरवालो को पूछे नही, बाहरवालों को खीर-पूडी खिलाए।

**अपना के रोटी, तीन गीत गौती, (स्त्रि०)**
(१) जो खाने को दे उसी का गुणगान करने को तैयार।
(२) खाने को मिले, चाहे जो काम करा लो।

**अपना कोई नहीं**
संसार के सब नाते झूठे है। समय पर कोई काम नही आता।

**अपना गू भोजन बराबर**
(१) अपनी बुरी से बुरी वस्तु भी भली जान पड़ती है।
(२) अपना अवगुण भी गुण जान पड़ता है।

**अपना घर अपना बाहर**
यानी घर की चीज भी हमारी और बाहर की भी। स्वार्थी के लिए क०।

**अपना घर दूर से सूझता है**
(१) अपना मतलब सब देखते हैं। (२) समय पर घर की याद आती है।

**अपना घर सत्तू ना, अनका घर पेड़ा**
मुफ्तखोरी करना।

**अपना घर संझौत ना, अनकर घर मयूर अइसन बाती**
दूसरे के सहारे गुलछर्रे उड़ाना।
सझौत = संध्या-दीप।

**अपना घर हग भर, दूसरे का घर थूकने का डर**
अपने घर मे चाहे जो करो, पर दूसरे के घर में संभल कर रहना चाहिए।

**अपना टेंटर देखे नहीं, दूसरे की फुल्ली निहारे, (पू०)**
स्वयं अपने बड़े दुर्गुण न देखकर दूसरों के छोटे दुर्गुण देखते फिरना।
टेंटर = रोग या चोट के कारण आंख के ढेले पर का उभरा हुआ मांस।
फुल्ली = आंख की पुतली पर पड़ जानेवाला सफेद दाग।

**अपना ठीक ना, अनकर नीक ना, (पू०)**
(१) जिसे न अपना काम पसंद आए और न दूसरे का।
(२) जो न स्वयं काम करना जाने, और न दूसरे के ही काम को पसंद करे।

**अपना तोसा अपना भरोसा**
अपनी जरूरतों को पूरा करने का सामान हमेशा अपने साथ रखना चाहिए। उनके लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहना ठीक नहीं।
तोसा = (फा० तोशः) पाथेय, कलेवा, खाने-पीने का सामान।

**अपना दीजे, दुश्मन कीजे**
किसी को कुछ उधार देना उसे अपना दुश्मन बनाना है; क्योंकि मांगने से वह बुरा मानता है।

**अपना निकाल, मुझे डालने दे**
अपना ही स्वार्थ देखना।

**अपना नैना मुझे दे, तू घूम फिर के देख**
अपनी चीज मुझे दे-दे, और तू हवा खा!

**अपना पूत, पराया टटींगर**
अपना लड़का तो लड़का है और पराया उठाईगीरा!
अपनी वस्तु को सराहना।
टटीगर = फालतू आदमी, उठाईगीर।

**अपना बिसमिल्ला, दूसरे का 'नौज बिल्ला', (मु०)**
अपनों की खैर मनाना और दूसरों का बुरा तकना।
बिसमिल्ला = 'बिस्मल्लाह रहमाननिर्रहीम' पद का पूर्वार्द्ध और संक्षिप्त पद, जिसका अर्थ होता है—ईश्वर के नाम से।
नौज बिल्ला = (मौ० नऊज़ बिल्लाह) ईश्वर हमारी रक्षा करे यानी ईश्वर हमें उससे बचाए।

**अपना बैल कुल्हाड़ी नाथब**
अपने बैल को हम कुल्हाडी से नाथेंगे। इसमें किसी का क्या?
अपनी वस्तु का हम चाहे जिस प्रकार उपयोग करें, तुम बीच मे बोलनेवाले कौन?
नाथना – जानवर की नाक में छेद करके रस्सी डालना।

**अपना मरन, जगत की हँसी**
दूसरों को विपत्ति में फँसा देखकर दुनिया हँसती है। संसार की रीति यही है।

**अपना माल अपनी छाती तले**
अपने माल की स्वयं हिफाजत करनी चाहिए।

**अपना मीठ, अनकर तीत, (पू०)**
अपनी मीठी, दूसरे की कड़वी।
अपनी वस्तु की सब सराहना करते हैं।

**अपना रख, पराया चख**
अपना माल न खाकर दूसरे का उड़ाना चाहिए। स्वार्थी की उक्ति।

**अपना लाल गंवाय के, दर-दर मांगे भीख**
अपनी मूल्यवान वस्तु खोकर दूसरों का मोहताज बनना।
लाल = (१) पुत्र। (२) एक मूल्यवान रत्न। माणिक।

**अपना लेना क्या, पराया देना क्या?**
हमें दूसरों से जो लेना है, उसकी चिंता क्या? वह तो मिलेगा ही।
और पराया लेकर कहीं दिया भी जाता है।
दूसरो का लेकर जो देना नही जानते, उनकी उक्ति अथवा उनके लिए प्रयोग करते हैं।

**अपना वही, जो काम आवे**
वक्त पर काम आनेवाले को ही अपना समझना चाहिए।

**अपना-सा मुंह लेकर रह जाना**
झेंप जाना; कुछ जवाब देते न बनना; कायल हो जाना।

**अपना सो नबेड़ा, पराया सो घतकेड़ा**
अपना काम निकाल लेना, पराए के लिए टरका देना।
नबेड़ा = (निबेड़ा), सुलझाया।

**अपना हाथ जगन्नाथ**
अपना हाथ जगन्नाथ की तरह पवित्र है। मतलब, अपने हाथ का सब काम अच्छा होता है।

**अपना हारा और मेहरी का मारा, कौन कहता है?**
अपने हारने या बेइज्जत होने और स्त्री के हाथ से पिटने की बात कोई किसी से नहीं कहता। मतलब, अपनी कमजोरी सब छिपाते है।

**अपना ही पैसा खोटा, तो परखने वाले का क्या दोष?**
जब अपनी ही कोई चीज बुरी है, तो इसमें आलोचकों का क्या दोष? वे तो उसे बुरी बताएँगे ही। (प्राय: उस समय कहते हैं, जब अपने घर के लड़के अथवा किसी अन्य व्यक्ति की गलती से दूसरों को शिकायत का मौका मिल जाता है।)

**अपना ही माल जाए और आप ही चोर कहलाए**
जब किसी दूसरे की गलती से किसी का नकसान हो जाए और लोग उसे ही उसके लिए जिम्मेदार ठहराएं, तब क०।
(पुलिसवाले चोर का पता लगाने में असमर्थ रहने पर प्रायः चोरी की शिकायत करनेवाले के सिर सारा दोष मढ़ते है कि इसमें तुम्हारी कुछ शरारत है। फैलन के अनुसार उपर्युक्त कहा० ऐसे मौकों पर ही प्रयुक्त होती है।)

**अपना है ही ना, दूसरे के वानो, (पू०)**
दे०—अपना के जरे ना...।

**अपनी अक्ल और पराई दौलत बड़ी मालूम होती है**
हर आदमी अपने को दूसरों की अपेक्षा अधिक समझदार और दूसरों को अपनी अपेक्षा अधिक मालदार समझता है।

**अपनी अक्ल के आगे किसी को समझता ही नहीं**
यानी बड़ा समझदार बना फिरता है।

**अपनी-अपनी खाल में सब मस्त है**
(१) हर आदमी अपनी धुन में मस्त है।
(२) अपनी-अपनी जगह सब मौज करते हैं।

**अपनी-अपनी चाल-ढाल है**
अपना-अपना तर्ज-तरीका है।

**अपनी-अपनी चाल है**
हर जगह का अपना रीति-रिवाज होता है।

**अपनी-अपनी तुनतुनी, अपना-अपना राग**
अपनी धुन में मस्त।
पाठा०—अपनी-अपनी डफली...।

**अपनी-अपनी सब गाते हैं**
सब अपनी कहना चाहते हैं, कोई दूसरों की सुनना नही चाहता।

**अपनी-अपनी समझ है**
हर आदमी का सोचने का अपना तरीका होता है, जिसकी समझ में जैसा आ जाए।

**अपनी असल पर आ गया**
अपना असली रूप प्रकट कर दिया। जब कोई क्षुद्र व्यक्ति किसी ऊंचे पद पर पहुंचकर कोई हलका काम कर बैठे, तब क०।

**अपनी इज्जत अपने हाथ है**
अपने मान-सम्मान का ध्यान हमें स्वयं ही रखना चाहिए।
किसी ओछे के मुंह न लगने के लिए क०।

**अपनी ओर निबाहिए, बाकी की वह जाने**
दूसरों के प्रति अपने कर्तव्य-पालन से हमें चूकना नहीं चाहिए। दूसरे क्या करते हैं, यह वे जानें।

**अपनी करनी पार उतरनी**
अपने कर्मों का फल हमें स्वयं ही भोगना पड़ता है। जैसा करेंगे, वैसा पाएगे।

**अपनी कोख का पूत नौसादर, (स्त्रि०)**
अपनी चीज सबसे बढ़िया।
(नौसादर (Salammoniac) सोना साफ करने के काम आता है और सर्वसाधारण की दृष्टि में एक कीमती चीज़ समझी जाती है।)

**अपनी गरज को गधा चराते हैं**
अपना मतलब साधने के लिए नीच कर्म भी करना पड़ता है।
(चेचक का प्रकोप होने पर गधे को उबले हुए चने खिलाने का रिवाज हिन्दुओं में है।)

**अपनी गरज़ को गधे को बाप बनाते हैं**
अपना काम बनाने के लिए छोटे आदमी की भी खुशामद करनी पड़ती है।

**अपनी गरज़ बावली**
गरज़मंद को अपने काम के सिवा और कुछ नहीं सूझता।

**अपनी गली में कुत्ता शेर**
अपने घर में सब ज़ोर बताते हैं।

**अपनी गुड़िया संवारो**
लो, अपना काम देखो, मुझसे जितना बना, कर दिया। जब किसी से ऐसा कहने की जरूरत पड़े, तब क०।
(उक्त कहा० का प्रयोग तब होता है, जब लड़की के विवाह में उसका पिता लड़की के पहिनने के लिए कपड़े और गहने आदि वर-पक्ष को सौंपता है।)

**अपनी चिलम भरने को मेरा झोंपड़ा जलाते हो**
अपने थोड़े से लाभ के लिए दूसरे का कोई बहुत बड़ा नुकसान करने को तैयार हो जाना।

**अपनी छाछ को कोई खट्टा नहीं कहता**
अपनी वस्तु को कोई बुरा नही बताता।

**अपनी जान सबको प्यारी है**
कोई जानबूझकर मरना नही चाहता।

**अपनी टांग उघारिए, आपही लाजों मरिए, (स्त्रि०)**
अपने घर का भेद बाहर खोलने से अपनी ही बदनामी होती है।
पाठा०—अपनी टांग उघारिए, आपहि मरिए लाज।

**अपनी तो यह देह भी नहीं**
यह शरीर भी अपना नही, तब अन्य किसी वस्तु की तो बात क्या?

**अपनी दाढ़ी सब बुझाते हैं**
सब अपनी फिक्र पहले करते है। पहले आप फिर बाप।

**अपनी नींद सोना, अपनी नींद उठना**
पूर्ण स्वतन्त्र होना। किसी बात की कोई चिन्ता न होना।

**अपनी पगड़ी अपने हाथ**
अपनी इज्जत अपने हाथ होती है।

**अपनी बला और के लिए**
अपनी विपत्ति दूसरे के सिर मढ़ना।

**अपनी बेटी को ऐसा मारूं कि पतोहू त्रास कर जाए**
किसी नए या अपरिचित व्यक्ति पर अपना रोब जमाने के लिए उसके सामने किसी दूसरे पर गुस्सा उतारकर अपने स्वभाव की तेजी प्रकट करना। (कहावत का असली भाव यह है कि दूसरों पर अपना आतक जमाने के लिए हम निकटस्थ व्यक्तियो पर तेजी-तर्रारी दिखाते हैं; क्योंकि वैसा करना आसान है। घर के लोग हमारी डांट-फटकार चुपचाप सह जो लेते हैं। थोडे से शब्द-भेद के साथ इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—
अपने बच्चे को ऐसा मारूं कि पड़ोसन की छाती फटे।)

**अपनी बेर को घोलमघाला, हमारी बेर को भूखम-भाखा, (पू०)**
स्वयं तो तरमाल उड़ाए और हमें भूखा रखा। स्वार्थी के लिए क०।

**अपनी मसलहत हर शख्स खूब जानता है**
हर आदमी अपनी कमजोरियां या कठिनाइयां अच्छी तरह जानता है।
मसलहत = हालचाल भेद।

**अपनी राधा को याद करो**
यानी जाओ, अपनी बिगडी खुद समालो। हम कुछ नही जानते।

**अपनी लिट्टी पर सब आग रखते हैं**
अपनी रोटी सब सेकते हैं। यानी सब अपना स्वार्थ देखते है।
लिट्टी – एक प्रकार की मोटी रोटी।

**अपनी हराई-मराई कोई नहीं भूलता**
अपना भुगता सबको याद रहता है।
हराई-मराई – हार-पीट।

**अपनी हाय और पर गंवाई**
ऐसे आदमी को अपना दुखड़ा सुनाया, जिसने उस पर कोई ध्यान ही नही दिया।

**अपने-अपने क़देह की सब खैर मनाते है**
सब अपना प्याला भरा रखना चाहते है। सब अपना स्वार्थ तकते हैं।
कदह = (फा० कदह) प्याला, भिक्षापात्र।

**अपने-अपने ख्याल में सब मस्त हैं**
हर आदमी अपने रंग में डूबा है।

**अपने ऐब सब लीपते हैं**
अपने दोष सब छिपाते हैं।

**अपने किए का क्या इलाज?**
अपने कर्मों का फल स्वयं ही भुगतना पड़ता है। उसके लिए कोई क्या कर सकता है?

**अपने किए को भोगो**
जैसा किया वैसा भुगतो। (कोई उसमें क्या करे?)

**अपने को ना, अंते खबला खबला बांटे,** (पु० स्त्रि०)
घर के लोगों को भूखा रखकर बाहरवालों को खिलाना। अपनों की इज्जत न करना।
खबला = खोवा, अंजलि।

**अपने घर के सब बादशाह हैं**
(१) अपने घर में सब बड़े हैं।
(२) अपने घर के सब मालिक हैं, चाहे जो करें।

**अपने घर में आता किसको बुरा लगता है**
मुफ़्त का माल आ जाए, तो सब चाहते हैं।

**अपने झोंपड़े की खैर मांगो**
अपनी कुशल मनाओ, फिर दूसरे की फ़िक्र करना।

**अपने ढिग पैसा तो पराया आसरा कैसा**
अपने पास जब सुभीता है, तो दूसरों का आसरा क्यों ताका जाए?

**अपने दिल की गवाही को सच जान**
मन जैसा बोले, वैसा ही करना चाहिए।

**अपने नैन गंवाय के दर-दर मांगे भीख**
अपनी वस्तु खोकर दूसरों से मांगना। जो व्यक्ति अपनी किसी चीज़ की रक्षा नही कर सकता, उसे कष्ट भोगने पड़ते है।

**अपने नैन मुझे दे, तू झुलाता फिर**
दे० —अपना नैना मुझे दे . . .।

**अपने पांव में आप ही कुल्हाड़ी मारते हैं**
अपने हाथों अपना नुकसान करते हैं।

**अपने पूत कुंवारे फिरें, पड़ोसी के फेरे**
अपने लड़के के विवाह की फिक्र नही, पड़ोसियों का विवाह कराते फिरते है।
अपना काम छोड़कर परोपकार करते फिरना।
फेरे = परिक्रमा; विवाह।

**अपने बच्चे को ऐसा मारूं, पड़ोसिन की छाती फट जाए**
दे०—अपनी बेटी को . . .।

**अपने बच्छे के दांत कोसों से मालूम देते हैं**
अपनी चीज़ या अपने घर के आदमी की असलियत सब जानते हैं।

**अपने बच्छे के दांत हर कोई जानता है**
दे० ऊ०।

**अपने बावलों रोइए, दूसरों के बावलों हँसिए**
अपनी संतान बुरी होने पर आदमी रोता है, दूसरे की बुरी होने पर हँसता है। पराए दुख को हम दुख नहीं मानते।
बावला = पागल, मूर्ख।

**अपने मन से जानिए, पराए मन की बात**
दूसरे आपसे क्या चाहते हैं अथवा कैसे व्यवहार की आशा रखते हैं, इसे स्वयं अपने मन से समझ लेना चाहिए। दूसरों के साथ आप जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही व्यवहार दूसरे आपके साथ करेंगे।

**अपने मरे बगैर स्वर्ग नहीं दीखता**
अपने हाथ से किए बिना काम नहीं होता। अपनी मुसीबत स्वयं भुगतनी पड़ती है।

**अपने मियां दर-दरबार, अपने मियां चूल्हे द्वार**
एक ही आदमी का सब तरह के छोटे-बड़े काम करना।
अथवा अकेले आदमी की मुसीबत होती है, क्या-क्या करे; राजदरबार जाए या चूल्हा फूंके।

**अपने मुंह धन्नाबाई**
आप अपनी प्रशंसा करना।

**अपने मुंह मियां मिट्ठू**
दे० ऊ०।

**अपने मुंह शादी मुबारक**
स्वयं अपना ढोल पीटना।

**अपने मुए राम नहीं**
अपने को खपाए बिना कार्य सिद्ध नहीं होता। मरने पर फिर राम नहीं मिलते; जीवित रहते उनका स्मरण करो, यह अर्थ भी हो सकता है।

**अपने लगे तो देह में, और के लगे तो भीत में**
दूसरों के कष्ट की परवाह बहुत कम की जाती है।

**अपने सुई भी न जाने दो, दूसरे के भाले घुसेड़ दो**
दे० ऊ०।

**अपने से बचे तो और को दें**
स्वार्थी के लिए क०। अथवा पहले हम तो अपनी ज़रूरत पूरी कर लें, फिर दूसरों को दें।

**अपनों की आड़ कोई नहीं उठाता**
अपने सगे-संबंधियों का अहसान कोई नहीं लेना चाहता।

**अफ़यूनी जनूनी**
अफीमची पागल होता है।

**अफ़लातून के नाती (या साले) बने हैं**
अपने को बड़ा अक्लमंद समझते हैं।
(अफलातून या प्लेटो प्राचीन यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक हुआ है।)

**अफ़सोस! दिल गड्ढे में**
मनचाही न कर पाना।

**अफ़ीमची तीन मंजिल में पहिचाना जाता है**
अपनी सुस्त और लड़खडाती चाल से; वह उसे छिपा नही सकता।

**अफ़ीम यां खाए अमीर या खाए फ़क़ीर**
अफीम महंगी होती है। साधारण आदमी खा नही सकते। अमीर खरीदकर और ग़रीब मागकर खा सकते हैं।

**अफ़ीमी मिठास बड़ी रग़बत से खाता है**
अफीमची को मिठाई बहुत पसंद होती है।
रग़बत = रुचि, आग्रह।

**अब की अब के साथ, जब की जब के साथ**
आगे जैसा होगा देखा जाएगा, इस समय तो परिस्थिति के अनुसार ही हमे काम करना होगा।

**अब की छई की निराली बातें**
वर्तमान पीढ़ी के छोकरों की बाते समझ में नही आती।
छई = पीढ़ी।

**अब की बार बेड़ा पार**
यानी थोड़ी कसर और है, बस हिम्मत करो, काम बन गया।

**अब की बचे तो सब घर रखे**
इस बार मुसीबत टल जाए तो बड़ी बात समझिए, अर्थात बचना मुश्किल है।

**अब के मुड़हें हो राजा? (पू०)**
हे राजा! तुम्हारे बिना अब कौन लोगों के बाल बनाएगा? जब कोई आदमी यह दंभ करे कि उसके बिना काम चल ही नहीं सकता, तब क०।
(कथा है कि किसी एक नाई के मर जाने पर उसकी स्त्री छाती पीट-पीट कर रोने और उक्त प्रकार से कहने लगी कि 'अब के मुड़हें हो राजा?')

**अब के साहे हम ना ब्याहे, फिर पड़े वह साहे, (हिं०)**
अब की सहालग में अगर हमारा विवाह न हुआ, तो उस सहालग को धिक्कार है।
किसी ऐसे व्यक्ति की उक्ति जिसका विवाह नही हो रहा है।

**अब जीने का कुछ स्वाद नहीं**
ज़िंदगी में अब कुछ मजा नही रह गया।

**अब तो पत्थर के नीचे हाथ दबा है**
ऐसी संकटापन्न स्थिति सामने आ जाना, जिसके संबंध में यकायक कुछ किया न जा सके। जैसे अपने किसी मित्र या बड़े आदमी को कोई चीज उधार दे दी जाए और फिर वापिस न आने पर उससे मांगी न जा सके।

**अब तो रुपये की जात है**
अब तो रुपया ही सब-कुछ है।

**अब पछताए का होत है, जब चिड़ियां चुग गईं खेत**
अवसर के निकल जाने पर बाद में पछताना व्यर्थ है।
(आछे दिन पाछे गये, हरि सो किया न हेत। अब पछताये होत का, (जब) चिड़िया चुग गईं खेत।)

**अब भी मेरा मुर्दा तेरे जिन्दा पर भारी है, (मु०)**
अपनी बिगड़ी हुई हालत में भी मैं हर बात में तुमसे बड़ा हूं।

**अबरा की जोरू, सब की भौजाई, (पू०)**
ग़रीब या कमज़ोर की औरत से सब हँसी करते हैं। कमज़ोर से सब लाभ उठाते हैं।
भौजाई = बड़े भाई की स्त्री को भावज कहते हैं; उससे हँसी-दिल्लगी करने का भारत मे आम रिवाज है।

**अबरे के भैंस बियाइल, सगरो गांव मटिया ले धाइल, (भो०)**
किसी कमज़ोर आदमी की भैंस ब्याई तो सारा गाव मटकी लेकर दौड पड़ा दूध लेने के लिए। मूर्ख से सब लाभ उठाना चाहते हैं। अथवा दुर्बल जानकर सब सताते है।
बियाना=बच्चा देना।

**अब सतवंती होकर बैठी, लूट लिया संसार, (स्त्रि०)**
आजन्म बुरे कर्म किए और अब साधु-सत बन गए। पाखंडी के लिए क०।

**अब से आए, घर से आए**
अभी आ रहे है और घर से आ रहे है।
(ऐसे व्यक्ति द्वारा कहावत का प्रयोग होता है, जो परदेश से आ रहा हो, जहा उसे कोई कष्ट न हुआ हो।)

**अभी एक बूंट की दो दाल नहीं हुई हैं**
अभी मामला तै नही हुआ। अथवा इसका यह अर्थ भी लगाया जा सकता है कि अभी सब मिलकर ही रहते है, अलग नही हुए।
बूट चना।
पाठा०—अभी तक चने की. . . ।

**अभी कै दिन कै रात**
उस व्यक्ति के लिए कहते है जो अधिकार पाकर इतराने लगता है और समझता है कि सदैव मेरे ऐसे ही दिन रहेगे। उसके लिए भी क०, जो किसी वस्तु का नियमानुसार अधिकारी बनने के पहले ही उस पर अपना हक़ जताने लगता है।

**अभी तो तुम मां का दूध पीते हो**
अभी तो तुम छोकरे हो, क्या समझो ?

**अभी तो तुम्हारे दूध के दांत भी नहीं टूटे है**
जो इतनी बढचढ कर बात करते हो।

**अभी तो होठों का दूध भी नहीं सूखा है**
लड़के होकर बड़ों की तरह बात मत करो।

**अभी दिल्ली दूर है**
अभी तो बहुत रास्ता तै करना है। बहुत काम करने को पड़ा है।
(फा०—हनोज़ दिल्ली दूर अस्त।)

**अभी सेर में पौनी भी नहीं कती है**
अर्थात अभी तो बहुत कुछ करना है।
सेर में=सेर भर रूई में।
पौनी=पावभर, एक चौथाई।

**अमानत में खयानत तो जमीन भी नहीं करती, (प्र० पा०)**
धरोहर मे बेईमानी तो धरती भी नहीं करती। उसमे जो कुछ गाड़कर रख दिया जाता है, वह ज्यों का त्यो मिल जाता है।

**अमानी अबादानी, इजारा उजाड़ा**
अमानी और इजारा दोनो ब्रिटिश शासन काल में लगान वसूली की दो पद्धतियां थी। अमानी की जमीन की मालिक सरकार होती थी और वह किसान से उसका सीधा लगान वसूल करती थी। इसके विपरीत इजारे की जमीन का मालिक जमींदार होता था और उसका लगान जमीदार वसूल करता था। उसी से कहावत का तात्पर्य यह है कि सरकार को लगान देने मे किसान को सुविधा और जमीदार को देने में बहुत असुविधा होती है।

**अमीर का उगाल ग़रीब का आधार**
अमीर जिस वस्तु को तुच्छ समझकर फेंक देता है, ग़रीब का उससे ही बहुत काम चलता है।

**अमीर को जान प्यारी फ़क़ीर को एकदम भारी**
क्योकि फकीर कष्ट में रहता है।

**अमीर ने पादा, सेहत हुई; गरीब ने पादा, बेअदबी हुई**
बड़े आदमियो के अवगुण भी गुण बन जाते हैं, किन्तु उन्ही अवगुणो के लिए ग़रीब की आलोचना की जाती हे।

**अय, तेरी कुदरत**
(हे ईश्वर) तेरी विचित्र लीला।

**अय, मेरे अगले, मनमाने सो कर ले, (स्त्रि०)**
ऐसे व्यक्ति का उद्‌गार जो किसी के द्वारा बहुत सताया जा रहा हो। बहुधा अपने किसी अत्याचारी पति से ऊबकर स्त्री ऐसा कहती है।

**अयांरा चेह बयां? (फा०)**
प्रत्यक्ष का क्या वर्णन करना।

**अरका नाइन, बांस की नहरनी, (पू०)**
(नहरनी लोहे की होती है बांस की नहीं)
नई नाइन, और बांस की नहरनी।
जब कोई नौसिखिया अपनी होशियारी दिखाने के लिए बिल्कुल ही अजीब ढंग से काम करे, तब क०।

**अरजां बइल्लत, गरां ब हिकमत, (फा०)**
सस्ती चीज हमेशा कष्टदायक होती है और महंगी आराम देनेवाली।
तुल०—मंहगा रोवे एक बार सस्ता रोवे बार-बार।

**अरमान भारी घोंघा**
घोंघे को बड़ा घमंड।
(छोटे आदमी का अभिमान करना।)

**अरहर की टट्टी गुजराती ताला**
एक बेजोड़ काम। अरहर की टट्टी में जिसे आसानी से तोड़ा जा सकता है, कोई एक मजबूत ताला लगाना तक मूर्खता है।
(पंजाब का गुजरात नामक स्थान किसी समय तालों के लिए प्रसिद्ध रहा है।)

**अलकब्ज ओ दलील उलमुल्क (अ०)**
किसी चीज पर कब्जे का मतलब ही है कि वह हमारी है।

**अलख पुरुख की माया, कहीं धूप कहीं छाया**
ईश्वर की लीला जानी नही जाती, कहीं धूप है तो कहीं छाया।

**अलखामोशी नीम रजा**
चुप रहना आधी रजामंदी है।
(सं०—मौनं सम्मति लक्षणम्।

**अल गई, बल गई, जलवे के वक्त टल गई, (मु० स्त्रि०)**
प्यार और खुशामद की बातें करती है, लेकिन मौके पर गायब हो जाती है।
ऐसा व्यक्ति जो जरूरत पर काम न आये।
जलवा=(अ० जल्व) जलसा, मुसलमानों में वधू का पहले-पहल अपने पति के सामने मुंह खोलकर होना।

**अलफरवः बवाहमल्वाह मर्द-ए-आदमी, (मु०)**
लंबा-तगड़ा आदमी देखने में हिम्मतवाला तो जान ही पड़ता है। (फिर चाहे वह वैसा न हो।)

**अलबल खुदाबल, (मु०)**
ईश्वर का बल ही सबसे बड़ा बल है।

**अलबेली ने पकाई खीर, दूध की जगह डाला नीर, (स्त्रि०)**
किसी अनोखी औरत ने खीर बनाई, और उसमें दूध की जगह पानी डाल दिया।
ऐसी स्त्री के लिए कहा जाता है, जो होशियार तो बहुत बनती हो, पर करना-धरना कुछ न जानती हो।

**अला लूं, बला लूं, सहनक सरका लूं, (मु० स्त्रि०)**
प्यार करूं, खुशामद करूं और भोजन का थाल अपने आगे खिसका लू।
मीठी बातें करके अपना उल्लू सीधा करना।
कपट भरा व्यवहार करना।
सहनक=वह थाल जिसमे मुसलमानों के यहां सुहागिनों को भोजन कराया जाता है।

**अलिफ़ अल्ला, (मु०)**
ईश्वर अलिफ है। यानी ईश्वर एक अथवा महान है।
(अलिफ फारसी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है और हमेशा अलग लिखा जाता है।)

**अलिफ़ के नाम खुटका भी नहीं जानते**
अर्थात निरे मूर्ख या अनपढ़ हैं।
खुटका=छोटी लाठी। अक्षर में लगायी जाने वाली खड़ी लकीर।

**अलिफ़ के नाम बे नहीं जानते**
बे पढ़े-लिखे हैं।

**अलील की राय अलील**
बीमार की राय मानने योग्य नही होती, अथवा जिसका शरीर स्वस्थ नहीं, उसके विचार भी स्वस्थ नहीं होते।

**अल्लाह-अल्लाह करो और खैर मांगो, (मु०)**
बस अब तो ईश्वर का नाम लो और कुशल मनाओ।

**अल्लाह अल्लाह खैर सल्लाह, (मु०)**
ईश्वर की बड़ी कृपा जो सब काम खैरियत से हुआ।

**अल्लाह करे बांका पकड़ा जाए, लाल खां के लड़के से अकड़ा जाए, (मु० स्त्रि०)**
एक तरह की गाली। किसी दुष्ट को कोसना।
बांका = गुंडा।

**अल्लाह करे सो हो**
ईश्वर को जो मंजर होता है, वही होता है।

**अल्लाह का दिया सब-कुछ**
ईश्वर ने जो दिया, वही बहुत है। अथवा जो कुछ है वह सब ईश्वर का दिया है।

**अल्लाह का दिया सिर पर**
ईश्वर जो कुछ दे, सहर्ष स्वीकार है। इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि ईश्वर का दीपक अर्थात चांद हमारे सिर पर है, जो हमे रात मे प्रकाश देता है।

**अल्लाह का नाम लो**
ईश्वर का भय खाओ।

**अल्लाह का नाम सच्चा, सब झूठा है जुनान**
ईश्वर का नाम ही इस ससार मे सच्चा है और सब प्रपच है।
जुनान = भान।

**अल्लाह दे, अल्लाह दिलावे, बंदा दे मुराद पावे**
देता दिलाता तो ईश्वर है, मनुष्य जब कुछ देता है, तो ईश्वर उसकी मराद पूरी करता है।
(फकीरो की सदा)

**अल्लाह दे, बंदा पावे**
देता ईश्वर है, मनुष्य अपने सत्कर्मों का फल पाता है।

**अल्लाह दो सींग देवे, तो वह भी क़बूल हैं**
ईश्वर जो भी कष्ट सहावे सहने को तैयार है।
(परेशानियो से ऊबे हुए व्यक्ति की उक्ति)

**अल्लाह यार है तो बेड़ा पार है**
ईश्वर की कृपा हो तो सब काम बन जाता है।

**अल्लाह रे! दीदे की सफाई**
यानी कैसी आंख मारती है। निर्लज्ज स्त्री के लिए क०।
दीदा = आंख।

**अल्लाह रे! मैं!**
आप अपनी पीठ ठोकना। अभिमान से फूलना।

**अल्लाह ही अल्लाह है**
जहां देखो, वहां ईश्वर ही ईश्वर है।

**अल्लाह ही की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर है**
जब ईश्वर सब जानता है, उससे कोई बात छिपी नही, तब आदमी से क्या डरना?
(पिला मैं आशकारा हमको किसकी साकिया चोरी
खुदा की जब नहीं चोरी तो फिर बंदे की क्या चोरी।
ज़ौक।)

**अल्लाह है तो क्या डर है?**
ईश्वर जब रक्षक है तो डर किस बात का?

**अल्लाहो अकबर**
ईश्वर महान है।

**अव्वल खेश, बाद हू दरवेश, (फा०)**
पहले अपने को, बाद मे फकीर को।
अपनी फिक्र पहले। पहले आप फिर बाप।

**अव्वल तआम, बादहू कलाम, (फा०)**
पहले भोजन फिर बात। भोजन मुख्य है, वह पहले कर लेना चाहिए।

**अव्वल मरना, आखिर मरना, फिर मरने से क्या है डरना?**
हर हालत मे जब मरना ही है, तब मृत्यु का भय क्या?

**अशरफियां लुटें और कोयलों पर छाप**
अशर्फियां खर्च हो और कोयले की हिफाजत की जाए। अनावश्यक सावधानी बर्तने पर कहते हैं।

**अशराफ के लड़के बिगड़ते हैं तो भड़वे बनते हैं**
भले आदमियों के लड़के कुसंग में पड़कर जब बिगड़ते हैं तो फिर किसी काम के नहीं रहते।

**असबाब में असबाब, एक चंग एक रबाब**
बस हमारा कुल जमा यही सामान है—एक चंग और एक रबाब।
(किसी फक्कड़ कला-प्रेमी की उक्ति।)
चंग = डफ की तरह का मंजीरा लगा हुआ एक बाजा।
रबाब = सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**असल असल है, नकल नकल है**
नकली चीज असली की बराबरी नहीं कर सकती।
**असल कहे तो दाढ़ीजार, (पू०)**
जो सच कहे वही बुरा।
दाढ़ीजार = एक गाली।
**असल के असल होते हैं**
अच्छे कुल में अच्छे ही पैदा होते हैं।
**असल से खता नहीं, कम असल से बफा नहीं**
जो वास्तव में उच्च कुल का है, उससे कभी धोखा नहीं होता। नीच से सचाई और ईमानदारी की आशा नहीं करनी चाहिए।
**असील की मुर्गी टके-टके**
अच्छी चीज की कद्र न होना।
असील = मुर्गी की एक बढ़िया जाति।
**अस्तबल की बला बंदर के सिर**
किसी का दोष किसी के सिर मढ़ा जाना।
अस्तबल = घुड़साल।
तबेले की बला भी कहते हैं।
**अस्सी की आमद चौरासी का खर्च**
आमदनी से खर्च ज्यादा।
**अस्सी बरस की उमर, नाम मियां मासूम**
गुण, धर्म के विरुद्ध नाम।
(मासूम छोटे बच्चे को कहते हैं।)
**अस्सी लस्सी**
अस्सी बरस का होने पर आदमी बिल्कुल ढीला-ढाला हो जाता है।
**अहमक से पड़ी बात, काढ़ो ऐंठा तोड़ो दांत**
मूर्ख को डंडे से ही समझाया जा सकता है
**अहमद की दाढ़ी बड़ी या मुहम्मद की?**
किसी की भी बड़ी हो, हमें क्या मतलब ?
(व्यर्थ की बात)
**अहमद की पगड़ी मुहम्मद के सिर**
बेतुका काम। अथवा एक की हानि करके दूसरे को लाभ पहुंचाना।

**अहीर का क्या जजमान और लपसी का क्या पकवान**
लपसी जैसे कोई बहुत अच्छा पकवान नहीं, अहीर भी वैसे ही कोई बहुत अच्छा जजमान नहीं; क्योंकि वह अच्छी दक्षिणा नहीं दे सकता।
**अहीर का पेट गहिर, बाम्हन का पेट मदार**
अहीर का पेट गड्ढा और ब्राह्मण का ढोल होता है। (मतलब दोनों अधिक खाते हैं)।
**अहीर की बहेंड़ी मटिया सुर्लह**
अहीर की मथानी और मटकी हमेशा चिकनी-चुपड़ी रहती है; क्योंकि घी-दूध के संपर्क में रहती है। (ऐसे स्थान से संबद्ध व्यक्ति के लिए क०, जहां उसे खूब खाने-पीने को मिलता हो।)
**अहीर गाड़ी जात गाड़ी, नाई गाड़ी कुजात गाड़ी**
अहीर की गाड़ी ही सच्ची गाडी है, नाई की गाड़ी गाड़ी नहीं; क्योंकि गाड़ी चलाना अहीर का ही काम है, नाई का नहीं।
जिसका जो काम है वह उसे ही शोभा देता है।
**अहीर देख गड़रिया मस्ताना**
अहीर को पिए देखकर गड़रिए ने भी गहरी चढ़ा ली। दूसरों का ग़लत अनुसरण करना।
(अहीर एक पशुपालक जाति है और गड़रिए भेड़ें पालते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति अहीरों से अच्छी नहीं होती।)
**अहीर से जब गुन निकले जब बालू से घी**
बालू से जिस तरह घी नही मिल सकता, उसी तरह अहीर से उसके व्यवसाय के भेद नहीं जाने जा सकते।

**आंख एको नहीं कजरौटी दस ठाईं**
आंख एक भी नहीं, और कजरौटी रख छोड़ी हैं दस।
झूठा आडंबर दिखाना।
कजरौटी = काजल रखने की डिबिया।
ठांई = ठौर, संख्यावाची शब्द।

तुल०—आंख नहीं पर काजर पारे।

**आंख ओझल पहाड़ ओझल**

आंख की ओट होने से तो पहाड़ भी नहीं दिखाई देता। किसी को तभी तक हमारा ध्यान रहता है, जब तक उसकी नजर के सामने रहो।

(इसका एक अन्य रूप है—सींक ओट हुए पहाड़ ओट हुए।

मराठी में भी है—काडी आड गेला तो पर्वता आड गेला।)

**आंख का अंधा, गांठ का पूरा**

ऐसा धनी पर मूर्ख व्यक्ति, जिसका पैसा आसानी से उड़ाया जा सके।

**आंख का पानी ढल गया**

लाज-शर्म खो बैठे।

**आंख की बदी भौंह के सामने**

बुरी नीयत छिपती नहीं, चेहरे पर प्रकट हो जाती है।

**आंख के आगे नाक, सूझे क्या ख़ाक**

(व्यंग्य में) आंख पर तो परदा पड़ा है, दिखाई क्या दे?

(एक कहानी है कि किसी समय एक नकटे ने अपना संप्रदाय बढ़ाने के उद्देश्य से कहना शुरू कर दिया कि मुझे ईश्वर के दर्शन होते हैं। लोग जब आपत्ति उठाते कि भाई हमारे भी तो आंखें हैं, ईश्वर हमें क्यों नहीं दिखाई देता, तो वह जवाब देता 'तुम्हारी आंख के आगे नाक जो लगी है।' इस पर लोगों ने अपनी नाक कटवानी शुरू कर दी। पर उन्हें ईश्वर के दर्शन नहीं हुए। अंत में अपने को मूर्ख बना देख उन्होंने भी यही कहना प्रारंभ कर दिया कि नाक की वजह से हमें ईश्वर नहीं दिखाई देता। और इस प्रकार नकटों की जमात बढ़ने लगी।)

**आंख गड्ड, नाक भद्द, सोहनी नाम**

नाम अच्छा, पर रूप-रंग उसके विपरीत।

**आंख चौपट, अंधेरे नफ़रत**

आंख है ही नहीं, और कहते हैं—हमें अंधेरे से नफ़रत है।

(अपनी झूठी विशेषता दिखाकर शान बघारना।)

**आंख न दीदा, काढ़े कशीदा, (स्त्रि०)**

काम करने का शऊर नहीं, फिर भी करने का शौक।

कशीदा काढ़ना=कपड़े पर बेल-बूटे बनाना।

**आंख न नाक, बन्नो चांद-सी**

शक्ल-सूरत तो भद्दी फिर भी चटक-मटक से रहना।

**आंख फड़के दहिनी, भैया मिले कि बहिनी,**
**आंख फड़के बाईं, भैया मिलें कि साईं।**

दाहिनी आंख के फड़कने पर मां या बहिन से और बाईं के फड़कने पर भाई या पति से भेंट होती है।

**आंख फूटी पीर गई**

(वेदना से) आंख फूटी तो फूटी पर कष्ट से छुटकारा तो मिला। अच्छी वस्तु कष्टदायक हो तो उसका जाना ही अच्छा। किसी हमेशा की झंझट की वस्तु के नष्ट हो जाने पर क०।

**आंख फूटेगी तो क्या भौंह से देखेंगे**

जिस पर सब कुछ निर्भर है, अथवा जो मुख्य वस्तु है, जब वही नहीं रहेगी, तब काम कैसे चलेगा? प्रायः ऐसी स्त्री को क०, जो अपने पति का सदा बुरा मनाया करती है।

**आंख फेरे तोते की-सी, बात करे मैना की-सी**

बात करने में मीठा पर बेमुरौवत।

**आंख बची माल दोस्तों का**

जहां थोड़ी भी असावधानी से चोरी या नुकसान का डर हो, वहां क० कि भाई अपनी चीज़ की हिफ़ाजत रखना, वरन यह जगह ऐसी है कि जरा नजर बची और माल ग़ायब।

(आंख बची और नगरी लुटी भी कहते हैं।)

**आंख में मैल और इसमें मैल नहीं**

बहुत ही स्वच्छ वस्तु। सच्चरित्र के लिए क०।

**आंख में लोर, दांत निपोर**

सिलबिला आदमी।

**आंख है जब तक तो खुब आती है भौंह।**
**आंख ही फूटी तो कब भाती है भौंह?**

आंखें जब तक बनी रहती हैं, तभी तक भौंह भी अच्छी लगती हैं। किन्तु आंखों के न रहने पर भौंह अपना महत्व खो बैठती हैं।

(आशय यह कि जिस व्यक्ति को हम प्यार करते हैं, उससे संबंधित व्यक्ति हमें उसके जीवनकाल तक ही अच्छे लगते हैं। उसके मरने पर उसके मित्र या सगे-सम्बन्धी फिर हमें नहीं सुहाते। जैसे पत्नी के मर जाने से साले अथवा लड़की के न रहने पर दामाद से फिर हमें कोई मतलब नहीं रहता।)

**आंखें तो खुली रह गईं और मर गई बकरी**

अप्रत्याशित रूप से किसी घटना का घटित हो जाना।

(बकरे की गर्दन को एक ही झटके मे छुरी से अलग करने पर उसकी आखे खुली रहती है। उसी से कहा० बनी।)

**आंखें हुईं चार तो मन में आया प्यार।**
**आंखें हुईं ओट तो जी में आया खोट।**

मुंह देखे की प्रीति।

**आंखें हैं या भैंस के चूतड़**

जिसे सामने की चीज न दिखाई दे उससे हँसी में क०।

**आंखों का देखा दूर कर, भले मानस का कहना कर।**

दुराग्रह को दूर करके दूसरे भले आदमी की बात माननी चाहिए।

**आंखों का नूर, दिल की ठंडक**

प्रिय जन के लिए क०।

**आंखों का काजल चुराता है**

ऐसा चालाक या धूर्त्त है।

**आंखों का तारा**

बहुत प्यारी वस्तु। प्रायः लड़के के लिए प्र०।

**आंखों का तेल निकालना**

आंखों से बहुत काम लेना। बहुत कंजूसी करने पर भी कह सकते हैं।

(नोट—यह कहावत मुख्य रूप से चालाक के लिए ही प्रयुक्त होती है अन्यथा वह अपना मजा ही खो बैठती है। गुजराती में यह इसी अर्थ में प्रयुक्त होती है।)

**आंखों की सुइयां निकालना बाकी है**

बस थोड़ा काम बाकी है।

(लोक-विश्वास है कि यदि आटे की मूर्त्ति बनाकर उसमें शत्रु का नाम ले-लेकर सुइयां चुभो दी जाएं, और उसके मरने की कामना की जाए, और फिर उस मूर्त्ति को मरघट में रख दिया जाए, तो उस शत्रु के सर्वांग में उसी तरह की सुइयां चुभ जाएंगी और वह तड़प-तड़प कर मर जाएगा। पर अगर कोई तरकीब जानता हो, तो मंत्र द्वारा सुइयों को एक-एक करके अलग करके उसे जीवित भी किया जा सकता है। इस पर एक कथा भी है कि किसी ने उपर्युक्त रीति से एक व्यक्ति को मार डाला। उस मृत पुरुष की स्त्री जादू जानती थी। पति को जीवित करने के लिए उसने एक-एक करके उसके शरीर की सारी सुइयां निकाल डाली। किन्तु जब केवल आंखों की सुइयां निकालनी शेष रहीं, तब कार्यवश उसे बाहर उठ कर जाना पड़ा। उसी समय उसकी नौकरानी वहां पहुंच गई। उसने आंखों की सुइयां निकाल डाली। ऐसा करते ही वह मनुष्य जीवित हो गया। यह समझकर कि इस नौकरानी ने ही मेरी प्राणरक्षा की है, वह उस पर बहुत प्रसन्न हुआ और औरत को अलग करके उसके साथ विवाह कर लिया।)

**आंखों के अंधे नाम नैनसुख**

नाम के विपरीत गुण।

**आंखों के अंधे नाम रोशन**

दे० ऊ०।

**आंखों देखा भट पड़े, मैंने कानों सुना था।**

आंखों देखी बातों पर विश्वास न करनेवाले से व्यंग्य में क०।

भट पड़े = भट्टी में यानी भाड़ में जाए।

**आंखों देखी मानूं, कानों सुनी न मानूं।**

आंखों देखी बात पर ही विश्वास किया जा सकता है। कानों से सुनी हुई पर नहीं।

**आंखों पर ठीकरी रखना**
जानबूझ कर अनजान बनना।
**आंखों पर पलकों का बोझ नहीं होता**
(१) अपने घर का आदमी किसी को भारी मालूम नहीं देता।
(२) बड़ों को छोटों का भरण-पोषण नहीं अखरता।
**आंखों में खाक**
गाली देना, कोसना।
धोखा देना।
**आंखों में घर करता है**
प्यारा लगता है।
**आंखों में चर्बी छाई है**
अपना भला-बुरा न देख सकनेवाले के लिए क०।
बहुत अहंकारी से भी क०।
**आंखों में सरसों फूलना**
मदमस्त होना। किसी को कुछ न समझना।
**आंखों वाली अंखियां बड़ी न्यामत हैं**
अंधे भिखारियों की टेर।
**आंखों सुख, कलेजे ठंडक, (स्त्रि०)**
बहुत प्रिय वस्तु। पुत्रादि के लिए क०।
**आंखों से सुखी नाम हाफ़िज़ जी**
भगवान ने आंखे दीं, फिर भी नाम हाफ़िज़।
ग़लत नाम।
(सम्मानार्थ—मुसलमानों में अंधे को हाफिज कहते हैं।)
**आंत भारी तो माथ भारी**
पेट ठीक न रहने से सिर भारी रहता है।
**आंता-तीता, दांता नोन, पेट भरन को तीन ही कोन।**
**आंखें पानी, काने तेल, कहे घाघ बैदाई गेल।**
ताजा खाने, दांतों में नमक लगाने, पेट को एक चौथाई खाली रखने, आंखों में शीतल जल के छींटे देने, और कानों में तेल डालते रहने से, घाघ कहते हैं, वैद्य की जरूरत नहीं पड़ती।
**आंधर कूकर बतास भूंके, (पू०)**
अंधा कुत्ता हवा की आहट पाकर ही भयभीत हो उठता है। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है—'कनवा बैल बयारे सनके'।
**आंधर कूटे, बहिर कूटे, चावल से काम.**
आदमी कैसा ही हो, हमें क्या? काम होना चाहिए।
**आंधर के गाय बयाइल, टहरी लेके दौरलन, (भो०)**
अंधे की गाय ने बच्चा दिया तो लोग मटकी लेकर दौड़े दूध के लिए।
सीधे की सिधाई से सब लाभ उठाना चाहते हैं।
**आंधी आवे बैठ जाए, पानी आवै भाग जाए**
आंधी आने पर बैठ जाना चाहिए। पानी आने पर भाग जाना चाहिए। मतलब यह कि आंधी में दौड़ना नहीं चाहिए, और पानी में एक जगह खड़े होकर भीगना नहीं चाहिए।
**आंधी के आगे बेने की बतास**
आंधी में पंखा झलना व्यर्थ है।
तुल०—मूतों के आगे लोट।
**आंधी के आम**
अकस्मात हाथ लगी वस्तु। सस्ती वस्तु।
**आंसू एक नहीं, कलेजा टूक-टूक**
झूठी सहानुभूति दिखाना।
**आई गई पार पड़ी**
किसी तरह काम पूरा हुआ। अथवा जो होना था हो चुका, उसकी चिन्ता व्यर्थ।
**आई तो रमाई, नहीं तो फ़कत चारपाई**
मजा-मौज का साधन मिल गया तो ठीक, नहीं तो चिन्ता नहीं।
**आई तो रोज़ी, नहीं तो रोज़ा, (मु०)**
मिला तो खा लिया, नहीं तो रोजे का व्रत समझो।
किसी फक्कड़ की कहावत।
रोजा = वह धार्मिक उपवास जो मुसलमान रमज़ान के दिनों में करते हैं।
**आई न गई, कौन नाते बहिन, (पू० स्त्रि०)**
जबर्दस्ती रिश्ता निकालना।
**आई न गई, कौने लग ग्याभिन भई, (स्त्रि०)**
कहीं आई गई नहीं, तो क्या कोने से लगकर गर्भवती हुई? जब कोई अपने को बहुत भोलाभाला या

निर्दोष साबित करने की कोशिश करे, तब क०।

**आई न गई, छो-छो घर ही में रही, (मु० स्त्रि०)**
जो कभी घर से बाहर न निकली हो, ऐसी स्त्री के प्रति उपेक्षा में कही गई बात।

**आई बहू आया काम, गई बहू गया काम**
(१) घर में जितने आदमी बढ़ते हैं, उतना ही काम बढ़ जाता है। (२) बहू आई नहीं कि काम बढ़ जाता है, क्योंकि घर का छोटा-बड़ा सब काम उसी के मत्थे मढ़ा जाता है।

**आई बात का रखना, कुंद ज़हन होना**
(१) मन में उठे हुए विचार को प्रकट न करना मूर्खता का लक्षण है। (२) सामने आई हुई बात को निपटा देना चाहिए।

**आई बात रुकती नहीं**
मन में उठा विचार प्रकट होकर ही रहता है।

**आई माई को काजर नहीं, बिलाई को भर मांग**
मां के लिए काजल नहीं और बिल्ली के लिए मांग भर सेंदुर।
घर के लोगों को छोड़कर फालतू आदमियों का सत्कार करना।

**आई मौज फ़क़ीर की, दिया झोंपड़ा फूंक**
विरक्त या फक्कड़ साधु के लिए कहते हैं कि मन में आया तो झोंपड़ा फूंककर चलता बनता है।

**आई है जान के साथ, जाएगी जनाजे के साथ, (मु०)**
आदत से मतलब है जो जिन्दगी में छूटती नहीं।

**आओ जाओ घर तुम्हारा, खाना मांगो दुश्मन हमारा**
झूठा सत्कार करना।

**आओ बुगाना चुटकी खेलें, बैठे से बेगार भली**
आओ पड़ोसी चुटकी बजाएं, बैठे रहने से तो बेगार अच्छी।
व्यर्थ में समय नष्ट करने वाले से व्यंग्य में क०।

**आओ पीर, घर का भी ले आओ**
जब कहीं से कुछ मिलने की आशा हो और वह न मिले, बल्कि गांठ का भी चला जाए, तब क०।

**आओ पूत सुलच्छने, घर ही का ले जाव**
अपने किसी दुर्व्यसनी पुत्र के प्रति पिता का उद्गार।

**आकास बांधे, पाताल बांधे, घर की टट्टी खुली**
दुनिया का प्रबंध करते फिरें, पर घर का इन्तजाम न कर सकें।

**आक़िल को एक हर्फ़ बहुत है**
अथवा समझदार थोड़े में बात समझ जाता है।

**आक़िलां पैरवी-ए, नुक़्त न कुनंद**
पढ़े-लिखे नुक्तों की परवाह नहीं करते, वे बिना नुक्तों के भी पढ़ लेते हैं (फारसी लिपि में घसीट लिखते समय नुक्ता लगाना छोड़ देते हैं,। फारसी लिपि में नुक्ता एक खास चीज़ है।)

**आख थू! खट्टे हैं**
प्रयास करने पर जब कोई वस्तु न मिले तो मन को समझाने के लिए उसे बुरा बताने लगना।
(अंग्रे०—Grapes are sour=अंगूर खट्टे हैं।)

**आखिर अपनी जात पर आ गया**
जब कोई छोटा आदमी ऊंचे पद पर पहुंचकर तुच्छ काम कर बैठता है, तब क०।

**आखिर मरोगे, रुपया जोड़-जोड़ क्या करोगे?**
पैसे का सदुपयोग करना चाहिए।

**आग और पानी को कम न समझे**
आग और बाढ़ के पानी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए; उनसे सतर्क रहे।

**आग और फूस का बैर है, (नी० वा०)**
कुसंग से बचने के लिए क०।

**आग और बैरी को कम न समझो**
आग और शत्रु; इनसे सतर्क रहे।

**'आग' कहते मुंह नहीं जलता**
किसी वस्तु का नाम लेने मात्र से उसका प्रभाव प्रकट नहीं हो जाता।

**आग का जला आग ही से अच्छा होता है**
कभी-कभी जिस वस्तु के सेवन से कष्ट हो, उसी से फिर आराम भी मिलता है।
(सं०—उष्णमुष्णेन शीतलं समः समं शमयति।)

(आग से जलने पर आग से सेंकते हैं, ठंडे जल का प्रयोग नहीं करते।)

**आग के आगे सब भस्म है**

आग के आगे कोई चीज नही ठहरती। प्रबल के सामने कमजोर भाग जाते हैं।

**आग को दामन से ढकना**

जानबूझकर ऐसा काम करना, जिसका परिणाम भयंकर हो।

(आग को अंगरखे के छोर से ढकना वज्रमूर्खता है।)

**आग खाएगा सो अंगार हगेगा**

बुरे काम का नतीजा बुरा होता है।

**आग खाए मुंह जरे, उधार खाए पेट जरे**

आग खाने से मुह जलता है, पर उधार खाने से पेट जलता है।

(हमेशा ऋण चुकाने की चिन्ता रहती है, इस कारण क़र्ज़ न ले।)

**आग पानी का बैर है**

दो विपरीत गुण-धर्मवाली चीज़ें एक स्थान पर नही रह सकती।

**आग बिन धुआं नहीं**

कारण बिना कोई कार्य नही होता।

**आग में मूत या मुसलमान हो**

दो मे से एक बुरा काम करने के लिए विवश होना पड़े, तब क०।

(कहते हैं मुग़लो के जमाने मे हिन्दुओ को जबर्दस्ती मुसलमान बनाने के लिए उनसे कहा जाना था, तभी से कहावत चली। फैलन)

**आग लगते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ**

सर्वस्व नष्ट होने मे से जो कुछ बच सके, उसे ही लाभ समझना चाहिए।

**आग लगा तमाशा देखना**

(१) दो आदमियो मे आपस मे झगड़ा कराकर अलग हो जाना।

(२) विवाह-शादी या ठाठबाट मे व्यर्थ पैसा खर्च करना।

**आग लगा पानी को दौड़ना**

दो आदमियों में झगड़ा कराकर झूठमूठ मेल की बात करना। कपट का व्यवहार करना।

**आग लगे तो घूर बतावे**

आग की वजह से धुंआ उठ रहा है, पर कहते हैं कि नही वह धल है। जानबूझ कर किसी को धोखे में रखना। अथवा स्वय धोखे मे रहना।

**आग लगे पर कुआं खोदना**

विपत्ति के बिल्कुल सिर पर आ जाने पर उससे बचने का उपाय करना।

**आग लगे पै बिल्ली का मूत ढूंढ़ना**

किसी विपत्ति के सिर पर आने पर उससे बचने का ऐसा उपाय खोजना, जिससे कोई लाभ ही न हो।

**आग लगे मढ़े, वज्र पड़े बारात**

मतलब, भाड़ में जाए सब चीज।

मढ़ा = विवाह का मंडप।

**आग लेने आये थे, क्या आए? क्या चले?**

जब कोई थोड़ी देर के लिए आकर चला जाए, तब क० कि आप आए ही व्यर्थ मे।

**आग मीर की दाई, सब सीखी-सिखाई**

प्राय. बड़े आदमियो के चतुर नौकर के लिए क० कि सब सीखे-सिखाए है, बड़े होशियार हैं।

**आगे आगरा पीछे लाहौर**

पहले तो आगरा मिलेगा, बाद मे लाहौर। जो चीज आगे आनेवाली है, पहले उसी की चर्चा करनी चाहिए।

**आगे कुआं, पीछे खाई**

दोनो ओर विपत्ति।

**आगे खुदा का नाम**

जो कुछ किया जा सकता था सो किया, आगे ईश्वर मालिक है।

**आगे चलते है पीछे की खबर नहीं**

भविष्य की चिन्ता न करना।

**आगे जाए घुटने टूटें, पीछे देखें आंखें फूटें**

सांप-छछूंदर जैसी गति होना।

**आगे दौड़ पीछे चौड़**

आगे बढ़ता जाए, पर पीछे की खबर न ले। प्रायः

ऐसे लड़के के लिए प्रयुक्त, जो आगे का सबक तो जल्दी याद कर ले, पर पीछे का भूलता जाए।

**आगे नाथ न पीछे पगहा, सबसे भला कुम्हार का गदहा।**
ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो बिल्कुल स्वतंत्र या निश्चिन्त हो, जिसका कोई मित्र या सगा-संबंधी न हो, लावारिस।
नाथ=पशुओं की नाक की रस्सी।
पगहा=पशुओं के पैर बांधने की रस्सी।

**आगे पग रखे पत बढ़े, पाछे पग रखे पत जाय**
मैदान मे आगे बढ़नेवालों का सम्मान बढ़ता है, पीछे हटनेवाले सम्मान खो बैठते हैं।

**आगे-पीछे सब चल बसेंगे**
देर-सबेर सब को जाना है।

**आगे रोक, पीछे ठोक, ससुर सड़के न जाए तो क्या हो ?**
आगे रास्ता बंद, पीछे डडे पड रहे है, ऐसी हालत में वह ससुरा (बैल) सड़क पर आगे न बढे, तो मै करूं क्या ?
मतलब भागने का कही रास्ता नही।

**आगे हाथ, पीछे पात, (स्त्रि०)**
इतना गरीब कि तन ढकने को कपड़े नही; हाथ और पत्तो की सहायता से अपनी लज्जा दूर कर रहा है।

**आछे दिन पाछे गये, हरि से किया न हेत।**
**अब पछताये होत का, चिड़ियां चुग गईं खेत।**
अच्छा अवसर खोकर बाद में पछताना व्यर्थ है।

**आजकल तो तुम्हारे ही नाम कमान चढ़ी है**
अर्थात आजकल तुम्हारा बोलबाला है।

**आजकल रोजगार उन्का है**
आजकल रोजगार नाममात्र का है।
उन्का=एक कल्पित पक्षी।

**आजकल शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं**
खूब अमन-चैन है।

**आज का काम कल पर मत रखो**
आज का काम आज ही निपटा दो।

**आजकल की कन्या अपने मुंह से वर मांगती है, (हिं०)**
अर्थात आजकल की लड़कियां बड़ी निर्लज्ज होती जा रही हैं। स्वयं अपने विवाह की बात करती हैं।

**आज किधर का चांद निकला है ?**
आज आप किधर भूल पड़े ?
जब कोई बहुत दिनो बाद नजर आए, तब क०।

**आज की आज, आज की बरस दिन में**
आज की बात आज भी निपटाई जा सकती है, और उसमे एक वर्ष भी लगाया जा सकता है। किसी मामले को समय पर तै न करने पर क०।
(उर्दू के दो पुराने और प्रामाणिक कहावत-संग्रहों मे मैने इस कहावत का यही अर्थ पाया कि 'काम जल्द नही हो जाता'।)

**आज के थापे आज नहीं जलते**
आज के थापे उपले आज ही नहीं जलते (उन्हें सूखने मे समय लगता है)।
काम तुरत नही हो जाता (उसके लिए तैयारी करनी पडती है)।
तुरत का सिखाया आदमी तुरंत काम करने योग्य नही बन जाता।

**आज के बनिया कल के सेठ**
व्यापार में शीघ्र उन्नति होती है, जिसे आज बनिया कहते है, वह कल सेठ बन जाता है।

**आज क्या घोड़े बेच के सोए हो ?**
जो बेफिक्री की नीद सो रहे हो।

**आज तक पड़े हौंग हगते हैं**
(१) आज तक हालत ठीक नही। अस्वस्थ है।
(२) बेकार पड़े वक्त खराब करते है।
(३) अपने किए का परिणाम भोग रहे हैं।

**आज निपूती, कल निपूती, टेसू फूला, सदा निपूती, (स्त्रि०)**
गाली देना। किसी निपूती स्त्री को कोसना कि तू हमेशा ऐसी ही रहेगी, टेसू मे फूल आया, पर तेरे पुत्र नही होने का।
टेसू=ढाक का फूल।

**आज नहीं कल**
टालमटोल करना।
(इसकी एक कथा है—एक मुसलमान प्रतिदिन रात मे एक पेड़ के नीचे जाकर ईश्वर से प्रार्थना किया

करता था कि 'ऐ खुदा! मुझे अपनी मुहब्बत में खेंच।' उसकी यह बात किसी मसखरे ने सुन ली और एक रात पेड़ पर से रस्से का फंदा नीचे गिराकर उसे ऊपर खींचना शुरू कर दिया। तब वह ईश्वर का भक्त चिल्लाया—'आज नहीं कल'।)

**आज बसेरवा नियर, कल बसेरवा दूर,** (पू०)

आज तो मेरा घर यहीं है, कल दूसरे देश में जाकर रहना होगा। मतलब—इस लोक को छोड़कर दूसरे लोक में जाना होगा।

(यह बेटी के बिदा के समय के एक मार्मिक गीत की कड़ी है।)

**आज मुए कल दूसरा दिन।**

मरने के बाद सब भूल जाएंगे। सब ज्यों के त्यों अपने-अपने काम-धंधे में लग जाएंगे।

(इसका एक अन्य रूप है, आज मरे कल पितरों में। बंगला में है—आज मरले काल दु दिन हवे, परले कुल की संगे जावे।)

**आज मेरे मंगनी, कल मेरे ब्याह, परसों लौंडिया को कोई ले जाए**

मतलब, किसी प्रकार काम से छुट्टी तो मिले। अथवा कोई आदमी काम से छुट्टी पाने के लिए उतावला हो रहा हो, तो उसके लिए भी क०।

**आज मेरे मंगनी, कल मेरे ब्याह, टूट गई टंगड़ी रह गया ब्याह**

आदमी मन्सूबे बनाता है, पर भविष्य में क्या होगा, कोई नहीं जानता।

**आज मैं, कल तू**

एक न एक दिन सब पर विपत्ति आती है। अथवा सबको एक दिन इस संसार से जाना है, आज हम तो कल तुम।

**आज मैं हूं और वह है**

कुछ भी हो, आज उससे निपटकर ही रहूंगा।

**आज से कल नेरे है**

आज के बाद कल ही आएगा। अथवा कल आते क्या देर लगती है?

**आज हमारी कल तुम्हारी, देखो लोगो फेरा-फारी**

देर-सबेर सबको इस दुनिया से जाना है। आज हमारी बारी है, तो कल तुम्हारी।

**आज है सो कल नहीं**

संसार परिवर्तनशील है।

**आजादी खुदा की नियामत है**

स्वतंत्रता ईश्वर का वरदान है।

**आजिज़ी सबको प्यारी है**

विनम्रता सबको पसंद है।

**आटा नहीं तो दलिया जब भी हो जाएगा**

(१) गेहूं पीसने से आटा न बने, तो दलिया तो बन ही जाएगा।

अधिक नहीं तो थोड़ा लाभ हो ही जाएगा।

हिम्मत बंधाने और काम करने की प्रेरणा देने के लिए क०।

**आटा निबड़ा, बूचा सटका**

आटा खतम हुआ और कुत्ते ने अपना रास्ता लिया। स्वार्थी और मुफ़्तखोर के लिए क०।

बूचा = कनकटे कुत्ते को कहते हैं।

(कुत्ते का कान फड़फड़ाना अशुभ मानते हैं, इसलिए कान काट डालते हैं। कुत्ते के अर्थ में यह शब्द रूढ़ हो गया है।)

**आटे का चिराग, घर रखूं तो चूहा खाय, बाहर रखूं तो कौवा ले जाए**

ऐसी वस्तु जिसकी रक्षा कठिन हो। अथवा जब सब तरह से मुश्किल हो, तब भी क०।

(देवी की मनौती मानने के लिए स्त्रियां आटे का दीपक बनाती हैं।)

**आटे के साथ घुन भी पिसा**

बड़े के साथ रहने से किसी एक मामले में छोटा भी चक्कर में आ गया।

धनवान के साथ एक गरीब भी पिस गया।

**आटे में नोन**

साधारण मात्रा में।

**आठ कठौती मठा पिये, सोलह मकुनी खाय।**
**उसके मरे न रोइए, घर का दलिद्दर जाय।**
बहुत खानेवाले का मजाक।
मकुनी=एक प्रकार की मोटी रोटी।

**आठ गांव का चौधरो, बारह गांव का राव।**
**अपने काम न आए तो अपनी ऐसी तैसी में जाव।**
कोई आदमी अगर आठ गांव का चौधरी या बारह गांव का राजा है; तो बना रहे; वक्त पर हमारे काम न आए, तो उसका बड़प्पन हमारे किस काम का?

**आठ जुलाहे नौ हुक्का, जिस पर भी धुक्कम धुक्का।**
आठ जुलाहों के पास नौ हुक्के, फिर भी इस बात का झगड़ा कि आपस में किस प्रकार दिए जाएं कि कोई बाकी न रहे। जुलाहे प्रायः सीधे और मूर्ख माने जाते थे। उसी का एक उदाहरण।
(जुलाहों के बुद्धूपन की अनेक कहानियां प्रसिद्ध हैं। एक कहानी है कि एक बार दस जुलाहे एक रेगिस्तान पार कर रहे थे। वहां उन्हें मरीचिका दिखाई दी, उसे नदी समझकर उन्होंने पार किया। बाद में यह देखने के लिए कि कोई डूब तो नहीं गया; अपने को गिनना शुरू किया। हर आदमी गिनते समय अपने को छोड़ जाता। इस प्रकार जिसने भी गिना उसने अपने दल में एक आदमी कम पाया। तब सब बैठकर रोने लगे। उसी समय वहां से एक घुड़सवार निकला। उसने जब उनका किस्सा सुना, तो एक-एक करके गिनकर बताया कि वे पूरे दस हैं और उनमें से कोई डूबा नहीं है। इसी प्रकार की एक दूसरी कहानी है कि घर की मुंडेर पर बैठा हुआ एक कौवा एक जुलाहे के लड़के के हाथ से रोटी छीन कर ले गया। यह समझकर कि कौवा अवश्य सीढ़ियों के रास्ते नीचे उतरा होगा। उसने पहले सीढ़ियां खोदकर अलग कर दीं, बाद में लड़के को और रोटी दी। एक तीसरी कहानी है कि एक जुलाहे को किसी ज्योतिषी ने बताया कि उसके भाग्य में कुल्हाड़ी से उसकी नाक कटना लिखा है। जुलाहे को इसका विश्वास नहीं हुआ और यह देखने के लिए कि आखिर कुल्हाड़ी से नाक कटेगी तो किस प्रकार! उसे लेकर उसने घुमाना शुरू किया। कहता जाता—'यों करब तो गोड़ कटब, यों करब तो हाथ कटब, और यूं करब तो ना-आ...' और यह कहते-कहते उसकी नाक साफ़ हो गई।)
तुल०—आठ कनौजिया नौ चूल्हे। इसी भाव की कहावत बंगला में भी है—बार राजपूत तैरो हांडी, केऊ खाय ना कारो बाड़ी।

**आठ बार नौ त्यौहार**
हिन्दुओं में त्यौहार बहुत होते हैं। हर महीने दो-चार व्रत या त्यौहार पड़ जाते हैं। उसी पर कहा० कही गई है। हमेशा त्यौहार मनाते रहने के लिए भी कह सकते हैं।

**आठ मिले काठ, तुलसी मिले जाट**
आठ तरह के काठ क्या मिल गए, समझ लो जाट मिल गया। जाटों पर फब्ती।
आठ काठ = आठ प्रकार की लकड़ी। एक मुहा० जिसका अर्थ होता है: बेमेल वस्तुओं का जमघट।

**आठों गांठ कुम्मेत**
सब तरफ से कुम्मेत। बहुत चालाक और बदमाश। (कुम्मेत दाखी रंग के घोड़े को कहते हैं। ऐसा घोड़ा बहुत तेज और फुर्तीला माना जाता है।)

**आठों पहर काल का डंका सिर पर बजता है**
मौत हर वक्त सिर पर सवार है।

**आता तो सब ही भला, थोड़ा बहुता, कुच्छ।**
**जाते तो दो ही भले, दालिद्दर और दुःख।**
आती सभी वस्तुएं अच्छी होती हैं, थोड़ी आवें या बहुत; पर दो वस्तुएं जाती हुई अच्छी होती हैं—दरिद्रता और दुख।

**आता हो तो उसे हाथ से न दीजे, जाता हो तो उसका गम न कीजे**
आती हुई वस्तु को छोड़े नहीं, जाती हुई की चिंता न करो।

**आती बहू, जन्मता पूत**
घर में बहू का आना, और पुत्र का उत्पन्न होना, ये सब को अच्छे लगते हैं।

**आते आओ, जाते जाओ**
जहां लोगों की बहुत भीड़ इकट्ठा हो रही हो, जैसे दावत या तमाशे में, वहां क०।

**आते का नाम सहजा, जाते का नाम मुक्ता**
संसार में आने का मतलब ही यह है कि हमें दुख सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए, मुक्ति तो यहां से जाने पर ही मिलती है। अथवा दुख आने पर उसे धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिए, जब वह जाए तभी समझो कि छुटकारा मिला।

**आते जाते मैना ना फंसी, तू क्यों फंसा रे कौवे**
मैना तो जाल में फंसी नही, कौवा फस गया।
मूर्ख की अपेक्षा सयाना आदमी ही अधिक धोखा खाता है।

**आत्मा में पडे तो परमात्मा की सूझे**
पेट भरा होने पर ही कोई काम सूझता है।

**आदम आया, दम आया**
आदम के साथ सृष्टि का प्रारंभ हुआ।
(बाइबिल के अनुसार आदम प्रथम मानव था, जिससे मानव सृष्टि आगे बढ़ी।)

**आदमी अनाज का कीड़ा है**
आदमी अन्न पर ही जीवित रहता है।

**आदमी अपने मतलब में बंधा है**
हर आदमी अपने मतलब की ही बात करता है।

**आदमी अशरफ़-उल-मखलूक़ात है**
मनुष्य सब प्राणियो मे श्रेष्ठ है।

**आदमी आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर**
सब आदमी एक से नही होते। कोई अच्छा होता है, कोई बुरा।

**आदमी का शैतान आदमी है**
मनुष्य को मनुष्य ही गड्ढे मे गिराता है।

**आदमी की क़द्र मरे पर होती है**
मृत्यु के बाद ही आदमी की क़द्र होती है। तब लोग याद करते है कि अमुक व्यक्ति ऐसा था।

**आदमी की कसौटी मुआमला**
काम पड़ने पर ही मनुष्य की परीक्षा होती है।

**आदमी की दवा आदमी**
मनुष्य को मनुष्य सुधारता है।

**आदमी की पेशानी दिल का आईना है**
मनुष्य के हृदय के भाव उसके चेहरे पर दिखाई पड़ जाते हैं।
(मन महीप के आचरण, दृग दिमान कह देत।)

**आदमी कुछ खोकर ही सीखता है**
हानि होने पर ही आदमी को अक़्ल आती है।

**आदमी को ढाई गज कफ़न काफ़ी है**
मरने पर उसके लिए ढाई गज कफन काफी होता है। वह बेकार ही अपनी जरूरतें बढ़ाता रहता है।

**आदमी को ढाई गज जमीन काफ़ी है, (मु०)**
मरने पर आदमी को कब्र में दफना दिया जाता है, कोई चीज उसके साथ नही जाती।

**आदमी को आदमियत लाजिम है**
मनुष्य मे मनुष्यता का होना बहुत आवश्यक है।

**आदमी को आदमी से सौ वफ़ा काम पड़ता है**
इसलिए परस्पर हिलमिलकर रहना चाहिए। न जाने कब किससे काम पड़ जाए।

**आदमी क्या है, आबनूस का कुंदा है**
यानी बहुत मूर्ख है। काले आदमी के लिए भी कह सकते हैं।
(आबनूस काले रंग की पहाड़ी लकडी होती है।)

**आदमी क्या है, सरांचे का बांस है**
बहुत लंबे और बेडौल के लिए क०।

**आदमी ठोकर खाकर संभलता है**
हानि होने पर ही आदमी को होश आता है।

**आदमी ने आखिर कच्चा क्षीर पिया है**
मनुष्य के लिए भूल स्वाभाविक है। आखिर उसने मा का कच्चा दूध पिया है! इस कारण उसकी बुद्धि भी हमेशा अपरिपक्व रहे, तो इसमें आश्चर्य क्या?

**आदमी पानी का बुलबुला है**
आदमी का जीवन उतना ही अस्थायी है, जितना पानी का बुलबुला।

**आदमी पेट का कुत्ता है**
आदमी पेट का गुलाम है।
**आदमी भांड़ की खातिर पहाड़ सिर पर उठाता है**
फायदे के लिए आदमी बड़े से बड़ा कष्ट उठाने को तैयार रहता है।
**आदमी सा पखेरू कोई नहीं**
मनुष्य सब जीवों में अद्‌भुत है।
**आदमी है कि घनचक्कर**
फालतू या मूर्ख के लिए क०।
**आदमी है या बिजली**
बहुत फुर्तीले के लिए क०।
**आदमी हो या बेदाल के बूदम**
आदमी हो या उल्लू?
(फारसी मे 'बूदम' से दाल अक्षर निकाल लेने पर 'बूम' रह जाता है, जिसका अर्थ उल्लू है।)
**आदमी हो या संगे बेनून**
फारसी में संग का अर्थ पत्थर है। उसमे से 'नून' अक्षर निकाल लेने पर 'सग' रह जाता है, जिसका अर्थ 'कुत्ता' है। आपस मे मजाक मे वाक्य का प्रयोग करते क०।
**आदर न भाव, झूठे माल खाव**
बेमन से खाना-खिलाना। दिखावटी सत्कार करना।
**आदर बढ़ल, गजाधर बहू के**
जब समाज में किसी का यकायक सम्मान बढ़ जाए, तब क०।
गजाधर=किसी का नाम।
**आद हिन्दू बाद मुसलमान, (हिं०)**
इस देश में पहले तो हिन्दू ही रहते थे, मुसलमान तो बाद मे आए। हिन्दुओ का महत्व बताने के लिए क०।
(फैलन ने इसका यह अर्थ बताया है कि पहले लोग हिन्दू थे, बाद को उनमें से मुसलमान हो गए।)
**आदी के चंदन, लिलार चरचराय, (पू०)**
अदरक के चंदन से माथा तो चरचराएगा ही। बुरे का संग कभी लाभदायक नही होता।

**आदी मिरचई का कौन साथ? (पू०)**
दोनों के गुण भिन्न होते हैं।
**आध सेर के पात्र में कैसे सेर समाय?**
(१) किसी मूर्ख या छोटे आदमी में अधिक योग्यता कहां से आ सकती है?
(२) छोटा आदमी थोड़ी विद्या-बुद्धि या संपत्ति पाकर ही इतरा उठता है।
**आधा आप घर, आधा सब घर**
आधा तो स्वयं रख लिया और आधे मे से सब घर को दिया। स्वार्थी के लिए क०।
**आधा तजे पंडित, सर्बस तजे गंवार**
आधा खर्च करने से अगर आधा बच सकता हो, तो समझदार आदमी वैसा करता है, यानी आधा खर्च कर देता है, लेकिन मूर्ख आदमी पूरा बचाने के लोभ मे सब खो बैठता है।
**आधा तीतर, आधा बटेर**
बेमेल चीज। खिचड़ी भाषा।
**आधा मियां शेख शरफुद्दीन, आधा सारा गांव**
जबर्दस्त का हिस्सा सबसे ज्यादा होता है।
**आधी छोड़ सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे**
लालच बुरा होता है
पाठा०—आधी छोड सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे।
**आधी मुर्गी, आधी बटेर**
दे०—आधा तीतर...।
**आधी रात को जंभाई आय, शाम से मुंह फैलाय**
जमुहाई लेने की कोशिश शाम से शुरू कर दी, पर आई आधी रात को!
किसी काम की अनावश्यक रूप से बहुत पहले से तैयारी शुरू कर देना।
**आधी रोटी बस, कायथ है कि पस**
किसी कायस्थ सज्जन की कम खाने की आदत पर फब्ती कि बस, बस, इन्हें अधिक मत परोसो, ये कायस्थ हैं, पशु नही।

(कायस्थ बहुत तकल्लुफ़-पसंद होते थे।)

**आधे असाढ़ तो बैरी के भी बरसे, (कृ०)**

आधे असाढ़ में तो बैरी के खेत में भी पानी बरसे। यानी ईश्वर सबके साथ समान न्याय करता है। अथवा आधे असाढ़ तो वर्षा अवश्य होती है, यह अर्थ भी हो सकता है।

**आधे काजी कुद्दू, आधे बाबा आदम, (मु०)**

ऐसे व्यक्ति के लिए क० जिसका बड़ा परिवार हो।

(किंवदंती है कि कुद्दू नाम के एक काजी थे। उनकी औरत के एक साथ २०० बच्चे पैदा हुए। ऐसी दशा में दुनिया की आबादी में उनके नाती-पोतो का बहुत बड़ा हिस्सा तो होना ही चाहिए।)

**आधे गांव दिवाली, आधे गांव फाग**

मनमानी करना, मिलकर काम न करना।

(दिवाली कार्तिक में होती है, और फाग फागुन के महीने में। ये दोनो त्यौहार एक साथ हो नही सकते।)

**आधे माघे, कमली कांधे, (ग्रा०)**

आधे माघ में (जाडा कम हो जाने के कारण) कंबल को कधे पर रख लेते है।

**आन बनी सिर आपने, छोड़ परायी आस**

विपत्ति मे कोई सहायक नही होता। स्वयं ही भुगतनी पड़ती है।

**आन से मारे, तान से मारे, फिर भी न मरे तो रान से मारे**

वेश्या के लिए क०।

**आप काज महा काज**

अपना काम स्वयं ही करने से ठीक होता है। दूसरो पर छोडकर हाथ पर हाथ धरकर न बैठो।

**आप की खिजालत मेरे सिर आंखों पर**

आपके लिए मै शर्मिन्दा हूं। आपने जो किया, उसे मैं भुगतूंगा।

खिजालत शर्मिन्दगी।

**आपकी टिक्की यहां नहीं लगने की**

आपकी रोटी यहां नहीं सिकने की।

यानी आपका मतलब यहां हल होने का नहीं।

आपकी दाल यहां नहीं गलने की।

आपका पौवा यहां नही लगने का।

**आपको फजीहत, गैर को नसीहत**

स्वयं बुरे काम करके दूसरों को उपदेश देना।

(पर उपदेश कुशल बहुतेरे)।

**आप खाय, बिलाई बताय**

चालाक आदमी या लडका। स्वयं मिठाई-पूड़ी हड़प जाए और दूसरे का नाम ले कि उसने खाया।

**आप खुरादी, आप मुरादी**

आप ही खानेवाले और आप ही अपनी मुराद पूरी करनेवाले।

स्वयं कुछ कर लेना। दूसरो को न पूछना।

**आप गये और आसपास**

आप बर्बाद हुए, साथियों को भी बर्बाद किया।

**आप चले भुइयां, शेखी गाड़ी पर**

शेखीबाज के लिए क०।

(पैदल चल रहे है और गाडी होने का दावा करते है।)

**आप जिंदा तो जहान जिंदा**

अपनी जिंदगी से ही सब कुछ लगा है।

**आप डूबा तो जग डूबा**

जब हम ही नही है, तो औरों से हमें क्या मतलब? जब हमारी हानि हुई है, तो दूसरों की भी होती रहे; हमें क्या?

**आप डूबे बाभना, जिजमाने ले डूबे**

आप भी बर्बाद हुए, यार-दोस्तों को भी बर्बाद किया।

(आप मरी तो मरी, मेरे हीरामनऊं ऐ लै मरी। ब्र०)

**आ पड़ोसिन मुझ-सी हो, (स्त्रि०)**

मेरी तरह तू भी रांड हो जा! दूसरों का बुरा तकना।

**आ पड़ोसिन लड़ें, (स्त्रि०)**

बेमतलब झगड़ा करनेवाले के लिए क०।

**आप तो गर्म करके शर्बत पिलाते है**
गुस्सा उठाकर मीठी-मीठी बातें करते हैं।
**आपत्ति काले मर्यादा नास्ति, (सं०)**
विपत्ति के समय धर्म-अधर्म का विचार नही किया जाता।
**आपन खेत बंम लोटे, पाही जोते जाइला, (भो०)**
अपना खेत तो बिन जुता पड़ा है, दूसरे गांव का खेत जाकर जोतता है।
अपना काम छोड़कर दूसरे का करना।
**आपन दे के बुड़बक बने के?**
ऐसा कौन है, जो अपनी चीज दूसरे को देकर मूर्ख बने? कोई नही।
**आपन भल होयत तो जगत्तर प्रीत गारी, (भो०)**
स्वयं भला है, तो संसार मित्र बन जाता है।
**आपन मामा मर मर गइलन, जुलहा, धुनिया, मामा भइलन; (भो०)**
अपने मामा तो मर गये, कभी उनकी बात नही पूछी, और अब धुनिया जुलाहो को मामा बना लिया।
घरवालो का आदर न करके बाहर के लोगो से सबध जोडना।
**आप बीती कहूँ या जग बीती?**
मैं अपना दुखड़ा रोऊं या दूसरों का?
**आप भला तो जग भला**
(१) भले के लिए सब भले।
(२) भले को सब भले ही दीखते है।
**आप भूले उस्ताद को लगाम**
अपनी भूल दूसरे के मत्थे मढना।
**आपम धाप कड़ाकड़ बीते, जो मारे सो जीते**
लड़ाई में फिर अपनी तरफ से कसर नही छोड़नी चाहिए, अपनी चोट करारी पड़नी चाहिए। जो आगे बढ़कर मारता है, वही जीतता है।
**आप मरे जग परलौ**
हमारे बाद दुनिया में कुछ भी होता रहे, हमे क्या मतलब? हम नही तो दुनिया भी नही।
(अंग्रे०—me the After deluge.)

**आप मियां सूबेदार घर में बीबी झोंके भाड़**
घर में खाने को नहीं, बाहर शान बघारते हैं।
**आप रहें उत्तर, काम करें पच्छम**
शऊर से काम न करनेवाले से क०।
**आप राह राह, तुम खेत खेत**
सिलबिल्ला आदमी।
**आप सुने राग से, फकीर सुने भाग से**
बड़ा आदमी पैसा खर्च करके गाना सुनता है, गरीब अपनी किस्मत से मुफ्त मे सुनता है।
**आप से आवे तो आने दे**
अपने आप आ रही वस्तु के लिए मना नहीं करना चाहिए।
(कथा है कि किसी मुसलमान ने पक्षियो का मांस न खाने की कसम खा रखी थी। एक दिन उसकी स्त्री ने बहुत-सा घी-मसाला डालकर मुर्गी पकाई। उसके पति को जब यह बात मालूम हुई तो बड़ा नाराज हुआ, किन्तु बाद मे स्त्री के बहुत कहने पर थोडा शोरुवा लेने के लिए राजी हो गया। औरत ने सावधानी से बोटियो को अलग करके शोरुवा परोसना शुरू किया, लेकिन परोसते समय एक बोटी नीचे गिरने लगी। औरत ने उसे रोकना चाहा। इस पर उसके पति ने कहा—आप से आवे तो आने दो, रोको मत। इसी प्रकार की एक और कथा है—एक ब्राह्मण देवता सबको बैंगन न खाने का उपदेश दिया करते थे। एक दिन किसी जजमान ने एक टोकरी भर बैंगन लाकर उन्हे भेंट किए। उन्होने लेने से इन्कार किया। लेकिन उनकी पत्नी होशियार थी। बोली—जो चीज आपसे आए, उसे स्वीकार लेना चाहिए। इस पर ब्राह्मण देवता मान गए और बैंगन घर मे रख लिए गए।)
**आपसे गया तो जहान से गया**
(१) जो अपनी नजरों में गिरा, वह दुनिया की नजरों मे भी गिरा।
(२) जो अपनी फ़िक्र नहीं करता दुनिया भी उसकी फ़िक्र नहीं करती।

**आपसे भला खुदा से भला**
जो अपनी निगाह में भला है, वह ईश्वर की निगाह में भी भला है।

**आप हर फन मौला है**
यानी आप हर काम में बड़े उस्ताद हैं। प्रायः व्यंग्य में क०।

**आप हारे, बहू को मारे**
जुए में पैसा हार आए, और आकर औरत को मारते हैं।
अपना गुस्सा दूसरों पर उतारना।

**आप ही अपनी क़ब्र खोदता है**
आप अपनी मौत बुलाता है। अपना सर्वनाश करता है।

**आप ही की जूतियों का सदका है**
यह सब आपकी ही बदौलत है।
(इस पर एक कथा है कि एक बार एक मुसलमान मसखरे ने दोस्तों को सुन्नत की दावत दी। जब सब लोग आकर भीतर बैठे तो उसने नौकर से चुपचाप उन सब के जूते बेच आने के लिए कहा। नौकर ने वैसा ही किया और दाम मालिक को लाकर दे दिए। दोस्तों ने दावत बहुत पसन्द की और कहना शुरू किया—जनाब-मन, आपने बड़ी तकलीफ़ की। इस पर मसखरे ने हाथ जोड़कर कहा—यह सब आपकी ही जूतियों का सदका यानी प्रताप है। मैं भला किस लायक हूं।)

**आप ही नाक चोटी गिरफ्तार हैं, (स्त्रि०)**
खुद ही चक्कर में पड़े हैं।

**आप ही मियां मंगते बाहर खड़े दरवेश**
अपनी सहायता कर नहीं पाते, दूसरों की सहायता क्या करेंगे?

**आ फंसे का मामला है**
अर्थात अब तो चक्कर में पड़ गए हैं, जो होगा भुगतेंगे।

**आफताब पर थूकने से अपने ही मुंह पर पड़े**
बड़ों की निंदा से उनका कुछ नहीं बिगड़ता, स्वयं को ही हानि उठानी पड़ती है।

**आब आब कर मर गए, सिरहाने रहा पानी**
अकड़कर बोलना। शान बघारने के लिए ऐसी भाषा में बोलना जो दूसरों की समझ में न आए। (कथा है कि कोई फारसी पढ़ा-लिखा व्यक्ति बीमार पड़ा और मृत्यु के समय आब-आब चिल्लाता रहा, परंतु घरवाले उसकी बोली नहीं समझ सके और प्यास के मारे उसके प्राण निकल गए। यह पूरी कहा० इस प्रकार है—
काबुल गये मुग़ल बन आये, बोलन लागे बानी।
आब आब कर मर गए, सिरहाने रहा पानी।)

**आ, बड़े बाप की बेटी है तो पंजा कर ले**
किसी एक स्त्री का दूसरी शेखी मारनेवाली स्त्री से कथन।
पंजा करना = उंगलियों में उंगलियां फ़ंसाकर इस तरह मरोड़ना कि दूसरा आदमी चीं बोल जाए।

**आब न दीदह, मोज़ह कशीदह, (फा०)**
पानी है नहीं, पर (भीगने के डर से) मोज़ा उतार लिया!
अकारण हाय-तोबा मचाना।

**आबरू जग में रहे, तो जान जाना पश्म है**
इज़्ज़त के सामने जिन्दगी कोई चीज़ नहीं।
पश्म = बाल, तुच्छ वस्तु।
(इस कहावत में 'आबरू' और 'जानजाना' इन शब्दों के दोहरे अर्थ हैं। आबरू और जान जाना नाम के दो शायर लखनऊ में हो गए हैं। दोनों में आपस में बहुत छेड़छाड़ रहती थी। यह शेर आबरू का कहा हुआ है जिसमें जानजाना पर कटाक्ष है। पूरा शेर इस प्रकार है—
जो सती सत पर चढ़े तो पान खाना रस्म है।
आबरू जग में रहे तो जान जाना पश्म है।)

**आ बला, गले लग**
जानबूझकर विपत्ति मोल लेना।

**आ बैल, मुझे मार**
दे० ऊ०।

**आम इमली का साथ है**
दो बेमेल व्यक्तियों का साथ। दो चालाकों का इकट्ठा होना।
(आम इमली दोनों ही खट्टे होते हैं।)

**आम के आम गुठलियों के दाम**
ऐसा सौदा जिसमें सब प्रकार से लाभ हो।

**आम खाने या पेड़ गिनने ?**
सीधी काम की बात न करके व्यर्थ का प्रश्न करना।
पाठा०—आम खाने से मतलब या पेड़ गिनने से ?

**आम झड़े पताई, लड़का रोवे दाई दाई, (स्त्रि०)**
आम के पत्ते झड़ने की आवाज हो रही है। लड़का समझता है आम गिर रहे है और रोता है 'मां आम दो।'
अलभ्य वस्तु के लिए हठ।

**आमदनी के सिर सेहरा**
जिसके पास पैसा है वही बड़ा आदमी है।
सेहरा=श्रेय दिया जाना।

**आमने-सामने घर करूं और बीच करूं मैदान, (स्त्रि०)**
निर्लज्ज और उद्धत औरत के लिए क०।

**आम फले तो नव चले, अरंड फले इतराय**
सज्जन ऊंचे पद पर पहुंचकर विनम्र बनता है, पर नीच इतराने लगता है।

**आम बोओ आम खाओ, इमली बोओ इमली खाओ।**
जैसा करोगे वैसा पाओगे।

**आम मछली का साथ है**
अच्छा जोड़ मिला है।
(कच्चे आमों के साथ प्रायः मछली पकाते है।)

**आय तो जाय कहां**
व्यर्थ किसी एक बात के पीछे पड़ जाना।
जो बात होनी है वह होकर रहेगी, यह अर्थ भी हो सकता है।

**आया कर, तू आया कर, टट्टी मत लड़काया कर**
यानी व्यर्थ तंग मत किया करो। किसी के प्रति उपेक्षा के रूप में कहना।

**आयां रा केह बयां, (फा०)**
प्रत्यक्ष का क्या वर्णन करना ?
(हाथ कंगन को आरसी क्या ?)

**आया कातिक, उठी कुतिया**
निर्लज्ज स्त्री के लिए क०।

**आया कुत्ता ले गया, तू बैठी ढोल बजा**
अपनी धुन में इतना मस्त हो जाना कि दूसरी ओर क्या हो रहा है, इसका पता न लगना।
(कथा है कि एक मिरासिन किसी दावत में गई। वहां ढोल बजाने में इतना तन्मय हो गई कि उसके सामने की पत्तल कुत्ता उठा ले गया और उसे इस बात का पता ही न चला। अमीर खुसरो की इस पर एक तुकबंदी है। कहते हैं कि एक बार खुसरो प्यासे एक कुएं पर गए। वहां चार औरतें पानी भर रही थीं। उनमें से एक उन्हे पहचान कर बोली—आप हमारी चीजों पर कुछ शायरी कर दें, तो पानी पिलाएं। खुसरो ने मंजर कर लिया। तब एक बोली—आज मेरे घर खीर पकी है, इस पर कुछ कहिए। दूसरी बोली—मेरे चरखे पर कुछ कहिए। तीसरी बोली—सामने खड़े कुत्ते पर कुछ कहिए। चौथी ने आग्रह किया—मेरे ढोल पर कुछ कहिए। खुसरो बहुत प्यासे थे। एक साथ चारों की इच्छा पूरी करते हुए बोले—
खीर पकाई जतन से, चरखा दिया जला।
कुत्ता आया खा गया, तू बैठी ढोल बजा।
इस पर सब बहुत खुश हुईं और खुसरो को पानी पिला दिया।)

**आया तो नोश, नहीं फ़रामोश**
मिला तो खा लिया, अन्यथा परवाह नही।

**आया बंदा आई रोजी, गया बंदा गई रोजी, (मु०)**
दुनिया में आदमी से ही सब काम लगा है।

**आया रमजान, भागा शैतान, (मु०)**
अच्छे के सामने बुरा नहीं ठहरता।
(रमजान के महीने में मुसलमान रोजा रखते हैं और उसे एक पवित्र महीना मानते हैं।)

**आया राजा पोह, जाड़े को बड़ा छोह**
पूस आने पर जाड़ा अपना जोर दिखाता है।
छोह=कोप।

**आये आम, जाये लबेड़ा**
डंडा भले ही चला जाए पर आम तो आए।
(कुछ पाने के लिए खोना भी पड़ता है। लबेड़ा या लमेड़ा एक फल भी होता है, जिसका अचार बनता है। तब यह अर्थ हो सकता है कि भले ही एक सामान्य वस्तु हाथ से चली जाए, पर अच्छी वस्तु तो मिले।)

**आये कनागत फले कांस, बामन उछलें नौ-नौ बांस, (हिं०)**
कनागत अर्थात पितृपक्ष के दिनों में ब्राह्मणों को बहुत निमंत्रण मिलते हैं, इसलिए वे बहुत प्रसन्न रहते हैं। लोलुप ब्राह्मणों के लिए क०।
निमंत्रण=न्यौता।

**आये की शादी, न गये का ग़म**
सदैव प्रसन्न रहना।
ग़म=रंज।

**आयेगा कुत्ता तो पायेगा टिक्का, (स्त्रि०)**
मेहनत से ही खाने को मिलता है।

**आये चैत सुहावन, फहड़ मैल छुड़ावन, (स्त्रि०)**
ऐसी सुस्त और गंदी औरत, जो जाड़ों में सर्दी के भय से नहाती नहीं और जिसका मैल गर्मियों में पसीना आने पर ही छूटता है। अथवा जो गर्मी आने पर ही नहाती है।
(सामान्य रूप से ऐसे आदमी के लिए कहावत का प्रयोग होता है, जो कभी-कभी सफाई कर लिया करता है, अन्यथा गंदा रहता है।)

**आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास**
आये थे किसी काम को, करने लगे कुछ और।

**आये मीर, भागे पीर**
मीर के आने पर पीर भाग जाते हैं। बड़े हुनरमंद के सामने छोटे की दाल नहीं गलती।
(इसकी कथा है कि अमरोहे में शेख सद्दू या मीरांजी नामक एक व्यक्ति रहता था। वह बिल्कुल अशिक्षित था, फिर भी अपने को इल्मे तसखीर या ज्योतिष में निपुण बताता था। एक दिन खेत में उसे एक दीपक मिला, जिसमें एक साथ चार बत्तियां जलती थीं। उसे घर ले जाकर उसने जलाया, तो उसके सामने चार जिन्न आकर खड़े हो गए। उन्हें देखकर वह भयभीत हो गया और दीपक को बुझाने की कोशिश करने लगा। लेकिन जिन्न नहीं टले। बोले—हमें कुछ काम बताओ। शेख बदचलन था। उसने जिन्नों से एक खूबसूरत औरत लाने को कहा। जिन्नों ने तुरंत वैसा कर दिया। किन्तु उस औरत के साथ शेख ने जब दुराचार करना चाहा तो जिन्नों ने बताया कि वे तभी तक उसकी बात मानेंगे जब तक वह सही रास्ते पर रहेगा। पर वह उस सुन्दरी को बार-बार बुलाता रहा। अन्त में वह बेकाबू हो सुन्दरी की तरफ़ बढ़ा। तब जिन्नों ने उसे मार डाला। मरकर वह बड़ा पीर हुआ और लोगों के सिर आने लगा। और भी बहुत से पीर हुए है। लेकिन जहां शेख सद्दू पहुंचता है, वहां दूसरे पीर नहीं ठहर पाते। इस शेख सद्दू की अब भी अमरोहे में दरगाह बनी है और लोग वहां ज़ियारत करने जाते हैं।)

**आरज़ू ऐब है**
लालसा बुरी वस्तु है।

**आरसी में मुंह देखो**
डींग हांकनेवाले या अनुचित मांग करनेवाले से कहते हैं कि ज़रा शीशे में अपना मुंह भी तो देखो, तुम इस योग्य हो भी कि नही।

**आ लगा मुरमुरेवाला**
बातूनी आदमी के लिए कहते हैं कि वह फिर आ गया बकवास करने।
(चने बेचनेवाले 'मुरमुरे चने' की आवाज़ सड़कों पर लगाया करते है। उसी से कहा० बनी।)

**आलमगीर सानी, चूल्हे आग न घड़े पानी**
मुग़ल बादशाह आलमगीर द्वितीय (ई०१७५४-५९) का शासन प्रबंध अच्छा नहीं बताया जाता। उसके समय में प्रजा को बड़ा कष्ट था। उसी से मतलब है।

**आलस, निद्रा और जंभाई, ये तीनों हैं काल के भाई**
बहुत आलस्य करना, सोना और जमुहाना, ये तीनों स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं होते।

**आलसी सदा रोगी**
आलसी हमेशा बीमार रहता है।
**आला, दे निवाला, (स्त्रि०)**
ऐ ताक! तू मुझे रोटी का टुकड़ा दे।
(कथा है कि एक राजा ने किसी भिखारिन की खूबसूरत लड़की पर लट्टू होकर उससे शादी कर ली। पर महलो में आकर भी उस लड़की की भीख मांगने की आदत नही छूटी और वह अपने कमरे के ताको मे रोटी रखकर भीख मागा करती। उससे कहावत का आशय यह है कि बचपन की कोई पुरानी आदत मुश्किल से छूटती है।)
**आलिम वह क्या, अमल न हो जिसका किताब पर**
वह पढ़ा-लिखा ही क्या, जो सद्ग्रन्थो का उपदेश न माने।
आलिम=विद्वान।
**आला हिम्मत सदा मुफ़लिस**
हिम्मतवाला हमेशा गरीब रहता है, क्योकि मौके पर वह अपना सर्वस्व दाव पर लगा देता है।
(फैलन के अनुसार कहावत सट्टेबाजो के लिए प्रयुक्त होती है।)
**आवत हा-ही, जावत संतोख**
धन और सतान के लिए कहा गया है। आने पर प्रसन्नता होती है, जाने पर संतोष से काम लेना पड़ता है।
**आवे न जावे, बृहस्पति कहावे**
आता-जाता कुछ नही, फिर भी अपने को पडित कहते हैं। दंभी पुरुष।
(बृहस्पति देवताओ के गुरु थे।)
**आशनाई करना आसान, निभाना मुश्किल**
प्रेम करना आसान है, पर निभाना कठिन है।
**आशिक़ अंधा होता है**
प्रेम में मनुष्य को भला-बुरा कुछ नही सूझता।
**आशिक़ की आबरू है गाली और मार खाना**
आशिक पिटने और गाली खाने में ही अपनी इज्जत समझता है। अथवा आशिक पिटने और गाली खाने के लिए ही बना होता है।
**आशिक़ को खुदा जर दे, नहीं तो कर दे कब्रों के परदे**
ईश्वर प्रेमी को या तो बहुत-सा पैसा खर्च के लिए दे या फिर उसे मार ही डाले।
**आशिक़ी और खाला जी का घर!**
सोने में सुगंध! खाला यानी मौसी के घर जाने मे किसी प्रकार की रोक-टोक नही; किसी भी लड़की से वहा खुलकर प्रेम किया जा सकता है।
(मुसलमानों में मामा-फूफा की लड़की से विवाह करने का रिवाज है।)
**आशिक़ी और मामा जी का डर!**
जब इश्क़ किया तो मामाजी का क्या डर? कोई और हो तो चिन्ता भी की जाए।
**आशिक़ी खाला जी का घर नहीं**
अर्थात वह आसान काम नही।
**आशिक़ी न कीजिए तो क्या घास खोदिए**
किसी मनचले आशिक का कहना कि दुनिया मे आकर इश्क के फदे मे न फंसा जाए तो आखिर किया क्या जाए?
**आश्ती! और जान जी का डर!**
आश्ती होकर मरने का डर। अर्थात काम का बीड़ा उठाया और अब पिछड़ रहे हो।
(आश्ती उसे कहते है जो मुश्किल से मुश्किल काम करने को तैयार हो।)
**आसक्ती गिरा कुएं में, कहा, अभी कौन उठे**
किसी घोर आलसी के लिए क०।
आसक्ती=अशक्त, आलसी।
**आसक्ती गिरा कुएं में, कहा, यहां ही भले**
दे० ऊ०।
**आस बिरानी जो तके, वह जीवित ही मर जाय**
दूसरो के आश्रित रहने की अपेक्षा तो मर जाना अच्छा।
**आस बुढ़ापा आइयां, हुआ सूत-कुसूत।**
**या हो पैसा गांठ का, या हो पूत सपूत।**
बुढ़ापे में या तो पास पैसा हो, या सेवापरायण सुयोग्य पुत्र।

सूत कुसूत होना = मु०, बना बनाया काम बिगड़ना।

**आसमान का थूका मुंह पर आता है**

बड़ों की निंदा करने से स्वयं अपनी हानि होती है।

**आसमान ने डाला, धरती ने झेला**

ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई खोज-खबर लेनेवाला न हो। निराश्रित।

**आसमान के फटे को कहां तक थेगली लगे**

थोड़ा बिगड़ा काम सुधारा जा सकता है, पर बहुत बिगड़ा कहां तक संभाला जाए।

थेगली = फटे हुए कपड़े का छेद बंद करने के लिए लगाया जानेवाला टुकड़ा। पैबंद।

**आसमान में थेगली लगाती है**

बड़ी चालाक है।

**आसमान से गिरा, खजूर में अटका**

(१) किसी काम का पूरा होते-होते रह जाना। (२) मुश्किल से मुश्किल काम तो कर लेना, पर बाद में किसी मामूली काम से घबरा जाना। प्राय. तब कहते है, जब किसी के पास से किसी को कुछ मिल रहा हो और दूसरे लोग बीच में उसे दबा लें।

**आस्तीन का सांप**

ऐसा व्यक्ति जो मित्र बनकर धोखा दे।

**आस्तीन में सांप पाला है**

जानबूझकर ऐसे व्यक्ति को आश्रय देना, जो बाद में शत्रु साबित हो।

**आह-ए-मरदां, न ऊह-ए-ज़नां, (फा०)**

न मर्दों जैसे 'आह', न औरतों जैसी 'ऊह।' बेहद डरपोक।

**आहार चूके वह गये, व्यवहार चूके वह गये। दरबार चूके वह गये, ससुरार चूके वह गये।**

भोजन में, लेन देन में, राजदरबार में और ससुराल में संकोच करनेवाला व्यक्ति टोटे में रहता है।

**आहारे व्यवहारे, लज्जा न कारे**

भोजन और लेनदेन में संकोच नही करना चाहिए।

**इंधा-खिचा वह फिरे, जो पराये बीच में पड़े**

दूसरे के झगड़े में पड़ने से हमेशा परेशानी उठानी पड़ती है।

**इंदर राजा गरजा, म्हारा जिया लरजा, (मार०)**

बादल गरजे और गल्ले का व्यापारी घबराया, (कि वर्षा होने से खरीद कर रक्खे हुए गल्ले को मनमाने भाव नहीं बेच सकेगा।)

म्हारा = मेरा।

**इकरारे जुर्म, इसलाहे जुर्म, (फा०)**

अपराध का स्वीकार कर लेना ही उसका माफ़ हो जाना है।

**इकलख पूत सवालख नाती, उस रावन के दीया न बाती**

रावण का इतना बड़ा परिवार होने पर भी उसके मरते समय कोई नहीं बचा था। (भाव यह है कि बडे परिवार का गर्व नहीं करना चाहिए।)

**इक्का, वकील, गधा; पटना शहर में सदा, (पू०)**

पटना में इक्का, वकील और गधा इन तीन की अधिकता है।

**इक्के चढ़के जहां जाय, पैसे देके धक्के खाय**

इक्के की सवारी में बड़े हिचकोले लगते हैं। एक मुसीबत की चीज है।

**इजारा उजाड़ा**

ज़मींदार की जमीन जोत पर लेने से किसान बर्बाद हो जाता है।

(यह ज़मींदारी-प्रथा के ज़माने की बात है। सं०)

**इज्ज़त की आधी भली, बेइज्ज़त की सारी बुरी**

सम्मान के साथ दी गई वस्तु थोड़ी भी अच्छी होती है।

**इज्ज़त के आगे माल क्या चीज़ है?**

प्रतिष्ठा के सामने धन कोई वस्तु नहीं।

**इज्ज़तवाले की कमबख्ती है**

क्योंकि उसे तरह-तरह के खर्चे या झंझटें लगी रहती हैं।

**इतना खाए जितना पचे**
(१) आहार में संयम बर्तना चाहिए।
(२) रिश्वतखोरों के लिए भी क०।

**इतना झूठ बोलो जितना आटे में नमक**
बोलना ही पड़े, तो झूठ उतना ही बोले जितना खप सके।

**इतना नफा खाओ जितना आटे में नोन, (व्य०)**
अधिक मुनाफा खाना ठीक नहीं।

**इतना पक्का कि बासी टिक्का**
इतना भोजन बना कि बासी बच रहा।
टिक्का =मोटी रोटी।

**इतनी तो राई होगी जो रायते में पड़े**
इतना साधन तो है कि हमारा काम चल जाए।

**इतनी भी अक्ल अजीरन होती है!**
क्या इतनी थोडी अक्ल से ही तुम्हारा पेट फूलने लगता है?
अर्थात तुम में तो थोड़ी भी सहज बुद्धि नही।

**इतनी सी जान, गज भर की जबान!**
जीभ के बातूनीपन की ओर संकेत है। जब कोई लड़का बड़ों के सामने बढ-चढकर बातें करता है, प्रायः तब क०।

**इतने की तो कमाई नहीं, जितने का लंहगा फट गया, (स्त्रि०)**
किसी काम में लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होना।
कोई दुश्चरित्र स्त्री कह रही है।

**इत्तफ़ाक बड़ी चीज है**
एका बड़ी चीज है, उससे सब काम बनते हैं।

**इत्तफ़ाक में ही कुव्वत है**
एका मे ही बल है।

**इधर काटा उधर पलट गया**
दग़ाबाज के लिए कहते हैं।
(सांप के विषय में कहा जाता है कि वह काटते ही पलट जाता है, तभी उसका विष चढ़ता है।)

**इधर क़िबला कुतुब, उधर खदीजा, मूतूं किधर?**
इधर मक्का, उधर खदीजा कीं कब्र, मैं पेशाब करूं तो किधर?
दोनों ओर संकट।
(खदीजा मुहम्मद साहब की पत्नी का नाम था। उनकी जिस तरफ़ कब्र है, उस ओर और मक्का की ओर भी मुंह करके मुसलमान पेशाब नही करते।)

**इधर गिरूं तो कुआं, उधर गिरूं तो खाई**
(१) बचने की कोई सूरत नज़र न आना।
(२) गहरे असमंजस में पडना।

**इधर न उधर, यह बला किधर**
यकायक किसी नई विपत्ति के आने पर।

**इनकी नाक पर गुस्सा रखा ही रहता है**
ज़रा-ज़रा-सी बात पर नाराज होते हैं।

**इनके चाटे रूख नही जमते**
अर्थात बहुत ही धूर्त्त हैं।
(टिड्डियों के आक्रमण से पेड नष्ट हो जाते हैं। उसी से मुहावरा लिया गया है।)

**इनके यहां तो चमड़े का जहाज चलता है**
वेश्याओं के लिए क०।

**इनको तो पत्थर मारे मौत नहीं**
अर्थात बड़े निर्लज्ज हैं।

**इनको भी लिखो**
जब किसी विषय मे औरों की तरह कोई स्वयं भी मूर्खता प्रकट करे, तब हँसी में क०।
(इस पर कथा है कि एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि संसार मे अंधो की संख्या अधिक है या आंखवालो की। बीरबल ने जबाब दिया—जहांपनाह, अंधो की सख्या अधिक है। बादशाह ने कहा—साबित करो, कैसे? बीरबल तब एक मुंशी को साथ लेकर निकले और एक जगह सड़क पर कंकड़ चुनने लगे। जो आदमी वहां से निकलता, वही पूछता—'आप यह क्या कर रहे हैं?' इस पर बीरबल हरेक के लिए अपने मुंशी से कहते जाते, अच्छा इनका भी लिखो, यानी इनका भी नाम अंधों में लिखो। इसलिए कि ये देख रहे

हैं कि हम क्या कर रहे हैं। फिर भी हमसे सवाल करते हैं। बीरबल ने जब बादशाह को वह सूची दिखाई, तो उनकी समझदारी पर वह बड़ा खुश हुआ।)

**इन तिलों में तेल नहीं**

अर्थात यहां से कुछ पाने की आशा मत रखो। बहुत धूर्त्त या कंजूस के लिए क०।

**इन बेचारों ने हींग कहां पाई जो बगल में लगाई**

जब कोई सीधा-सादा गरीब आदमी बदमाशों के चक्कर में पड़कर कोई जघन्य अपराध कर बैठे, तब क०।

(हींग की तेज़ गंध बहुतों को पसंद नहीं होती, कोई शरीर मे लगाना पसंद नहीं करता।)

**इन्शाअल्लाताला, बिल्ली का मुंह काला**

प्रायः मजाक मे उस समय क०, जब किसी के मुह से कोई बहुत भोंड़ी या हास्यजनक बात निकल जाए।

इन्शाअल्लाताला – ईश्वर ने चाहा तो।

**इन्सान पानी का बुलबुला है**

मानव-शरीर क्षणभंगुर है।

**इन्सान में क्या रखा है?**

मर जाने पर उसे कोई नही पूछता। अथवा बड़ी आसानी से चल बसता है।

**इन्सान ही तो है**

इस कारण उससे भूल होना स्वाभाविक है।

**इनायते शाही किसी की मीरास नहीं**

बादशाह की मेहरबानी किसी की बपौती नही, यानी वह किसी पर भी खुश हो सकता है।

**इब्तिदा से इन्तहा तक**

आदि से अंत तक।

**इब्तिदाये इश्क़ है, रोता है क्या?**
**आगे आगे देखिए, होता है क्या?**

किसी काम को शुरू करके जब कोई उसकी कठिनाइयों को देखकर झींकने लगे, तब क०।

इब्तिदा=प्रारंभ।

**इराकी पर जोर न चला, गधी के कान उमेठे**

जबर्दस्त से वश न चलने पर कमजोर पर गुस्सा।

इराकी=घोड़े की एक नस्ल, इराक देश का घोड़ा।

**इल्म का पढ़ना लोहे के चने चबाना है**

विद्या सीखना एक बहुत कठिन काम है।

**इल्म दर सीना, न दर सफ़ीना, (फा०)**

ज्ञान तो मनुष्य के हृदय में रहता है, किताबों में नहीं।

**इल्लत जाये धोये-धाये, आदत कहां जाये?**

गंदगी तो धोने से छूट सकती है, पर बुरी आदत नही छूटती।

**इश्क़ के कूचे में आशिक़ की हजामत होती है**

इश्क में आदमी बर्बाद हो जाता है।

**इश्क़ छिपाने से नहीं छिपता**

प्रेम को छिपाया नहीं जा सकता।

**इश्क़, मुश्क़, खांसी खुश्क, खून-खराबा छुपता नहीं**

प्रेम, कस्तूरी की गंध, सूखी खांसी और खून ये छिपते नही।

पाठा०—इश्क, मुश्क, खांसी, खुशी..।

**इश्क़ में आदमी के टांके उखड़ते हैं**

यानी इतने कष्ट भोगने पड़ते है कि अक्ल दुरुस्त हो जाती है।

**इश्क़ में शाह और गदा बराबर**

प्रेम के मामले में राजा और रंक सब बराबर।

**इश्क़ या करे अमीर या करे फ़क़ीर**

अमीर इसलिए कि उसके पास खर्च करने को पैसा होता है, फकीर इसलिए कि उसे किसी बात का भय नही होता।

**इश्क़े मजाजी से इश्क़े हक़ीकी हासिल होता है**

मानवीय प्रेम से ईश्वरीय प्रेम प्राप्त होता है।

**इसका दुख दिखावे मुख**

चेहरे से इसका दुख प्रकट हो रहा है।

**इस कान सुनी, उस कान निकाल दी**

किसी की बात पर ध्यान न देना।

**इसके पेट में दाढ़ी है**

कम उम्र का होकर भी बड़ा सयाना है।

**इस घर का बाबा आदम ही निराला है**
इस घर की सब बातें ही अनोखी हैं।
**इसे तरह कांपता है, जैसे कसाई से गाय**
बुरी तरह भयभीत है।
**इसमें भी कुछ भेद है**
अवश्य इसमें कुछ रहस्य है।
**इस हाथ लेना, उस हाथ देना, (व्य०)**
नकद सौदा। किसी काम का तुरंत फल मिलना।
**इस्सर आए, दलिद्दर जाए**
ऐश्वर्य आए और दरिद्रता भाग जाए। कामना। (दीपावली की रात को आले-कोने साफ करती हुई हिन्दू स्त्रिया उक्त वाक्य कहती है।)
**इस्सर से भेंटा नहीं, दलिद्दर से बिगाड़**
जानबूझकर हानि का काम करना।

**ईंट का घर मिट्टी कर दया, (स्त्रि०)**
बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।
**ईंट का घर, मिट्टी का दर**
बेतुका या बदनुमा काम।
दर=दरवाज़ा।
**ईंट की देवी, झामे का परसाद**
जैसी देवी वैसी पूजा। जैसे के साथ तैसा व्यवहार।
झामा=ईंटो का रोड़ा।
**ईंट की पांत, दम मदार**
जब कोई व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से बाहर काम करने को तैयार हो, तब उससे व्यग्य मे क० कि हा, बस मदार साहब की ताकत से ईंटो की कतार मे कोई करामात पैदा होनेवाली है!
(कहा जाता है कि मकनपुर मे शेख बदरुद्दीन उर्फ़ मदार साहब की कब्र पर एक पत्थर अधर में लटक रहा है।)
**ईंट की लेनी, पत्थर की देनी**
ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाता है।

**ईंट से ईंट बज गई**
घमासान लड़ाई छिड़ गई।
**ईतर के घर तीतर, बाहर बांधूं कि भीतर**
किसी के घर जब कोई नई वस्तु आए और वह उसे सबको दिखाता फिरे, तब क०।
ईतर—इतर, क्षुद्र।
**ईतर के घर तीतर, घड़ी बाहर घड़ी भीतर**
दे० ऊ०।
**ईद के चांद हो गए**
अर्थात तुम्हारे तो दर्शन ही नही होते।
(मुसलमानो मे रमज़ान महीने के समाप्त होने पर उत्सुकतापूर्वक चाद देखते है, पर वह बहुत कम दिखाई देता है। चांद देखना सब चाहते है, पर उसके दर्शन बिरल होते है।)
**ईद पीछे चांद मुबारक**
शुभ अवसर के बाद बधाई। बे-मौके का काम।
**ईद पीछे टर**
ईद के बाद खुशिया मनाना व्यर्थ है।
काम तो मौके पर ही करना चाहिए।
(कई जगह ईद के दूसरे दिन एक मेला लगता है, जो टर का मेला कहलाता है। फैलन ने भी अपने अग्रेज़ी-हिन्दी शब्दकोश मे टर का अर्थ दिया है, ईद के बाद का।)
**ईद पीछे टर, बरात पीछे धौंसा**
ईद के बाद खुशियां मनाना और बरात के बाद बाजा बजाना दोनो ही व्यर्थ हैं।
**ईद, बकरीद, शबरात कुटनी, दाहा करे हाय, हाय, फगुआ बिसनी**
ईद, बकरीद और शबरात मे कुटनी बुलाते हैं। घर मे किसी की मौत होने पर हाय-हाय करते है और होली पर रडिया नचाते हैं।
(मुसलमानो पर कटाक्ष।)
**ईसा बदीने खुद, मूसा बदीने खुद, (फा०)**
ईसा अपने धर्म पर चलें, मूसा अपने धर्म पर।
अपना धर्म ही सबसे श्रेष्ठ होता है।

**उंगलियां नचाना अच्छा नहीं,** (लो० वि०)
(उंगलियां नचाना एक अशुभ कार्य मानते हैं।)

**उंगली पकड़ते पहुंचा पकड़ना**
थोड़ा सहारा मिलने पर किसी के गले पड़ जाना।

**उकतानी कुम्हारी, नाखून से मट्टी खोदे**
जल्दबाज कुम्हारिन फावड़े की जगह नाखून से ही मिट्टी खोदती है।
उतावलापन दिखाना।

**उखली में मुसरा, माई-बाप बिसरा,** (पू०)
खाने-पीने को मिला नहीं कि फिर मां-बाप की भी याद नही आती।
(उखली में मुसरा से मतलब है कूटने के लिए धान होना।)

**उखली में सिर दिया, तो मूसलों का क्या डर?**
किसी कठिन काम को करने का बीड़ा ही उठाना, तो परेशानियो से क्या डरना?

**उगत उगे मह भरे, बिसवत ऊगे जाय,** (कृ०)
देर से उगनेवाली फसल के जल्दी उग आने पर वह सूख जाती है। जिस काम में जितना समय लगेगा, वह लगना चाहिए, तभी वह ठीक होता है।

**उगले तो अंधा, खावे तो कोढ़ी,** (लो० वि०)
घोर असमंजस की स्थिति।
(लोक-विश्वास है कि छंछूदर को पकड लेने पर सांप अगर उसे निगल ले, तो कोढ़ी हो जाता है और उगल दे तो अधा।)

**उजड़े घर का बलेंड़ा**
ऐसा निकम्मा आदमी, जिसका घर बर्बाद हो चुका है।
बलेंड़ा=छप्पर के बीच मे लगनेवाली लंबी लकड़ी।

**उजले उजले सब भले, उजले भले न केस।**
**नारि नवे न रिपु दबे, न आदर करे नरेस।**
और सब वस्तुएं सफेद अच्छी होती हैं, पर बालो का सफेद होना अच्छा नहीं। (क्योंकि बुढ़ापे मे फिर न औरत ही कहना मानती है, न शत्रु भय खाता है, और न राजा ही आदर करता है।

**उज्ज्वल बरन अधीनता, एक चरन दो ध्यान।**
**हम जाने तुम भगत हो, निरे कपट की खान।**
बगले के लिए कहा गया है—देखने में साफ-सुथरे हो, विनम्र हो, एक पैर से खड़े हुए हो, लेकिन तुम्हारा ध्यान दो जगह बंटा हुआ है। हम समझे तुम कोई साधु हो, किन्तु तुम तो बड़े कपटी निकले।
(बगुला नदी या तालाब के किनारे चुपचाप खड़े होकर यकायक मछली पकड लेता है। उसी से बगुला भगत मुहा० बना। दोहे में धूर्त या पाखंडी की ओर इशारा है।)

**उज्रे गुनाह बदतर अज़ गुनाह,** (फा०)
अपराध छिपाना अपराध करने से कही अधिक बुरा है।

**उठकर फली सरीकी तो फोड़ती है ही नहीं**
उठकर फली जैसी कोई वस्तु भी नही फोड़ती। अर्थात बड़ी आलसिन है।

**उठ गए ना जानिए जो टट्टी दे गए बार**
जो दरवाजे पर ताला लगाकर चला गया हो, उसे मरा नही समझ लेना चाहिए।

**उठ जा तड़के उठ जा भाई, जित तन्ने दीखे लाभ भलाई**
सुबह उठते ही आदमी को अपने काम-धंधे में लग जाना चाहिए।

**उठती जवानी मांझा ढीला**
निकम्मे या आलसी व्यक्ति के लिए क०।
मांझा=कांठी, शरीर के रंग-रेशे।

**उठती पेंठ**
चूकता अवसर।
(बाजार के उठ जाने पर सन्नाटा छा जाता है और फिर कोई वस्तु नहीं मिलती—उसी से मुहावरा बना।)

**उठती पैंठ आठवें दिन**
बाजार के उठ जाने पर फिर आठवें दिन ही चीज मिलती है।
मतलब अवसर से लाभ उठा लेना चाहिए।
(गांवों में प्रायः आठवें दिन बाजार लगता है और उसमें आवश्यक वस्तुएं बिकने आती है।)

**उठते लात, बैठते घूंसा, (स्त्रि०)**
किसी के साथ बहुत बुरा व्यवहार करना।

**उठते ही टांग टूटी**
कार्यारंभ करते ही विघ्न।

**उठाऊ चूल्हा**
ऐसा व्यक्ति जो परिवार के साथ एक जगह न टिके।
प्रायः नौकरपेशा आदमी के लिए क०।

**उठाओ मेरा मकना, मैं घर संभालूं अपना, (स्त्रि०)**
कोई विवाहिता स्त्री ससुराल में आते ही कह रही है—'हटाओ मेरा यह परदा, मै अपना घर सभालूगी।' (रौब जमाना)

**उठा बगूला प्रेम का, तिनका चढ़ा अकास।**
**तिनका तिन में मिल गया, तिनका तिनके पास।**
आत्मा के संबंध मे कहा गया है कि मरने पर देह पंचतत्वों में मिल जाती है और आत्मा ईश्वर में जाकर लीन हो जाती है।
'तिनका' के दो अर्थ है—सूखी घास का टुकड़ा और 'उसका'।

**उड़ चल पंछी पिय के देश, (स्त्रि०)**
किसी विरहिणी का कहना।

**उड़द कहै मेरे माथे टीका, मो बिन ब्याह न होवे नीका**
उड़द का विशेष महत्व है।
उड़द का महत्व। (हिन्दुओं के यहां विवाह आदि में उड़द की विशेष आवश्यकता पड़ती है। 'माथे टीका' से मतलब उस सफेद दाग से है, जो उड़द पर उसके अंकुरित होने के स्थान पर होता है।)

**उड़द के आटे की तरह ऐंठते हैं**
अर्थात बड़े अहंकारी हैं।

**उड़दी उड़दों की भली, रस की आछी खीर।**
**लाज जो राखे पीव की, वह भी आछी बीर। (ग्रा०)**
बड़ी तो उड़द की, और खीर गन्ने के रस की अच्छी होती है, और फिर वह स्त्री भी अच्छी है, जो अपने प्रियतम का मान रखती है।

**उड़ता गप्पा**
मुफ्त का माल।

**उड़ती उड़ती ताक चढ़ी**
किसी उड़ती खबर का सच बन जाना।
ताक चढ़ना=(मु०) महत्व मिल जाना।

**उड़ते के पर काटे हैं**
बहुत चालाक है।

**उड़ भंभीरी, सावन आया**
चल, उड़ भंभीरी, सावन आ गया। अर्थात जिस अवसर की प्रतीक्षा मे तू थी, वह आ गया; अब आनद मना।
भंभीरी=तितली, पंखी।

**उड़याइल सतुआ पितरन के दान, (पू०)**
जो सत्तू उड़ गया वह पितरों को अर्पित।
निकम्मी वस्तु किसी दूसरे के मत्थे मढ़कर एहसान करना।
मुफ्त का यश लूटना।

**उढ़ली बहू बलेंड़े सांप दिखावे, (स्त्रि०)**
दुश्चरित्र स्त्री छप्पर में सांप बतलाती है।
मतलब—बहाना करके घर से भाग निकलना चाहती है। जब कोई काम से बचने का झूठ बहाना करे, तब क०।
उढली=पर-पुरुष से प्रेम करनेवाली विवाहिता स्त्री।

**उत औखाद कुछ काम न आवे, मौत पकड़ जी जिसका लेवे**
मौत के सामने छोटे-बड़े किसी की नही चलती।
औखाद=औकात (अ०) हैसियत।)

**उतका जाना नाहीं आछा, जित गुंडन का होवे बासा**
जहां गुंडे रहते हों, वहां नही जाना चाहिए।

**उतको भूल न जा रे भाई, जित होती हो मार-पिटाई**
लड़ाई-झगड़े के स्थान पर भूलकर भी न जाए।

**उत तू बुवा बाजरा भाई, जित होवे थल को मुकताई।**
खूब जुती हुई भुरभुरी जमीन में ही बाजरा बोना चाहिए।
मुकताई=मुकतास, खुलाव। (मुक्त से शब्द बना है।)

**उत तेरा जाना भूल न सोहे, जो ताने देखत कूकर होवे**
ऐसी जगह कभी नहीं जाना चाहिए, जहां लोग तुम्हे देखते ही कुत्ते की तरह काटने दौड़े।
ताने = तुझे।

**उत तेरा जाना निपट भलेरा, जित होवे तेरे मित का डेरा**
जहां मित्र हो, वही जाना चाहिए।

**उत दाता देवे उसे, जो ले दाता नाम।**
**इत भी सगरे ठीक हों, उसके करतब काम।**
भगवान का नाम लेने से परलोक मे भी लाभ होता है और इस लोक में भी।

**उत भी तुम मत बैठो प्यारे, जित बैठे हो बैरी सारे**
जहां तुम्हारे शत्रु बैठे हों, वहां नहीं जाना चाहिए।

**उत मत कभी तू जा रे मीता, जित रहता हो सिंह औ चीता**
जहां शेर और चीतों का वास हो, वहां कभी न जाना चाहिए।

**उत मत कभी न बैठ तू, जित कुन्यायी लोग।**
**न्याव भूल कुन्याव का, बांधे मिलकर जोग।**
जहां न्याय की जगह अन्याय हो रहा हो, वहां कभी न जाए।

**उत मत गेहूं बुवा रे चेले, जित हों थल पाथर औ ढेले**
जिस जमीन में पत्थर और ढेले हो, वहां गेहूं नही बोना चाहिए।

**उत मत रो अपना दुख जाकर, जित आवें बैरी उमड़ाकर**
ऐसी जगह, जहां शत्रु बैठे हो; जाकर अपना दुखड़ा नहीं रोना चाहिए।

**उतर गई लोई, तो क्या करेगा कोई?**
जिसकी इज्जत चली गई, उसे फिर किस बात का डर? निर्लज्ज के लिए क०।
लोई=ऊनी चादर।
लोई उतर जाना=मु० नंगे हो जाना; इज्ज़त चली जाना।

**उतरा कबीर सराय में, गठकतरे के पास।**
**जस करसी तस पावसी तू, क्यों भयो उदास।**
गठकतरे से भेंट होने पर अगर वह जेब काट ले, तो इसमें उदास होने की क्या बात? जो जैसा करेगा, वैसा फल पाएगा।

**उतरा घाटी हुआ माटी**
गले के नीचे उतरकर अन्न मिट्टी हो जाता है। (मृत शरीर के लिए भी कह सकते हैं। श्मशान में जाकर मिट्टी हो जाता है।)

**उतरा छितरा जो हुआ, बाको सार न होय।**
**साध कहे रे बालके, लाख जतन कर लेय।**
एक बार जिसकी प्रतिष्ठा चली जाती है, वह फिर नही संभलता; चाहे लाख प्रयत्न करो।

**उतरा शहना, मर्दक नाम**
पद से अलग हुआ कोतवाल नामर्द कहलाने लगता है।
पद से ही आदमी की प्रतिष्ठा होती है।

**उतरे जी से चीज जो, वाकी सार न होय।**
**तू ऐसा मत कीजियो, जगत बिसारे तोय।**
मन से उतरी चीज़ का फिर कोई मूल्य नहीं रहता। इसलिए तुम्हे कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए कि लोग तुम्हे भूल जाएं, अर्थात तुम उनके मन से उतर जाओ।

**उत से अंधा आय है, इत से अंधा जाय।**
**अंधे से अंधा मिला, कौन बतावे राय।**
जहां दो मूर्ख मिल जाएं, वहां कौन किसे समझाए?

**उत ही भला है बैठना, जित करके शुभ ज्ञान।**
**मुल्ला पंडित बैठ कर, बांचे बेद पुरान।**
जहां ज्ञान की बातें हो रही हों और वेद-पुराणों का पाठ हो, वही बैठना चाहिए।

**उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा**
उतावला पागल होता है। धैर्यवाला पुरुष ही गंभीर कहलाता है

**उत्ती के निन्नानबे, बारह पंजे साठ**
मूर्ख के लेखे निन्नानवे और साठ बराबर होते हैं।
**उत्तम खेती मध्यम बान, निखद सेवा भीख निदान**
खेती करना सबसे उत्तम है, फिर व्यापार; नौकरी बुरी चीज है और भीख मागना तो सब से बुरा है। निखद= निकृष्ट।
(मराठी मे इसका एक रोचक रूप सुनने को मिलता है—उत्तम शेती मध्यम व्यापार, कनिष्ट चाकरी; निदान भीक, न मिळे भीक तर वैद्यगिरी शीक।)
**उत्तम गाना, मध्यम बजाना।**
कठ सगीत सब से श्रेष्ठ, उसके बाद वाद्य।
**उत्तम से उत्तम मिले, मिले नीच से नीच।**
**पानी से पानी मिले, मिले कीच से कीच।**
जो जैसा होता है, वह वैसे की सगत करता है।
**उत्तर की न्ही स्त्री, दक्खिन ब्याहो जाय।**
**भाग लगावे जोग जब, कुछ ना पार बसाय।**
कोई उत्तर की स्त्री दूर देश दक्षिण मे ब्याही जाए, तो इसके लिए कोई क्या कर सकता है? यह सब तो भाग्य की बात है।
**उत्तर गुरु, दखन मां चेला, कैसे विद्या पढ़े अकेला?**
गुरु कही हो और चेला कही हो, तो फिर पढ़ाई तो हो चुकी।
**उत्तर जाव कि दक्खन, वही करम के लक्खन**
निकम्मे आदमी की अकर्मण्यता दूर नही होती, वह कही भी जाए।
(प्र० पा०—जाव पूत दक्खन...।)
**उत्तर रहे बतावे दक्खन, बाके आहे नाहीं लक्खन।**
जो कहे कुछ और करे कुछ, ऐसे आदमी से सतर्क रहना चाहिए।
**उत्तरा हार जो बरसा होवे, काल पिछोकर जाकर रोवे**
उत्तरा नक्षत्र मे वर्षा होने से काल पिछवाडे बैठकर रोता है, अर्थात फसल अच्छी होती है।
(उत्तरा नक्षत्र भाद्र मास के अत में लगता है। इन दिनो की वर्षा गेहूं की फसल के लिए बहुत अच्छी मानी जाती है। फैलन ने यह कहावत गलत लिखी है। उत्तरा की जगह 'उत्तर' लिखा है। और उसका अर्थ 'नार्थ' किया है। हिन्दी के कुछ कहावत संग्रहों में उसका अंधानुकरण कर दिया गया है। इसी प्रकार की एक और कहावत है—'बरस लगी ऊतरा, गेहूं न खायें कूतरा'।)
**उथली रकाबी, फुलफुला भात, लो पंचों हाथ ही हाथ**
खिलाने-पिलाने मे जब कोई कंजूसी करे, तब उसके प्रति व्यग्य मे क०।
(किसी कजूस ने विवाह के अवसर पर उथली थालियो मे फूला-फूला भात परोसा। वह इतना कम था कि लोगो का उससे पेट ही नही भरा।)
**उद्यम से दलिद्दर घटे**
परिश्रम या काम-धधे से दरिद्रता दूर होती है।
**उधार का खाया कोई नहीं भूलता**
उधार लिया सबको याद रहता है।
**उधार खाना और फूस का तापना बराबर है**
फूस की आग से जैसे बहुत देर तक नही तापा जा सकता, वैसे ही उधार के पैसे से भी अधिक दिनो काम नही चलाया जा सकता।
**उधार खाए बैठे है**
किसी काम को करने के लिए तुले बैठे है।
**उधार दिया, गाहक खोया, (व्य०)**
क्योकि पैसा मागने से वह नाराज होता है या फिर दुबारा आता नही।
**उधार दिया गाहक खोया, सदका दिया रद बला, (व्य०)**
उधार देने से गाहक हाथ से जाता है, दान देने से पुण्य होता है।
(मतलब, उधार की अपेक्षा किसी को मुफ्त मे चीज़ देना अच्छा।)
**उधार दीजे, दुश्मन कीजे, (व्य०)**
पैसा उधार देना जान बूझकर लोगो को अपना दुश्मन बनाना है, क्योकि वापस मागने से बुराई पैदा होती है।
**उधार लेना, लड़ाई मोल लेना, (व्य०)**
दे० ऊ०।
**उधार बड़ी हत्या है, (व्य०)**
उधार लेना एक मुसीबत है।

**उधेड़ के रोटी न खाओ, नंगी होती है, (लो० वि०)**
उधेड़ कर रोटी खाना अच्छा नहीं, उससे बदनामी होती है।
**उनके पेशाब में चिराग जलता है**
यानी बड़ा रोब-दाब है।
**उनईस बीस तो भइले चाहे, (भो०)**
कम या ज्यादा तो हर चीज होती ही है। अथवा दो वस्तुओ में थोड़ा-बहुत अंतर तो होगा ही।
**उन्नीस बीस का फ़र्क़ तो होता ही है**
दे० ऊ०।
**उपड़े झांट मदार की, शुआ चले अजमेर**
कोई आदमी अगर (मकनपुर न जाकर) अजमेर जाता है, तो इसमे मदार साहब का क्या बिगड़ता है?
(अजमेर मे मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है और मकनपुर मे मदार साहब की। दोनो ही स्थानो पर मुसलमान बड़ी संख्या मे जियारत के लिए जाते हैं।)
**उर्दू का मुहावरा दिल्ली पर खतम है**
(१) बढिया मुहावरेदार उर्दू दिल्ली में ही सुनने को मिलती है। अथवा
(२) दिल्ली में जो (उर्दू) जबान बोली जाती है, उसे ही मुहावरेदार मानना चाहिए।
**उलझ जाएगा तो सुलझ ही रहेगा**
घर-गृहस्थी के धंधे मे लग जाएगा, तो कुछ सुधर ही जाएगा।
(प्रायः अविवाहित आवारा लड़के के लिए क०)।
**उलझना आसान, सुलझना मुश्किल**
किसी झगड़े मे पड़ना तो आसान होता है, किन्तु उससे छुटकारा पाना मुश्किल होता है।
**उल्टा चोर कोतवाल डांटे**
किसी की हानि करके उल्टा उसी पर रोब जमाना।
(प्र० पा०—उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।)
**उल्टी खोपड़ी औंधा ज्ञान**
मूर्ख आदमी। कहा जाय कुछ, समझे कुछ।
**उल्टी गंगा पहाड़ को चली**
जहां जिस वस्तु की आवश्यकता नहीं, उसका वहां जाना, अथवा असंभव घटना के लिए भी कह सकते हैं।
**उल्टी गंगा बहाना**
उल्टा काम करना।
**उल्टी टांगें गले पड़ीं**
उल्टे विपत्ति में पड़ गए।
**उल्टी टोपी, गुड़ चने**
बच्चों की तुकबंदी, जिसका वे खेल में प्रयोग करते हैं।
(उल्टी टोपी लगा रखी है, चलो गुड़-चने खिलाओ।)
**उल्टी वाकी रीत है, उल्टी वाकी चाल।**
**जो नर औंढ़ी राह में, अपना खोवे माल।**
जो आदमी गलत काम में पैसा खर्च करे, समझना चाहिए, उसकी अक्ल मारी गई है।
**उल्टी माला फेरना, (लो० वि०)**
(१) किसी का बुरा चाहना। कोसना।
(२) उल्टा काम करना।
**उल्टी सैफी पढ़ना, (मु०, लो०वि०)**
दे० ऊ०।
(सैफी एक प्रकार का मारण-मत्र है, जिसका प्रयोग शत्रु के नाश के लिए किया जाता है। इसमे एक नंगी तलवार सामने रखकर मत्र पढ़कर फूकते है, साथ ही शत्रु का नाम लेते जाते है।)
**उसकी गिरह का क्या जाता है?**
उसका क्या बिगड़ता है?
**उसकी जात वह वाहू-ला शरीक है**
वह (ईश्वर) अद्वितीय है।
**उसकी टांगें उसी के गले पड़ीं**
अपनी करतूत से स्वयं ही विपत्ति में फंस जाना। अथवा दूसरे को फंसाने जाकर स्वयं फंस जाना।
**उसकी तूती बोल रही है**
अर्थात रोबदाब है। सब उसकी इज्जत करते हैं।
(तूती बोलना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है ख्याति या प्रतिष्ठा बढ़ना।)

**उसकी सीख न लीजियो, जो गुरु से फिर जाय।**
**विद्या सूं खाली रहे फिर पाछे पछताय।**
जो गुरु को ही धोखा दे, उससे सतर्क रहना चाहिए। ऐसा आदमी विद्या नहीं सीख पाता और पीछे पछताता है।

**उस कूकर से बचकर रहे, जाको जगत कटखना कहे**
बदनाम आदमी से बचना चाहिए।

**उसके आगे सीस नवावे, बड़ा बड़ेरा जिसको पावे**
बड़े का सम्मान करना चाहिए।

**उसके कान पर एक जूं नहीं चलती**
वह किसी की बात नहीं सुनता।
(प्र० पा०—उसके कान पर जूं नहीं रेंगती।)

**उसके भाग बड़े अलबेले, जो दौलत में खावे खेले।**
वह सचमुच भाग्यशाली है, जिसका जीवन, सुख-चैन से बीते।

**उसके राज में गायन भी गाभ डाले**
गर्भवती गर्भ छोड़ देती है। मतलब बड़ा दबदबा है।

**उसको तो पत्थर मारे मौत नहीं**
बड़ा निर्लज्ज है।

**उसको वहां मारे, जहां पानी भी न मिले**
दुष्ट के लिए क०।

**उसको सब की फ़िक्र है**
भगवान सबकी खबर लेता है।

**उसको सीख न दे कभी, जो हो कहर नीच।**
**लोह मेख नाहीं धंसे, कहूं पाथर बीच। (प्रा०)**
नीच को शिक्षा देना वैसा ही व्यर्थ है, जैसा पत्थर में लोहे की कील ठोकने का प्रयत्न करना।

**उस जातक पर प्यार जताओ, मात-पिता बिन जिसको पाओ**
अनाथ पर दया करनी चाहिए।

**उस जातक से करो न यारी, जिस की माता हो कलहारी**
जिसकी मां झगड़ालू हो, उस लड़के से प्रेम नहीं करना चाहिए।

**उस दिन भूलें चौकड़ी, वली, नबी औ पीर। (मु०)**
**लेखा लेवे जिस दिना, कादर पाक क़दीर।**
ईश्वर जिस दिन कर्मों का लेखा लेने बैठेगा उस दिन क्या संत, क्या पैग़ंबर और क्या पीर सभी अपनी चौकड़ी भूल जाएंगे। कादर, पाक, क़दीर—सर्वशक्तिमान, पवित्र और समर्थ ईश्वर के विशेषण।

**उस नर के भी एक दिन, पड़े गले में फांद।**
**जिसने चोरी लूट पर लई कमरिया बांध।**
चोरी और लूट करनेवाला आदमी कभी न कभी पकड़ा ही जाता है।

**उस नर को ना सीख सुहावे, नेह फंद में जो फंस जावे**
प्रेम-फंद में पड़े आदमी को सीख अच्छी नहीं लगती।

**उस नर से तुम मिलो न कोई, जा को देखो कपटी होई**
कपटी और धोखेबाज का साथ नही करना चाहिए।

**उस पुरखा का नाह भरोसा, जो ले चीज़ दिखावे ठेंसा**
जो चीज़ लेकर न लौटावे, ऐसे आदमी का भरोसा नहीं करना चाहिए।

**उस पुरखा की बात पर, नाह भरोसा राख।**
**बार बार जो बोले झूठ, दिन भर मां सौ लाख।**
जो हमेशा ही झूठ बोलता रहता हो, उसका विश्वास न करे।

**उस बस्ती में तू कभी, कीजो मत विश्राम।**
**जो ही नामी देश में, ठग चोरों का ग्राम।**
ठग और चोरों की बस्ती में कभी नहीं जाना चाहिए।

**उससे तू मिल दौड़ कर, जो नर ज्ञानी होय।**
**दाना दुश्मन भी भला, कह गये यह सब कोय।**
हमेशा समझदारों के पास बैठना चाहिए। पढ़ा-लिखा दुश्मन भी अच्छा होता है।

**उसी की जूती, उसी का सिर**
उसी के साधनों से उसी की हानि। किसी को मूर्ख बनाकर जब उसका पैसा खाया जाए, प्रायः तब क०।

**उसी घड़ी तू टार दे, जो बैरी घर आय।**
**ऐसा न हो धोये से, बैठे पैर जमाय।**
अर्थ स्पष्ट है।
धोये से = धोखे से।

**उसी राह चल तू जो गुरु तुझे बताय।**
**जो विद्या के थान पर तुरत ठिकाना पाय।**
स्पष्ट।

**उसी कुलपर है चढ़ा, उसी की जड़ कटवाय।**
**वह मूरख तो एक दिन, गिर दबकर मर जाय।**
स्पष्ट।

**उसे तो धोनी भी नहीं आती**
शौच के लिए पानी लेना भी नहीं जानता। (इतना अनाड़ी है।)

**उस्ताद, हज्जाम, नाई, मै और मेरा भाई, घोड़ी और घोड़ी का बछेड़ा, और मुझको तो आप जानते ही है।**
किसी वस्तु के बंटते समय, उसे घुमा-फिराकर कई नामों से लेना।
(एक नाई किसी दावत में गया। वहां लोगो ने पूछा—तुम कै आदमी हो? नाई ने उपर्युक्त प्रकार से सात की संख्या बताई, जब कि वास्तव में वह अकेला ही था।)

## ऊ

**ऊंघते को ठेलते का बहाना**
कोई स्वयं ऊंघ कर गिर रहा था। इतने में दूसरे का धक्का लगा। तब उसे कहने का मौका मिल गया कि तूने मुझे पटक दिया।
(जब किसी काम के बिगड़ जाने का सारा दोष किसी दूसरे के मत्थे मढ़ दिया जाए, जब कि वह काम अधिकांश में अपनी ही भूल से बिगड़ा है, प्रायः तब क०।)

**ऊंच नीच में बोई क्यारी, जो उपजी सो भई हमारी**
ऊबड़-खाबड़ जमीन में खेती करने से जो मिल जाय, उसे ही बहुत समझना चाहिए।

**ऊंच बड़ेरी, खोखर बांस, ऋण लैलों बारह मास**
बारहो महीने उधार के पैसे पर जीवन-निर्वाह करना वैसा ही है, जैसा कि ऊंचे छप्पर में खोखले बांस लगाना, (जो शीघ्र टूट जाएंगे।)

**ऊंची दूकान, फीका पकवान।**
दूकान की तड़क-भड़क तो बहुत, पर मिठाई मिष्ठता शून्य। नाम बड़ा, काम छोटा।

**ऊंचे चढ़के देखा, तो घर-घर माही लेखा।**
सुखी कोई नहीं। हर घर में कुछ न कुछ परेशानी है।

**ऊंचो ऊंचो सब चलें, नीचो चले न कोय।**
**तुलसी नीचो वह चले, जो गर्व से ऊंचो होय।**
सब बड़े बनकर रहना चाहते हैं, अपने को छोटा समझना कोई पसंद नहीं करता। जो गर्व से रहित है, वही अपने को छोटा समझता है।

**ऊंट का पाद, न जमीन का न आसमान का**
ऐसी वस्तु या ऐसा काम, जिससे कोई मतलब हल न हो। निकम्मे आदमी के लिए भी कहेंगे।

**ऊंट किस कल बैठे**
दे० देखें ऊंट किस करवट बैठे।

**ऊंट की चोरी और झुके-झुके**
किसी बड़े काम को चुपचाप नही किया जा सकता; वह प्रकट हो ही जाएगा। जैसे ऊंट की चोरी चुपचाप नहीं की जा सकती।

**ऊंट की चोरी सिर पर खेलना**
कोई बड़ी चोरी छिपती नहीं। ऊंट को चुराकर कोई कहां रखेगा?

**ऊंट की पकड़, कुत्ते की झपट**
ये दोनों ही खतरनाक होते हैं।

**ऊंट की पकड़, कुत्ते की झपट, खुदा इनसे बचाये**
ईश्वर दोनों से बचाए, क्योंकि दोनों ही बुरे हैं।

**ऊंट के गले में बिल्ली**
(१) दो बेजोड़ चीज़ों का मेल, जैसे किसी बूढे का कम उम्र लड़की से विवाह।
(२) किसी काम में ऐसा अड़ंगा लगा दिया जाए कि वह हो ही न सके।
(इसकी एक कथा है—किसी समय एक आदमी का ऊंट खो गया। उसने मनौती की कि अगर मिल गया, तो उसे वह दो पैसे में बेच देगा। संयोग से

ऊंट घर वापस आ गया। तब ऊंट के गले से उसने एक बिल्ली बांधी और उस बिल्ली के दाम इतने अधिक रखे दिए जितने ऊंट के भी नही थे। साथ ही यह शर्त भी लगा दी कि जो भी आदमी दो पैसे मे ऊंट खरीदेगा, उसे बिल्ली भी खरीदनी पड़ेगी। उसकी इस शर्त पर कोई भी ऊंट खरीदने को तैयार नही हुआ। इस तरह उसका ऊंट बच गया और बात भी रह गई।)

**ऊंट के मुंह में जीरा**
किसी बहुत खानेवाले को थोड़ी वस्तु देना।

**ऊंट को किसने छप्पर छाये**
गरीबों की सुध भगवान लेता है।

**ऊंट-घोड़ा भस गइल, गदहा पूछे 'कितना पानी?'**
जहा बड़े-बडे हार मान बैठे हों, वहां किसी छोटे का काम करने का साहस करना।
भस गइल = धस गये।
(प्र० पा०—ऊंट घोड़ा बहे जाए...।)

**ऊंट चढ़के बूंट मांगे**
ऊंट पर बैठकर चने मागता है। ऊचे स्थान पर बैठकर जोर दिखाता है, अथवा तुच्छ वस्तु की माग करता है, यह अर्थ भी हो सकता है।

**ऊंट चढ़े कुत्ता काटे**
दुर्भाग्य से पीछा छुडाना कठिन होता है।
(कोई आदमी ऊट पर बैठा था। वहा भी उसे कुत्ते ने काट खाया।)

**ऊट जब तक पहाड़ के नीचे नही जाता, तब तक हो जानता है 'मुझ से ऊंचा कोई नहीं'**
जब तक किसी घमडी व्यक्ति की अपने से अधिक योग्य व्यक्ति से भेंट नही होती, तब तक उसका गर्व चूर नही होता।

**ऊंट जब भागे तब पच्छम कों**
ऊंट रेगिस्तान का जीव है, इसलिए क०।
प्रायः मूर्ख और दुराग्रही के लिए प्र० पा०।

**ऊंट डूबे, खच्चर थाह मांगे**
जो काम बड़ों से न हो सके, उसे जब छोटे करने का साहस करें, तब क०।

**ऊंट डूबे मेंढ़की थाह मागे।**
दे० ऊ०।

**ऊंट तो दगते थे, मकड़ी (या मेंढ़की) ने भी टांग फैला दी**
बडों की देखादेखी कोई काम करना।
(जानवरो के बीमार होने पर गरम लोहे की सलाख उनके बदन से छुआते हैं। उसे ही दागना कहते हैं। जानवरों पर निशान बनाने के लिए भी उन्हें दागा जाता है।)

**ऊंट बड़बड़ाता ही लदता है**
ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो काम करते समय हमेशा बड़बडाए।
(ऊंट की आदत होती है कि लदते समय बलबलाता है।)

**ऊंट बलबलाने मे लड़ता है**
ऊंट लड़ते समय बलबलाता है। व्यर्थ बड़बडाने वाले से क०।

**ऊंट बिलाई ले गई, 'हां जी, हां जी' कीजे।**
बडे आदमियों की हां में हां मिलाना। अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी की गलत बात का समर्थन करना।
किसी ने कहा—'ऊंट को बिल्ली उठा ले गई, तो दूसरे ने जवाब दिया—'हा जरूर उठा ले गई। मैने भी देखा।'

**ऊट बुड्ढा हुआ, पर मूतना न आया**
जब किसी बड़ी उम्र के व्यक्ति में काम करने का शऊर न हो, तब क०।

**ऊंट मक्के ही को भागता है**
दे०—ऊंट जब भागे तब...।

**ऊंट मक्खी को भी हांकता है**
अर्थात ऊंट भी मक्खी जैसे क्षुद्र जीव से अपनी रक्षा करता है।

**ऊंट मरा कपड़े के सिर**
किसी एक मद में हुई हानि को दूसरी मद में अधिक मुनाफा लेकर पूरा कर लेना।
(कथा है कि किसी एक व्यापारी का ऊंट मर गया।

तब उसके दाम उसने कपड़े के माल पर चढ़ा दिए और इस प्रकार क्षतिपूर्ति कर ली।)

**ऊंट रे ऊंट तेरी कौन कल सीधी**

ऐसे आदमी के लिए क०, जिसकी नसनस में शरारत भरी हो।

बेडौल के लिए भी कहा जाता है।

**ऊंट सा कद तो बढ़ा लिया, पर शऊर जरा भी नहीं**

किसी पिता का अपने बेशऊर लड़के से कथन।

**ऊख से गंड़ेरी प्यारी, गुड़ से प्यारा गांड़ा।**
**मां बहिन से जोरू प्यारी, जिससे होय गुजारा।**

स्पष्ट।

गांड़ा = एक प्रकार की मिठाई गट्टा, जो कन्नौज का प्रसिद्ध है।

**ऊजड़ खेड़ा, नाव न बेड़ा**

ऐसा उजाड़ गांव जहां कुछ भी न हो; न नाव, न बेड़ा। (फैलन ने इस कहावत को उक्त प्रकार से ही लिखा है। पर इसका शुद्ध रूप—ऊजड़ खेड़ा—नाव नवेड़ा जान पड़ता है। गांव तो उजाड़ है पर नाम है उसका 'नवेला'।)

**ऊजड़ गांव में मुरार महतो**

जिस गांव में कोई अन्य महत्वपूर्ण वस्तु नहीं होती, वहां कोल्हू को ही बड़ी अजीब चीज मानते हैं। (फैलन ने मुरार का अर्थ कोल्हू किया है।)

**ऊजड़ में तो गूजर नाचे, ढाक देख बैरागी।**
**खीर देख के बामन नाचे, तन-मन होवे राजी।**

गूजर एक गोपालक जाति है। वह जंगल देखकर प्रसन्न होती है, क्योंकि वहां उसे अपने ढोर चराने का सुभीता रहता है। ढाक खंजड़ी की तरह का एक वाद्ययंत्र है, जिसे बैरागी बजाते है। वह ढाक देखकर खुश होता है। (यहां ढाक से मतलब ढाक के जंगल से भी हो सकता है।) ब्राह्मणों की मिष्ठान्न प्रियता तो प्रसिद्ध है ही, खीरदेखकर उनका तन-मन प्रफुल्लित हो जाता है।

**ऊजड़ हो घर सास का, बैर करे हर बार।**
**पीहर ऊपर सुबस बसे, जब लग है संसार। (स्त्रि०)**

सास के अत्याचार से ऊबी हुई किसी बहू का कथन।

पीहर = मायका। सुबस = सुयश।

**ऊतर-पातर, मैं मियां तू चाकर**

लड़कों के खेल की एक तुकबंदी। अपने ऊपर चढ़ी हुई दाई को चुका देने पर उसका प्रयोग करते हैं।

**ऊधो को लेन, न माधो का देन**

किसी से कोई मतलब न होना।

**ऊधो बन आये की बात, (हि०)**

किसी काम में अप्रत्याशित रूप से सफलता मिलने पर क०।

(ऊधो कृष्ण के मित्र और सखा थे, पर यहां यह नाम साधारण व्यक्ति के नाम के रूप में ही प्रयुक्त हुआ है।)

**ऊपर का बड़ भाई और नीचे का अलबुदाई**

कपटी के लिए क०, जो ऊपर से भाई जैसा व्यवहार करे, पर मन में क्या है, ईश्वर ही जान सकता है।

**ऊपर से 'राम' 'राम,' भीतर कसाई का काम**

कपटी और धूर्त।

**ऊसर खेत में केसर**

(१) मूर्खतापूर्ण कार्य, केसर की खेती ऊसर जमीन में नहीं हो सकती। उसके लिए तो बढ़िया उपजाऊ भूमि चाहिए। अथवा

(२) ऊसर भूमि में केसर जैसी मूल्यवान वस्तु पैदा हो गई!

एक आश्चर्य की बात।

(अयोग्य घर में कोई योग्य लड़का पैदा हो जाए, तब कहा जा सकता है।)

**एक अंडा वह भी गंदा**

एक चीज और वह भी बेकार। प्रायः निकम्मे और अकेले लड़के के लिए क०।

**एक अकेला, दो का मेला**

एक से दो भले होते हैं। अच्छा लगता है।

**एक अकेला, दो से ग्यारह**

एक आदमी तो हमेशा एक ही रहता है, पर एक

की जगह दो इकट्ठे हो जाएं, तो उनमें ग्यारह की शक्ति आ जाती है।
(एक के आगे एक की संख्या और लिखने से ग्यारह होते हैं।)

**एक अनार सौ बीमार**
एक वस्तु के बहुत से चाहनेवाले। किसे-किसे दी जाए ?
(समा०—अकेली हरदसिया सबरा गांव रसिया।)

**एक असामी सौ अर्जियां**
एक अपराधी की ओर से सौ प्रार्थना पत्र।
बेतुका काम।

**एक अहीर की एक ही गाय, ना लागे तो छूछा जाय**
एक अहीर की एक ही गाय है, जब कभी वह दूध नही देती, तो बर्तन खाली रहता है। मतलब, किसी वस्तु का एक या अकेला होना अच्छा नही। घर के एकमात्र कमानेवाले के लिए कह सकते हैं। वह कमाकर न लाए तो सबको भूखा रहना पड़े।

**एक अहारी सदा व्रती, एक नारी सदा जती**
दिन में एक बार भोजन करनेवाला सदैव संयमी और जिसके केवल एक स्त्री हो वह सदैव ब्रह्मचारी माना जाता है।

**एक आंख फूटती है, तो दूसरी पर हाथ रखते है**
इसलिए कि दूसरी न फूट जाए।
एक हानि होने पर मनुष्य दूसरे से बचने का उपाय सोचते है।

**एक आंख मटर का बिया, वह भी आंख भवानी लिया**
बेचारे के मटर के बीज जितनी एक आंख थी, वह भी भवानी ने ले ली, अर्थात चेचक में मारी गई। हानि पर हानि होना।

**एक आंख में लहर-बहर, एक आंख में खुदा का क़हर**
मतलब काने से है। ऐसे व्यक्ति के लिए भी कहते हैं, जो ऊपर से तो बड़ा भला जान पड़े, पर भीतर से दुष्ट हो।

**एक आंख से रोवे, एक से हँसे**
रोने का झूठा स्वांग करनेवाला। प्रायः लड़कों के लिए क०।

**एक आम की दो फांकें**
दो सगे भाई जिनमें आपस में बड़ा प्रेम हो।
दो एक-सी वस्तुओं के लिए भी क०।

**एक आवे के बर्तन हैं**
सब एक से हैं। एक ही हाथ के बने हैं। अथवा एक ही परिवार के है।
(आवा या अवा उस भट्ठी को कहते हैं, जिसमें कुम्हार अपने मिट्टी के बर्तन पकाता है।)

**एक इतवार के व्रत से जनम का कोढ़ नहीं जाता**
कोई एक पुरानी बीमारी किसी तरह की भी हो—एक-दो दिन के प्रयास से दूर नहीं होती।
(कथा है कि कृष्ण के पुत्र को कोढ़ हो गया था। वह सूर्य की पूजा से दूर हुआ। इसलिए कोढ़ होने पर लोग सूर्य की मानता मानते हैं और इतवार को व्रत रखते हैं; क्योंकि वह सूर्य का दिन है।)

**एक ओर चार वेद, एक ओर चतुराई**
चतुराई बड़ी चीज है। वेद-पुराणों अथवा पुस्तकों का ज्ञान उसके सामने कोई वस्तु नही।
तुल०—एक ओर चार वेद, एक ओर लवेद।
लवेद = झूठ।

**एक कहो न दस सुनो**
न किसी को एक गाली दो, न दस सुनो। तुम जिसके साथ जैसा व्यवहार करोगे, वैसा दूसरे भी तुम्हारे साथ करेंगे।

**एक और एक ग्यारह**
एक की जगह दो आदमी बड़ा काम कर सकते है। संघ मे बड़ी शक्ति है।
दे०—एक अकेला दो से... ।

**एक का तीते तीनों तीत**
एक के कड़वे होने पर सभी कड़ुवे हो जाते हैं। एक का स्वभाव बुरा होने से दूसरे भी वैसे ही बन जाते हैं।

**एक कान बहरा करो, एक कान गूंगा**
कोई तुम्हारी बुराई करे, तो उस पर ध्यान मत दो।
('कान गूंगा' से यहां मतलब मुह बंद रखने से ही है।)

**एक कान सुनी दूसरे कान उड़ाई**
किसी की बात पर ध्यान न देना।

**एक का मुंह शक्कर से भरा जाता है, सौ का मुंह खाक से भी नहीं भरा जाता**
थोड़े आदमियो का अधिक अच्छा आदर-सत्कार किया जा सकता है।

**एक को दारू दो, दो को दारू चार**
एक (उद्धत आदमी) को ठीक करने के लिए दो चाहिए और दो को ठीक करने के लिए चार।)
दारू = दवा। शराब।

**एक की सैर, दो का तमाशा; तीन का पिटना, चार का स्यापा**
यात्रा तो अकेले ही ठीक रहती है, तमाशे मे दो, तीन मे लड़ाई-झगड़े का डर रहता है, और जहा चार हुए, समझो वहा जनाजा निकला।
पाठा०—एक की सैर, दो का तमाशा, तीन का मेला, चार का झमेला।

**एक के दूना से सौ के सवाये भल, (ब्यं०)**
अधिक मुनाफे पर कम माल बेचने की अपेक्षा कम मुनाफे पर अधिक माल बेचना अच्छा। वह कुल मिलाकर अधिक हो जाता है।

**एक को दंहै रुतबा-ए-आली, एक को दंहै खुरपा और जाली**
ईश्वर किसी को ऊचा पद देता है, किसी को ग़रीब-मजदूर बनाता है।
खुरपा = घास खोदने का औजार।
जाली = मछली पकड़ने का जाल।

**एक को साई, एक को बधाई**
(१) देने का वादा करना किसी एक से और दे देना किसी दूसरे को।
(२) आश्वासन देकर किसी का काम करना, किसी का न करना।
(३) किसी को यो ही टरका देना, किसी की खातिरदारी करना।
साई = वह धन जो किसी काम के लिए पेशगी दिया जाता है। बयाना।

**एक कौड़ी गांठो, चूड़ा पहनूं कि माठी, (स्त्रि०)**
गांठ में काफी पैसा न होते हुए भी तरह-तरह के काम करने या वस्तुएं खरीदने की इच्छा करना।
चूड़ा = कलाई मे पहिनने का कांच या धातु का गहना।
माठी = बाह मे पहिनने का गहना।

**एक खता, दो खता, तीसरी खता मादरबख्ता**
एक भूल को भूल समझा जा सकता है (वह क्षम्य होती है), दूसरी बार की भूल को भी भूल समझा जा सकता है। पर यदि कोई तीसरी बार भी वैसी ही भूल करे, तो समझना चाहिए कि यह उसका स्वभाव है।
मादरबख्ता = मा के गर्भ से प्राप्त। जन्मजात।

**एक खाय दूध मलीदा, एक खाय भुस**
अपना-अपना भाग्य। कोई मजा-मौज करता है, कोई कष्टो मे जीवन बिताता है।
भुस = अनाज के सूखे डठल।

**एक गरीब को मारा था तो नौ मन चर्बी निकली थी**
प्राय. ऐसे लोग होते हैं जो टैक्स या चंदा आदि देने के भय से धनी होते हुए भी गरीब बनते है, उनके प्रति व्यग्य मे क०।

**एक गुरु के चेले, (हिं०)**
एक उस्ताद के चेले। सब एक से चालाक।

**एक घड़ी की 'ना', सारे दिन का उद्धार**
किसी भी विषय में संकोच छोडकर एक बार 'ना' कह देने से बार-बार की झझट से छुट्टी मिल जाती है।

**एक घड़ी की बेहयाई, सारे दिन का आधार**
जो लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए बेशर्मी अख्तियार कर लेते है, और उचित अनुचित की परवाह नही करते, उनसे व्यग्य मे क०। अथवा ऐसे व्यक्ति की उक्ति, जो अपने लाभ के लिए निर्लज्ज बन जाना ठीक समझता है।

**एक चना दो दाल!**
एक चने की दो ही दाल होती है।
(वास्तव में यह बच्चों के एक गीत की कड़ी है। एक चना दो दाल, मोरी सावन आई, इत्यादि)

**एक चना बहुतेरी दाल**

एक चने से बहुत-सी दाल हो सकती है। मतलब, घर के एक प्रमुख व्यक्ति के बने रहने से नौकर-चाकर या लड़के तो और भी हो सकते हैं। मुख्य वस्तु ही रक्षणीय होती है।

**एक चुप सौ को हराय**

चुप रहनेवाले के सामने सौ बोलनेवाले हार मान लेते हैं।

**एक चुप, हजार चुप**

किसी वाद-विवाद के मौके पर एक आदमी अगर चुप हो जाए, तो बाकी अपने-आप चुप हो जाते है।

**एक छौनी के आंचल में नोंन, घड़ी-घड़ी रूठे, मनावे कौन ?**

बच्चों की तुकबंदी। किसी साथी के रूठ जाने पर मनाने के लिए प्रयोग करते है।

**एक जना घर मुरदा भेल, चार जना मिल खटिया लेल**
**आप आपके सब ही मालुक, बार उखाड़े मुरदा हालुक**

किसी के घर एक आदमी मर गया। चार आदमी उसे खटिया पर उठाने आए। पर वे सब अपने घर के बड़े आदमी थे। और मुर्दा भारी था। तब उसे हलका करने के लिए उसके बाल बना दिए गए। ऊपर की इस तुकबंदी का अंतिम चरण 'बार उखाड़े..' ही कहावत के रूप मे प्रयुक्त होता है और उसे तब कहते हैं, जब किसी बड़ी विपत्ति को दूर करने के लिए नाममात्र का निष्फल प्रयास किया जाए।

**एक जान, दो क़ालिब**

एक प्राण दो शरीर। दो घनिष्ठ मित्र, अथवा दो सगे भाई, जिनमे गाढ़ा स्नेह हो।

**एक जान, हजार अरमान**

आदमी की एक जान के पीछे हज़ार कामनाएं लगी हैं, कहां तक पूरी हो।

**एक जोरू की जोरू, एक जोरू का खसम; एक जोरू का सीसफूल, एक जोरू का पश्म**

कोई स्त्री का दास होता है, तो कोई उसका स्वामी; कोई उसके माथे का आभूषण होता है, तो कोई उसका पश्म।

पश्म=पुरुष या स्त्री के निम्न स्थान के बाल। बहुत ही तुच्छ वस्तु। (बढ़िया मुलायम ऊन को भी पश्म कहते हैं।)

**एक जोरू सारे कुनबे को बस है**

एक स्त्री पूरे परिवार के लिए काफी है। अथवा एक होशियार औरत पूरे घर को संभाल सकती है। (कहावत वहीं लागू होती है, जहां भाई के मर जाने पर उसकी विधवा को रख लेने की प्रथा प्रचलित है। मजाक में भी कहावत का प्रयोग हो सकता है।)

**एक जौ की सोलह रोटी; भगत खाय, भगतानी मोटी**

बच्चों की तुकबंदी, जिसमें पाखंडी साधु-संन्यासियों का मज़ाक उड़ाया गया है।

**एक डर, दो तरफ़**

दो विरोधियो मे डर दोनों तरफ रहता है। अर्थात जितना एक व्यक्ति दूसरे से डरता है, उतना ही दूसरा भी उससे भय खाता है।

**एक डूबे तो जग समझावे, सब जग डूबा जाए**

एक आदमी गलती करे, तो उसे समझाया जा सकता है, पर जहां सभी गलत रास्ते पर हों, वहां कौन किसे समझाए ?

**एक तन्दुरुस्ती हजार न्यामत**

तन्दुरुस्ती बड़ी चीज़ है।

**एक तरकश के तीर**

सभी एक से।

**एक तवे की रोटी, क्या छोटी क्या मोटी ?**

दो एक-सी वस्तुओं में छोटे-बड़े का क्या भेदभाव करना ?

**एक तो करेला कड़वा, दूसरे नीम चढ़ा**

जब कोई क्षुद्र व्यक्ति कुसंग में पड़कर अथवा अचानक मान-सम्मान पाकर और भी बुरा बन जाए, तब क०।

**एक तो कानी थी ही, दूसरे पड़ गया कुनक**

विपत्ति में और भी विपत्ति आना।

कुनक= किरकिरी।

**एक तो कानी बेटी की माई, दूसरे पूछनेवालों ने जान खाई, (स्त्रि०)**

एक तो मेरी बेटी कानी है—(मेरे लिए यही दुख क्या कम है?) फिर उसके विषय में तरह-तरह के प्रश्न करनेवालों ने और भी नाक में दम कर रखा है।

झूठी सहानुभूति दिखानेवालों के लिए कहते हैं।

**एक तो कानी बेटी ब्याही, दूसरे पूछनेवालों ने जान खाई**

एक तो कानी लड़की के साथ अपने लड़के का विवाह किया, फिर लोग उसके रूप-रंग के विषय में पूछकर मुझे और भी लज्जित करते हैं।

**एक तो गड़ेरन, दूसरे लहसुन खाए, (पू०)**

गड़ेरन एक तो स्वभाव से गंदी होती है, फिर अगर लहसुन खा ले, तो उसके मुंह से और भी दुर्गंध आएगी।

(जब कोई छोटा आदमी ऊंची जगह पर पहुंचकर इतराने लगे, तो कह सकते हैं।)

**एक तो चोरी, दूसरे सीनाजोरी**

अपराध करके उल्टे आंख दिखाना।

**एक तो डायन, दूसरे हाथ लुआठ**

एक तो कोई आदमी पहले से ही बहुत दुष्ट, फिर अगर उसके हाथ में कोई ताकत आ जाए, तो वह और भी भयंकर बन जाता है।

लुआठ = जलती हुई लकड़ी, मशाल।

**एक तो था ही दीवाना, तिस पर आई बहार**

एक तो पहले से ही पागल था, और फिर वसंत ऋतु आ गई, जिसमें पागलपन और भी बढ़ जाता है!

(जब किसी बिगड़े हुए आदमी को और भी बिगड़ने के अवसर मिल जाएं।)

**एक तो पड़ा लोटता है, दूसरा कहे ज़रा चोखी देना**

शराब के नशे में पड़ा एक लोट रहा है, फिर भी दूसरा ज़रा और चोखी मांगता है।

ऐसे व्यक्ति के लिए कहते हैं जो किसी बुरे कार्य के परिणाम को देखकर भी उसे छोड़ना नहीं चाहता।

**एक तो भालू, दूसरे कांधे कुदाल**

भालू एक तो पहले से ही भयंकर, फिर उसे मिल गया कुदाल।

मतलब, और भी भयंकर बन गया।

**एक तो भीख, दूसरे पछोर-पछोर**

भीख में साफ़ अनाज चाहते हैं। मुफ्त के माल में ऐब नहीं निकालना चाहिए।

पछोर = सूप से अनाज फटकना, साफ़ करना।

**एक तो मियां थे ही थे, दूसरे खाई भांग, तले हुआ सिर, ऊपर हुई टांग।**

एक तो हज़रत पहले से ही काफ़ी तगड़े थे, ऊपर से भांग खाई, जिससे हालत और भी गई-गुज़री हो गई।

जब कोई दूसरों के देखादेखी शौक करे और उससे हानि उठाए, तब क०।

**एक तो मीरां थे ही, दूजे खाई भांग**

एक तो मियां के सिर पहले से ही मीरां साहब (जिन्न) आते थे और अब भांग खा ली, जिससे हालत और भी बिगड़ गई।

(मीरां के विवरण के लिए दे०—'आये मीर, भागे पीर।')

**एक तो मीठ और कठौत भर**

एक तो बढ़िया चीज़ चाहिए और वह भी बहुत-सी! अथवा बढ़िया चीज़ भरपेट खाने को मिले, तो फिर क्या पूछना।

कठौत = कठौता, लकड़ी का बासन।

**एक तो मुआ अनभाया था, दूसरे सई सांझ से आता था**

किसी दुराचारिणी स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य प्रेमी के संबंध में कथन कि अव्वल तो वह मुझे पसंद नहीं था और फिर शाम से ही आकर अड्डा जमाता था।

**एक तो शेर, दूसरे बख्तर पहने**

अत्याचारी के हाथ में जब शक्ति भी आ जाए। शेर अगर बख्तर पहिन ले, तो क्या पूछना। और भी ग़ज़ब ढाएगा।

**एक दम में हज़ार दम**

(१) एक सांस भी अगर बाकी है, तो समझो हज़ार सांसें बाकी हैं। यानी उस आदमी के जीने की आशा करनी चाहिए।

(२) एक आदमी से हज़ार आदमियों की गुज़र बसर होती है।

**एक दम, हज़ार उम्मेद**

(१) अंतिम सांस तक एक आदमी के जीवित रहने की आशा रहती है।

(२) आदमी की एक दम (जान) के पीछे हज़ार आशाएं लगी रहती हैं।

**एक दर बंद, हज़ार दर खुले**

हमारे लिए अगर एक दरवाज़ा बंद हो गया, तो दूसरे कितने ही खुले हैं।

मतलब, हम किसी एक के आश्रित नहीं। कुछ न कुछ कर ही गुज़रेंगे।

**एक दिन का पावना, दूसरे दिन अनखावना**

अतिथि तो एक ही दो दिन का होता है, उसके बाद तो लोग उससे ऊबने लगते हैं।

अनखावना = (१) खीझ पैदा करनेवाला, 'अनख' से बना है। अथवा (२) अन्न-खावना अर्थात भूखे रहो। (कहावत के उत्तरांश का यह अर्थ भी हो सकता है कि दूसरे दिन 'अन्न न खाओ', अर्थात एक दिन के बाद दूसरे दिन अतिथि को खाने के लिए कोई नहीं पूछता।)

**एक दिन के सौ साठ दिन**

मतलब, आज नहीं, तो फिर देखा जाएगा, हम बदला लेकर रहेंगे।

**एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान, (मु०)**

मेहमान एक-दो दिन के बाद ही एक मुसीबत बन जाता है।

(बंगला में भी है—माछ आर अतिथि दुई दिन परेई विष।)

**एक दिन सबको मरना है**

स्पष्ट।

**एक न शुद दो शुद**

एक ही क्या कम था, और अब दो हो गए।

किसी झगड़े या वाद-विवाद के बीच में एक के साथ अनावश्यक रूप से दूसरा भी बोल उठे, प्रायः तब कहते हैं कि अभी तो एक ही बोल रहा था, अब दो बोल उठे।

(इसकी एक कथा है: किसी व्यक्ति ने एक जादूगर से तीन मंत्र सीखे। एक से मृत को जीवित किया जा सकता था, दूसरे से उसके मन का हाल जाना जा सकता था। और तीसरे से उसे फिर मृतक बनाया जा सकता था। इन मंत्रों की परीक्षा के लिए एक दिन उसने एक मुर्दे को जीवित किया और उसका सब हाल जान लिया। किन्तु उसे फिर मृतक बनाने का मंत्र वह भूल गया। नतीजा यह हुआ कि उस मुर्दे का प्रेत उसके पीछे लग गया। जहां भी वह जाता, प्रेत उसके साथ रहता। इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए उसने अपने मरे हुए गुरु को मंत्र द्वारा जीवित किया, पर दुर्भाग्यवश वह इस बार दूसरा मंत्र भूल गया और गुरु के पास से जीवित को फिर मृतक बनाने का मंत्र नहीं जान सका। इस प्रकार एक के स्थान पर अब दो प्रेत उसके साथ लग गए।)

**एक 'नहीं' सत्तर बला टाले**

किसी व्यक्ति को यदि कोई वस्तु नहीं देनी है, अथवा उसका कोई काम नहीं करना है, तो संकोच छोड़कर नाहीं कर देना सबसे अच्छा होता है। उससे बहुत-सी मुसीबतें टल जाती हैं।

**एक ना सौ दुख हरे**

दे० ऊ०।

**एक नीम सब घर सितलहा**

नीम का एक ही पेड़ और घर भर को शीतला निकली है। कैसे काम चले?

सितलहा = शीतला रोग से ग्रस्त।

(फैलन ने इस कहावत को इस प्रकार लिखा है—'एक नीम सब घर सीतल'—जो अशुद्ध है। बेचक

निकलने पर नीम के पत्ते रोगी के सिरहाने रखने के काम आते हैं। उसी से कहा० चली।)

**एक नीम सौ कोढ़ी**

दे०—एक अनार सौ बीमार, तथा ऊपर भी।

(नीम के पत्ते तथा निबौरी का तेल भी चर्म रोगों के लिए लाभदायक माना जाता है।)

**एक नूर आदमी, हज़ार नूर कपड़ा**

आदमी की अपनी जो शोभा होती है, वह तो होती ही है, पर कपड़ा पहिनने से वह सौगुनी हो जाती है।

**एक पंथ दो काज**

एक काम में दो काम बनना। अथवा एक लाभ में दो लाभ।

**एक पानी जो बरसे स्वाती, कुरमिन पहने सोने की पाती, (कृ०)**

स्वाती नक्षत्र मे पानी बरसने से कुरमिन को सोने के गहने पहिनने को मिलते है, अर्थात फसल बहुत अच्छी होती है।

**एक पेड़ हर्रे, सगरे गांव खांसी**

हरड़ का एक ही पेड़ और सब गाव को खासी। दे०—एक अनार सौ बीमार।

हर्रे= हरड़, जिसका फल खासी के काम आता है।

**एक फूअड़ फुअड़ के गई, जा कुठला-सी ठाड़ी भई**

एक बेशऊर औरत दूसरी बेशऊर के यहा गई और ठूठ की तरह जाकर खड़ी हो गई। फूहड औरतो पर व्यंग्य, जिन्हें बात करने का सलीका नही होता।

कुठला=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बर्तन।

**एक बखिया मोरे पल्ले, कौन पिनौते होके चल्ले**

मेरी गांठ में एक ही कुर्ती है, मैं किस रास्ते से जाऊ?

(जिसमे सबकी नजर उस पर पड़ जाए)

अपनी किसी थोड़ी-सी चीज़ का घमड करना।

**एक बार जोगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी**

योगी दिन में एक बार और भोगी दो बार शौच जाता है। इससे अधिक बार जाए, तो उसे रोगी समझना चाहिए।

**एक बोली तीन काम**

ऐसा होशियार आदमी जो एक काम में तीन काम करे।

(एक पंथ दो काज)

**एक बोली, दो बोली, मेरी न कटी सटासट बोली, (ग्रा० स्त्रि०)**

अर्थात बड़ी बातूनी है, जो बराबर बोलती ही चली जा रही है।

**एक मछली सारे जल को गंदा करती है**

एक बुरा आदमी सारे घर या समाज को बुरा बना देता है।

**एक मास ऋतु आगे धावे**

ऋतु का रूप एक महीना पहले से दिखाई पडने लगता है।

**एक मुंह दो बात**

बात कहकर बदलना।

**एक मुर्गा नौ जगह हलाल नहीं होता**

कोई आदमी अपने को एक साथ कई कामो में नहीं खपा सकता अथवा एक साथ कई स्थानों पर काम नही कर सकता।

**एक मुश्किल की हज़ार हज़ार आसान रखी हैं**

कठिन से कठिन काम को करने का उपाय खोजा जा सकता है।

**एक मेरे घर अन्ना, दूसरा खन्ना, (मु० स्त्रि०)**

अपना बड़प्पन दिखाने के लिए किसी स्त्री का कथन कि मेरे यहा दो-दो नौकर है, एक तो बच्चो को खिलाने के लिए दाई और दूसरा खवास।

**एक मैं, दूसरा मेरा भाई, तीसरा हज्जाम नाई**

किसी वस्तु के बंटते समय अनुचित रूप से दूसरों के नाम भी हिस्सा मांगने लगना।

(नाई, बारी, कहार आदि जब किसी भोज में जाते हैं, तब अपने अलावा अपने परिवार के सब लोगो के लिए पत्तल डलवाते हैं, यद्यपि वे सब वहां मौजूद नहीं होते। उसी से कहा० बनी।)

**एक म्यान में दो छुरी**
एक स्थान पर अपना-अपना स्वतंत्र अधिकार जताने वाले दो मालिक।
(जैसे एक स्त्री के दो प्रेमी)

**एक रती बिन नहीं रती का**
प्रतिष्ठाहीन आदमी किसी काम का नही।
रती के दो अर्थ है=(१) रति, शोभा, प्रतिष्ठा (२) रत्ती, आठ चावल का मान या बांट, कौड़ी, पैसा।

**एक रोटी के दो टुकड़े**
समान प्रकृति की दो वस्तुएं।

**एक सिर, हजार सौदा**
एक आदमी के सिर बहुत-सा काम।

**एक सुहागन, नौ लौंडे**
एक वस्तु के कई गाहक।

**एक सूरमा चना भाड़ को नहीं फोड़ सकता**
एक आदमी सब कुछ नहीं कर सकता।

**एक से एक, दो से ग्यारह**
एक आदमी तो हमेशा एक ही रहेगा, पर दो के मिलने से उनमे ग्यारह की शक्ति आ जाती है।

**एक से दो भले**
कही बाहर जाना हो, तो एक से दो अच्छे होते हैं।

**एक से ले एक को दे**
किसी से लेकर किसी को देना। ईश्वर के लिए कहा जा सकता है कि वह एक से लेकर दूसरे को देता है।

**एक हँसे, दूसरा दुख में**
संसार में कोई सुखी है तो कोई दुखी, अथवा एक को दुख में देखकर दूसरा हँसता है।

**एक हम्माम में सब नंगे, (मु०)**
सभी मे कुछ न कुछ त्रुटियां होती हैं।
तुल०—धोती के भीतर सब नगे।

**एक हाथ जिक्र पर, एक हाथ फ़िक्र पर, (मु०)**
एक हाथ से माला जपना, दूसरे से काम की फिक्र करना।
पाखंडी के लिए क०।
जिक्र=उल्लेख, यहां ईश्वर का उल्लेख यानी ईश्वर-भजन।

**एक हाथ लेना, एक हाथ देना, (व्य०)**
नक़द सौदा करना।

**एक हाथ से ताली नहीं बजती**
झगड़ा एक ही तरफ से नहीं होता। दोनों कुछ न कुछ जिम्मेदार रहते है।

**एक ही लकड़ी से सबको हांकना**
जो जैसा है, उसके साथ वैसा व्यवहार न करना।

**एक हुनर और एक ऐब, हर आदमी में होता है**
हर आदमी में कोई न कोई गुण और अवगुण होता है।

**एक हुस्न आदमी, हजार हुस्न कपड़ा।**
**लाख हुस्न जेवर, करोड़ हुस्न नखड़ा।**
किसी पुरुष या स्त्री का जो कुछ अपना सौन्दर्य है, वह तो होता ही है, पर कपडो से उसमें हजार गुनी, गहनो से लाख गुनी और हाव-भाव तथा कटाक्ष से उसमे करोड़ गुनी वृद्धि हो जाती है।

**एक कूकर तू दूबर काहो, दस घर की आवाजाही।**
किसी ने कुत्ते से पूछा तुम दुबले क्यों?
उत्तर मिला—पेट के लिए घर-घर घूमना पड़ता है।
मतलब पेट की चिन्ता बुरी चीज है। कुत्ता भी दुबला बन जाता है।

**एकै दाल, एकै चावर, करै गुन औ बाउर**
एक ही वस्तु से किसी को लाभ पहुंचता है, किसी को हानि।
बाऊर=वायु पैदा करनेवाली, बादी।

**एकै साधे सब सधै, सब साधै सब जाय**
(१) एक बार में एक ही काम करना चाहिए, कई काम एक साथ करने से सभी बिगड़ जाते हैं।
(२) अपना कोई काम बनाने के लिए किसी एक आदमी को अपने अनुकूल रखना ठीक होता है, सब को अनुकूल बनाने की चेष्टा करने से सभी हाथ से निकल जाते हैं, और काम भी नहीं होता।

**एवज मावज गिला नदारद**
बुराई का बदला बुराई से चुका देने पर शिकायत किस बात की?

**एहसान कर और दरिया में डाल**
उपकार करके भूल जाना चाहिए।

**एहसान लीजे जहान का, न एहसान लीजे शाहे-जहान का**
बड़े आदमियों का एहसान लेना ठीक नही होता।

**ऐंचन छोड़ घसीटन में पड़े**
एक मुसीबत से बचे तो दूसरी मे पड़े।

**ऐंतवार जब जानिए, जब हट्टी लीपें बानिए, (हिं०)**
दूकानदार जब अपनी दूकान लीपें, तभी समझो इतवार है।
(दूकानदार प्रायः इतवार को अपनी कच्ची दूकाने लीपतें है—उसी ओर सकेत है।)

**ऐब करने को भी हुनर चाहिए**
हर काम के लिए होशियारी की जरूरत पड़ती है, यहां तक कि बुरा काम करने के लिए भी।

**ऐरे ग़ैरे पचकल्यान**
फालतू आदमी।
(पचकल्यान वह घोडा कहलाता है, जिसका सिर और चारों पैर सफेद हों और बाकी लाल या काला। ऐसा घोड़ा शुभ नही माना जाता।)

**ऐरे ग़ैरे फस्ल बहुतेरे**
फसल पर अर्थात घर मे अनाज होने पर मुफ़्त-खोरो की कमी नही रहती।

**ऐरो के चेरो, नौआ के बराहिल**
ओछे की खुशामद और नाई की टहल।
जब किसी काम के लिए छोटे की चिरौरी करनी पड़े, तब क०।
चेरो=चिरौरी करना।
बराहिल=सेवा-टहल करना।

**ऐसन बुड़बक कौन है, जो खात नहीं अघाय**
ऐसा कौन मूर्ख होगा, जो पेट भर जाने पर भी खाने को मांगे?

**ऐसन सुहाग मोरा नित उठ होला, (स्त्रि०)**
ऐसा शुभ दिन नित्य आता रहे।
किसी को अपने प्रति एकाएक अनुकूल होते देखकर कहते है।

**ऐसा किया दिल गुरदा, कि रुपया किया खुरदा, (मु०)**
ऐसी उदारता दिखाई कि रुपया भुना डाला।
कंजूस के लिए व्यंग्य मे क०।

**ऐसा चाटा कि धोये का वाचा**
मतलब, बिल्कुल मटियामेट कर दिया।

**ऐसा जैसे रुपए के टके भुना लिए**
किसी की चीज़ पर आसानी से कब्ज़ा कर लेना या सरलता से कोई काम कर लेना।

**ऐसी-ऐसी छठी बलबल जायं, नौ-नौ पतरी भातें खायं, (स्त्रि०)**
ऐसी छठी रोज हुआ करे, जिसमे नौ-नौ पत्तल भात खाने को मिले।
आशीर्वाद है। किसी के घर खूब अच्छा खाने को मिलने पर कहते है।
छठी=जन्म से छठे दिन का संस्कार।

**ऐसी कही कि धोए न छूटे**
किसी से बहुत चुभती हुई बात कहना।

**ऐसी तेरे ही तले गंगा बहै है, (स्त्रि०)**
किसी एक लडाकू स्त्री का दूसरी से कहना कि तू ही बड़ी पाक-साफ़ है (और तो सब गंदे हैं) अथवा तू ही बड़ी सच्ची है (और तो झूठे है)।

**ऐसी बहू सयानी कि पैंचा मांगे पानी, (स्त्रि०)**
बहू ऐसी होशियार है कि पानी भी मांगती है तो उधार।
(इसलिए कि दूसरे लोग उससे कभी कोई वस्तु मुफ़्त में न मांगें, और यदि मांगे भी तो तुरंत लौटा दिया करें।)

**ऐसी मेख मारी कि पार निकल गई**
मन को गहरी चोट पहुंचने पर क०।

मेख=लकड़ी या लोहे की बड़ी कील।

**ऐसी लटकी कि भुईं में पटकी, (स्त्रि०)**
ऐसा नीचा दिखाया कि जमीन चाट रही है, अर्थात बड़ी लड़ाका बनती थी, सो मुह बन्द हो गया।
(किसी एक लड़ाकू स्त्री का दूसरी से कहना।)

**ऐसी होती कातनहारी, तो काहे फिरती मारी मारी, (स्त्रि०)**
अगर तू ऐसी ही होशियार होती, तो इस प्रकार मारी-मारी क्यों फिरती?
(ताना मारना)

**ऐसे आदमी के दीदे में साठी कि पीच पसा दीजिए**
ऐसे आदमी की आंख में तो चावलो का गरम-गरम मांड डाल देना चाहिए।
(किसी दुष्ट को गाली)

**ऐसे ऊत रिंवाड़ी जाएं, आटा बेचें गाजर खाएं**
ऐसे मूर्ख भला रेवाड़ी जाकर क्या करेंगे, जो आटा बेचकर गाजर खाते हैं।
(रेवाड़ी राजस्थान मे गल्ले की एक बडी मंडी है। इसका भाव यह है कि ऐसा निकम्मा व्यक्ति, जो आटे की जगह गाजर खाता है, वहां जाकर क्या व्यापार करेगा?)

**ऐसे गए जैसे गदहे के सिर से सींग**
किसी जगह से चुपचाप उठकर चले आना।
(गधे के सिर पर सीग होते ही नही, इसलिए वह जगह बिल्कुल साफ रहती है।)

**ऐसे गए जैसे महफिल से जूता**
दे० ऊ०।
(मजाक में ही क०। महफिल मे जाने के पहले जूते बाहर ही उतार दिए जाते है और अक्सर चोरी चले जाते हैं।)

**ऐसे चूतिया शिकारपुर में रहते हैं**
अर्थात ऐसे मूर्ख किसी और जगह देखिए, जो आपकी बातो में आ जाएं।
(पता नहीं क्यों और किस प्रकार मौगाव और शिकारपुर (उत्तर प्रदेश) के दो स्थान मूर्खों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह कहने की बात है। मूर्ख सर्वत्र होते हैं।),



**ऐसे पै तो ऐसी, काजल दिए पै कैसी?**
सहज में तो इतनी सुन्दर ! फिर काजल लगाने पर न जाने कितनी सुंदर लगेगी?

**ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय?**
बूढ़े या निकम्मे आदमी के लिए क०।
(यह पूरी कहा० इस प्रकार है, जो वास्तव में बैल पर कही गई है—
दात घिसे और खुर घिसे,
पीठ बोझ ना लेय।
ऐसे बूढ़े बैल को कौन बांध भुस देय।)

**ऐसे ही तुमने सोंठ बेची है**
अर्थात तुम से मैने क्या कोई कर्ज ले रखा है, जो तुम से दबूं।
जब कोई बिना प्रयोजन किसी पर अपना रोब जमाए, तब क०।

**ऐसे होते तो ईद-बकरीद को काम आते, (मु०)**
जब कोई निठल्ला आदमी अपने विषय में बहुत बढ़-चढ़कर बातें करे, तब क० ।

## ओ

**ओछा पात्र उबलता है**
कम भरा हुआ बर्तन छलकता है।
नीच को बड़ी जल्दी हर बात का घमंड हो जाता है।
(अधजल गगरी छलकत जाय)

**ओछी के हाथ लगी कटोरी, पानी पी-पी मरी पदोड़ी, (स्त्रि०)**
जब किसी को कोई ऐसी वस्तु मिल जाए, जो उसके पास कमी न रही हो और वह उसका बहुत उपयोग करे, तब क०।

**ओछी पूंजी खसमों खाय, (व्य०)**
कम पूंजी से व्यापार करने पर हमेशा हानि होती है।
खसम=मालिक, व्यापारी से मतलब है।

**ओछी लकड़ी करील की, बिन ब्यारे फर्राय।**
**ओछे के संग बैठ के, सुघड़ों की पत जाय।**
झाऊ की ओछी लकडी बिना हवा के ही फर-फर करती है।
(यानी बहुत इतराती है) बुरों की संगत मे बैठने से भलों की इज्जत जाती है।

**ओछे की पीत जैसे बालू की भीत**
नीच की मित्रता बालू की भीत की तरह क्षण-स्थायी होती है।

**ओछे के घर खाना, जनम-जनम का ताना, (स्त्रि०)**
ओछे आदमी के घर कभी खाने नहीं जाना चाहिए, क्योंकि वह बात-बात में उसकी याद दिलाएगा। तात्पर्य छोटे आदमी का कभी एहसान नही लेना चाहिए।

**ओछे के बैल गिरे**
ऐसी घटना जिसकी ओर किसी का ध्यान नही जाता। जब कोई छिछोरा आदमी अपने किसी थोड़े नुकसान को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाए, तब क०।

**ओछे के साथ एहसान करना ऐसा है, जैसे बालू में मूतना**
ओछे के साथ एहसान करना बिल्कुल व्यर्थ होता है, क्योंकि वह उसका बदला चुकाना नही जानता।

**ओछे संग ना बैठिए, ओछा बुरी बलाय।**
**पल में ही घी खीचड़ी, पल में बिसयर भाय।**
ओछे का साथ कभी न करना चाहिए। वह एक बडी विपत्ति है।
कभी तो वह बहुत चिकनी-चुपड़ी बातें करता है, और कभी सर्प बनकर डसता है।
बिसयर = विषधर।

**ओछे से खुदा काम न डाले**
भगवान ओछे से बचाए।

**ओझ भरे, न रोग झरे**
न पूरा पेट भरे, न रोग दूर हो।
न मन की इच्छाएं कभी पूरी हों, और न चित्त को शान्ति मिले।

**ओढ़नी को बतास लगी**
यानी औरत का रंग चढ़ गया।
विवाह होते ही जो औरत की बहुत फ़िक्र करने लगे, उसके लिए क०।

**ओढ़ी चादर हुई बराबर 'मैं भी शाह की खाला हूं,' (स्त्रि०)**
चादर पहिन कर सामने आ गई और कहती है— मैं भी शाह की फूफी हूं।
बहुत शेखी मारनेवाले के लिए क०।

**ओनामासी न आवे 'मैया पोथी ला दे', (स्त्रि०)**
पढ़े-लिखे हैं नहीं, किताब मांगते हैं।
ऐसी वस्तु मांगना, जिसके उपयोग की क्षमता न हो।
(ओनामासी ओ३म् नमः सिद्धम् का विकृत रूप है। अक्षरारंभ के समय बच्चो से पाटी पर लिखवाते हैं।)

**ओलती का पानी बलेंडी नहीं जाता**
नियम विरुद्ध कोई काम नही होता।
(ओलती छप्पर के ढाल के उस किनारे को कहते है, जिससे वर्षा का पानी नीचे गिरता है। बलेंड़ी छप्पर के ऊपर की मेंड़ होती है। बलेंडी का पानी ओलती की तरफ ही आएगा, उल्टा ऊपर नही जाएगा।)

**ओलती तले का भूत, सत्तर पुरखों का नाम जाने**
घर का आदमी घर के सब भेद जानता है।

**ओल में से निकलकर चूल में पड़ना**
एक हलकी मुसीबत से निकलकर बड़ी मुसीबत में पड़ना।
ओल = चूल्हे के पीछे बना हुआ वह छेद, जिस पर साग-तरकारी गरम होने के लिए रख दी जाती है।
चूल = चूल्हा।

**ओसों प्यास नहीं बुझती**
जब किसी को कोई वस्तु इतनी कम मिले कि उससे तृप्ति न हो, तब क०। कंजूसी से काम लिया जाए, तब भी कह सकते हैं।

**औंधा खाय लौंडा**
जल्दबाज़ी करनेवाला औंधा गिरता है, अर्थात हानि उठाता है।
**औंधी खोपड़ी, उल्टी मत**
मूर्ख के लिए क०।
(औंधी खोपड़ी एक मुहावरा है, जिसका अर्थ बुद्धिहीन होता है।)
**औंधे मुँह, चिराग पांव**
तू औंधे मुंह गिरे, तेरे पांव तले चिराग हो, अर्थात तेरी दुर्गति हो। आवेश में एक तरह की गाली।
**औंधे मुंह दूध पीते हैं**
अर्थात अभी बिल्कुल बच्चे हैं। कुछ जानते नहीं। जो बहुत सीधा-सादा बनकर दिखावे, उससे ताने में क०।
**औंधे मुंह, शैतान का धक्का**
एक गाली कि तू औंधे मुंह गिरे और तुझे शैतान का धक्का लगे।
**औघट चले, न चौपट गिरे**
न बुरे रास्ते चले, न हानि उठाए।
**और की फुल्ली देखते हैं, अपना टेंटर नहीं**
दे०—अपना टेंटर देखें नहीं...।
**और की बुराई अपने आगे आई**
दूसरों के कर्मों का फल हमें भोगना पड़ा।
**और की भूक न जानें, अपनी भूक आटा सानें, (स्त्रि०)**
दूसरों की भूख की चिन्ता नहीं, अपने लिए आटा गूंधते हैं।
स्वार्थी के लिए क०।
**औरत और ककड़ी की बेल जल्दी बढ़ती है**
लड़कियां शीघ्र जवान होती हैं।
**औरत और घोड़ा रान तले का**
औरत और घोड़ा, इन पर यदि पर्याप्त नियंत्रण न रखा जाए, तो वे बेकाबू हो जाते हैं।
**औरत का क्या एतबार?**
स्त्री विश्वास के योग्य नहीं होती।
**औरत का खसम मर्द, मर्द का खसम रोज़गार**
स्त्री जिस प्रकार पुरुष के सहारे रहती है, उसी प्रकार पुरुष रोज़गार के सहारे।
**औरत का राज है**
जिस घर में स्त्री की चलती हो, वहां क०।
**औरत की अक्ल गुद्दी पीछे होती है**
(१) औरत को बाद में सूझती है। उसकी बुद्धि तुरंत काम नहीं करती। अथवा
(२) पिटने पर ही औरत को अक्ल आती है।
गुद्दी=गर्दन के पीछे का हिस्सा।
**औरत की जात बेवफ़ा होती है**
औरत हमेशा पुरुष को धोखा देती है।
**औरत की मत मान**
औरत की सलाह से काम न करो।
**औरत की सलाह पर जो चले वह चूतिया**
स्त्री की बात माननेवाला बेवकूफ़।
**औरत के नाक न होती तो गू खाती**
(१) यदि दुर्गंध न आती, तो स्त्री गू भी खा लेती।
(२) यदि नाक कटने का डर न होता, तो बुरे से बुरा काम करती।
**औरत को नादारी में जांचे**
स्त्री की परीक्षा आपत्तिकाल में ही होती है।
**औरत न मर्द, मुआ हिजड़ा है।**
**हड्डी न पसली, मुआ छिछड़ा है।**
गाली।
**औरत पर हाथ उठाना ठीक नहीं**
औरत को मारना नहीं चाहिए।
**औरत पर जहां हाथ फिरा, और वह फूली**
विवाह के बाद कम उम्र की लड़की भी शीघ्र जवान बन जाती है।
**औरत मर्द का जोड़ा है**
स्त्री की पुरुष से और पुरुष से स्त्री की शोभा है। अथवा स्त्री और पुरुष एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते।

**औरत रहे तो आपसे, नहीं तो जाय सगे बाप मे**

(१) स्त्री यदि स्वयं ही सच्चरित्रा है, तब तो वह रहेगी, अन्यथा अपने बाप के साथ भी निकल जाती है।

(२) स्त्री यदि अपने आप चाहे, तो घर में रह सकती है, नहीं तो उसका बाप भी उसे सम्हाल कर नहीं रख सकता।

**और दिनों खीर पूड़ी, परब के दिन दांत निपोरी**

और दिनों तो खुशी मनाना, पर खुशी के मौके पर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना।

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो अवसर के लिए पैसा बचाकर नहीं रखता, तथा दूसरे मौको पर व्यर्थ खर्च करता है।

**और मज़ाक भूल गए, मेरे पीस आइयो**

किसी स्त्री का अपने प्रेमी से कथन है कि बस 'मेरे यहां पीस आओ'—तुम्हें इसके सिवा और कोई मज़ाक नहीं आता।

(पीसने के बहाने उसका प्रेमी क्यों बुला रहा है, स्त्री इसे जानती है; इसीलिए हँसकर इस तरह की बात कहती है।)

**और रंग का गिलहरा**

रंग-ढंग या पोशाक-पहिनावे में यकायक परिवर्तन होने पर क० कि यह तो दूसरे रंग का गिलहरा आ गया!

गिलहरा=गिलहरी नामक जीव का पुंल्लिग।

**औसर का चूका आदमी और डाल का चूका बंदर नहीं संभलता**

आदमी अगर किसी अवसर से लाभ उठाने से चूक जाए, और बंदर भी एक डाल से दूसरी डाल पर उछलते समय ठिकाने पर न पहुंच सके, तो ये दोनों फिर संभलते नहीं, अर्थात हानि उठाकर ही रहते हैं।

पाठा०—औसर का चूका किसान।

**औसर चूकी डोमनी, गावे ताल बेताल**

अगर डोमनी मौके पर किसी जगह गाने-बजाने न जा पाए, तो वह बेसुरा गाने लगती है। तात्पर्य अवसर से लाभ न उठानेवाला व्यक्ति पछताता है।

(डोमनियां डोम जाति की स्त्रियां होती हैं, जो शादी-ब्याह में लोगों के घर जाकर गाती-बजाती हैं और उसके लिए इनाम पाती हैं। अतः कोई डोमनी अगर मौके पर किसी के यहां न पहुंच पाए, तो स्वाभाविक रूप से उसे उसका बहुत दुख होगा, और वह ठीक ढंग से गा नहीं पाएगी।)

कोई अच्छा मौका हाथ से निकल जाने पर जब आदमी का दिमाग सही न रहे और वह अंड-बंड काम करने लगे, तब क०।

## क

**कंजा भागवान होता है**

कंजी या भूरी आंखोंवाला भाग्यवान होता है। (एक लोक-विश्वास)

**कंजूस मक्खीचूस**

सूम के लिए क०।

**कंथ न पूछे बात मेरा धना सुहागन नाम**

पति तो बात नहीं पूछता और अपना नाम बतलाती है धना सुहागन!

जब कोई अपने आप ही व्यर्थ में किसी स्थान का मालिक बना फिरे, तब क०।

('कंत न पूछे बात मेरा धरा सुहागन नाम' भी कहते है।)

धना =नाम विशेष।

तुल०—गांठ में कौड़ी नहीं, नाम धन्नासेठ।

**कंब लूटें और कोयलों पर मुहर**

बड़े खर्चों में कमी न करके छोटे-छोटे खर्चों में सावधानी बरतना।

**ककड़ी के चोर की गर्दन नहीं मारते**

किसी साधारण अपराध के लिए कड़ा दंड नहीं देना चाहिए।

(मराठी में है—कांकडीची चोरी बुक्याचा मार)

**कचरी खाए दिन बहलाए, कपड़े फाटे घर को आए**
बाहर जाकर व्यर्थ समय नष्ट करनेवाले के लिए क०।
कोई आदमी रोजगार के लिए परदेश गया, पर लाभ के स्थान पर गांठ की पूंजी खर्च करके घर वापस आ गया।
कचरी = फूट की जाति का एक फल।

**कचहरी का दरवाजा खुला है**
अर्थात सीधे-सीधे लड़ने की जरूरत नहीं, जाकर नालिश करो, तुम्हें कोई रोकता नही।
जब दो व्यक्तियों में किसी विषय को लेकर, विशेषकर जमीन-जायदाद को लेकर कोई झगड़ा होता है, तो प्रायः वह व्यक्ति जो अधिक सबल होता है, दूसरे से इस प्रकार की बात कहा करता है।)

**कच्चा दूध सबने पिया है**
सब मनुष्य हैं और भूल सभी से होती है।
कच्चा दूध से मतलब मां के दूध से है।

**कच्चा तो कचौड़ी मांगे, पूरी मांगे पूरा।**
**नोंन मिर्च तो कायथ मांगे, बामन मांगे बूरा।**
लड़के कचौड़ी की तरह की कुरकुरी चीज पसंद करते हैं, जवान मुलायम पूड़ी चाहते है, कायस्थों को नमकीन पसंद होता है और ब्राह्मणों को मिष्ठान्न प्रिय है।

**कच्ची कली कचनार की, तोड़त मन पछताय**
कोई व्यक्ति कचनार की कच्ची कली को तोड़ने जा रहा है, पर यह देखकर कि अभी उसमें मधुर रस और पराग की बहुत कमी है, उसका मन पछताता भी है।
(यह एक दोहे की कड़ी है जो अविकसित यौवना नायिका को लक्ष्य करके कही गई है और प्रसिद्ध लोककथा 'सारंगा सदावृक्ष' (सदावत्स) में सुनने को मिलती है।)

**कच्ची पेंदी, दस्तरख्वान का जरर, (मु०)**
मिट्टी के कच्चे बर्तन से दस्तरख्वान के खराब होने का डर रहता है, क्योंकि मिट्टी के बर्तन से पानी टपकेगा।
(अनुभवहीन के लिए कहा जाता है।)
दस्तरख्वान = वह चादर जिस पर खाना रख कर खाया जाता है।

**कच्ची शीशी मत भरो, जिसमें पड़ी लकीर।**
**बालेपन की आशकी, गले पड़ी जंजीर।**
लड़कपन में प्रेम करना अच्छा नहीं होता। उससे जीवन में कष्ट भोगने पड़ते हैं।
(ऐसा कांच जिसमें लकीर पड़ी हो जल्दी टूट जाता है।)

**कच्चे बांस को जिधर से नवाओ नव जाय, पक्का कभी न टेढ़ा होय**
छुटपन में बच्चों के स्वभाव को इच्छानुसार मोड़ा जा सकता है, बाद में उनकी आदतें नहीं बदलतीं।

**कचौड़ी की बू अब तक नहीं गई**
जब कोई साधारण आदमी बड़े ओहदे पर पहुंचकर फिर ज्यों का त्यों हो जाए, लेकिन अपने बड़प्पन की बू-बास को न छोड़े, तब क०।

**कजा के आगे हकीम अहमक़**
मौत के आगे वैद्य-हकीम की कुछ नहीं चलती।

**कजा के तीर को ढाल की हाजत नहीं**
क्योंकि वह तीर किसी के रोके रुक ही नहीं सकता।
हाजत = जरूरत।

**कजा से चारा नहीं**
मौत पर किसी का वश नहीं।

**कटेगा बटाऊ का, सीखेगा नाऊ का।**
किसी की हानि की परवा न करके अपना लाभ देखना।
बटाऊ = राहगीर, यात्री।
पाठा०—कटे सिर काऊ का, बेटा सीखे नाऊ का।

**कटे पर नोंन-मिर्च लगाना**
जली-कटी बातों से किसी की मानसिक पीड़ा को और बढ़ाना।

**कड़का सोहै पाली ने, बिरहा सोहै माली ने, (ग्रा०)**
कड़खा तो गड़रियों के मुंह से अच्छे लगते हैं और बिरहा मालियों के मुंह से।
जिसका जो काम है, वह उसी को शोभा देता है।
कड़का = कड़खा, युग के समय के गीत।
बिरहा = एक प्रकार के शृंगार गीत।

**कड़ाकड़ बाजे थोथे बांस**
खोखले बांसों से आवाज अधिक निकलती है।
निकम्मा आदमी बहुत बात करता है।

**कड़ी काट बेलन बनाना**

किसी छोटी वस्तु को तैयार करने के लिए बड़ी वस्तु को नष्ट कर डालना।

कड़ी=लकड़ी की लंबी और मोटी धरनी होती है। जिस पर छत टिकी होती है। उसे काट कर बेलन बनाना एक मूर्खतापूर्ण कार्य है।

**कड़ुआ ज़हर**

(१) ज़हर की तरह कड़वी वस्तु।

(२) ऐसा कार्य जो अप्रिय होने पर भी करना पड़े।

**कड़ुआ थू-थू मीठा हपहप**

अच्छे को ले लेना और बुरे को अस्वीकार कर देना कि दूसरे उसे झेलें।

**कड़वा स्वभाव, डूबती नाव**

दोनो खतरनाक होते है।

**कड़ुए से मिलिए, मीठे से डरिए**

कड़ुआ बोलनेवाला खरी बात कहता है, इसलिए उससे मित्रता रखनी चाहिए। मिष्टभाषी खुशामदी होता है, उससे बचना चाहिए।

**कढ़ी का-सा उबाल**

ज़रा-ज़रा-सी बात में गुस्सा आना।

कढ़ी=बेसन और मठे से बना एक व्यंजन।

**कढ़ी मे कोयला**

(१) अच्छी वस्तु के साथ बुरी का मिल जाना।

(२) भले के साथ बुरे का संग।

**क़तल मूज़ी क़ब्ल अज़ीज़ा (मु० स्त्रि०)**

इसका शुद्ध रूप है—क़त्लल मूज़ी क़ब्लल ईज़ा, इसके पहले कि सांप काटे, उसे मार डालना चाहिए।

**क़दम-ए दरवेशां रद्दे बला, (फा०)**

संतों के आगमन से विपत्तियां दूर होती है।

**क़द्र उल्लू की उल्लू जानता है।**

**हुमा को कब चुग़द पहिचानता है?**

उल्लू की क़द्र तो उल्लू ही कर सकता है, वह हुमा की क़द्र करना क्या जाने?

(हुमा एक काल्पनिक पक्षी है, जिसके विषय में मुसलमानों के यहां विश्वास है कि यदि वह किसी के सिर पर बैठ जाए, तो वह आदमी राजा बन जाता है।)

चुग़द=(फा०) उल्लू। मूर्ख।

**क़द्रदां की जूतियां उठाइए, नाक़द्रे के पांपोश मारने न जाइए**

जो अपने गुणों की क़द्र करे, उसकी जूतियां उठाने को तैयार रहना चाहिए। जो किसी बात को कुछ न समझे, ऐसे नाक़द्रे को जूतियां मारने भी नही जाना चाहिए।

**क़द्र खो देता है हर बार का आना-जाना**

किसी जगह बार-बार जाने से सम्मान घटता है। (अंग्रे०—Familiarity breeds contempt.)

**क़द्रदां के कुत्ता पायते बिठाए, बेक़द्र के सिरहाने भी न बिठाए**

गुण-ग्राहक के पैरों तले भी हमें बैठना पसंद है, पर जो हमारे गुणों की क़द्र न जानता हो, उसके सिरहाने बैठना भी हम पसंद नही करेंगे, यानी अपना झूठा सम्मान नहीं चाहते।

**क़द्रे आफ़ियत कसे दानद कि ब-मुसीबते गिरिफ़्तार आयद, (फा०)**

जो कभी दुख उठा चुका हो, वही सुख का मूल्य जानता है।

**क़द्रे आफ़ियत मालूम होगी**

सुख का मूल्य मालूम पड़ेगा (दुख पड़ने पर)।

**कनखजूरे के कै पांव टूटेंगे**

किसी बड़े साधन-संपन्न व्यक्ति की कितनी हानि होगी?

मतलब थोड़ी-बहुत हानि उसको नही अखरती। जैसे कनखजूरे को अपने दो-एक पावो का टूटना नही अखरता। (कनखजूरा एक पतला लंबा कीड़ा होता है, जिसके बहुत से पैर होते हैं।)

**कनात बड़ी दौलत है**

संतोष बड़ा धन है।

(स०—संतोषं परमं सुखम्।)

**कनौड़ी बिल्ली चूहों से कान कटावे**

कमजोर बिल्ली चूहों से कान कटवाती है यानी दबती है।

(कनौड़ी का ठीक अर्थ काना या अपंग है।)

**कपटी की पीत, मरन की रीत**
कपटी से प्रेम करना मौत को बुलाना है।

**कपड़ा कहे तू मुझे कर तह मैं तुझे करूं शह**
कपड़ा कहता है कि तू मुझे अच्छी तरह तह करके रखे, तो मैं तेरी शान बढ़ाऊंगा।
मतलब, कपड़ों को संभाल कर रखना चाहिए।

**कपड़ा पहनिए जगभाता, खाना खेए मनभाता**
कपड़ा दूसरों की पसंद का पहिने, भोजन अपनी पसंद का करे।

**कपड़े फटे ग़रीबी आई**
फटे कपड़े पहिनना दरिद्रता का चिह्न है।

**कपूत बेटा मरा भला**
बुरे लड़के का तो मर जाना ही अच्छा।

**कब के बनिया, कब के सेठ**
किसी के सहसा धनवान बन जाने पर क०। कल तक नोंन-गुड़ बेचते थे, अब सेठ बन गए।

**कब दादा मरेंगे, कब बेल बंटेगी**
किसी एक काम का दूसरे काम की वजह से अटका पड़ा रहना।
पाठा०--कब दादा मरेंगे, कब बैल बंटेंगे।
बेल =एक तरह का नेग होता है, जो गमी होने पर नाई-भाटों को दिया जाता है।

**कब मरें, कब कीड़े पड़ें**
गाली।

**कब मुआ और कब राक्षस हुआ**
उसके लिए कहा जाता है, जो नीच से अचानक बड़ा बन जाए और रोब जमाए, अर्थात बड़ा आदमी कब से बन गया? व्यंग्योक्ति।

**कब के राजाई सुर भये, कोदों के दिन बिसर गए**
बड़े आदमी कब से बन गए? क्या उन दिनो को भूल गए जब कोदों की रोटी खाया करते थे।
(जब कोई आदमी सहसा धन-सम्मान पाकर ग़रीबी के दिनों को भूल जाए और बढ़-चढ़कर बातें करे। कोदों एक बहुत हल्की किस्म का अनाज होता है।)

**कबाड़ी के छप्पर पर फूस नहीं**
जो काठ-कबाड़ का व्यापार करे, उसके छप्पर पर फूस न हो, एक आश्चर्य की बात।
(इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि काठ-कबाड़ का व्यापार करनेवाले के पास कभी पैसा इकट्ठा नही होता।)

**कबित सोहे भाट ने, और खेती सोहे जाट ने**
कविता भाट को शोभा देती है और खेती जाट को। जिसका जो काम है, वह उसी को अच्छा लगता है। अथवा उसे वही कर सकता है।

**कबीरदास की उल्टी बानी, आंगन सूखा, घर में पानी**
यह कबीर की उलटबांसी के नाम से प्रसिद्ध उनकी गूढ़ रचनाओं का एक नमूना है। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि मनुष्य भोग-विलास में डूबा रहता है, किन्तु उसका मन ईश्वर-भक्ति मे सूखा ही रहता है।

**कबीरदास की उल्टी बानी, बरसे कंबल भीजे पानी**
दे० ऊ०। इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि इस संसार मे सज्जन पुरुष दुख भोगते हैं और असज्जन मौज उड़ाते हैं।
(वास्तव में कबीर की इन उलट बांसियों का कोई ठीक अर्थ लगाना बड़ा कठिन है। साधारण जनता में वे किसी अद्भुत या अनहोनी घटना की टिप्पणी के रूप मे ही व्यवहृत होती हैं।)

**कबूतरखाने का-सा हाल है, एक आता है, एक जाता है**
किसी स्थान विशेष पर लोगों का बराबर आना-जाना।

**क़ब्र का मुंह झांककर आए है**
मौत के मुह से बचकर आए हैं।

**क़ब्र पर क़ब्र नहीं बनती**
(१) कब्र पर कब्र कोई नहीं बनाता।
(२) घर में व्यक्तियों का मत एक नहीं होता।
(३) विधवा फिर विवाह करे, तो उसकी भी भर्त्सना करने के लिए क०।
(४) फ़िज़ूलख़र्ची के लिए अथवा जब कर्ज़ पर कर्ज़ चढ़ता जाए, तब भी कहा जाता है।

**क़ब्र में पांव लटकाए बैठा है**
मरने को बैठा है। (वृद्ध के लिए क०।)
**क़ब्र में भी तीन दिन भारी होते हैं**
मरने के बाद भी आदमी का परेशानियों से पीछा नहीं छूटता।
(मुसलमानों का विश्वास है कि कब्र में दफ़नाए जाने के बाद उन्हें तीन दिन तक खुदा के सामने जिन्दगी का हिसाब देना पड़ता है।)
**क़ब्र में रख के खबर को न आया कोई।**
**मुए का कोई नहीं, जीते-जी का सब कोई।**
मरने के बाद कोई खबर नहीं लेता, सब जीते-जी के ही साथी होते हैं, मरे का कोई नहीं।
**कभी कुंडे के इस पार, कभी कुंडे के उस पार**
भंगेड़ी या आलसी के लिए क०।
कुंडा = भंग घोटने का बर्तन।
**कभी के दिन बड़े, कभी की रात**
(१) समय एक-सा नहीं रहता।
(२) आज अगर तुम्हारा मौका लगा है, तो कभी हमारा भी लगेगा।
**कभी घुनघुना, कभी मुट्ठी भर चना**
कभी उबले गेहूं, तो कभी चने।
(१) जब जो मिला खा लिया। संतोषी की उक्ति।
**कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना, कभी वह भी नहीं**
दे० ऊ०।
**कभी न कभी टेसू फूला**
जब कोई मनुष्य अप्रत्याशित रूप से कोई भला काम कर बैठता है, तब उसके लिए क०।
**कभी न गांडू रन चढ़े, कभी न बाजी बम**
कायर के लिए कहा गया है कि वह न तो कभी युद्ध-क्षेत्र में ही गया, और न कभी उसके लिए जुझाऊ बाजे ही बजे।
(यह गंग कवि के नाम से प्रसिद्ध एक दोहे की अर्द्धाली है, जिसे कहा जाता है कि उन्होंने मरते समय कहा था और फिर वह हाथी के पैर तले कुचलवा डाले गए थे। पूरा दोहा इस प्रकार है—
कभी न गांडू रन चढ़े, कभी न बाजी बम।
सकल सभा को राम-राम, बिदा होत कवि गंग।)
**कभी न देखा बोरिया, सुपने आई खाट**
हैसियत से बाहर के ऊंचे ख्याल बांधनेवाले के लिए क०।
**कभी न देखी चद्दर-चदरी**
किसी स्त्री की घरवालों से शिकायत कि तुम लोगों ने मेरे लिए कभी कोई कपड़ा नहीं बनवाया।
**कभी न सोई साथरे, सुपने आई खाट**
दे०—कभी न देखा बोरिया...।
साथरा = टाट।
**कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर**
कभी एक आदमी का दूसरे से काम पड़ता है, तो कभी दूसरे का भी उससे।
(गाड़ी को नदी पार जाने के लिए नाव की आवश्यकता पड़ती है। किन्तु नाव जब जमीन पर बनकर तैयार होती है, अथवा खराब हो जाती है, तब उसे गाड़ी पर लादकर ही नदी में ले जाते हैं या वहां से लाते है।
**कभी रंज, कभी गंज**
कभी दुख तो कभी सुख। जब जैसा समय आ जाए, भोगना ही पड़ता है।
गंज = ढेर राशि; बहुत-सा।
**कम खर्च बालानशीन**
ऐसी चीज़ जो कम दामों की हो, और बढ़िया तथा टिकाऊ भी हो।
**कमबख्त गए हाट, न मिली तराजू न मिले बांट**
बेशऊर के लिए क० कि दूकानदार ने जो कुछ दिया वही लेकर आ गए, तौलकर नहीं देखा कि उसने कितना दिया। अथवा अभागे के लिए भी कह सकते है कि वह जहां जाता है, वही उसके काम में कुछ न कुछ बाधा पड़ जाती है।
**कमबख्ती की निशानी, जो सूख गया कुएं का पानी**
यह मेरा दुर्भाग्य है जो कुएं का पानी ही सूख गया। सहसा कोई अनिष्ट हो जाने पर भाग्य को कोसना।
तुल०—जहं-जंह संत मठा को जाएं।
तहं तहं भैंस पड़ा दोऊ मर जाएं।

**कमर न बूता, साझे सूता, (पू०, स्त्रि०)**
अपने निखट्टू पति के प्रति किसी स्त्री का कथन।
**कमर में तोसा, बड़ा भरोसा**
गांठ की चीज़ समय पर काम आती है
तोसा—(फा० तोशः) कलेवा, नाश्ता।
**क़मर दर अक़रब है**
चंद्रमा वृश्चिक में है। अर्थात ग्रह बुरे है।
(वृश्चिक राशिवाले के लिए चद्रमा का उक्त राशि मे होना शुभ नही माना जाता।)
**कमली ओढ़ने से फ़क़ीर नहीं होता**
भेष बदलने से कोई साधु नहीं हो जाता।
**कमाई न धमाई, मोके भूंजे भूंजे खाई, (पू०, स्त्रि०)**
किसी स्त्री का अपने निकम्मे पति या पुत्र से कथन।
**कमाऊ आवें डरता, निखट्टू आवे लड़ता, (स्त्रि०)**
काम करनेवाला तो विनम्र होता है और निकम्मा लडाकू।
**कमाऊ खसम किसने न चाहे, (स्त्रि०)**
सभी स्त्रियां चाहती है कि उन्हें कमाऊ पति मिले, अथवा कमाऊ पति को सभी स्त्रिया चाहती है।
**कमाऊ पूत, कलेजे सूत, (पू०, स्त्रि०)**
कमाऊ लडके को सभी चाहते है।
कलेजे सूत=कलेजे से लगकर सोता है।
**कमाऊ पूत की दूर बला**
कमाऊ लडका कष्ट नही भोगता।
**कमान से निकला तीर ओर मुंह से निकली बात फिर नहीं आती**
मुंह से जो निकला, सो निकला, वह वापस नही लिया जा सकता। (इसलिए बात सोच समझकर करे।)
**कमानी न पहिया, गाड़ा जोत मेरे भैय्या, (ग्रा०)**
किसी काम का पहले से कोई संबध है ही नही, फिर भी उसे करने की तैयारी करना।
**कमाय न धमाय, मोकों भूंजे भूंजे खाय, (स्त्रि०)**
अकर्मण्य पति या पुत्र।
**कमावें खानखाना, उड़ावें मियां फहीम**
किसी के कमाए धन को कोई उड़ावे।
(कहा जाता है मुग़ल सम्राट अकबर के इतिहास-प्रसिद्ध वज़ीर बैरामखां के पास एक फहीम नाम का गुलाम था, जो बड़ा उदार था और मालिक का पैसा आंख मूंदकर लोगों पर खर्च कर दिया करता था।)
**कमावे धोतीवाला, उड़ावे टोपीवाला**
कमावे कोई और मौजे करे कोई। 'धोतीवाला' से अभिप्राय भारतीय से है और 'टोपीवाला' से मतलब अग्रेज से। इस प्रकार कहावत का अर्थ होता है कि अंग्रेज यहा भारतवासियों की गाढ़ी कमाई पर मौज उड़ाते रहे।
**करके खाना और मौज करना**
परिश्रम की रोटी खाओ और मौज करो।
**कर खेती परदेस को जाए, वाको जनम अकारथ जाए, (कृ०)**
जो खेती करके स्वयं उसकी देखभाल नही करता, वह अपना समय व्यर्थ खोता है। अर्थात खेती में वह सफल नही होता।
**करघा छोड़ जुलाहा जाए, नाहक चोट बिचारा खाए**
अपना काम छोड कर, व्यर्थ दूसरो के झगड़े में पड़ने से हानि उठानी पड़ती है।
(कथा है कि एक जुलाहा अपने मित्रों के साथ तमाशा देखने गया। रास्ते मे पानी बरसने लगा। उससे बचने के लिए वह एक मकान की ओट में खड़ा हो गया। सयोग से मकान पुराना था और गिर पड़ा; जिससे जुलाहे को चोट लग गई। यह कहा० साधारणत. इस प्रकार प्रचलित है: करघा छोड़ तमाशे जाए, नाहक चोट जुलाहा खाए।)
**करघा बीच जुलाहा सोहे, हल पर सोहे हाली।**
**फौजन बीच सिपाही सोहे, बागन सोहे माली।**
अपनी-अपनी जगह सब शोभा पाते हैं।
हाली=हल चलानेवाला, किसान।
**करछी हाथ सैंलाने ही को करते हैं**
करछुल दाल-तरकारी चलाने के लिए ही हाथ में लिया जाता है। अर्थात नौकर को काम करने के लिए ही रखते हैं।

**करतब की विद्या है**
कोई काम हो, करने से ही आता है।
(सं०—विद्या अभ्यास सारिणी)

**करता उस्ताद, ना करता शागिर्द**
जो काम का अभ्यास करता रहता है, वही असली उस्ताद है, जो नही करता, वह उस्ताद होकर भी शागिर्द के समान है।

**कर तो डर, न कर तो खुदा के गजब से डर**
बुरा काम करे या न करे, पर हर हालत में ईश्वर के कोप से तो डरना ही चाहिए।
(इसकी एक कथा है कि किसी जगह दो साधु थे। एक बार एक ने कहा—'कर तो डर, न कर तो भी डर'। दूसरा बोला—'मै करूं नही तो डरू क्यो ?' पहला बिना कुछ कहे चला गया। इसके कुछ दिनो पश्चात राजा के महल मे चोरी हुई। चोरो का नियम था कि वे चोरी के माल मे से कोई एक वस्तु किसी साधु को भेंट किया करते थे। अतएव उन्होने एक सोने का हार ले जाकर उस दूसरे साधु के गले में डाल दिया। उस समय वह आखे मूदकर ध्यान-मग्न था। इस कारण उसे इसका कुछ पता नही चला। दूसरे दिन जब उसके गले मे हार पाया गया, तो उसे चोर समझकर फासी की सजा दी गई। सिपाही जब उसे फांसी देने के लिए ले जा रहे थे, तो रास्ते मे वही पहला साधु मिल गया। उसे देखते ही उसने कहा—देखो भाई, मेरी बात ठीक निकली या नही और उसने कहावत का अगला अंश दुहरा दिया।)

**करदनी खेश, आमदनी पेश, न की हो तो कर देख**
जैसा करोगे वैसा ही पाओगे, न देखा हो तो करके देख लो।

**करना चाहे आशक़ी और मामा जी का डर**
जब इश्क ही करने चले तो फिर डर किस बात का ?
(मुसलमानो मे मामा-फूफा की लड़की से विवाह करना धर्म-संगत माना जाता है।)

**करनी करे तो क्यों डरे, करके क्यों पछताय।**
**बोवे पेड़ बबूल के, आम कहां से खाय।**
बुरे काम का परिणाम तो भोगना ही पड़ेगा। उसके लिए पछताने से क्या होता है? बबूल का पेड़ बोकर कोई आम कैसे खाएगा।

**करनी खाक की बात लाख की**
निकम्मे और बातूनी के लिए क०।

**करनी ना करतूत, कहलाएं पूत सपूत**
न काम के न काज के, कहलाते हैं सपूत।
निकम्मा लड़का।

**करनी ना करतूत, चलियो मेरे पूत**
दे० ऊ०।

**करनी ना करतूत, लड़ने को मजबूत**
व्यर्थ का दंगा-फसाद करनेवाला। प्राय निकम्मे लड़के से क०।

**करनी ना धरनी, नाम गुलबिया**
नाम अच्छा, पर करनी कुछ नहीं।

**करने को चाकरी, सोने को घर, (पू०)**
जो घर में पड़ा-पड़ा अपना समय नष्ट करता रहे और बाहर जाकर कोई काम-धधा न करना चाहे, उसके लिए व्यंग्य मे क०।

**कर पानी, न मुंह पानी**
ऐसा गंदा लड़का जो कभी न हाथ धोता है, न मुंह।

**कर भला, हो भला, अंत भले का भला**
भला करनेवाले का अंत में भला ही होता है।

**करम के बलिया, पकाई खीर हो गया दलिया**
भाग्यहीन के लिए कहा जाता है कि वह जिस काम में हाथ डालता है, वही बिगड जाता है।
(भाग्यवादी कहावतो का सिलसिला नीचे भी है।)

**करमरेख अमिट है**
भाग्य का लिखा होकर रहता है।

**करम रेख ना मिटै, करै कोई लाखों चतुराई**
दे० ऊ०।

**करमहीन खेती करै, बैल मरै या सूखा परै**
भाग्यहीन जो काम करता है, वही गड़बड़ हो जाता है।

**करमहीन जब होत है, सभी होत हैं बाम।**
**छांह जान जहं बैठते, तहां होत है घाम।**
भाग्य विपरीत होने पर कोई साथ नहीं देता।

**करमहीन सागर गए, जहां रतन का ढेर।**
**कर छूअत घोंघा भए, यही करम का फेर।**

अभागे को अपने सब कामों में निराश होना पड़ता है। यहां तक कि वह रत्न को भी हाथ लगा दे तो वह घोंघा बन जाता है।

**कर लै सो काम, भज लै सो राम**

संसार में आकर मनुष्य जितना भी काम कर ले और जितना भी राम को भज ले, उतना ही अच्छा।

**कर सेवा, खा मेवा**

सेवा का फल अच्छा मिलता है।

**करा और कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती, (स्त्रि०)**

कोई स्त्री पर-पुरुष से प्रेम करके विपत्ति में पड़ गई। उसके प्रति किसी चतुर स्त्री का कथन कि—तूने काम किया और करते न बना। मैं होती तो करके दिखाती कि यह काम कैसे किया जाता है। ऐब करना और फिर छिपा लेना, हरेक के वश का नहीं।

**करिया बाह्मन, गोर चमार; तेकरा संग न उतरे पार**

इनका विश्वास नहीं करना चाहिए।
तेकरा = तिन के।

**करिए मन की, सुनिए सब की**

बात सब की सुने, पर करे वही, जो अन्तःकरण कहे।

**करें कल्लू भरें लल्लू, (पू०)**

करे कोई, दंड कोई भोगे।

**करें परपंच, कहलाए पंच**

छल-कपट करनेवाले पंचों पर व्यंग्य।

**करे एक, भरें सब**

एक की भूल का प्रायश्चित्त पूरे समाज को करना पड़ता है।

**करेगा सो भरेगा**

जो करेगा सो भुगतेगा।
(मराठी में भी है—करील सो भरील)

**करे दाढ़ीवाला, पकड़ा जाए मूछोंवाला**

बड़ों की भूल के लिए छोटे जिम्मेदार बनाए जाते हैं।

**करो खेती और बोओ बैल, (कृ०)**

खेती के काम में बैल नष्ट हो जाते हैं।
अथवा खेती करना चाहते हो, तो अच्छी नस्ल के बैल पैदा करो।

**करो खेती और भरो डंड, (कृ०)**

किसान को लगान और सिंचाई आदि का जो रुपया देना पड़ता है, उससे अभिप्राय है। अथवा खेती में बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं

**करो तो सवाब नहीं, न करो तो अज़ाब नहीं**

ऐसा काम, जिसके करने या न करने से न कुछ भलाई हो न बुराई।

**कर्ज़ काढ़ मेहमानी की, लौंडों मार दिवानी की**

किसी ने ऋण लेकर अतिथि-सत्कार किया। नतीजा यह हुआ कि लड़कों ने मार-मार कर अक्ल ठीक कर दी। मतलब यह कि पिता के कर्ज को लड़के पसंद नहीं करते, क्योंकि उसका बोझ उन्हें वहन करना पड़ता है।
(सं०—ऋणकर्ता पिता शत्रुः।)

**कर्ज की क्या मा मरी है?**

अर्थात क्या मुझे कहीं कर्ज मिलेगा नहीं? तुम नहीं दोगे, दूसरी जगह से ले लूंगा।

**कर्ज़दार छाती पर सवार**

जिसे किसी से अपना रुपया लेना होता है, वह हमेशा उसे परेशान करता है।

**कर्जा काढ़ करै व्यवहार, मेहरी से जो रूठे भतार।**
**बे-बुलावत बोलै दरबार, ये तीनों पशम के बार।**

जो कर्ज लेकर व्यापार करे, जो अपनी स्त्री से रूठे और जो बिना पूछे राज-दरबार में बोले, उसे महान मूर्ख समझना चाहिए।

**कल का लीपा देख बहाय, आज का लीपा देखो आय, (स्त्रि०)**

जो हुआ सो हुआ, अब आज का काम देखो, अर्थात वर्तमान की चिंता करो।

**कल किसने देखी है?**

कल क्या हो, कौन जानता है, इसलिए जो करना है, उसे आज ही कर डालो।

**कलवारी की अगाड़ी और कसाई की पिछाड़ी**

कलवार की दूकान के सामने का और कसाई की दूकान के पीछे रखा माल खरीदना चाहिए। (कलवार अपने ग्राहकों को पहले चोखी शराब देता है, इसलिए वह उसे दूकान में सब से आगे रखता है, और खराब या पानी मिली शराब पीछे रखता है, इसी तरह कसाई बासी मांस पहले बेच देने के लिए दूकान में सामने रखता है और ताज़ा मांस पीछे।)

**कलहारी कलकल करै, दूहारी छू होय।**
**अपनी अपनी बान से, कभी न चूकै कोय।**

लड़ाकू औरत हमेशा लड़ा करती है, और झगड़ा करानेवाली आपस में झगड़ा कराकर चंपत हो जाती है। जिसकी जो आदत होती है वह छूटती नहीं।

**कलाल की दूकान पर पानी भी पीओ, तो शराब का गुमान होता है**

बुरे स्थान पर जाने मात्र से ही लोग संदेह करने लगते हैं कि यह भी बुराई में शामिल है।

(मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ)

**कलाल की बेटी डूबने चली, लोग कहें मतवाली**

कोई अपनी मुसीबत में मर रहा है, लोग उसका मजाक उड़ाते है।

**कलेजा टूक-टूक, आंसू एक भी नहीं**

झूठी सहानुभूति दिखाना।

**कल्लर का खेत, जैसे कपटी का हेत, (कृ०)**

ऊसर की खेती वैसी ही है, जैसे कपटी की मित्रता। उससे कोई लाभ नही होता।

**कल्ला चलै, सत्तर बला टलै**

आदमी के लिए भोजन बड़ी चीज है। उसके मिलते रहने से बहुत-सी परेशानियां अपने-आप दूर होती हैं। कल्ला = (फा० कल्लः) जबड़ा; कल्ला चलना यानी भोजन मिलना।

**कश्मीरी बेपीरी, लज्जत न शीरीं**

बेमुरव्वत कश्मीरी। उनमें कोई लज्जत और मिठास नही होती।

यह किसी का संस्कार रहा होगा।

**कश्मीरी से गोरा सो कोढ़ी**

कश्मीरी बहुत गोरे होते हैं। उनसे कोई अधिक गोरा हो, तो उसे कोढ़ी ही समझना चाहिए।

**क़सम खाने ही के लिए है**

झूठी क़सम खानेवालों के प्रति व्यंग्योक्ति।

**कसाई की घास को कटड़ा खा जाए?**

कसाई की घास को भैंसा चर जाए, यह हो नहीं सकता।

टेढ़े से सब भय खाते हैं।

**कसाई की बेटी दस वर्ष की उम्र में बच्चा जनती है**

मतलब टेढ़े व्यक्ति के सब काम जल्दी होते हैं। अथवा उससे सब भय खाते हैं।

**कसाई के भरोसे शिकार पालना**

शिकरे को मांस की ज़रूरत होती है। उसके लिए यदि स्वयं मांस का प्रबंध न किया जाए और उसे कसाई के भरोसे छोड़ दिया जाए, तो वह जो भी शिकार पकड़ कर लाएगा, उसे कसाई के यहां ही ले जाएगा। शिकरा = बाजपक्षी, जिसे लोग पक्षियों के शिकार के लिए पालते हैं।

**कहना आसान, करना मुश्किल**

किसी काम के लिए मुंह से कहना आसान होता है, पर करना कठिन।

**क़हरे दरवेश, बर जाने दरवेश, (फा०)**

गरीब का गुस्सा स्वयं उस पर ही उतरता है। वह किसी को हानि नही पहुंचा सकता।

**कहां जाऊं? चूहे का बिल नहीं मिलता**

किसी का बहुत निराश और परेशान होकर क०। (इस वाक्य का प्रयोग प्रायः मज़ाक में ही होता है।)

**कहां बीबी, कहां बांदी**

मालिक और नौकर की बराबरी कैसे हो सकती है?

**कहां बुढ़िया? कहां राजकन्या?**

एक बूढ़ी ग़रीब औरत के साथ राजकन्या की तुलना क्या?

**कहां राजा भोज, कहां कंगला तेली?**

भोज जैसे प्रतापी सम्राट के सामने एक ग़रीब तेली की क्या बिसात? (यह कहावत—'कहां राजा भोज कहां

गंगू तेली' इस रूप में ही अधिक प्रचलित है। यह गंगू तेली गांगेयतेलप का अपभ्रंश बताया जाता है, जिसे राजा भोज ने युद्ध में पराजित किया था।)

**कहां राम-राम, कहां टेंटें**

एक श्रेष्ठ वस्तु के साथ निकृष्ट वस्तु की तुलना क्या ? अथवा असली वस्तु तो असली ही रहेगी, कोई नकली वस्तु उसकी बराबरी कैसे कर सकती है ?

(पालतू तोतो को राम-राम कहना सिखाया जाता है, पर वे वास्तव मे टें-टे ही किया करते है।)

**कहा न अबला करि सकै, कहा न सिंधु समाय ?**
**कहा न पावक में जरै, कहा काल न खाय ?**

अर्थात अबला सब कुछ कर सकती है, समुद्र मे सब कुछ समा जाता है, अग्नि मे सब कुछ भस्म हो जाता है और काल सब को खा जाना है।

इसके उत्तर मे किसी ने कहा है—

सुत नहि अबला करि सके, मन नहि सिंधु समाय।
धर्म न पावक मे जरै, नाम काल नहि खाय।

**कहानी जैसी झूठी नहीं, बात जैसी मीठी नहीं,**

कहानी सुनते समय क०।

इसके आगे प्राय. इतना और जुडा रहता है 'घडी घड़ी का विश्राम, को जाने सीता राम'।

**कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा**

कोई बिल्कुल ही बे-सिर पैर काम।

(भानुमती राजा भोज के समय की एक जादूगरनी बताई जाती है)

**कहीं डूबे भी तिरे है ?**

जो एक बार बिल्कुल बिगड़ चुकता है, उसके समलने की आशा फिर नही करनी चाहिए।

**कहीं तो सूहा चुनरी, और कहीं ढेले लात**

कहीं तो किसी स्त्री को रंगीन साड़ी पहिनने को मिलती है, और कहीं लातें-घूंसे खाने को मिलते हैं। (अपना-अपना भाग्य। अथवा समय-समय की बात।)

**कहीं नाखून भी गोश्त से जुदा हुआ है**

घर का आदमी हमेशा घर का ही रहेगा।

**कहीं सूखे दरख्त भी हरे हुए हैं**

बिल्कुल बिगड़ी हुई हालत नहीं सुधरती।

**कहूं तो मां मारी जाए, न कहूं तो बाप कुत्ता खाए**

हर प्रकार से संकट।

(कथा है—किसी स्त्री ने भूल से अपने पति के लिए बकरे के मांस के स्थान पर कुत्ते का मांस पका दिया। उसके पुत्र को किसी प्रकार इसका पता चल गया। पिता जब भोजन करने बैठा और मांस परोस दिया गया, तो वह बडी चिंता में पड गया। भेद खोल देने से मा पर मार पड़ती और चुप रहने से बाप को कुत्ते का मांस खाने का पाप लगता। असमंजस की इसी अवस्था में उसने उपर्युक्त बात कही।)

**कहें खेत की, सुने खलिहान की**

कहा जाए कुछ और समझा जाए कुछ।

**कहें जमीन की, सुने आसमान की**

दे० ऊ०।

**कहे से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता।**

कोई आदमी अपनी खुशी से भले ही कोई काम करता रहे, पर कहने से न करे, तब कहा जाता है।

**कहे मे कोई कुएं में नहीं गिरता**

हर आदमी स्वयं सोच-विचार कर ही कोई काम करता है। दूसरे के कहने मात्र से कोई अपने को विपत्ति में नही डालता।

**कांटा बुरा करील का, औ बदली का घाम।**
**सौकन बुरी है चून की, औ साझे का काम।**

करील का कांटा और बदली का घाम दुखदायी होता है। सौत भी दुखदायी होती है, फिर भले ही वह चून की हो, और साझे का काम भी दुखदायी होता है।

**कांधे धनुष, हाथ में बाना, कहां चले दिल्ली सुलताना ?**
**बन के राव विकट के राना, बड़न की बात बड़े पहचाना।**

बड़ों की बात बड़े ही समझ सकते हैं।

(इस तुकबंदी का अंतिम चौथा चरण ही कहावत के रूप में प्रयुक्त होता है। इसकी कथा है कि कोई एक धुनकर हाथ में धुनौटा और कंधे पर धुनकी लिये जंगल में होकर जा रहा था। इतने में एक सियार की नजर उस पर पड़ी। यह समझकर कि यह धनुष-बाण लिये कोई सिपाही है, वह डर गया

और उसकी खुशामद करते हुए उसने कहावत के प्रथम दो चरण कहे। धुनकर ने भी उसे जंगल का राजा शेर समझा और उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हुए अंतिम अंश कहा।)

**काका काहू के न भये**
जब उम्र मे कोई बड़ा अपने को धोखा दे, तब व्यंग्य मे क०।

**काका की भैंसी, भतीजे की तोंद**
सतानहीन व्यक्ति का पैसा उसके भाई-भतीजे उड़ाते है।

**काका ना करे साका**
चाचा से भतीजे को विशेष सहायता की आशा नही करना चाहिए, क्योकि चाचा तो अपने पुत्रों पर ही अधिक खर्च करना चाहेगा।
चाचा की बराबरी के किसी दूसरे मनष्य से किसी मामले मे निराश होने पर भी कह सकते है।
साका=यश, मलाई।

**कागज की नाव (या पनगुड्डी) आज न डुब्बी, कल डुब्बी**
धोखा-धडी का काम बहुत दिनो नही चलता। क्षणस्थायी वस्तु के लिए भी कह सकते है।

**कागज की नाव नहीं चलती**
दे० ऊ०।

**कागज के घोड़े दौड़ाते हैं**
कोरी कागजी कार्यवाही करना।

**कागा, कौवा और खरगोश, ये तीनों नहिं माने पोस।**
जगली कौवा, कौवा और खरगोश, इन्हे पालतू नही बनाया जा सकता।
(जगली कौवा या काग बिल्कुल काला होता है और कौवे की गर्दन भूरी होती है, दोनो मे इतना ही अन्तर है।)

**कागा बोले, पड़ गए रोले**
कौवे सूर्योदय के होते ही बोलना शुरू कर देते है। उनके बोलते ही सारी दुनिया जाग उठती है।

**कागा रौल**
कौवो की तरह का शोरगुल।

**कागै काग न भिखारी भीख**
सूम के लिए कहावत, जो न तो कौवे को बलि देता है और न भिखारी को भीख।
काग=कागौर या काक बलि जो श्राद्ध के दिनो मे भोजन के अश के रूप मे कौवो को दी जाती है।

**काजल की कोठरी**
ऐसी जगह जहा जाने से अपयश के सिवा और कुछ हाथ न लगे। ऐसे काम को भी कहते है, जिसे करने से बदनामी हो।

**काजल की कोठरी मे जाएगा तो धब्बा लगेगा ही**
बुरे स्थान मे जाने से या बुरे की संगत करने से कुछ न कुछ बदनामी अवश्य होती है।
(काजल की कोठरी मे कैसो हू सयानो जाए
काजल की एक रेख लागिहै पै लागि है।)

**काजल गया बिहार, बहुरिया निहुरे ही है, (पू०)**
बहू काजल की प्रतीक्षा मे झुकी खडी है कि अब आता है अब आता है, किन्तु काजल गया है बिहार, इतने शीघ्र क्यो आने चला?
जब नजदीक से ही आने वाली किसी वस्तु की प्रतीक्षा करते-करते कोई थक जाए, तब क०।

**काजल तो सब लगाते है, पर चितवन भांत भांत (स्त्रि०)**
बनाव-शृगार तो सब करते है, पर निजी सौन्दर्य एक अलग ही चीज होती है।
(वह चितवन औरै कछु जिहि बस होत सुजान।)

**काजी-ए-दल्लाल**
काजी का दलाल। शरारती आदमी। वह आदमी जो काजी को रिश्वत खिलाए।

**काजी का प्यादा घोड़ सवार**
काजी का नौकर हर काम की ऐसी जल्दी मचाता है, मानो घोडे पर सवार है। दफ्तर के बाबू लोगो और चपरासियो पर कटाक्ष, जो अपने को साहब से कम नही समझते।

**काजी की मूंज**
जब एक बार किसी को कोई वस्तु देकर हमेशा

उसका एहसान बताया जाए, तब क०।
(कथा है—किसी जिले में नए अफ़सर आए। उन्हें एक दिन मूज की रस्सी की जरूरत पड़ी। काजी ने लाकर तुरत दे दी। साथ ही माल विभाग के रजिस्टर मे उसकी कीमत अफ़सर के नाम चढ़ा दी। दाम तो कभी नही दिए गए, पर उतनी रकम अफ़सर के नाम प्रतिवर्ष खाते मे निकलती रही।)

**काजी की लौंडी मरी, सारा शहर आया; काजी मरे कोई न आया**
काजी की लौडी के मरने पर सारा शहर मातमपुर्सी के लिए गया, लेकिन स्वयं काजी के मरने पर कोई उनके दरवाजे नही गया। मतलब यह कि बहुत से काम बड़े आदमियो को खुश करने के लिए ही किए जाते है। उनके मरने पर उन्हे कोई नही पूछता, क्योंकि फिर उनसे कोई काम नही बनने का।

**काजी के घर के चूहे भी सयाने**
हाकिम के घर का छोटे-से-छोटा आदमी भी चालाक होता है।
(मुगल जमाने मे अदालत के अफसर को काजी कहते थे। कहावत मे उन अफ़सरो पर व्यंग्य भी छिपा है।)

**काजी के मसल में नारा**
काजी (पैजामे में) मसल से इजारबंद डालने को कहता है। बडा हाकिम चाहे जैसा उल्टा-सीधा काम करवाए, उससे कोई कुछ नही कह सकता।

**काजी जी खाना आया, हमें क्या? तुम्हारे लिए ही है, फिर तुम्हें क्या?**
बेमतलब बोलनेवाले से क०। जब कोई अपने मतलब की बात स्पष्ट न कहे, तब उससे भी क०।

**काजी जी दुबले क्यों? शहर के अंदेशे से**
जब कोई व्यर्थ दूसरों की चिन्ता करे।

**काजी न्याव न करेगा, तो घर तो आने देगा**
किसी के सामने जाकर अपनी बात तो हमें स्पष्ट कहना ही चाहिए, कोई अगर नहीं मानता, तो उससे स्थिति में कोई अंतर नही पड़ता।

**काजी बहुलेरा हारा रहे, पर बंदा न हारा**
मूर्ख और जिद्दी।

**काटने वाले को थोड़ा, बटोरने वाले को बहुत, (कृ०)**
फसल कट चुकने के बाद खेत में पड़ा अन्न बटोरने-वालों को फसल काटनेवाले मजदूरों की अपेक्षा अधिक मिल जाता है।
(जिन्होने वास्तव में काम किया, उन्हें कम और फालतू आदमियो को अधिक मिल जाए, तब के लिए क०।)

**काटा और उलट गया**
दुष्ट मनुष्य के लिए कहते हैं जो सर्प की तरह काट-कर पलट भी जाए।
(कहते है सर्प अगर काटकर पलट जाए तो उसका जहर और भी तेज चढता है। यहा पलट जाने के दो अर्थ है—(१) उलट जाना; और (२) किसी काम को करके मुकर जाना।)

**काटे कटे, न मारे मरे**
बहुत जिद्दी और धृष्ट के लिए क०। ऐसे व्यक्ति के लिए कह सकते है जिससे किसी प्रकार पिंड न छूट रहा हो।

**काटे बार, नाम तलवार का, लड़े फौज नाम सरदार का**
काम तो दूसरे लोग करते हैं, पर यश बड़ों को मिलता है।
बार = बार, आघात।

**काटो तो खून नहीं**
बहुत डर जाना। सन्न हो जाना।

**काठ का उल्लू**
बज्र मूर्ख

**काठ का घोड़ा नहीं चलता**
(१) पैसे के बिना कुछ नहीं होता।
(२) बुद्धिहीन मनुष्य से कोई काम नही लिया जा सकता।

**काठ का घोड़ा, लोहे की जीन, जिस पर बैठें लंगड़दीन**
बच्चों की तुकबंदी, जिसमें लाठी या बैसाखी के सहारे चलनेवाले लंगड़े से मतलब है।

**काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती**
छल-कपट का व्यापार हमेशा नहीं किया जा सकता, पहली बार में ही लोग सचेत हो जाते हैं।

**काठ के घोड़े दौड़ाते हैं**
ऐसा काम करना जिसका कोई परिणाम नही निकलने का।
**काठ छोलो तो चिकना, बात छीलो तो रूखी**
(१) बात को बढ़ाना ठीक नही।
(२) आपसी मामले में बहुत बहस नही करनी चाहिए।
**काढ़ में या दाढ़ में**
पैसा या तो दूसरों को देने मे खर्च होता है या खाने-पीने मे।
काढ़ निकास।
दाढ़ जबड़ा, मुह।
**कातक कुतिया, माह बिलाई, चैत चिड़िया, सदा लगाई**
कातिक मे कुतिया, माघ मे बिल्ली, चैत मे चिडिया और स्त्री हमेशा कामातुर रहती है।
**कातक जो आंवर तर खाय, कुटुम सहित बैकुंठे जाय**
कार्तिक के महीने में जो आंवले के नीचे भोजन करे, वह कुटुम्ब सहित बैकुठ जाता है।
(कार्तिक सुदी ९ को आवला नवमी होती है। इस दिन हिन्दुओ मे आवले के वृक्ष का पूजन और उसके नीचे जाकर भोजन करना शुभ माना जाता है।)
**कातक, बात कहां तक**
कातिक का महीना बात करते बीत जाता है। (क्योकि इस महीने मे त्यौहार बहुत होते है और खुशी के दिन जाते मालूम नही होते।)
**काता और ले दौड़ी**
किसी थोडे से काम को करके बताते फिरना कि देखो मैने यह किया।
**काता सूत परेतन को, पक्की रोटी जुड़यावे को, (स्त्रि०)**
लिपटे हुए सूत को वह उकेल सकती है, और सिकी हुई रोटी को तहाकर रख सकती है। निकम्मी औरत।
**कान कहत नहिं बैन ज्यों, जीभ सुनत नहिं बैन**
कानों में बोलने की शक्ति नहीं होती और जीभ में सुनने की। जिसका काम उसी से होता है।
(पूरा दोहा इस प्रकार है—
ब्रह्म बनाए बन रहे, ते फिर और बनैन।
कान कहत नहिं बैन ज्यो, जीभ सुनत नहिं बैन।
(वृन्द)
**कान पर एक जू नहीं चलती, (ग्रा०)**
किसी की बात पर बिल्कुल ही ध्यान न देना।
**कान प्यारे तो बालियां, जोरू प्यारी तो सालियां**
प्रिय वस्तु से संबंधित सभी वस्तुएं प्रिय लगती हैं।
**कान में ठेंठियां दे ली है**
किसी की बात न सुनना।
**कान मे तेल डाले बैठे है**
किसी बात की कोई खबर ही नही।
**कड़ाही चाटेगा तो तेरे ब्याह में मेह बरसेगा**
मां का बच्चे से कहना।
(लोगो का विश्वास है कि बच्चे के कडाही चाटने से उसके ब्याह मे मेह बरसता है।)
**काना कुत्ता पीच ही से आसूदा**
काना कुत्ता मांड से ही संतुष्ट हो जाता है। अयोग्य या निकम्मा थोड़ी चीज में ही प्रसन्न हो जाता है।
**काना कौवा**
एक गाली। काले और बदशकल आदमी से भी क०।
**काना टट्टू, बुद्धू नफर**
एक तो काना घोड़ा, और फिर साईस भी मूर्ख। दोनो एक से।
अधूरे या टूटे-फूटे साज-सरजामवाले के लिए क०।
**काना मुझको भाय नहीं, काने बिन सुहाय नहीं, (स्त्रि०)**
कोई चीज जब पसन्द न आए और उसके बिना काम भी चलता नजर न आए, तब क०।
**काना, याना, लाड़ला, तीनों हट को खान।**
**अंधा, गूंगा, केंयड़ा, है पूरे शैतान।**
स्पष्ट।
याना अयाना, नादान, बालक।
केंयड़ा तिरछी आखवाला।

**काना हमी**

काना जिद्दी होता है।

**कानी अपना टेंट न निहारे और की फुल्ली निहारे**

दे०—अपना टेंटर देखें नहीं . . . ।

**कानी आंख मटर का बिया, वह भी आंख मटर का बिया, (पू०)**

दे०—एक आंख . . . ।

**कानी के ब्याह को सौ जोखों**

जिस काम में पहले से ही कोई त्रुटि हो, उसमें विघ्न भी बहुत आते है।

**कानी को काना प्यारा, रानी को राना प्यारा**

(१) अपनी वस्तु हरेक को प्रिय होती है, फिर वह कैसी ही क्यों न हो।

(२) जिसके भाग्य मे जो बदा है, वह उसमें ही संतुष्ट रहता है।

**कानी को कौन सराहे, कानी का मियां**

अपनी वस्तु को सब सराहते हैं, फिर दूसरो की दृष्टि मे वह कितनी ही बुरी क्यों न हो।

पाठा०—कानी को कौन सराहे, कानी की मां।

**कानी गाय के अलग बथान**

कानी गाय अलग बंधती है, अथवा सबसे अलग रहना चाहती है, क्योकि घास चरने मे उसे कठिनाई होती है, दूसरे ढोर उसे मारते भी है।

जब कोई व्यक्ति सबसे अलग निराला काम करना चाहता है, तब क०।

**कानी गाय बाम्हन के दान, (पू०)**

निकम्मी चीज दूसरे के मत्थे मढ़ना।

**काने के एक रग सिवा होती है**

काने प्राय: कुटिल होते हैं।

रग = नस।

**कापर करूं सिंगार पिया मोर आंधर, (स्त्रि०)**

मेरे पति तो अंधे हैं, शृंगार किसके लिए करूं।

(जहां कोई गुणग्राहक न हो, वहां गुणी का मन अपना करतब दिखाने में नहीं लगता।)

**काबुल गए मुग़ल बन आए, बोलन लागे बानी।**
**'आब' 'आब' कर मर गए, सिरहाने रहा पानी।**

दे०—'आब' 'आब' कर . . . ।

**काबुल में क्या गधे नहीं होते?**

मूर्खों की कहीं कमी नहीं।

**काबुल में मेवा भई, बृज में भई करील**

जहां जो वस्तु होनी चाहिए, उसका वहां न होना। प्रकृति का मनमौजीपन।

(यह पूरा दोहा इस प्रकार है—

कहूं कहू गोपाल की गई सिटल्ली भूल।

काबुल मे मेवा दई, बृज में दई करील।)

**काम करे नथवाली, पकड़ी जावे चिरकुट वाली, (स्त्रि०)**

बड़े आदमी से कोई अपराध होने पर हमेशा ग़रीब पकड़ा जाता है।

चिरकुटवाली = चिथड़ेवाली, गरीब।

**काम का न काज का, दुश्मन अनाज का**

निठल्ला आदमी।

**काम का न काज का, सेर भर अनाज का**

दे० ऊ०।

**काम को 'अंहीं' और खाने को 'हां'**

प्राय: निठल्ले लड़के से कहते हैं।

**काम को काम सिखाता है**

काम करने से ही आता है। मनुष्य अनुभव से सीखता है।

**काम कोढ़ी, मुंह बज्जुर**

काम के लिए जी चुराना और खाने के लिए मुस्तैद रहना।

कोढ़ी = आलसी से मतलब है।

बज्जुर = बज्र जैसा।

**काम, क्रोध, मद, लोभ की, जौ लौं मन में खान।**
**का पंडित, का मूरखा, दोऊ एक समान।**

स्पष्ट।

**काम चोर, निवाले हाजिर**

काम से जी चुराए, खाने के वक्त आ जाए।

अकर्मण्य।

**काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं है**
काम से जी चुरानेवाले लड़के या नौकर से कहा करते हैं।

**काम सरा, दुख बीसरा, छाछ न देत अहीर**
काम निकल जाने पर फिर कोई नहीं पूछता।
(कथा है कि--एक अहीर बीमार पड़ा। जब तक वैद्य की चिकित्सा कराता रहा, तब तक नित्य उसके घर छाछ भेजता रहा। पर नीरोग हो जाने पर छाछ देना बंद कर दिया।)

**कायथ का बेटा, मरा भला या पढ़ा भला**
कायस्थ का बेटा या तो पढा-लिखा हो, या फिर मर जाए सो अच्छा।
(कायस्थो का काम पढ़ना-लिखना माना जाता था।)

**कायथ का हतियार कलम है**
कायस्थ कलम से दूसरों की गर्दन काटते है।
(कायस्थ अधिकाश मे दफ्तरो मे नौकरी करते है, जहा उनसे नित्य साधारण जनता का काम पड़ता है।)

**कायथों का छोटा, और भाँड़ों का बड़ा, दोनों की खराबी**
(केवल कायस्थो मे ही नही, हिन्दू घरो मे जो सबसे छोटा होता है, उसे ही सबसे अधिक काम करना पड़ता है। छोटा समझकर हर आदमी उससे काम के लिए कहता है। उसी तरह भाड़ो मे बड़े को चूकि नकल करनी अच्छी आती है, इसलिए सब से अधिक श्रम उसे ही करना पडता है।)

**काया कष्ट है, जान जोखों नहीं**
बीमारी में रोगी को ढाढस देने के लिए कहते है।

**काया पापी अच्छा, मन पापी बुरा**
शरीर से भले ही पाप करे पर मन का पापी अच्छा नही।
तु०---कपटी से कोढी अच्छा।

**काया माया का क्या भरोसा?**
शरीर और धन का कुछ भरोसा नहीं, न जाने कब चले जाए।

**काया राखे धर्म, पूंजी राखे व्यवहार**
शरीर के बने रहने से ही धर्म की रक्षा हो सकती है, और पूंजी बनी रहने से ही व्यापार चल सकता है। अथवा धर्म शरीर की रक्षा करता है और व्यापार धन की।

**काल, कढ़ाऊ, किसान का खाऊ, (कृ०)**
सूखा (अवर्षण) और कर्जा दोनों ही किसान के लिए दुखदायी हैं।

**काल का साग, गरीब का भाग**
मौत गरीब को ही अधिक सताती है। अथवा अकाल में गरीबो को ही अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

**काल के आगे किसी का बस नहीं चलता**
स्पष्ट।

**काल के आगे सब लाचार हैं**
स्पष्ट।

**काल के मुंह मे सब है**
एक दिन सबको मरना है।

**काल के हाथ कमान, बूढ़ा बचे न जवान**
मृत्यु किसी की रू-रिआयत नहीं करती।

**काल कोठरी**
खतरनाक जगह।

**काल जुआड़ी**
मौत से खिलवाड़ करनेवाला।

**काल टले, कलाल न टले**
मौत टल सकती है, पर शराब नही छूटती।

**काल न छोड़े राजा, न छोड़े रंक**
मौत अमीर या गरीब किसी की रियायत नही करती।

**काल सबको खाए बैठा है**
सब मौत के मुंह मे जा चुके है।

**काला कोयला**
कोयले जैसा काला और बदशक्ल आदमी।

**काला मुंह, करील के दांत**
काला, बदशक्ल आदमी।
करीला =एक कटीली झाड़ी।

**काला मुंह, नीले हाथ पांव**
घृणित व्यक्ति।

**काली गाय बाम्हन को दान**
श्रेष्ठ वस्तु दूसरे को देनी चाहिए।
(काली गाय हिन्दुओं में शुभ मानी जाती है।)

**काली घटा डरावनी और धौली बरसनहार**
काले बादल केवल भय दिखाते है, बरसते भूरे या मटमैले ही है। असली और दिखावटी चीज मे बडा अंतर होता है।
(जो गरजते हैं वे बरसते नही।)

**काली जुमेरात का वादा करना, (मु०)**
लबा वादा करना।
(काली जुमेरात कृष्णपक्ष के आखिरी बृहस्पतिवार को कहते है, जो मुसलमानी महीने के अंत मे पड़ता है।)

**काली भली न सेत, दोनों मारो एक ही खेत**
दो वस्तुओ मे से कौन अच्छी और कौन बरी है, इसका जब कोई निश्चय न हो, तब दोनो को ही त्याग देना ठीक है।
(इसकी कथा है कि एक राजा के दो रानिया थी, जिनमे से वह एक को अधिक प्यार करता था। दोनो जादू जानती थी। एक दिन वे चील बनकर आपस मे लडने लगी। उनमे एक सफेद और दूसरी काली थी। राजा को जब पता चला कि ये दोनो मेरी रानिया ही है, जो लड़ रही है, तो उसने उनमे से एक को मार डालने का निश्चय किया। किन्तु वह यह तै नही कर सका कि इनमे से किसे खतम किया जाए? काली को या सफेद को। मत्री से जब इस विषय मे सलाह ली, तो उसने जवाब दिया—'काली भली न सेत, दोनो मारो एक ही खेत'। इस पर राजा ने उन दोनो को मार डाला।)

**काली हांड़ी पीछे**
किसी अत्याचारी हाकिम के मरने या अलग होने पर कहावत।
(कुछ छोटी जातियो मे प्रथा है कि घर मे किसी की मृत्यु होने पर घर की पुरानी हाड़ी फोड़ दी जाती है। उसी से कहावत बनी।)

**काले का काटा पानी नहीं मांगता**
काले सर्प का काटा बचता नहीं।
(धूर्त के लिए कहा गया है कि उसका मारा बच नही सकता।)

**काले की सी एक लहर आ जाती है**
अत्याचारी के लिए कहा गया है कि काले सर्प की तरह एक लहर उसके मन में उठती है।

**काले के आगे चिराग नहीं जलता**
जबर्दस्त के सामने किसी की नही चलती।
(लोगो का विश्वास है कि काले सर्प के मणि होती है, जिसके प्रकाश मे दीपक की ज्योति मद पड़ जाती है।)

**काले के काटे का जंतर न मंतर**
दे०—काले का काटा.. ।

**काले कोसों**
बहुत दूर का स्थान।

**काले सिर का एक न छोड़ा**
कुलटा के लिए क०।
(काले सिर से मतलब जवान आदमी से है।)

**काले सिर का बेढब होता है**
मनुष्य एक बेढब प्राणी है।

**कासा दीजे, बासा न दीजे**
अनजान अदमी को खिला दे, पर घर मे जगह न दे।
कासा=कासा, थाली।
बासा निवास।

**कासा भर खाना, आसा भर सोना**
भरपेट खाना, और नीद भर सोना।
आराम की जिदगी बिताना।

**काहे को गूलर का पेट फड़वाते हैं?**
मुझसे क्यो सच-सच सुनना चाहते हैं? मैं जो कहूंगा वह तुम्हे रुचेगा नही।
(गूलर को तोड़ने से कीड़े निकलते हैं, जो ग्लानि उत्पन्न करते हैं।)

**किया, पर कर न जाना, मैं होती तो कर दिखाती, (स्त्रि०)**
दे०—करा और कर न जाना...।

**किरिया और तरकारी खाने ही के बा, (भो०)**
सौगंध और तरकारी खाने ही को बनी है।
जो बहुत सौगंध खाता है, उससे क०।

**किसको मां ने घौंसा खाया है?**
अर्थात मेरे जन्म के अवसर पर मेरी मां ने भी सोंठ खाई है, भूसी नहीं खाई। एक तरह की चुनौती।
घौंसा=दाल को फटकने के बाद बचा हुआ अंश।

**किस खेत का बथुआ है?**
उपेक्षा में कहते हैं कि तुम हो क्या चीज़?

**किस खेत की मूली है।**
दे० ऊ०।

**किस बाग की मूली है?**
दे० ऊ०

**किस बिरते पर तत्ता पानी, (स्त्रि०)**
आप किस बूते पर गरम पानी मांगते है? करनी-करतूत तो कुछ है ही नहीं।
(कथा है कि किसी स्त्री का पति निखट्टू था। एक दिन सुबह उठकर उसने नहाने के लिए गरम पानी मांगा, तब स्त्री ने ताना मारकर उक्त बात कही।)

**किसी का अवा बिगड़े, इनका खदाने का खदाना बिगड़ गया**
सर्वनाश हो गया।
अवा वह गड्ढा, जिसमे कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाते है। 'अवा बिगड़ना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है पूरी की पूरी वस्तु का बिगड़ जाना। खदाना या खदान -वह स्थान, जहां से कुम्हार बर्तनों के लिए मिट्टी खोद कर लाता है।)

**किसी का घर जले कोई तापे**
किसी की हानि से कोई लाभ उठाए।

**किसी का मुंह चले, किसी का हाथ**
कोई गाली देता है, तो कोई मार बैठता है। कोई आदमी जब किसी से लड़ता है, तो दूसरा भी अपनी शक्ति के अनुसार उसका जवाब देता है। मार बैठने-वाला अक्सर यह कहकर अपनी सफ़ाई देता है।

**किसी का लड़का, कोई मिन्नत माने**
जो काम स्वयं किसी के करने का है, उसे कोई दूसरा करता फिरे।
मिन्नत मानना=दीर्घ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना।

**किसी का हाथ चले, किसी की ज़बान चले**
दे०- किसी का मुंह चले।

**किसी की मेहनत अकारथ नहीं जाती**
किसी का परिश्रम विफल नहीं होता।

**किसी की साई, किसी को बधाई**
बयाना किसी का लिया और बधाई किसी के यहां जाकर बजाई। वादा खिलाफ़ी।
साई – उस पैसे को कहते हैं, जो काम या चीज़ के लिए किसी को पेशगी दिया जाता है।

**किसी के क्या दबैल बसते हैं?**
हम क्या किसी के दबे हैं?

**किसी के नुकसान का रवादार न हो**
किसी के नुकसान से संबंध न रखे। अथवा किसी का नुकसान न चाहे।

**किसी को अपना कर लो, या किसी के हो रहो**
या तो किसी को अपना भक्त बनाओ, या फिर किसी के भक्त बनकर रहो। तात्पर्य यह कि दुनिया में ऐसा आदमी किसी काम का नही, जिसके किसी से आपसी संबंध न हों।

**किसी को तवे में दिखाई देता है, किसी को आरसी में**
अपनी-अपनी दृष्टि।
(प्रायः व्यंग्य में ही कहते है।)

**किसी को बैंगन बाय, किसी को पत्थ**
कोई एक वस्तु किसी के लिए हानिकर होती है, तो दूसरे के लिए लाभदायक।
बाय=वायुकारक।
पत्थ=पथ्य, अनुकूल भोजन।
पाठा०—किसी को बैंगन बायले, किसी को पत्थ बरोबर।

**किसी ने यह भी नहीं पूछा कि तुम्हारे मुंह में दांत हैं**
किसी ने हमें टोका तक नहीं। हम बड़े मज़े में गए और लौट भी आए।

**क़िस्मत के लिखे को कोई नहीं मेट सकता**
भाग्य का लिखा होकर रहता है।

**क़िस्मत दे यारी, तो क्यों हो ख्वारी**
भाग्य अगर साथ दे, तो विपत्ति क्यों भोगनी पड़े?

**क़िस्मत न दे यारी, तो क्योंकर करे फौजदारी**
भाग्य के अनुकूल हुए बिना मान-सम्मान कैसे मिल सकता है?

**कुंआरी को सदा बसंत**
व्यंग्य में वेश्या के लिए क०।

**कुंआरी खाय रोटियां, ब्याही खाय बोटियां (स्त्रि०)**
कुंआरी लड़की तो सिर्फ रोटियां ही खाती हैं, किन्तु ब्याही बाप की बोटियां खा जाती हैं।
(क्योंकि ब्याह हो जाने के बाद ससुराल जाते समय तथा खुशी के अन्य मौकों पर भी बाप को हमेशा उसे कुछ न कुछ देना पड़ता है।)

**कुंजड़न की अगाड़ी और कसाई की पिछाड़ी**
कुंजड़िन के पास ताज़ी तरकारी शुरू में ही मिलती है, और कसाई अपना अच्छा मांस बाद में बेचता है। इसलिए अगर अच्छा सौदा लेना चाहो तो कुंजड़िन के पास पहले और कसाई के पास बाद में जाना चाहिए।

**कुआं बेचा है, कुएं का पानी नहीं बेचा**
बेमतलब की बात पर झगड़ा। जब कुआं बेच दिया तो पानी भरना रोकने में क्या तुक?

**कुएं का ब्याह, गीत गावे मसीद का**
असंगत काम।
(भारत की कुछ जातियों में अपनी किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए कुएं अथवा बागीचे का ब्याह करने की आम प्रथा है।)
मसीद मस्जिद।

**कुएं की मिट्टी कुएं ही में लगती है**
किसी काम का लाभ उसी में खर्च भी हो जाता है।

**कुएं झांकते हैं**
व्यर्थ का काम करते हैं। अथवा इतने परेशान हैं कि कुएं में गिरकर प्राण देना चाहते हैं।

**कुएं में भांग पड़ी है**
सब की बुद्धि भ्रष्ट है।
(एक जो होय, तो ज्ञान सिखाइए, कूपहि में यहां भांग परी है।—हरिश्चन्द्र)

**कुचाल संग फिरना, आप मूत में गिरना**
बुरे का संग करना, जानबूझकर बुरा बनना है।

**कुचाल संग हांसी, जीव जान को फांसी, (स्त्रि०)**
बुरे के साथ हँसी-दिल्लगी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे बुराई ही होती है।

**कुछ आंसू से पोंछते हैं**
झूठी सहानुभूति दिखाते हैं।

**कुछ खो ही के सीखते हैं**
आदमी ठोकर खाकर ही सीखता है।

**कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे**
अगर तुम मेरी बात समझ गए, तो मैं भी तुम्हारी बात समझ गया।
एक-दूसरे के मन की बात ताड़ लेना और कुछ कहने की आवश्यकता न समझना।
(इसकी कथा है कि कोई एक राहगीर अपने माल की गठरी सिर पर रखे जा रहा था। पीछे से एक सवार आया। गठरी भारी थी और यात्री कुछ थक भी गया था। इसलिए सवार से उसने अपने बोझ को अगले मुकाम तक घोड़े की पीठ पर रखकर ले चलने के लिए कहा। सवार ने इन्कार कर दिया और आगे बढ़ गया। बाद में उसके मन में आया कि उसने व्यर्थ ही हाथ में आए माल को छोड़ दिया। इधर पथिक ने भी सोचा कि चलो अच्छा हुआ जो सवार ने इन्कार कर दिया, अन्यथा अगर वह गठरी लेकर चलता बनता, तो मैं उसे कहां खोजता फिरता? संयोग से आगे दोनों की फिर भेंट हो गई। इस बार सवार ने जब कहा—लाओ भाई, तुम्हारी गठरी रख लूं, तो पथिक ने जवाब दिया—बस भाई रहने दो, कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे।)

**कुछ तो खरबूजा मीठा, और कुछ ऊपर से कंद**
अच्छाई में और भी अच्छाई।
कंद=शक्कर।

**कुछ तो खलल है कि जिससे यह खलल है**
कहीं कुछ गड़बड़ी तो जरूर है, जिससे यह सब हो रहा है।

**कुछ तो गेहूं गीली, कुछ जिंदरी ढीली**
जिससे आटा ठीक नहीं पिस रहा है। मतलब दोनों ओर ही कही कुछ त्रुटि है।
जिंदरी -चक्की की कील। अगर वह ढीली हो तो पीसने मे दिक्कत होगी।

**कुछ तो बावली, कुछ भूतों खदेड़ी, (स्त्रि०)**
एक तो स्वय ही पगली, फिर मुसीबत की मारी। विपत्ति पर विपत्ति।

**कुछ दाल में काला है**
कही कुछ गड़बड़ी है।

**कुछ बसंत की भी खबर है?**
जब कोई व्यक्ति किसी आगेवाली मुसीबत से बेखबर हो कर खुशिया मनाने मे लगा हो, तब प्राय. उससे व्यंग्य मे कहते है। जिसे सचमुच ही किसी शुभ अवसर के आने की खबर न हो, उससे भी कह सकते है।

**'कुछ लेते हो?' कहा—'अपना काम क्या है?'**
**'कुछ देते हो?' कहा—'यह शरारत बंदे को नहीं आती'**
चालाक और खुदगर्ज के लिए क०।

**कुछ लोहा खोटा, कुछ लोहार खोटा**
दोनो ओर ही त्रुटि का होना।

**कुछ स्वार्थी, कुछ परमार्थी**
कुछ अपना काम बनाना, कुछ दूसरो का भी हित करना।
(दोनों ओर ध्यान रखना चाहिए।)

**कुतिया के छिनाले में फंसे हैं**
व्यर्थ की खीचा तानी मे पड़ना।

**कुतिया चोरों से मिल गई तो पहरा कौन दे?**
जब रखवाला ही बेईमान बन जाए, तो काम कैसे चले?

**कुटनी से तो राम बचावे, प्यारी होकर पत उतरावे, (स्त्रि०)**
बुरी औरत से तो ईश्वर बचाए, प्रेम दिखाकर इज्जत उतरवाती है।

**कुत्ता के आटा होय तो लिट्टी लगा के खाए, (पू०)**
कुत्ते के पास अगर आटा हो, तो वह स्वय ही उसकी रोटी क्यों न बनाए?
(आदमी विवश होकर ही दूसरों का आश्रय लेता है।)

**कुत्ता घास खाय तो सभी पाल लें**
शौक में अगर कुछ खर्च न हो, तो सभी करें।

**कुत्ता चौक चढ़ाए, चपनी चाटन जाए**
कुत्ते को आदरपूर्वक चौक मे बिठाला, फिर भी वह हांडी चाटने गया। जिसकी जो आदत होती है, वह नही छूटती।
(ब्याह मे जब कन्या को मडप के तले लाकर बिठालते और वरपक्ष की ओर से आए हुए वस्त्रा-भूषण उसे पहिनाते हैं, तो उसे चौक चढ़ाना कहते है।)

**कुत्ता न देखेगा, न भौंकेगा**
कोई आदमी किसी वस्तु को यदि देखे नही, तो वह उसके पाने की इच्छा भी न करेगा।

**कुत्ता पाए तो सवा मन खाए, नहीं तो दीया ही चाटकर रह जाए**
जब जो मिल जाए, उसी मे सतोष कर लेनेवाला व्यक्ति।

**कुत्ता पाले वह कुत्ता, सास घर जंवाई कुत्ता, बहन घर भाई कुत्ता, सब कुत्तों का वह सरदार, जो रहवे बेटी के द्वार**
स्पष्ट। जवाई—दामाद।

**कुत्ता भी बैठता है, तो दुम हिलाकर बैठता है**
सफाई जानवरो को भी पसद है, फिर आदमी को तो होनी ही चाहिए।

**कुत्ता भौंके, क़ाफ़िला सिधारे**
कुत्ता भोकता ही रहता है और यात्री अपने रास्ते पर चलते ही रहते हैं। मतलब, समझदार आदमी चुपचाप अपने काम मे लगे रहते हैं, दूसरे क्या कहते है, इस पर ध्यान नही देते।

**कुत्ता मरे अपनी पीर, मियां मांगे शिकार**
कुत्ता तो अपनी मुसीबत में मर रहा है और मियां को पड़ी है शिकार की। दूसरों की सुविधा-असुविधा का कोई विचार न करके केवल अपना स्वार्थ देखना।

**कुत्ता मुंह लगाने से सिर चढ़े**
ओछे आदमी को मुंह नहीं लगाना चाहिए।

**कुत्ते का मग़ज़ खाया है?**
जो इतनी बकवास कर रहे हो?
(कुत्ता बहुत भोंकता है, इसीलिए कहा गया है कि क्या तुमने उसका भेजा खाया है?)

**कुत्ते की दुम बारह बरस नलवे में रखो, तो भी टेढ़ी की टेढ़ी**
कुत्ते की टेढी पूछ किसी उपाय से भी सीधी नही की जा सकती। बुरा आदमी हमेशा बुरा ही रहता है। शिक्षा या सत्सग का कोई प्रभाव उस पर नहीं पडता। (यह कहवात लगभग सभी भारतीय भाषाओ मे प्रचलित मिलती है। उदाहरण के लिए बंगला मे कहते हैं—कुकुरेर लेज घी दिए डोल्लेओ सोजा हयना। और मराठी मे भी है—कुत्र्याचे शेपुट किती ही दिवस नळकाड्यात ठेवले, तरी अखेरीस वाकडे ते वाकडे। सस्कृत लौकिक—'श्वपुच्छोन्नमन', न्याय के साथ तुलनीय। (स०)

**कुत्ते की नींद**
चौकन्नी नींद।

**कुत्ते की मौत मरना**
बहुत अधिक अपमान और कष्ट से मरना।

**कुत्ते के पाव जा, और बिल्ली के पांव आ**
शीघ्र ही जाने और शीघ्र वापस आने के लिए क०।

**कुत्ते के भोंकने से हाथी नहीं डरता**
गंभीर और समझदार व्यक्ति निंदकों की परवा नही करता।

**कुत्ते को घी नहीं पचता**
(१) ओछे के पेट में बात नहीं रहती।
(२) ओछा थोड़ी भी सपत्ति पाने से इतरा उठता है; कुछ यह अर्थ भी लगाते हैं।
(घी खा लेने पर कुत्ते को वमन की बीमारी हो जाती है।)

**कुत्ते को मस्जिद से क्या काम? (मु०)**
किसी बुरे आदमी से अच्छे काम की आशा व्यर्थ है।

**कुत्ते को मौत आवे तो मस्जिद में मूत आवे, (मु०)**
दुर्दिन आने पर मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

**कुत्ते को हड्डी भली लगती है**
गंदे को गंदी चीज़ ही अच्छी लगती है।

**कुत्ते तेरा मुंह नहीं, तेरे साईं का मुह है**
अर्थात कुत्ता अपने मालिक के बल पर ही भोंकता है। (जब कोई साधारण व्यक्ति किसी बड़े का सहारा पाकर उछलता-कूदता है।)

**कुत्तों को दूं पर तुझे न दूं**
किसी के प्रति बहुत घृणा प्रकट करना। अथवा किसी को मागने पर कोई वस्तु उसे न देकर अन्य निकृष्ट व्यक्ति को दे देना।

**कुंद-ए-ना-तराश**
ऐसी लकडी जो छील-काटकर डौलाई न गई हो। ठूठ। मूर्ख के लिए क०।

**कुनबेवाले के चारों पल्ले कीचड़ में हैं**
परिवारवाले को हमेशा कोई न कोई मुसीबत लगी रहती है।

**कुफ़ तोड़ा खुदा खुदा करके**
ईश्वर का नाम ले-लेकर किसी प्रकार विपत्ति से पार पाया।
(कुफ़ का मतलब वास्तव मे इस्लाम धर्म के विरुद्ध आचरण है और 'कुफ़ तोडना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है, किसी को इस्लामधर्म मे दीक्षित करना या सन्मार्ग पर ले जाना, पर यहा मतलब दुष्ट प्रकृति के आदमी को वश में करने से है।)

**कुम्हार का गधा जिन्हों के चूतड़ मिट्टी देखे, तिन्हीं के पीछे दौड़े, (पू०)**
क्योंकि उसी को वह अपना मालिक समझ लेता है। कुम्हार को हमेशा मिट्टी से काम पड़ता है और उसके पीछे मिट्टी लगा रहना स्वाभाविक है।

**कुम्हार का गुस्सा उतरे गधे पर**
क्योंकि वह उसी को पीट सकता है।

**कुम्हार कहे से गधे पर नहीं चढ़ता**
दे०—कहे से कुम्हार...।

**कुम्हार के घर चुक्के का दुख**
एक आश्चर्य की बात, क्योंकि कुम्हार के घर तो चुक्के (कुल्हड़) बनते ही है। उसके यहां उनकी क्या कमी ?

**कुम्हार के घर बासन का काल**
वही भाव है जो ऊपर की कहावत का है।

**कुम्हार से पार न बसाय, गधे के कान उमेठे**
जिसने काम बिगाड़ा है, उससे कुछ न कहकर दूसरे कमज़ोर आदमी पर गुस्सा उतारना।

**कुरयाल में गुलेला लगा**
मचान पर आराम से बैठे पक्षी को गुलेल लगी। यानी अचानक विपत्ति आ टूटी।
(कुरयाल वास्तव में ऐसे पक्षी को कहते है, जो सुख-पूर्वक मचान पर बंठा अपने पंखे सुहला रहा हो। गुलेला मिट्टी या पत्थर की वह गोली होती है, जिसको गुलेल से फेककर चिड़ियो का शिकार किया जाता है।)

**कुरसी का अहमक**
मूर्ख अफ़सर।
(कुर्सी अवध में एक छोटा कस्बा भी है, जहा के लोग मूर्ख कहे जाते है।)

**कुरान पर कुरान रखने का क्या मुज़ायका है**
दो श्रेष्ठ वस्तुओं को किसी प्रकार भी रखो, वे तो हर हालत मे श्रेष्ठ रहेगी।

**कुलेल में गुलेल**
रंग में भंग।
(कोई पक्षी आराम से मचान पर बैठा किलकोटें कर रहा था। इतने में उसे गुलेल लगी।)

**कुल्हिया में गुड़ नहीं फूटता**
बड़े काम को छिपाकर नहीं किया जा सकता। (गुड़ एक ठोस और मजबूत चीज होती है, कुल्हिया में रखकर फोड़ने से वही फूट जाएगी'।)

**कुश्ताः कुश्ताः मीकुनद, (फा०)**
कुश्ता आदमी को मार डालता है, और कुश्ता आदमी को नया जीवन भी प्रदान करता है।
(कुश्ता धातु घटित औषधि या रसायन को कहते हैं।)

**कुसुम का रंग तीन दिन, फिर बदरंग**
किसी भी वस्तु का सौन्दर्य स्थायी नहीं होता। कुसुम=(सं० कुसुंम) एक पौधा, जिसके फूलों से पीला रंग बनता है।

**कूंड़े के इस पार या उस पार**
आलसी आदमी, जो हमेशा चारपाई पर पड़ा करवटें लेता रहे।
(भंगेड़ियों की उक्ति कि भंग ऐसी छाननी चाहिए कि उसे पीने के बाद या तो कूड़े के इस पार लोट जाए या उस पार।)
कूड़ा–भंग घोटने का प्याला।

**कूजे ढलें कि माट?**
पहले बूढ़े मरेंगे या जवान, यह कोई नही बता सकता।
कूजा =छोटा प्याला।
माट =बड़ा मटका।

**कूटो तो चूना, नहीं, खाक से दूना**
चूना गीला करके जितना ही कूटा जाए, उसमें उतना ही लस आता है, और वह मजबूत बनता है।

**कूत थोड़ा, मंजिल भारी**
चलने की ताकत नहीं, और रास्ता लंबा।

**कूद-कूद मछली बगुले को खाय**
एक अनहोनी घटना। कमज़ोर सबल को दबा ले।

**कूदते-कूदते नचनिया हो जाता है**
अभ्यास बड़ी चीज है। अनाड़ी भी अभ्यास करते-करते कलावंत बन जाता है।

**कूद मुए कूद, तेरी नालियों में गूद।**
**निकल गया गूद, तो रह गया मरदूद। (स्त्रि०)**
एक प्रकार की गाली। किसी कर्कशा का अपने पति को डाटना।
गूद =गूदा, ताक़त।
मरदूद -निकम्मा, रद्दी।

**कूदे फांदे तोड़े तान, ताका दुनिया राखे मान**
जो अधिक ढोंग दिखाता है, दुनिया उसी का मान करती है।

**कूवत थोड़ी मंजिल भारी**
दे०—कूत थोड़ा . . . ।
**केकर केकेर धरों नांव, कमरी ओढ़ले सारा गांव, (पू०)**
किस-किसका नाम लिया जाए, सारा गांव कंबल ओढ़े है। सभी जहा बुरे हों, वहा अलग से किसका नाम लिया जाए?
**के करनी करे, केकरा सिर बीते, (पू०)**
कोई तो काम बिगाड़े और मुसीबत किसी की आए।
**केहू के जेठ पूत, केहू के लेखे कनवा, (पू०)**
किसी का तो वह जेठा पूत है, और किमी के लिए केवल छोकडा है। अपनी सनान सबको प्रिय होती है, फिर वह कैसी ही क्यो न हो।
(कनवा का अर्थ यहा छोटा लडका है, पर काना भी उसका अर्थ हो सकता हे।)
**कै लड़े सूरमा, कै लड़ै अनजान**
लडने का काम बहादुरो का है या फिर जो मूर्ख होता है, वही लडाई मोल लेता है।
**कै सोवै राजा का पूत, कै सोवै जोगी अवधूत**
क्योकि इन्हे किसी बात की चिन्ता नही रहती।
**कोइरी के गांव में धोबी पटवारी**
जहा जैसे लोग होते है, वहा के कारिन्दा भी वैसे ही होते है।
(कोइरी उत्तर प्रदेश के पूर्वी अचल की एक कृषि-जीवी जाति है।)
**कोई आंख का अंधा, कोई हिये का अंधा**
कोई अगर आंख का अंधा है, तो ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो आखो के रहते हुए भी नही देखते।
**कोई आइने में देखे, कोई आरसी में**
जिसके पास जो वस्तु जैसी होती है, वह उसी से अपना काम चलाता है।
आरसी=(१) छोटा दर्पण। (२) शीशा जडा वह कटोरीदार छल्ला, जिसे स्त्रियां दाहिने हाथ के अंगूठे में पहिनती हैं।

**कोई इल्म को दोस्त रखता है, कोई रुपए को**
किसी को विद्या से प्रेम होता है, तो किसी को धन से।
**कोई कहके सुनाए, हम करके दिखाएं**
दूसरे केवल बकवास करते है, हम काम करके दिखाते है। चुनौती।
**कोई काम करे दाम से, हम दाम करें काम से**
कोई पूजी लगाकर काम-धधा करता है, हम काम-धधे से पूजी पैदा करते है, अर्थात बिना पूजी के रोजगार करते है।
**कोई किसी का कुछ नहीं कर सकता**
सभी को अपना-अपना बल-बूता है। अथवा सभी का ईश्वर मालिक है।
**कोई किसी की कब्र में नहीं जाता**
अपने कर्मों का फल हमे स्वय ही भुगतना पड़ता है। मरने पर कोई किसी का साथ नही देता।
**कोई खींचे लांग लंगोटी, कोई खींचे मूंछरियां।**
**कोठे चढ़के दी दुहाई, कोई मत करियो दो जनियां।**
दो औरते रखनेवाले पर व्यग्य।
**कोई तौलों कम, कोई मोलों कम**
हर आदमी मे कोई न कोई कमी होती है, किसी में गभीरता की, तो किसी मे भलमनसाहत की।
**कोई दम का दमामा है**
मानव शरीर के लिए कहा गया है। वह क्षणभंगुर है।
दमामा नगाड़ा, तमाशा।
**कोई दम का मेहमान है**
मरणासन्न हे।
**कोई दम में सरसों फूलती है**
अभी नशे में गड़गप्प होता है।
(सरसों फूलना एक मुहावरा है।)
**कोई भी मां के पेट से तो लेकर नहीं निकला है, (स्त्रि०)**
काम करने से ही आता है। कोई मां के पेट से सीखकर नहीं आता।

**कोई मरे, कोई मल्हार गावे**

कोई दुख में पड़ा मरता है, तो कोई आनंद के गीत गाता है। संसार की स्वार्थ-परायणता पर क०।

**कोई माल में मस्त, तो कोई ख्याल में मस्त**

सब अपने-अपने रंग में रंगे हैं। किसी को पैसा प्यारा है, तो किसी को कोई और धुन है।

**कोई मुझको न मारे, तो मैं सारे जहान को मारूं**

लड़ाकू के लिए क०।

**कोई मोल में भारी, कोई तौल में भारी**

किसी में सज्जनता अधिक है तो किसी में गंभीरता। अथवा कोई पैसे में बड़ा है तो कोई सज्जनता में।

**कोई सुने न सुने, मैं कहता हूं**

बकवादी से व्यंग्य में क०।

**कोऊ को कलपाए के, कोऊ कैसे कल पाए**

दूसरे को दुख देकर कोई स्वयं कैसे सुखी रह सकता है?

कलपाना -सताना।

कल पाना -चैन पाना।

**कोख की आंच सही जाती है, पेड़ू की आंच नहीं सही जाती, (स्त्रि०)**

इसके कई अर्थ हो सकते है। (१) संतान की मृत्यु सहन हो जाती है, किन्तु पति की मृत्यु सहन नही होती।

(२) संतान की मृत्यु सही जाती है, किन्तु भूख की ज्वाला सहन नही होती।

(३) प्रसव-वेदना सहन हो जाती है, पर पेट का दर्द सहा नही जाता।

**कोख मांग से ठंडी रहे, (स्त्रि०)**

संतान और पति का सुख भोगे।

(आशीर्वाद)

पाठा०—कोख-माग से भरी-पूरी रहे।

**कोठी-कुठले से हाथ न लगाओ, घरबार सब तुम्हारा, (स्त्रि०)**

झूठा प्रेम दिखानेवाले के लिए क०। घर के ऐसे बड़े व्यक्ति के लिए कह सकते है, जो अपने पुत्रों या बहुओं से दुराव रक्खे।

**कोठी धोये कीच हाथ लगे**

ग़रीब को तंग करने से बदनामी ही हाथ लगती है। अथवा व्यर्थ के काम से हानि के सिवा कोई लाभ नहीं होता।

कोठी=अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा कच्चा बर्तन।

**कोठी में चाउर, घर में उपास, (पू०)**

मूर्ख या कंजूस के लिए कहते हैं कि घर में खाने को होते हुए भी उपवास करता है।

**कोठी में से मोठी नहीं निकली**

बाप-दादों की पूंजी में से अभी कुछ खर्च नहीं हुआ।

अनुभवहीन युवक के लिए भी कहते हैं, विशेषकर ऐसे युवक के लिए; जो स्त्री के संपर्क में न आया हो।

**कोठे वाला रोवे, छप्परवाला सोवे**

धनी को पचास चिंताएं लगी रहती हैं, गरीब बेफिक्र होकर सोता है।

**कोठे से गिरा संभलता है, नजरों से गिरा नहीं संभलता**

गई हुई प्रतिष्ठा फिर नहीं आती।

नज़रों से गिरना मन से उतरना। किसी की नज़रो में इज्जत खो देना।

**कोढ़ में खाज**

विपत्ति पर विपत्ति।

**कोढ़ी कटनियां मुगरा सन आंटी, आर पार बंडे गिरस्त डांटी**

जो काटनेवाले आलसी है, उन्हे तो मोटी-मोटी आंटी मिल रही है, और जिन्होने एक छोर से दूसरे छोर तक सारा खेत काट डाला है, उन्हें मालिक की डांट सहनी पड़ती है। मतलब, सच्चे कामवाले को कोई नही पूछता।

(देहातों में फसल काटनेवाले मजदूरों को मजदूरी के रूप में कटी हुई फसल के अनाज लगे जो डंठल एक विशेष परिमाण में दिए जाते हैं, उन्हें आंटी कहते हैं।)

कटनिया=फसल काटनेवाला मजदूर।

मुगरी सन आंटी=मोगरी जैसी मोटी आंटी।

गिरस्त=गृहस्थ, यहां खेत के मालिक से मतलब है।

**कोढ़ी के जूं नहीं पड़ती**
लोगों का विश्वास है कि कोढ़ी के सिर में जुएं नही पड़ते, यानी वे भी उससे दूर रहती है।

**कोढ़ी को दाल-भात, कमासुत को फुटहा, (पू०)**
आलसी को दालभात मिले, कमाऊ को ज्वार के फूले।
(एक अनुचित बात। काम करनेवाले का आदर न करना।)

**कोढ़ी डराये थूक से**
कोढ़ी अपने थूक से भयभीत करता है। नीच आदमी लोगों को तंग करने के लिए घृणित उपाय काम में लाता है, क्योंकि उसके उन उपायों का कोई जवाब नहीं दिया जा सकता।

**कोढ़ी मरे संगाती चाहे**
बुरा आदमी अपने साथ दूसरो की भी हानि चाहता है।

**कोता गर्दन, तंग पेशानी, हरामजादे की यही निशानी**
छोटी गर्दन और कम चौड़े माथे का आदमी धूर्त्त होता है।

**कोता गर्दन, दुम दराज़**
छोटी गर्दन, लंबी पूंछ।
धूर्त्त के लिए कं०।

**कोदों का भात किन भातों में, ममिया सास किन सासों में**
कोदों का भात भी भला कोई भात है? ममिया सास की सासों में क्या गिनती?
दूर के रिश्ते के आदमी के लिए क०।
(कोदों एक अत्यन्त साधारण अन्न होता है, जिसे ग़रीब ही खाते हैं, और ममिया सास (पति या पत्नी) के मामा की स्त्री होती है, जिससे बहुत कम काम पड़ता है, इसीलिए ऐसा कहा गया है।)

**कोदों दे के पढ़े हैं**
मतलब, पढ़ाई की अच्छी फ़ीस देकर नहीं पढ़े। जब कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति साधारण ज्ञान के मामलों में भी अपनी अज्ञता प्रकट करता है, तब क०।

**कोयल काले कौवे की ओक**
जब एक के साथ दूसरा भी बुरा हो, तब क०।
(कोयल कौवे की तरह ही काली होती है।)

**कोयल बोली और सेहबंदी डबी**
कोयल बोल उठी और लगान वसूल करनेवाले का पता नहीं। मतलब, जिस आदमी को अबतक आ जाना चाहिए था, वह अभी तक नहीं आया।
(ब्रिटिश ज़माने में बहुत पहले रबी और खरीफ़ के लगान वसूली के लिए अस्थायी रूप से कर्मचारी नियुक्त होते थे और वे सेहबंदी कहलाते थे। वे बसंत के अवसर पर जब कोयल बोल उठती है, लगान वसूली के लिए निकल पड़ते थे।)

**कोयला होय न ऊजला, सज्जी साबुन लाय**
जन्म से जिसे जो आदत पड़ी होती है, वह नही छूटती।
सज्जी=कपड़ा धोने के काम आनेवाली एक क्षारयुक्त मिट्टी।
पाठा०—कोयला होय न ऊजला सौ मन...।

**कोयलों की दलाली में हाथ काले**
बुरे काम से बुराई ही पैदा होती है।

**कोरमा बासा भी दाल से बेहतर है, (मु०)**
बढ़िया चीज़ खराब होकर भी मामूली से अच्छी रहती है।
कोरमा=भुना हुआ मांस, जिसमें शोरबा नहीं होता।
(इसी भाव की कहावत गढ़वाली में भी है—सड़ीं शिकार मसुरे कि दाल बराबर के निहो।)

**कोल्हू काट मोगरा बनाना**
किसी एक साधारण चीज को बनाने के लिए बढ़िया कीमती चीज को बिगाड़ डालना।
मोगरा= एक प्रकार का लकड़ी का हथौड़ा, कपड़े कूटने का धोबियों का मोटा डंडा।

**कोल्हू का बैल हो गया**
जो दिन-रात काम में जुटा रहे, उसके लिए क०।

**कोल्हू के बैल की तरह रात-दिन फिरता है**
बहुत श्रम करता है।
**कोल्हू के बैल को घर ही कोस पचास**
ऐसे मनुष्य के लिए कहते हैं, जिस पर काम का बहुत अधिक बोझ हो।
**कोल्हू से खल उतरी, भई बैलों जोग**
बूढ़े मनुष्य या जो मनुष्य अपने पद से हटा दिया गया हो, उसके लिए क०।
(तेल निकल जाने पर तिलहन का केवल फोक बच रहता है और बैलों के खिलाने के काम ही आता है। उसी तरह बूढ़े होने या अपने स्थान से हटने पर मनुष्य अपना पिछला महत्व खो बैठता है।)
**कोस चली न 'बाबा प्यासी', (स्त्रि०)**
काम शुरू करते ही थकान की शिकायत करना।
**कोसे जियें, असीसे मरें**
जिसे कोसा जाता है, वह जीवित रहता है, और जिसे आशीर्वाद दिया जाता है, वह मर जाता है। मतलब, दुनिया का सब काम ईश्वर की मर्जी से ही होता है। मनुष्य उसमे कुछ नही कर सकता।
**कौड़ी के तीन-तीन हो गए**
बर्बाद हो गए। इज्जत चली गई। बहुत सस्ती चीज़ के लिए भी क०।
**कौड़ी के वास्ते मस्जिद ढाते है, (मु०)**
अपने थोड़े-से स्वार्थ के लिए किसी बड़ी चीज़ को नष्ट कर डालना।
**कौड़ी-कौड़ी पर जान देता है**
बहुत कंजूस या अर्थलोलुप।
**कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, कर बातें छल का।**
**भारी बोझ धरा सिर ऊपर, किस बिध हो हलकी।**
स्पष्ट।
**कौड़ी गांठ की, जोरू साथ की**
अपना पैसा हमेशा अपनी गांठ में और स्त्री को अपने साथ रखना चाहिए। अथवा पैसा गांठ का ही काम आता है और स्त्री तभी काबू में रहती है, जब अपने साथ रक्खी जाए।
**कौड़ी न रख कफ़न को, बिज्जू की शक्ल बन रह**
ऐसे लोगों का मज़ाक, जो पैसे के संग्रह में विश्वास नहीं रखते।
बिज्जू=बिल्ली की तरह का एक जानवर जो मुर्दे खाकर रहता है।
**कौड़ी नहीं गांठ में, चले बाग की सैर**
बिना पर्याप्त साधन के किसी काम को करने के लिए तत्पर होना।
**कोड़ी न हो, तो फिर कौड़ी के तीन-तीन हैं**
अपने पास पैसा न हो, तो अपनी कोई कीमत नही।
**कौड़ी पास नहीं, पड़ी अफ़ीम की चाट**
अफ़ीम एक मंहगी चीज़ है। फिर उसके साथ तर माल भी खाने को चाहिए। कहा से आए?
**कौड़ी पर खून नहीं होता**
सामान्य लाभ के लिए बहुत हानि नही की जाती।
**कौन कहे राजा जी नंगे है**
बड़ो की बात कहकर कौन उनकी अप्रसन्नता मोल ले।
(इसकी एक प्रसिद्ध कथा है कि एक बार कुछ ठगों ने एक राजा के पास जाकर कहा कि हम ऐसी पोशाक बनाते है जिसे वही मनुष्य देख सकता है, जो जीवन में कभी झूठ न बोला हो। राजा को बड़ा कौतूहल हुआ और वह उस पोशाक को बनवाने के लिए तैयार हो गया। उसके लिए ठगों ने जितना भी पैसा चाहा, वह भी दे दिया। इसके कुछ दिनो बाद ठग खाली बक्स लेकर राजा के पास आए और बोले कि लीजिए श्रीमान्, यह आपकी पोशाक तैयार हो गई है। अब इसे पहिनकर देखा जाए कि कैसी बनी है। कहकर उन्होने राजा के सब कपड़े उतरवा डाले और उन्हें झूठमूठ ही एक-एक कर के नए कपड़े पहिनाने का नाटक किया। जब कि वास्तव में न तो वहां किसी तरह के कोई वस्त्र ही थे और न राजा को उन्होंने कुछ पहिनाया ही। ठगों ने जब कहा कि देखिए सरकार, पोशाक कैसी बनी है, तो राजा बड़ा हैरान हुआ; क्योंकि उसे कहीं भी अपने बदन पर कपड़े नज़र नहीं आ रहे थे; लेकिन यह सोचकर कि यह पोशाक उसी व्यक्ति को दिखाई देगी, जो कभी झूठ

न बोला हो, वह कुछ कह नही सका। इसके बाद ठग तो वहां से चुपचाप चलते बने और राजा अपनी पोशाक को दिखाने के लिए दरबार में आया। दरबारियों को जब मालूम हुआ कि यह पोशाक केवल सच बोलनेवालों को ही नजर आएगी, तो वे चुप रहे और कुछ कह नही सके। किन्तु वहां एक छोटा बालक था। उससे नही रहा गया। और वह बोल उठा कि अरे राजा जी तो नंगे है। तब राजा को पता चला कि वास्तव मे वह नंगे है और ठग उनको मूर्ख बना गए है।)

**कौन किसी के आवे जावे, दानापानी खेंच लावे**
अन्नजल मुख्य है।

**कौन-सा दरख्त है, जिसे हवा नहीं लगी**
थोड़े-बहुत कष्ट सभी को भोगने पड़ते है।
(हवा लगना एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ होता है 'सुहबत का असर होना'। इस तरह कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि ऐसा कौन-सा मनुष्य है, जिस पर सगत का प्रभाव न पडा हो।)

**कौन-सी चक्की का पीसा खाया है?**
जिससे तुम बहुत मोटे हो गए हो।
हँसी मे ही कहते है।

**कौन हर रोज़ अतालीक़ हो समझाने का?**
हर रोज़ तुम्हे कौन सबक पढाए?
अतालीक=गुरु, शिक्षक।

**कौन कमाई पर तेल बुकवा? (पू०, स्त्रि०)**
कमाई-धमाई कुछ न करके शौकीन बने फिरना।
बुकवा=(१) बुक्का, अभ्रक का चूर्ण।
(२) बूकना लगाने के अर्थ में भी आता है।

**कौने रूप पर इतना सिंगार? (पू०, स्त्रि०)**
एक स्त्री का दूसरी से ताना मारकर कहना कि रूप तो कुछ है नही, फिर इतना शृगार किस बात पर?

**कौवा कान ले गया**
बिना सोचे-विचारे दूसरे की बात पर विश्वास कर लेना।
(कथा है कि किसी मूर्ख से एक व्यक्ति ने कह दिया कि तेरा कान कौवा ले गया। सुनते ही वह झट से कौवे के पीछे दौड़ पड़ा। लोगों ने जब पूछा कि क्या बात है, तो उसने जवाब दिया कि मेरा कान कौवा ले गया है। उसे छीनने के लिए मै उसके पीछे जा रहा हूं। इस पर किसी ने कहा कि कान तो तेरे दोनो लगे है। कौवा कहां से ले जाएगा? जब उसने अपने कान टटोल कर देखे, तो वास्तव मे दोनो जहा के तहां मौजूद थे और वह बड़ा लज्जित हुआ।)

**कौवा चला हंस की चाल, अपनी चाल भी भूल गया**
अपनी चाल छोड़कर बडो की नकल करने से सदैव हानि होती है।

**कौवा टरटराता ही है, धान सूखते ही है, (स्त्रि०)**
फालतू आदमियो के विरोध करने से किसी का कोई काम नही रुकता। वह तो यथावत चलता ही है।

**कौवे की दुम में अनार की कली**
(१) किसी बदशक्ल आदमी का बढ़िया पोशाक पहिनकर निकलना।
(२) एक निकृष्ट वस्तु के साथ बढ़िया वस्तु का मेल होने पर।

**कौवों के कोसे से ढोर नहीं मरते**
कोई आदमी अगर अपने स्वार्थवश दूसरे का बुरा चाहे, तो उससे कुछ होता-हवाता नही।

**कौवों को अंगूरी बाग**
अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

**क्या आग लेने आये थे?**
(१) जब कोई आकर तुरंत जाना चाहे, तब क०।
(२) जब कोई अपने आने के वास्तविक उद्देश्य को न बताना चाहे, तब भी उससे व्यग्य मे क०।

**क्या उधार की मां मारी गई है? (पू०)**
किसी मनुष्य ने किसी को कर्ज़ देने से इन्कार कर दिया। तब उसने कहा कि कर्ज़ की मा नही मर गई। मुझे कहीं न कही रुपया मिल ही जाएगा।

**क्या करेगा दौला, जिसे दे मौला**
भगवान ही सब को देता है, दौला उसमें कुछ नहीं करता।
(पंजाब के गुजरात जिले में १७वीं शताब्दी में शाह

दौला नाम के एक पहुंचे हुए फ़कीर हो गए हैं। जब कोई उनके पास याचना करने जाता था, तब वह उससे उक्त वाक्य कह दिया करते थे।)

**क्या काबुल में गधे नहीं होते?**
मूर्ख की कही कमी नही।

**क्या काजी की गधी चुराई है?**
मैंने क्या किसी का कुछ बिगाडा है, जो तुम मुझे बे-मतलब डरा-धमका रहे हो।

**क्या कोयलों की नाव डूब जाएगी?**
ऐसी कौन-सी बड़ी हानि हो जाएगी?

**क्या खाक तेरी परवाह! चूल्हे में से निकल भाड़ में जा!**
तुम्हारी इच्छा की बलिहारी, जो तुम चाहते हो कि मै चूल्हे मे से निकल कर भाड़ मे जाऊ, अर्थात और भी गहरी मुसीबत मे पड़ जाऊ।

**क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले**
कर्मों का फल तुरत मिलता है।

**क्या गोमती का पानी पिया है?**
जो इतनी नजाकत दिखाते हो?
(लखनऊवालो के लिए ताने मे क०)

**क्या घास में सांप नहीं चलता?**
अर्थात क्या अच्छे स्थान मे कोई बुराई नही हो सकती?

**क्या चूड़ियां फूट जाएंगी?**
हौले-हौले काम कर रहे हो।
बहुत धीमे काम करनेवाले से व्यग्य मे क०।
(यह भी वैसा ही जैसे क्या पाव मे मेहदी लगी है।)

**क्या जाने गंवार, घुंघटवा का भार, (स्त्रि०)**
गवार आदमी प्रेम करने चला है, पर वह मूर्ख क्या जाने उसका भेद!

**क्या टोटका करने आई थी? (स्त्रि०)**
(१) जब कोई आकर तुरत जाना चाहे, तब क०।
(२) जब किसी के यहा निमत्रण मे जाकर कोई बहुत ही कम भोजन करे, तब भी कहा जाता है।

**क्या तमाशे की बात है, जिसका जाए, वही चोर कहलाए**
जब कोई आदमी किसी का कुछ नुकसान कर जाए और उसके लिए उसे ही ज़िम्मेदार ठहराया जाए, जिसका नुकसान हुआ है, तब क०।
(फैलन की उक्त कहावत पर यह टिप्पणी है—'भारतीय पुलिस का यह आम तरीका है कि वह जब चोरी का पता लगाने मे असमर्थ रहती है, तब प्रायः चोरी की रपट दर्ज करानेवाले को ही पकड़ती है और उल्टे उस पर यह आरोप थोपती है कि इस सब मे तुम्हारी ही कोई शरारत है। उसी से कहावत चली।')

**क्या दम का कुछ भरोसा है?**
जिदगी का क्या ठिकाना।

**क्या दर्जी का कुछ, क्या मुकाम?**
दर्जी का क्या तो सामान, और क्या उसके ठहरने की जगह?
(ऐसे व्यक्ति के लिए कहते है, जिसे अपने काम-धधे के सिलसिले मे हमेशा घूमते-फिरते रहना पड़े। यह कहावत उस समय की है, जब सिलाई की मशीनो का आविष्कार नही हुआ था और दर्जी घरो पर जाकर सिलाई का काम करते थे। वे प्रायः अपना सुई-धागा लेकर एक गाव से दूसरे मे घूमते भी रहते थे।)

**क्या दिन जाते देखे**
बीते दिनो की याद मे क०।

**क्या नंगी नहायेगी, और क्या निचोड़ेगी?**
निर्धन और सामर्थ्यहीन व्यक्ति।

**क्या परदेसी की पीत और क्या फूस का तापना,**
**दिया कलेजा काढ़ हुआ नहीं आपना, (स्त्रि०)**
स्पष्ट। किसी प्रेमिका का अपने कृतघ्न प्रेमी के प्रति उपालभ।

**क्या पांव में मेंहदी लगी है?**
जो इतने धीरे चलते हो। पैरो मे मेहदी लगी होने पर स्त्रियां स्वाभाविक रूप से बहुत धीमे चलती हैं।

**क्या पानी मथने से भी घी निकलता है?**
सूम के प्रति क०। ऐसे काम के लिए भी क० जिससे कोई नतीजा न निकलनेवाला हो।

**क्या पिदड़ी और क्या पिदड़ी का शोरबा**
तुच्छ और उपेक्षणीय व्यक्ति के लिए क०। (पिदड़ी या पिद्दी बया की जाति का एक छोटा पक्षी होता है। मुहावरे में तुच्छ या कमज़ोर को पिद्दी कहते हैं।)

**क्या बालू की भीत, क्या ओछे की प्रीत।**
**प्रीत को गंभीर से, जनम जाय है बीत।**
स्पष्ट।

**क्या भरोसा है जिन्दगानी का।**
**आदमी बुलबुला है पानी का।**
जीवन का कोई भरोसा नहीं, पानी के बुलबुले की तरह न जाने कब नष्ट हो जाए।

**क्या मक्खी ने छींक दिया?**
अर्थात क्या कोई अपशकुन हो गया?
जब कोई व्यक्ति सहसा अपने किसी निश्चय को बदल दे, तब प्रायः उससे व्यंग्य में क०।

**क्या मुंह और क्या मसाला?**
जब कोई व्यक्ति ऐसी बात कहे अथवा ऐसा काम करे, जिसके कहने या करने योग्य वह न हो, तब क०।

**क्या मुंह पर फिटकार बरसती है**
तुम्हें धिक्कार है। तुम्हे शर्म नही आती, जो तुमने ऐसा बुरा काम किया।

**क्या मुंह में घुनघुनियां हैं?**
जो बोल नहीं पाते। जब कोई स्पष्ट अपनी बात न कहे, या संकोचवश कह न पा रहा हो, तब क०।
घुनघुनियां=नमक मिर्च पड़े उबले चने।

**क्या मुंह में पंजीरी भरी है?**
जो स्पष्ट नहीं बोलते।

**क्या मुंह से फूल झड़ते हैं**
जब कोई मुंह से बुरे सब्द निकाल रहा हो, तब उससे व्यंग्य में क०।

**क्या मैं तेरी पट्टी के नीचे पैदा हुई हूं, (स्त्रि०)**
जो मैं तुमसे दबूं।
पट्टी से मतलब चारपाई से है।

**क्या ले गया शेरशाह, क्या ले गया सलीमशाह?**
धन-संपत्ति सब यहीं पड़ी रहती है। कोई अपने साथ नहीं ले जाता।
(शेरशाह सूर और उसका पुत्र सलीमशाह सूर ये दोनों सन १५४२ और १५५४ के बीच दिल्ली के प्रसिद्ध बादशाह हो गए हैं।)

**क्या सांप का पांव देखा है?**
असंभव बात कहने पर भर्त्सना में क०।

**क्या सांप सूंघ गया?**
मतलब, चुप क्यों हो? जवाब क्यों नहीं देते? (सूंघ जाना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ सांप के संबंध में काटना होता है। जिसे सांप काट खाता है, वह बोल नही पाता।)

**क्या सौ रुपए की पूंजी, क्या एक बेटे की औलाद?**
थोड़ी पूजी कभी भी खर्च हो सकती है, और एक लड़का मर जाए तो निःसंतान हो जाता है।

**क्या शान में जुफ्ते पड़ जाएंगे?**
अपने हाथ से कोई काम करने या अपने से छोटे की सहायता करने में मनुष्य का कुछ बिगड़ता नही।
जुफ्ता--सिकुड़न, शिकन।

**क्या शान में बट्टा लग जाएगा?**
दे० ऊ०।
(यह तथा ऊपर की कहावत, दोनों उस समय भी प्रयुक्त होती हैं, जब कोई मनुष्य किसी काम के करने में व्यर्थ का हीला-हवाला या अनिच्छा प्रकट करता है।)

**क्या हिजड़ों ने राह मारी है?**
क्या हिजड़ों ने रास्ता रोक रखा है? अथवा क्या रास्ते मे हिजड़े लूट लेंगे। किसी स्थान पर जाने के लिए व्यर्थ के बहाने प्रकट करने पर क०।

**क्यों अंधा न्योते और क्यों दो बुलाए?**
जानबूझकर कोई विपत्ति क्यों मोल ली जाए?

(अंधे को अगर न्यौता जाए, तो यह निश्चित है कि वह सहायता के लिए अपने साथ एक और व्यक्ति लाएगा।)

**क्यों आंखों मे खाक डालते हो ?**

क्यो सरासर मूर्ख बनाते हो ?

**क्योंकर री, तू उतरी पार ? क्यों कर री तू वाली बाढ़ ?**

**क्यों कर री तूने यह घर जाना ? क्यों कर री, तूने मुझे पहचाना ?**

(कथा है कि कोई स्त्री अपने घर पर नित्य कढी खाते-खाते ऊब गई थी, इसलिए वह नदी पार अपने एक रिश्तेदार के यहा चलनी बनी। दुर्भाग्य से वहा भी उसे कढी खाने को मिली। तब उसे सबोधित करके उसने उपर्युक्त वाक्य कहा । साराश–मनुष्य जिस बात से बचता है, प्राय वही उसके सामने आती है।)

**क्यों कही, और क्यों कहाई**

क्यो किसी से ऐसी बात कही जाए कि बदले मे हमे भी वैसी ही (कडी) बात सुननी पडे।

**क्यों कांटों में घसीटते हो ?**

क्यो मुझे लज्जित करते हो।

(काटो मे घसीटना एक मुहावरा, है जिसका अर्थ होता है कि आप मेरी जितनी प्रशसा कर रहे है, मै उसका पात्र नही हू। मेरी इतनी प्रशसा करना मानो मुझे काटो मे घसीटना है।)

**क्यों चबा-चबा कर बातें करते हो**

अधूरी बात क्यो कहते हो ? जो कुछ कहना हो स्पष्ट कहो।

**क्यों बहिश्त में लातें मारते हो ?**

(१) हमेशा भोग-विलास मे डूबे रहनेवाले से क०।

(२) झूठे से भी क०।

(३) जब कोई मनुष्य सहज मे मिली किसी सुखभोग की वस्तु को ठुकरा रहा हो, तब भी कह सकते है।

**क्वांर का सा झल्ला, आया, बरसा, चल्ला**

(१) जब कोई सहसा आए और तडक-भड़क दिखाकर चला भी जाए, तब क०।

(२) सहसा क्रोध आने और तुरंत शांत हो जाने पर भी क०।

(क्वारी मे प्राय एकाएक वर्षा होती है और बहुत देर नही ठहरती। उसी से कहा० की सार्थकता है।)

**क्वांर जाड़े का द्वार**

क्वांर के महीने से जाडा आरम्भ होता है।

**खंजर तले दुक दम लिया तो उससे क्या ?**

आसन्न सकट से क्षणमात्र के लिए छुटकारा मिला, तो उससे क्या ?

**खग जाने खग ही की भाषा, (तु० रा०)**

चालाक ही चालाक की बात समझ सकता है।

**खड़ा बहिश्त में गया**

अच्छी मौत मरा।

**खड़े पीर का रोज़ा रखा है क्या ?**

जो आने पर अपना आसन ग्रहण न करे, उससे क०।

**खड़े रस्सी, बैठे कोस, खाते-पीते तीन कोस**

आदमी यात्रा मे जितनी देर खडा रहता है, उतनी देर मे एक रस्सी, जितनी देर बैठता है, उतनी देर मे एक कोस, और खाने-पीने म जितना समय नष्ट करता है, उतने मे तीन कोस चल सकता है। तात्पर्य—अपना समय नष्ट नही करना चाहिए। रस्सी जरीब, भूमि की एक माप जो गज होता है।

**खता करे बीबी, पकड़ी जाए बांदी**

कसूर कोई करे और दंड कोई भोगे।

**खत्री से गोरा सो पिंड रोगी**

जब कोई अपने से अधिक चतुर को धोखा देने का प्रयत्न करे, तब क०।

पिंड रोगी=पाण्डु या पीलिया रोग से ग्रस्त। (खत्री अपने गोरे रग और सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है।)

**खरब अरब लौं लच्छमी, उदै अस्त लौं राज।**
**तुलसी हरि की भगत बिन, यह आवे किहि काज।**
स्पष्ट।
इसका शुरू इस प्रकार होता है—अरब खरब लौं द्रव्य है, उदै अस्त लौं राज।)

**खरबूजा चाहे धूप को और आम चाहे मेह।**
**नारी चाहे जोर को और बालक चाहे नेह।**
स्पष्ट।

**खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है।**
समाज में एक आदमी जैसा करता है, वैसा ही दूसरा भी करने लगता है।

**खरसा प्यारा बीजना, स्याले प्यारी आग।**
**वर्षा प्यारी तीन चीज, कंबल, छावा, राग। (ग्रा०)**
स्पष्ट।
खरसा=ग्रीष्म ऋतु। बीजना=पंखा। स्याला=जाड़ा। छावा=छप्पर। राग=गाना।

**खरा खेल फरुक्काबादी**
खरा मामला या खरा काम।
(किसी समय फर्रुखाबाद में बहुत खरी चांदी का रुपया बनता था। उसी से कहावत बनी।)

**खरादी का काठ काटे ही कटे, (क०)**
काम करने से ही होता है।
खरादी=खरादनेवाला।

**ख़राब ख़स्ता, नाज सस्ता**
ऐसा दुर्दशा-ग्रस्त व्यक्ति, जिसे लोग सस्ते अनाज की तरह त्याग दें। अथवा ख़राब और सस्ती चीज।

**खरी मजूरी चोखा काम**
पूरी और अच्छी मजदूरी देने से काम भी अच्छा होता है।

**खर्चा घना, पैदा थोड़ी।**
**किस पर बांधू घोड़ा घोड़ी।**
बिना आमदनी के कोई शौक भला कैसे किया जा सकता है?

**खलक का हलक किसने बंद किया**
दुनिया के मुंह को कौन बंद कर सकता है? लोग तो कहते ही रहेंगे।

**खलगुड़ एक ही भाव**
कुशासन। जहां अच्छे-बुरे की परख न हो।

**खलया सास किन सासों में।**
**कोदों का भात किन भातों में। (पू०)**
ऐसे आदमी के लिए उपेक्षा में क०, जिसकी बुक़त न हो।
खलया सास=मौसेरी सास; जिससे कोई विशेष काम नहीं पड़ता।
कोदों=एक हलका अनाज।

**ख़लीलखां फाख़्ता मारते हैं**
(मुहावरा वास्तव में 'फाख़्ता उड़ाना' है, और यह कहावत इस तरह प्रचलित है—वे दिन गए जब ख़लील खां फाख़्ता उड़ाते या उड़ाया करते थे। कहा जाता है दिल्ली में कोई ख़लील खां हो गए है, जिन्होने कबूतर की जगह फाख़्ता उड़ाई थी।)

**ख़ल्क़ की ज़बान, ख़ुदा का नक्कारा**
जनता की राय को ईश्वर का उपदेश समझना चाहिए।

**ख़ल्क़ ख़ुदा की, मुल्क बादशाह का**
सृष्टि ईश्वर की और जमीन बादशाह की है।
(मुग़ल जमाने में डुग्गी पीटते समय कहते थे।)

**खवे से खवा छिलता है**
यानी बहुत भीड़ है।
खवा=कंधा।

**ख़स कम जहां पाक**
बुरे आदमी की मृत्यु पर कहते हैं कि चलो अच्छा हुआ, दुनिया पाक हुई।
ख़स=कूड़ाकरकट।

**ख़सम का खाये, भाई का गाये (स्त्री०)**
किसी का खाना और किसी के गुण गाना।

**ख़सम किये सुख सोने को कि पाटी लग के रोने को, (स्त्रि०)**
अभागी लड़की का कहना, जिसका ब्याह बूढ़े के साथ हुआ है। अथवा जिसका पति उसे नहीं चाहता।

**खसम देवर दोनों एक सास के पूत, यह हुआ या वह हुआ, (प्रा०)**
किसी स्त्री के प्रति व्यग्य मे कहना, जिसका देवर से प्रेम हो गया हो।
(कई जातियो मे पति के मरने पर उसके छोटे भाई से ब्याह कर लेने की प्रथा प्रचलित है। कहावत में उस ओर भी संकेत है।)

**खसम से छूटे तो यारों के जाए**
व्यभिचारिणी स्त्री०।

**खांड़ और रांड़ का जोबन रात को**
मिठाई और वेश्या का आनद रात में ही।

**खांड़ की रोटी, जहां तोड़ो, वहां मीठी**
अच्छी वस्तु हमेशा अच्छी ही रहती है।

**खांड़ खूंदेगा सो खांड़ खायेगा**
जो परिश्रम करेगा, उसी को मिलेगा।

**खांड़ बिना सब रांड़ रसोई**
मिठाई के बिना भोजन का आनद नही आता।

**खांड़ा बाजे रन पड़े, दांता बाजे घर पड़े**
तलवार चलना लड़ाई के लक्षण और झगडा होना घर की बर्बादी के लक्षण।
दांत बजना=(मु०) कलह होना।

**खाइए मन भाता, पहनिए जग भाता**
जो अपने को रुचे सो खाना चाहिए, जो सब को रुचे वही पहिनना चाहिए।

**खाई करे कमाई, कप्पड़ करे सिंगार**
भोजन से ही परिश्रम होता है, और कपडो से बदन सजता है।

**खाई भली कि माई भली**
खाना मां से प्यारा होता है।

**खाई मुगल की ताहरी, कहां जाएगी बाहरी**
मुग़ल की ताहरी का स्वाद लग गया, अब जा कहां सकती है?
ताहरी=एक प्रकार की बढ़िया खिचडी।

**खाऊं तो गेहूं न तो रहूं यूं हूं**
जीभ के लालची के लिए क०। जिद्दी के लिए भी क०।

**खाक चाट के कहता हूं**
अत्यधिक विनम्रता दिखाना।

**खाक छानते, बेर बीनते**
मारे-मारे फिरना।

**खाक डाले चांद नहीं छिपता**
यशस्वी पुरुषो की निंदा करने से उन के यश में बट्टा नही लगता।

**खाक न धूल, बकाइन के फूल**
फालतू आदमी या ऐसा जो फालतू बात करे।
बकाइन=नीम की जाति का एक पेड।

**खाकी अंडे की पैदाइश**
तुच्छ व्यक्ति।

**खाकी अंडों में बच्चे नहीं होते**
खोखले आदमी से कोई काम नही निकल सकता।

**खाके जल्दी चलिए कोस, मरिए आप दैव के दोस**
खाकर तुरंत नहीं चलना चाहिए।

**खाके पछताता है नहा के नहीं पछताता।**
खाने से हानि हो सकती है, पर नहाने से नहीं।
(नहाना हमेशा गुणकारी होता है।)

**खात पड़े तो खेत, नहीं तो भूड़ का रेत, (कृ०)**
खेत मे खाद देने से ही उपज अच्छी हो सकती है।

**खाता भी जाए, और बड़बड़ाता भी जाए**
स्पष्ट। असंतोषी।

**खाते कमाते रहो**
आशीर्वाद।

**खाते पीते जग मिले, औसर मिले न कोय**
सुख के सब कोई साथी होते है, दुख मे भी कोई नही आता।

**खान खाना, जिनके खाने में बताना**
(खानखाना का भोजन सोने के थाल में परोसा जाता था। खानखाना से मतलब अकबर के दोस्त और मंत्री बहराम खां से है।—फैलन।)

**खाना और उंघाना**
आलसी के लिए क०।

**खाना और ऐंड़ाना**
निकम्मे लड़के के लिए क०।

**खाना और गुर्राना**
कृतघ्नता दिखाना।

**खाना न कपड़ा, सेंत का करना, (स्त्रि०)**
भरपेट खाने को न मिलने पर क०।

**खाना न कपड़ा, सेंत का भतरा, (स्त्रि०)**
निकम्मा पति।

**खाना पराया है, तो पेट तो पराया नहीं है**
माल मुफ्त का है तो क्या हुआ, ज्यादा खाने से तो अपने को ही कष्ट होगा। लोभवश कोई ऐसा काम नही करना चाहिए, जिससे अपने को परेशानी हो।

**खाना पीना गांठ का, निरी सलाम आलेक**
झूठा शिष्टाचार दिखाने पर।

**खाना वहां खाओ, तो पानी यहां पीना**
जल्दी लौटना।

**खाना शराकत, रहना फरागत**
मिलजुल कर रहो, मगर हिसाब ठीक रखो।

**खाने के दांत और, दिखाने के और**
(१) ऊपर से प्रेम-भाव और भीतर से कपट।
(२) कहना कुछ और करना कुछ।

**खाने को ऊद, कमाने को मजनूं**
निकम्मा आदमी।
मजनू=दुबला-पतला, कमजोर।

**खाने को न मिले, खैर, पर नशे को मिले**
नशेलची का कहना।
(यहां नशा शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। उसमें गांजा, भांग, चरस, शराब और तमाखू आदि सभी शामिल हैं।)

**खाने को पीछे, नहाने को पहले**
खाने के पहले नहाना चाहिए।

**खाने का 'बिस्मिल्ला', काम को 'इस्तगफिरुल्ला', (मु०)**
खाने के लिए तैयार, पर काम के लिए जी चुराना। (मुसलमानों में कोई कार्य आरंभ करते समय 'बिस्मिल्लाह' अर्थात् 'ईश्वर के नाम पर' कहने की प्रथा है, वैसे ही जैसे हिन्दुओं में 'श्रीगणेश'। 'इस्तगफिरुल्ला' का अर्थ है 'ईश्वर बचाए'।)

**खाने को महुआ, पहिनने को अमौआ**
(१) खाने की फिक्र न करना, पर बढ़िया कपड़े पहनना।
(२) झूठी तड़क-भड़क दिखाना।
अमौआ=मूंगिया रंग का एक कीमती कपड़ा, जिसका प्रचार अब बंद हो गया है।)

**खाने को शेर, कमाने को बकरी**
जो खाए बहुत, पर काम कुछ न करे।

**खाने में चटनी, पलंग पर नटनी**
खाने में चटनी हो, और पलंग पर नटनी हो। भोग-विलासवालो के लिए क०।
नटनी=औरत, वेश्या।

**खाने में शरम क्या, और घूसों में उधार क्या?**
खाने में संकोच नही करना चाहिए, और मार का बदला उसी समय चुका लेना चाहिए।

**खाम को काम सिखात है**
काम करते अनाड़ी भी होशियार बन जाता है।

**खाय कांसा भर, चले आसा भर**
आलसी और पेटू पर क०।
कासा=थाली। आसा=(अ० असा) डंडा।

**खाय के बड़ियां, टांग रहे खड़ियां**
बड़ियों की प्रशंसा।

**खाय के जल्दी चलिये कोस, मरिये आप दैव के दोस**
खाकर तुरंत नही चलना चाहिए।

**खाय चना, रहे बना**
चने की प्रशंसा।

**खाय तो पछताय, न खाय तो पछताय**
ऐसी वस्तु जो वास्तव में अच्छी न हो, पर जिसे अच्छी समझ कर सब पाने के लिए लालायित भी हों।
(किसी ठग ने गुड़ के शीरे में लकड़ी के बुरादे को पका कर लड्डू बनाए और यह कह कर बेचना शुरू कर दिया कि ये दिल्ली के लड्डू हैं। नई चीज देखते-देखते बिक गई और ठग पैसा इकट्ठा कर के घर चला गया। बाद में जो लोग खरीदने आए, वे लड्डू न पा सकने के कारण पछताते रहे और

जिन्होंने खरीदे थे, वे ठगे जाने के कारण पछता कर रह गए।)

**खाय न खिलाय, खाला दीदों आगे पाया,** (स्त्रि०)
चाची न तो खाती है न खिलाती है, उसकी आंख और पैर दोनों जाते रहें। (कोसना)

**खाय नाना का, कहलाय नाना का**
खाय किसी का, किसी और का हो कर रहे। (कृतघ्नता)

**खाया-पीया अंग लगा**
खाना-पीना सार्थक हुआ।

**खायें तो घी से, नहीं जायें जी से**
शौकीन खानेवाले पर क०।

**खाये के गाल, नहाये के बाल, नहीं छिपते**
ऐसे अवसर पर क०, जब आदमी किसी काम को करके छिपाए, पर वह उसके रंग-ढंग या चेहरे से प्रकट हो रहा हो।

**खारिश्ती कुतिया और मखमल की झूल**
असुंदर वस्तु का शृंगार।
खारिश्ती – जिसे खाज हो, खजैली।

**खाला का दम और किवाड़ की जोड़ी,** (मु०)
खाला के दम पर गुज़र-बसर करते है, और घर में किवाड़ की जोड़ी के सिवा कुछ नहीं।
डींग हांकनेवाले के लिए क०।

**खाला का रुतबा मां के बराबर,** (मु०)
चाची या मौसी मां के बराबर होती है।

**खाला की मेहमानी, हाथ डाल पछतानी,** (मु०, स्त्रि०)
कोई लड़की अपनी मौसी के यहां गई। वहां उसे बहुत काम करना पड़ा। तब यह कहावत कही गई।

**खाला जी का घर नहीं है,** (मु०)
आसान काम नहीं है।
(मौसी के यहां सब प्रकार की स्वतंत्रता रहती है। चाहे जो करो। इसीलिए कहा गया है।)

**खाली खरीती, पूरी फजीती,** (स्त्रि०)
पैसा पास न होने से पूरी खराबी होती है।

**खाली घर में कलंदर बैठे**
घर हमेशा बंद रखे, नहीं तो फ़क़ीर रहने लगते हैं।

**खाली बनिया क्या करे, इस कोठी का धान उस कोठी में धरे**
जब कोई खाली बैठा आदमी व्यर्थ का काम करे, तब क०।

**खाली मबाश, कुछ किया कर**
आदमी को खाली नहीं बैठना चाहिए। कुछ न कुछ करते रहना चाहिए।

**खाली से बेगार भली**
खाली बैठने से तो मुफ़्त में किसी का काम करना अच्छा।

**खाली हाथ क्या जाऊं, एक संदेसा लेता जाऊं**
स्पष्ट बात न कहना।

**खाली हाथ मुंह तक नहीं जाता**
आदमी को उदार होना चाहिए।

**खा ले पहन ले, सो अपना**
इसलिए कि पैसे का कुछ ठिकाना नहीं, कब रहे, कब न रहे।

**खाविंद राज बुलंद राज, पूत राज दूत राज,** (स्त्रि०)
पति के रहते हुए ही स्त्री को सदा सच्चा सुख मिलता है।

**खावे घोड़ा या खावे रोड़ा**
घोड़ा रखने या मकान बनवाने में बेशुमार खर्च होता है।

**खावे पान, टुकड़े को हैरान**
जिसे पान खाने की लत पड़ जाती है, वह उसका एक टुकड़ा तलाश करता फिरता है। अथवा घर में खाने को नहीं, फिर भी पान का शौक करते हैं।

**खावे बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह**
जो बहुत खाते रहने पर भी दुबला रहता है, उस पर क०।

**खावे मूंग, रहे ऊंघ।**
मूंग खाने से आलस्य आता है।
(मूंग एक हलका अनाज है। इसी से ऐसा कहा गया है। पर इसका कोई वैज्ञानिक कारण नहीं।)

**खावे मोठ, तोड़े कोट**

मोट या मोठ की दाल पौष्टिक मानी जाती है।

**खिंचा-खिंचा वह फिरे जो पराए बीच में पड़े**

दे०—ईंचा-खिंचा वह...।

**खिचड़ी खाते पहुंचा उतर गया**

जो बहुत सुकुमार बने उससे व्यंग्य में क०। कार्यारंभ करते ही विघ्न पड़ा, यह अर्थ भी हो सकता है।

**खिचड़ी चली पकावन को, चरखा तोड़ जला।**
**आया कुत्ता खा गया, बैठी ढोल बजा।**

जो किसी एक वस्तु को पाने के लिए अपनी एक दूसरी वस्तु नष्ट कर दे या किसी को दे डाले और बाद में उस वस्तु को न पा सके, उसके लिए क०।

दे०—आया कुत्ता खा...।

**खिजर मिले जो खिजर मिले, (मु०)**

इच्छित वस्तु के मिल जाने पर क०।

(मुसलमानो मे खिजर एक पैगबर हो गए है, जिन्हें अमर माना जाता है।)

**खिजरी खबर सच्ची होती है**

खिजर साहब की बात सच निकलती है।

**खिदमत से अज़मत है**

सेवा से ही बड़प्पन सिद्ध होता है।

**खिलाए का नाम नहीं, रुलाए का नाम**

पराए लड़के को चाहे जितना खिलाओ-पिलाओ, उसका कोई यश नही मिलता, पर किसी वजह से वह रोने लगे, तो तुरंत शिकायत की जाती है कि हमारे लड़के को रुला दिया।

**खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे**

कमज़ोर की खीझ।

**खील-बताशों का मेल है**

दो एक-सी अच्छी वस्तुओं का मेल।

**खील बताशों का मेह**

अनहोनी घटना।

(कथा है कि एक बार शेखचिल्ली कोई चीज चुराकर अपने घर लाए। उनकी मां को जब पता चला, तो उसे छिपाकर रख दिया। बाद में यह सोचकर कि कही उसके पुत्र की मूर्खता की वजह से चोरी का भेद न खुल जाए, उसने चुपचाप आंगन में खील-बताशों की वर्षा की और शेखचिल्ली को समझा दिया कि ये आसमान से बरसे हैं। बाद में छानबीन होने पर शेखचिल्ली ने मंजूर कर लिया कि हां चोरी उन्होने ही की है। मां ने तब कहा कि यह तो निरा पागल है। चोरी करना क्या जाने। इससे पूछा जाए कि इसने चोरी किस दिन की। लोगो ने पूछा, तो शेखचिल्ली ने तुरत उत्तर दिया कि जिस दिन खील-बताशे बरसे। लोग समझ गए कि यह सचमुच पागल है।)

**खुटके पर सोना**

लकड़ी पर सोना लगा है। मतलब, पैसेवाला है।

**खुड़का हुआ चोर उमड़ा**

आहट हुई नही कि चोर भाग जाता है।

(अपराधी का मन बड़ा कमजोर होता है।)

**खुद करदारा इलाजे नेस्त, (फा०)**

अपने किए का क्या इलाज ?

**खुदाई ख्वार, गधे सवार**

खुदा करे तुझे गधे पर सवार होना पड़े।

एक गाली।

(पुराने ज़माने में दुराचारी को दंड देने के लिए अक्सर गधे पर बिठाकर उसकी सवारी निकालते थे।)

**खुदा का दरवाजा हमेशा खुला है**

हमेशा उससे फ़रियाद की जा सकती है।

**खुदा का दिया कंधे पर, पंचों का दिया सिर पर**

पंचों की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा से बड़ी है।

**खुदा का दिया सिर पर**

इसके दो अर्थ है—

(१) खुदा का दिया हमे मंजूर है।

(२) खुदा का दीपक यानी चांद हमारे सिर पर है।

**खुदा का मारा हराम, अपना मारा हलाल**

जो अपने-आप मर जाता है उसे तो अपवित्र और जिसे स्वयं मारते हैं उसे पवित्र समझते हैं।

**खुदा किसी को किसी का मुहताज न करे।**

ईश्वर करे हमें कभी किसी का एहसान न लेना पड़े।

**खुदा किसी को लाठी लेकर नहीं मारता**
मनुष्य स्वयं अपने किए का दड भोगता है।

**खुदा की चोरी नहीं तो बंदे का क्या डर ?**
ईश्वर सर्वज्ञ है। उससे जब कोई बात छिपी नही रह सकती, तब मनुष्य से क्या डरना ? यानी कोई काम छिपाकर क्यो किया जाए ?

**खुदा की बातें खुदा ही जाने**
ईश्वर की बाते ईश्वर ही जानता है।
पडे भटकते है लाखो पडित हजारो मुल्ला करोडो स्याने,
जो खूबदेखा तो यारो, आखिर खुदाकी बाते खुदा जाने।
(नजीर)

**खुदा की लाठी में आवाज नहीं।**
ईश्वर कब किस तरह दड देता है, इसका पता नही चलता। अथवा मनुष्य स्वय ही अपने कर्मों का फल भोगता है। ईश्वर नो उपलक्ष्य है।

**खुदा के ग़जब से डरते रहिए**
ईश्वर के कोप से डरना चाहिए।

**खुदा के घर में चोर का क्या काम ? (मु०)**
स्पष्ट।

**खुदा के घर मे सब कुछ, (मु०)**
स्पष्ट।

**खुदा के घर से फिरे है**
(१) जो मौत से बच जाए, उसके लिए क०।
(२) जो भविष्यवक्ता होने का ढोग करे, उसके लिए व्यग्य मे क०।

**खुदा के वास्ते बिल्ली भी चूहा नहीं मारती।**
ईश्वर के नाम पर कोई बुरा काम नही करता।

**खुदा को याद करो**
ईश्वर का नाम लो।

**खुदा खफा हो तो पंदल चलाए, ज्यादा खफा हो तो सिर पर बोझा रखाए, जो खुश हो तो मेंह बरसाए, ज्यादा खुश हो तो बेटा दे**
स्पष्ट।

**खुदा गंजे को नाखून न दे**
क्योंकि नाखून से सिर खुजाकर वह खून निकाल लेगा। जब कोई ओछा व्यक्ति ऊचे पद पर बैठकर बहुत अंधेर करने लगता है, तब क०।

**खुदा, जालिम से पाला न पड़े**
ईश्वर अत्याचारी से बचाए।

**खुदा देखा नहीं तो अक्ल से तो पहिचाना है**
भले ही ईश्वर को न देखा हो, पर उसे बुद्धि से तो पहिचाना जा सकता है।

**खुदा देता है तो छप्पड़ फाड़कर देता है**
ईश्वर को जब देना होता है, तो किसी न किसी बहाने देता ही है।

**खुदा देता है तो नहीं पूछता—'तू कौन है?'**
ईश्वर को जिसे देना होता है उसे देता है, फिर वह कोई भी हो।

**खुदा दो सींग भी दे, तो वह भी सहे जाते हैं**
ईश्वर का दिया कष्ट भी स्वीकार है।

**खुदा ने तो जवाब दे दिया है, बेहयाई से जीते है**
निर्लज्ज के लिए क०।

**खुदा भरे को भरता है**
जिसके पास पैसा होता है, ईश्वर उसी को और देता है।

**खुदा भूखा उठाता है, भूखा सुलाता नहीं**
ईश्वर दिन भर मे सबको भोजन देता है।

**खुदा महफूज रक्खे हर बला से**
ईश्वर बचाए हर विपत्ति से।

**खुदा मेहरबान, तो जग मेहरबान**
ईश्वर की कृपा है तो सबकी कृपा है।

**खुदा मेहरबान तो कुल मेहरबान**
दे० ऊ०।

**खुदा रज्जाक है, बंदा कज्जाक है**
ईश्वर सबका रक्षक है, मनुष्य भक्षक है।

**खुदा लगती कोई नहीं कहता, मुंह देखी सब कहते हैं**
लोग खुशामद पसद करते है।
खुदा लगती = बिल्कुल सच बात।

**खुदा लड़ने की रात दे, बिछुड़ने का दिन न दे, (स्त्रि०)**
ईश्वर वियोग का दिन न दिखाए।

**खुदा वास्ते की दुश्मनी है**
व्यर्थ का झगड़ा।

**खुदा शक्करखोरे को शक्कर ही देता है**
ईश्वर सब की इच्छा पूरी करता है।
**खुदा सबकी मेहनत स्वारथ करता है, अकारथ नहीं करता**
ईश्वर सब का परिश्रम सफल करता है।
**खुदा से खैर मांगो**
ईश्वर से कुशल मागो।
**खुदा हाज़िर व नाज़िर है**
ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वज्ञ है।
**खुदा हथियार, और किया भतार; किसी के काम नहीं आता, (स्त्रि०)**
मोथरा हथियार, और किया हुआ पति बेकार है।
**खुदी और खुदाई में वैर है**
अहमन्यता और ईश्वर मे वैर है।
**खुफ्ता रा खुफ्ता के कुनद बंदार, (फा०)**
सोता आदमी सोते हुए को कैसे जगा सकता है?
**खुर खांसी, तेरी दाई के गले मे फांसी**
बच्चो की खासी का टोटका।
**खुरचन मथुरा की और सब नकल**
स्पष्ट।
**खुर्दा न बुर्दा, मुफ्त दर्द गुर्दा**
न खाने को न पीने को, मुफ्त मे पेट का दर्द। मतलब, व्यर्थ की परेशानी।
**खुश रह पठानी, निकल गया पानी**
काम सतोषजनक होने पर मालिक मजदूर से कहता है।
**खुशामद से आमद है**
खुशामद से ही पैसा मिलता है।
**खुशामदी का मुंह काला**
खुशामदी का बुरा हो।
**खुश्का खाओ**
चावल खाओ।
(एक मुहावरा जिसका अर्थ है—ज़बान बद करो।)
**खून वह जो सिर चढ़के बोले**
खून छिपता नहीं। हत्यारे के मुह से अपने-आप प्रकट होता है।

**खूब गुज़रेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो**
जब एक-सी प्रकृति के दो व्यक्ति मिल जाते हैं, तो उनकी मज़े मे कटती है।
**खूब दुनिया को आज़मा देखा, जिसको देखा तो बेवफ़ा देखा**
दुनिया मे सच्चे मित्र नही मिलते।
**खूब ही दांत खट्टे हुए**
बहुत नीचा देखना पडा।
**खेत गये किसान, (कृ०)**
किसान वही जो खेत पर जाए, अर्थात खेती स्वय देखे।
**खेत बरानी जैसे नियाम राजानी, (कृ०)**
बिना सीच का खेत ऐसा है जैसे राजा का इनाम, कोई भरोसा नही।
जिन खेतो मे सिचाई का साधन नही होता, और जो केवल वृष्टि के सहारे रहते है, उनके लिए, क०।
**खेत बिगाड़े खरतुआ और सभा बिगाड़े दूत, (कृ०)**
घासपात और कूडाकरकट से खेत इस तरह खराब होता है, जैसे चुगलखोर से सभा।
**खेती कर-कर हम मरे, बहुरे के कोठे भरे, (कृ०)**
कर्ज़दार किसान का क० कि हम तो खेती करके मरते है और साहूकार का घर भरता है।
**खेती, खसम सेती, (कृ०)**
खेती मालिक के देखने से ही ठीक होती है।
**खेती, पाती, बीनती, औ घोड़े का तंग।**
**अपने हाथ संवारिये, चह लाखों हों संग।**
स्पष्ट।
अपने हाथ से किया गया काम ही अच्छा होता है।
पाठा० —खेती, पाती, बीनती, और खुजावन खाज। अपने हाथ सवारिये, जो पिय चाहो राज।
**खेती राज रजाये, खेती भीख मंगाये, (कृ०)**
फसल अच्छी हुई तो लाभ होता है, नहीं तो हानि।
**खेदी गिल्लो अंत को पेड़ ही तले आती है**
घूम-फिर कर आदमी अंत में घर ही लौटकर आता है।
गिल्लो = गिलहरी।

**खेप हारी, जनम नहीं हारा**
किसी मजदूर का कहना कि मैने काम की जिम्मेदारी ली है, अपनी जिंदगी नही बेच दी; अर्थात तुम्हारी गुलामी नहीं कर सकता।
(एक बार में जितनी वस्तु लाई जा सके, उसे खेप कहते हैं।)

**खेल खिलाड़ी का, पैसा मदारी का**
खेलनेवाला खेल दिखाता है, पैसा मदारी को मिलता है।
काम कर्मचारी करते है, नाम अफ़सर का होता है।

**खेल खिलाड़ी का, भगत भैय्या जी की,**
दे० ऊ०।
(भगत एक शौकिया मंडली होती है, जो भांडों की तरह नक्ल का तमाशा दिखाती है। तमाशा तो खिलाड़ी दिखाते है, नाम सचालक का होता है।

**खेल न जाने मुर्गी का, उड़ाने लगा बाज**
साधारण काम जानते नहीं, मुश्किल काम करने चले।

**खेल में रोवे सो कौवा**
बच्चे खेल में कहते है।

**खैर का बेड़ापार है**
भले का काम सफल होता है।

**खैर की जूती, खैरात का नाड़ा, पढ़ दे मुल्ला अक़द उधारा, (स्त्रि०)**
मांगे की जूती और मांगे का ही पैंजामा है, इसलिए मुल्ला तू उधार (बिना कुछ लिए) ब्याह भी करा दे।

**खैर! जो हुआ सो हुआ**
हो गया सो हो गया, चिन्ता न करो।

**खैरात के टुकड़े, बाजार में डकार**
जो मागे की वस्तु पर घमंड करे, उस पर क०।
(डकार भरपेट खाने का लक्षण है। बाजार में डकार लेने से सबको जान पड़ा कि खूब खाकर आए हैं, पर वास्तव में भीख के टुकड़े खाए हैं।)

**खोगीर की भर्ती**
बेकार चीजों या मनुष्यों से जगह भरना।

**खोटा पैसा, खोटा बेटा, वक्त पर काम आता है**
किसी वस्तु को निकम्मी समझकर मत फेंको। किसी समय वह भी काम आ सकती है।

**खोन पाक, खोन पोश पाक, खोल के देखो तो खाक ही खाक, (स्त्रि०)**
थाली भी साफ, थाली ढकने का कपड़ा भी साफ, पर खोलकर देखो तो धूल ही धूल।
जहां केवल ऊपरी तड़क-भड़क हो, और असलियत कुछ न हो, वहां क०।
खोन = (फा० ख्वान) वह थाली, जिसमें भोजन परोसा जाता है।

**खोन बड़ा, खोनपोश बड़ा, खोल के देखो तो आधा बड़ा, (स्त्रि०)**
दे० ऊ०।
यहां बटा के दो अर्थ है—
(१) खूब लंबा-चौड़ा।
(२) उर्द की पीठी का प्रसिद्ध पकवान।
आधा बड़ा आधा टुकड़ा बड़े का।

**खोल खीसा, खा हरीसा**
जेब में पैसे हों, तो चाहे जो खाओ।
हरीसा = (अ० हरीस) खाने की इच्छा रखने वाला, लालची, पेटू।

**खोल घड़ा, कर दे धड़ा, (व्यं०)**
घड़ा खोल कर जल्दी सामान दे।
(ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो किसी वस्तु को लेने के लिए बहुत जल्दी मचाए, पर देने के लिए जिसके पास पूरे दाम न हों।)
घड़ा करना = तौलना।

**गंग जहां रंग, (हिं०)**
जहां गंगा वहीं आनंद।

**गंगा कर गौर गरीबन की, (हिं०)**
गंगा से प्रार्थना।

**गंगा किसकी खुदाई है**
एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न। गंगा को खोदने का काम कोई कर नही सकता।

**गंगा के मेले में चक्की-राहे को कौन पूछे ?**
गगा के मेले मे चक्की टाकनेवाले की क्या जरूरत ?
(उसकी आवश्यकता तो घर पर ही पड सकती है, जहा चक्की है।)

**गंगा को आना था, भगीरथ को जस, (हिं०)**
जब काम तो आप ही हो जाय और किसी दूसरे को मुफ्त मे यश मिले, तब क०।
पाठा०—गगा आवनहार भागीरथ के सिर पडी।

**गंगा गए मुड़ाए सिद्ध, (हिं०)**
सुयोग मिलते ही काम कर डालना चाहिए।

**गंगा गए मुड़ाए सिर**
गगा अथवा अन्य तीर्थस्थान मे जाने पर सिर मुडाना पडता है।

**गगा नहाए क्या फल पाए,**
**मूंछ मुड़ाए घर को आए।**
ढोग करनेवालो पर व्यग्य।

**गगा नहाए मुक्त होय, तो मेढक मच्छियां।**
**मूड़ मुड़ाए सिद्ध होय, तो भेड़ कपछियां।**
यदि गगा नहाने से मुक्ति मिलती हो, तो मेढक और मछलिया भी मुक्ति पा सकती है। सिर मुडाने से सिद्ध बन सकता हो, तो भेडे, मेमने आदि भी सिद्धि-लाभ कर सकते है, क्योकि उनकी भी मुडाई होती है।

**गंगा बही जाए, कलबारीन छाती पीटे**
गंगा का पानी व्यर्थ बहते हुए देखकर कलवारिन 'हाय हाय' करती है, क्योकि उसे शराब मे मिलाने के लिए पानी की बहुत आवश्यकता पड़ती है। निष्प्रयोजन अफसोस करनेवालो के लिए क०।

**गंजफे के तीनों खिलाड़ी रोते हैं**
तीनों कहते हैं कि हमारे पास बुरे पत्ते हैं।
गंजफा=(फा० गंजीफा) एक खेल जो ८ रग के ९६ पत्तो से खेला जाता है।)



**गंज बेरंज नही**
बिना कष्ट के धन नही मिलता। अथवा बिना परिश्रम के सफलता प्राप्त नही होती।
गज=(फा०) खजाना।

**गंजा मरा खुजाते-खुजाते**
कोई जब अपने कर्मों का फल भोगता है, तब क०।

**गंजी कबूतरी और महल में डेरा**
अयोग्य आदमी को ऊचा स्थान मिलना।

**गंजी पनहारी और गोखरू का हंडुवा**
गजी पनहारी और सिर पर खूबसूरत कुडरी। (गोखरू गोटे वा बादले का बना एक साज होता है, जो ब्याह-शादियो मे बढिया कपडो पर लगाया जाता है। हडुवा उसे कहते है, जिस पर घडा रक्खा जाता है (ऐडुरी, कुडरी)। इसके अतिरिक्त गोखरू एक जगली पौधे का बीज भी होता है, जिसमे बहुत काटे होते है। यदि गोखरू का यह अर्थ लगाया जाए, तो कहा० का अभिप्राय हो जाएगा—गजी पनहारी और सिर पर काटो की कुडरी। यानी मुसीबत मे मुसीबत)।

**गंजी सत्ती, ऊत पुजारी**
जैसे को तैसा।
सत्ती=देवी।

**गंजे को खुदा नाखून न दे**
दे०—खुदा गंजे को....।

**गदी बोटी का गंदा शोरबा, (स्त्रि०)**
खराब साधनों से खराब चीज़ तो बनेगी ही।

**गंदुम अज गंदुम बिरोयद, जौ जी जौ, (फा०)**
गेहू से गेहू और जौ से जौ पैदा होते हैं।

**गंवार का हांसा, तोड़े पांसा, (ग्रा०)**
गवार की हँसी दुखदाई होती है।
पासा=पसली।

**गंवार को पैसा दीजे, पर अक्ल न दीजे**
मूर्ख को उपदेश देना व्यर्थ है, भले ही उसे पैसा दे दिया जाए।

**गंवार गांडा न दे, भेली दे**
गंवार सहज में गन्ना नही देता, पर धमकाने

से गुड़ दे देता है। आसानी से मूर्ख कोई चीज़ नही देता।

**गंवार, गाँ का यार**

गंवार भी अपना मतलब देखता है।

**गई चौधराहट फिरी है**

छिना हुआ अधिकार फिर मिल गया है।

**गई जवानी फिर न बहुरे, चाहे लाख मलीदा खाओ**

जवानी फिर नही लौटती, चाहे जितना माल-मसाला खाओ।

**गज भर का हंसुआ, न निगलते बने न उगलते**

दे०—गुर, मरा हसिया। 'गज भर का हसुआ, अशुद्ध हे।

**गठरी-बांधी धूल की, रही पवन से फूल।**
**गांठ जतन की खुल गई, अंत धूल की धूल।**

मानवशरीर के बारे मे क०।

**गठिया खुला, बिटिया पारस**

पुत्रवती होने पर ही स्त्री का सम्मान होता ह। गठिया खुलना एक मुहावरा है जिसका अर्थ 'गर्भ से होना, या बच्चा होना हे।

**गढ़ तो चित्तौरगढ़ और सब गढ़ैयां**

स्पष्ट।

(चित्तौरगढ राजपूतो का प्रमिद्ध किला था, जो सन् १५६८ मे अकबर द्वारा नष्ट किया गया। पूरी कहावत इस प्रकार है—
ताल तो भोपाल ताल और सब तलैया।
गढ तो चित्तौरगढ और सब गढैया।

**गढ़ कुम्हार, भरे संसार**

एक के काम से जब बहुत से लोग लाभ उटाए, तब क०।

कुम्हार गगरी बनाता है, और सब लोग उससे पानी भरते और पीते है।

**गढ़े के पानी में मुंह धोकर आओ**

जाओ अपना काम देखो। डीग हाकनेवाले से क०।

पहले अपना मुह साफ कर लो, तब कोई बात करना।

**गधा के खाइल खेत, न इहलोक के, न परलोक के, (पू०)**

क्षुद्र के साथ नेकी करने से कोई लाभ नही।

**गधा खरसा में मोटा होता है**

(लोगो का विश्वास है कि ग्रीष्म ऋतु मे सूखा मैदान देखकर गधा समझता है कि मैंने बहुत खा लिया, इसलिए तगडा रहता है, पर वर्षा मे चारो ओर हरी घास देखकर उसे यह ज्ञान होता है कि उसने अभी कुछ नही खाया, इसलिए दुबला हो जाता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि वर्षा की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु गधे की प्रकृति के अधिक अनुकूल बैठती है, इसलिए उन दिनो तन्दुरुस्त रहता हे। खरसा ग्रीष्म को कहते है।)

**गधा गिरे पहाड़ से, मुर्गी के टूटे कान**

एक असबद्ध बात।

**गधा घोड़ा एक भाव**

अच्छी-बुरी चीज़ का एक ही दामो बिकना। अन्धेरखाता।

**गधा घोड़ा बराबर**

अच्छी बुरी चीज़ को एक-सा समझना।

**गधा पानी पिये घंघोल के**

गधा भी कूडा अलग करके पानी पीता हे।

(फैलन ने इसका यही अर्थ किया हे। किन्तु वास्तव मे घघोलने का मतलब होता है पानी को हिला कर मैला करना। तब कहावत का अर्थ होगा—गधा गदा पानी पीना पसद करता है।)

**गधा पीटे घोड़ा नहीं होता**

(१) मूर्ख को पीटकर समझदार नही बनाया जा सकता।

(२) बुरी चीज से किसी भी प्रकार अच्छी चीज़ नही बनती।

**गधा बरसात में भूखा मरे**

इसलिए कि वर्षा गधे के अनुकूल नही बैठती, फिर कितनी ही घास क्यो न पैदा हो।

**गधी भी जवानी में भली लगती है**

स्पष्ट।

**गधे का जीना थोड़े दिन भला**

जिसे हमेशा परिश्रम करना पड़े, वह मरे के तुल्य है।

**गधे का मांस, कुत्ते का दांत**

ये किसी काम नहीं आते।

**गधे की आंख में नोन दिया, उसने कहा 'मेरी आंख फोड़ी'**

(१) तुच्छ आदमी एहसान नहीं मानता।

(२) मूर्ख के साथ उपकार करने से वह समझता है कि उसका अहित किया जा रहा है।

**गधे की भारी लात की सनसन हट**

बुरे की संगत में हानि उठानी पड़ती है।

**गधे के खिलाए का पुन न पाप**

दे०—गधा के खाइल खेत...।

**गधे को अंगूरी बाग**

किसी मनुष्य को ऐसी वस्तु देना, जिसके वह योग्य नहीं।

**गधे को खुश्का**

दे० ऊ०।

खुश्का = मीठे चावल।

**गधे को गधा ही खुजाता है**

ओछो का काम ओछे ही कर सकते हैं। अथवा ओछो की मित्रता ओछो के ही साथ होती है।

**गधे को गुलकंद**

अयोग्य को अच्छी वस्तु देना।

**गधे को जाफरान**

दे० ऊ०।

**गधे को पूड़ी और हलवा**

दे० गधे को गुलकंद।

**गधों से हल चले, तो बैल कौन बिसाय, (कु०)**

छोटे से अगर बड़ों का काम होने लगे, तो बड़ों को कौन पूछे? जब किसी मनुष्य को कोई काम दिया जाए और वह उसे न कर सके, तब क०।

**गमन दारी बुज बखर, (फा०)**

अगर तुझे कोई चिन्ता नहीं तो बकरी खरीद ले। जानवर रखने से बेफ़िक्र आदमी फ़िक्रमंद हो जाता है।

**गम पश्म, ख़ांट शावी, या हावी! या हावी!**

आबाद या रिन्द नाम के फ़कीरों की आवाज़।

**गया गांव जहां ठाकुर हंसा, गया रूख जहां बगुला बसा, गया ताल जहं उपजी काई, गया कूप जहं भई अथाई।**

नष्ट हो जाता है वह गांव जहां का प्रधान हँसोड़ हो, नष्ट हो जाता है वह वृक्ष जिस पर बगुला निवास करे, नष्ट हो जाता है वह ताल जिसमें काई पैदा हो जाए, नष्ट हो जाता है वह कुआं जिसकी तली बैठ जाए।

अथाई =अथाह।

**गया गुज़रा**

बीती बात। हुआ सो हुआ।

**गया मर्द जिन खाई खटाई, गई रांड़ जिन खाई मिठाई**

खटाई खाने से मनुष्य का पुरुषत्व जाता है और मिठाई खाने से विधवा चरित्रहीन हो जाती है।

**गया वक्त फिर हाथ आता नहीं**

समय पर चूकना नही चाहिए।

**गया सो गया, रहा सो बचा**

स्पष्ट।

**गये कटक, रहे अटक**

जब किसी को कही काम पर भेजा जाए, और वह शीघ्र लौट कर न आए या बाहर जाने पर न लौटे।

**गये जोबन, भतार**

अवसर बीते काम करना।

मतार—पति।

**गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी, (मु०)**

एक विद् से बचने गए, दूसरी सामने आ गई। रोजा—वह उपवास, जो मुसलमान रमजान के महीने में तीस दिन रखते हैं। रोजा खत्म हो जाने पर ईद के दिन नमाज पढ़ने जाते हैं।

**गये वक्खन, नहीं करम के लक्खन**

अकर्मण्य का कहीं ठिकाना नहीं।

**गये बिचारे रोजे रहे, एक कम तीस, (मु०)**

तीस में से एक रोजा निकल गया। उन्तीस रह गए। मुसीबत कुछ कम तो हुई।

**गये वह दिन जब खलीलखां फ़ाख्ता मारते थे**
वह दिन निकल गए, जब खलील खां मौज करते थे।
पाठा०—गए वह दिन जब खलील खां फाख्ता उड़ाते थे।
दे०—खलीलखां फ़ाख्ता... ।

**गरज का बावला अपनी गावे**
गरजमन्द अपनी ही कहता है।

**गरजते हैं वह बरसते नहीं**
डींग हांकनेवाले काम नही करते।

**गरज परला से आदमी बुड़बक होला, (पू०)**
गरज पड़ने पर आदमी बेवकूफ हो जाता है।

**गरज बावली है**
गरजमन्द को अपने काम के सिवा और कुछ नही सूझता।

**गरजमंद करे या दरदमंद करे**
दूसरो की सहायता या तो गरजमद करता है या दयावान।

**गरजमंद बावला है**
गरजमद पागल होता है। अपने ही मतलब की बात करता है।

**गरब करते रावन हारे, (हिं०)**
गर्व करने वाले रावण को हारना पड़ा।

**गरब का सिर नीचा**
अहकारी को नीचा देखना पड़ता है।

**गरीब की जवानी, गरमी की धूप, जाड़े की चांदनी अकारथ जाये**
स्पष्ट।

**गरीब की जोरू और उम्दा खानम नाम, (मु०)**
यह नाम बड़े आदमियो की औरतो का होता है।

**गरीब की जोरू सबकी भाभी**
गरीब से सब अनुचित लाभ उठाते है।
(बड़े भाई की स्त्री से हँसी करने की हिन्दुओं में प्रथा है। गरीब को सीधा जानकर सब उसकी स्त्री से हँसी मजाक करते है।)

**गरीब ने रोजे रक्खे, दिन बड़े हुए, (मु०)**
गरीब के सभी खिलाफ जाते हैं।
(मुसलमानो के रोजे कभी गर्मियों में और कभी जाडो मे पड़ते है। अब अगर वे गर्मी में पड़े, तो दिन बड़े होने के कारण वे कष्टकर हो जाते हैं।)

**गरेबां में मुंह डालो**
अपनी असलियत देखो।

**गर्मियों में कश्मीर जिन्नत है**
कश्मीर की प्रशसा।

**गर्मी सब्जह रंगों से, और घर में भूनी भांग नहीं**
पास मे पैसा नही, और सुन्दर औरतो पर मन चले। सामर्थ्य से बाहर इच्छा रखनेवालो के लिए कही जाने वाली कहावत।

**गलत-उल आम फ़सीह, (अ०)**
जिस भूल को सभी करे, उसे भूल न समझना चाहिए। बोलचाल मे जो प्रचलित है, वह व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध होते हुए भी सही माना जाता है।

**गले पड़ी बजाये सिद्ध**
जब विवश होकर कोई काम करना पडे, तब क०। गले मे जब ढोलकी पड़ी है, तो फिर उसे बजाना ही चाहिए।

**गल्ला चूं अरज़ां शवद, इमसाल सैय्यदं मी शवद, (फा०)**
इस साल अगर गल्ला सस्ता हो गया, तो मैं सैय्यद बन जाऊगा, अर्थात बडा आदमी हो जाऊंगा।
(सैय्यद मुहम्मद साहब के वशज है। इसलिए मुसलमानो मे बड़े माने जाते हैं।)

**गवाह चुस्त, मुद्दई सुस्त**
सहायकों का तत्पर रहना, और स्वयं लापरवाही दिखाना।

**गहरी लाली देखकर फूल गुमान भये।**
**केते बाग जहान में लग लग सूख गये।**
अपना गहरा सौन्दर्य देखकर फूल को घमंड हो गया, पर वह यह नहीं जानता कि इस दुनिया में कितने बाग लगे और कितने उजड़ गए।

**गांजा पिये गुर ज्ञान घटै, और घटै तन अंदर का।**
**लौखत लौखत गांड़ फटै, मुंह देखो जस बंदर का।**
गंजेड़ियों के लिए कहा गया है कि गांजा नहीं पीना चाहिए, क्योंकि इसमें दुर्गण ही दुर्गण हैं।

**गांठ का पूरा मत का हीना**
मूर्ख पैसेवाले के लिए क०।
दे०—आंख का अंधा . . .।

**गांठ का पूरा आंख का अंधा**
दे० ऊ०।

**गांठ खुले न, बहुरिया दुबरस, (पू०)**
वहू इतनी दुबली है कि कंकन की गांठ भी नहीं खोल सकती।
(हिन्दुओं के यहां विवाह में एक नेग होता है, जिसमें वर-कन्या एक दूसरे के हाथ में बंधे कंकन की गांठ खोलते हैं। यह कंकन लाल धागे का होता है।)

**गांठ गिरह में कौड़ी नहीं, मियां गट्टेवाले हों**
गांठ में पैसा नहीं, फिर भी गट्टेवाले को बुलाते है कि अरे भाई दे जाना।
गट्टा= एक मिठाई, जो केवल शक्कर की बनती है।

**गांठ गिरह से मद पीवे, लोग कहें मतवाला**
बुरे काम में पैसा खर्च करके बदनामी मोल लेना।

**गांठ न मुट्ठी, फरफराय उट्ठी, (स्त्रि०)**
पास में पैसा न हो, पर किसी चीज को खरीदने को मन चले, तब क०।

**गांठ में दाम न, पतुरिया देख रुआई आये, (पू०)**
दे०—गर्मी सब्जह रंगों से . . .।
पतुरिया=वेश्या।

**गांठ में पैसा नहीं, बांकीपुर की सैर, (पू०)**
दे०—गांठ न मुट्ठी . . .।

**गांड़ चले मन बस्तों को**
दस्त लगते हैं, पर चना खाने को मन चलता है।
सहनशक्ति से बाहर काम करने की इच्छा रखना।

**गांड़ न धोये सो ओझा होय, (पू०)**
हँसी में ही क०।
ओझा=भूत-प्रेत झाड़नेवाला। सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति भी ओझा कहलाती है।)

**गांड़ में गू नहीं और कौवे मेहमान!**
झूठी शान दिखाना।

**गांड़ में लंगोटी, न सिर पै टोपी**
आवारा के लिए क०।

**गांड़ू का हिमायती भी हारा है**
कायर की कोई सहायता नही कर सकता।

**गांव के गंवेरे, मुंह पै खाक, पेट में टेले**
ग्रामीणों पर फब्ती।

**गांव गया, सोता जागे**
सोनेवाला कब जागे कहा नही जा सकता, उसी उसी तरह बाहर गए आदमी का भी निश्चय नहीं रहता कि कब लौटे।

**गांव गए की बात**
बाहर जाने पर क्या काम लग जाए, कब लौटें, इस तरह का भाव प्रकट करने के लिए क०।

**गांव तुम्हारा, नांव हमारा**
झूठमूठ की नामवरी चाहना।

**गांव बहा जाये, सिवाने की लड़ाई**
हदबंदी की लड़ाई और पूरा गांव नष्ट हो रहा है।
साधारण बात पर झगड़ा बढ़ना।

**गांव, नांव, ठांव**
किसी का पता ठिकाना जानने के लिए क०।

**गांव बसंते भूतले, शहर बसंते देव**
गांव में रहनेवाले भूतों के और शहर में रहनेवाले देवताओं के समान हैं।

**गांव भागे, पछिया लागे, (ग्रा०)**
फसल के शुरू होते ही गांव खाली हो जाता है। लोग फसल काटने चल देते हैं।

**गांव में घर न जंगल में खेती**
जिसके कुछ नहीं उसका, कहना।

**गांव में धोबी का छैल**
गांव में धोबी का लड़का ही शौकीन बना फिरता है, क्योंकि उसका बाप शहरवालों के जो कपड़े

धोने लाता है, वह उन्हे पहनता है, जो गांववालों को देखने को नही मिलते।

**गांव में पड़ी भरी, अपनी-अपनी सबको पड़ी**

विपद् आने पर सब अपनी-अपनी फिक्र करते है।

**गांव सदा गंवारन के**

गाव मे गवार लोग ही रहते है।

**गाऊं न, गाऊं तो बिरहा गाऊं, (स्त्रि०)**

या तो कुछ करे ही नही, या फिर ऐसा काम करे, जो किसी को पसद न आए।

(बिरहा एक विशेष अवसर के गीत है। हमेशा नही गाए जाते।)

**गाओ बजाओ, कौड़ी न पाओ, (स्त्रि०)**

सूम के लिए क०।

**गाओ, बजाओ, बन्ने के लोलो ही नहीं, (स्त्री०)**

जिसके लिए यह सब धूमधाम है वही नही।

(लोलो ही नही, मतलब दूल्हा नपुसक है।)

**गाछ में कटहल, होंठ में तेल, (पू०)**

समय के पहले ही किसी काम की तैयारी करना।

(कटहल का दूध हाथ या होठ मे लग जाने पर तेल लगाकर छुडाया जाता है। ब०—गाछे काटाल गोफे तेल।)

**गाजर की पूंगी, बजी तो बजी, नहीं तो तोड़ खाई**

ऐसे काम के लिए क०, जो हो जाए, तो अच्छा, न हो तो भी अच्छा।

**गाजी मियां, दममदार, खिच्चड़ पक्का हमतैय्यार, (मु०)**

गाजी मियां और शाह मदार की कसम, मै खिचडी खाने को तैय्यार हू।

(गाजी मिया उर्फ सालार गाजी महमूद गजनवी के भतीजे थे, जिनकी सन् १०३३ मे बहराइच मे मृत्यु हुई। वह मुसलमानो के प्रसिद्ध पीर है। इसी तरह शाह मदार को भी मुसलमान अपना पीर मानते है। मकनपुर मे उनका मकबरा है। उनकी मृत्यु सन् १४३३ मे हुई।)

**गाडर आनी ऊन को, बैठी चरै कपास, (ग्रा०)**

जब लाभ के लिए कोई काम किया जाए, और उसमे हानि हो, तब क०।

**गाड़ी को देख लाड़ी के पांव फूले**

आराम सब चाहते हैं। गाड़ी को देखकर लौंडी के पैर में भी दर्द होने लगा।

(यहां लाडी का अर्थ लडैती भी हो सकता है। फैलन ने Slave girl लिखा है।)

**गाते-गाते कलावंत हो जाते हैं**

अभ्यास करने से ही आदमी दक्ष बनता है।

**गाना और रोना, किसको नहीं आता ?**

सबको आता है।

**गाना उत्तम, बजाना मध्यम**

गाना सबसे श्रेष्ठ कला है, उसके बाद बजाना।

**गाना न बजाना, याद याद के रिझाना**

जब कोई गदी हॅसी-मजाक करके समय बिताए, तब क०।

**गाय का दूध सो माय का दूध**

गाय का दूध माता के दूध के समान होता है।

**गाय का लबारा मर गया तो खलड़ा देख पनहाय**

जब किसी मनुष्य का अपने किसी प्रिय जन से वियोग हो जाता है, तो उससे मिलती-जुलती आकृति के मनुष्य को देखकर उसके मन मे प्रेम का उद्रेक हो उठता है। इसी विचार को प्रकट करने के लिए कहावत का प्रयोग होता है।

(गाय का बछडा जब मर जाता है, तो उसकी खाल मे भूसा भर के रख लेते है। दुहने के समय उसी को गाय के सामने रखते है, जिसे वह अपना जीवित बछडा समझकर दूध देने लगती है।)

पनहाना–स्तनो मे दूध उतरना।

**गाय को अपने सींग भारी नहीं होते**

अपने परिवार के लोगो का किसी को बोझ नही लगता।

**गाय जब दूब से सलूक करे तो क्या खाय ?**

(१) मेहनताना मागने में लिहाज किस बात का ?

(२) जो जिस वस्तु का व्यापार करता है, उसमें मुनाफा न करे, तो उसका खर्च कैसे चले ?

**गाय न आवे, बछड़े लाज, (पू०)**

मा को बेटे की शरम नही होती। अथवा इसका यह

अर्थ भी हो सकता है कि मा को तो लाज नही आती, पर बेटा लज्जित हो रहा है।

**गाय न बाछी, नींद आवे आछी**

किसी चीज की चिता न होने पर नीद अच्छी आती है।

**गाय न हो तो बैल दुहो**

कुछ न कुछ धधा करते रहो।

**गालवाला जीते, मालवाला हारे**

बातूनी हमेशा जीतता है। उसके सामने पैसेवाले को हार माननी पडती है।

**गाली और तरकारी खाने ही के वास्ते हैं**

गाली सुनकर क्रोध न करने के लिए क०।

(खाने के यहा दो अर्थ है, भोजन करना और सहन करना।)

**गाले हाथ गोपालक माय, (पू०)**

गोपाल की मा का हमेशा गाल पर हाथ रहता है।

जो स्त्री सदा प्रसन्न चित्त रहे, उसके लिए क०।

(स्त्रिया गाते समय प्राय गाल पर हाथ रखती है।)

**गिन पोईं, संभाल खाईं, (स्त्रि०)**

गिनकर रोटिया बनाना और समालकर खाना। कमखर्ची मे जीवन व्यतीत करना। धन उडाओ मत।

**गिनी गाय में चोरी नहीं हो सकती**

समालकर रक्खी हुई चीज घट-बढ़ नही सकती।

**गिनी डालियां है**

समालकर रक्खी गई चीज है।

**गिनी बोटी, नपा शोरबा, (मु०)**

(१) कठोर मितव्ययी के लिए क०।

(२) जो सदा एक से ढग से रहे, उस पर भी क०।

(३) जिसे उतनी ही तनख्वाह मिलती हो, जितने मे उसका खर्च मुश्किल से चलता हो, उस पर भी क०।

(४) जिसे तनख्वाह के अलावा कोई ऊपरी आमदनी न हो, उसे क०।

**गिने गिनावे, टोटा पावे**

अधविश्वास, बहुतो की ऐसी धारणा है कि रोज-रोज माल को समालने से उसमें घाटा हो जाता है।

**गिरगिट की दौड़ बिटौरे तक**

जिसकी जहा तक पहुच होती है, वह वही तक जा सकता है।

**गिरगिट के से रंग बदलता है**

ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसकी बात का कोई ठीक न हो।

**गिर पड़े ही हर गंगा**

जब अनायास किसी से कोई काम बन जाए, और वह कहे कि मैने जानबूझकर किया है, तब क०। यश मिलते देख समेट लेना।

पाठा०——रिपट पडे की . .

**गिरहकट का भाई गठकट**

धूर्त्त-धूर्त्त सब एक से। चोर-चोर मौसेरे भाई।

**गिरह का दीजे, पर अकल न दीजे**

मूर्खो को गाठ से पैसा भले दे-दे, पर अक्ल न दे।

**गिरह में कौड़ी नहीं और बाजार की सैर**

पास मे पैसा न होते हुए भी चीजे खरीदने को मन होना।

**गिरे का क्या गिरेगा**

जिसकी हालत बहुत बिगडी हुई हो, उसके लिए।

**गिरे खंभ पलान भारी**

मकान का एक खमा गिरने से छप्पर भारी हो जाता है, वह टिक नही सकता।

समाज या परिवार के एक प्रमुख व्यक्ति के न रहने से सब पर सकट आ जाता है।

**गिरे पड़े वक्त का टुकड़ा**

(१) समय पर काम आने के लिए बचाकर रखा गया पैसा।

(२) सुयोग्य और कमाऊ लडका।

**गिलहरी का पेड़ ठिकाना**

जिसका जहा सुभीता होता है, वह वही रहता है।

**गीदड़ की शामत आय तो गांव की तरफ भागे**

जब कोई मनुष्य जानबूझकर अपनी हानि करे या ऐसी जगह जाए, जहां उसे कष्ट पहुचे, तब क०।

**गीदड़ गिरा खिरे में 'आज यहीं रहेंगे'**

जब कोई मनुष्य अपनी किसी विपद् को छिपाना

चाहे और कहे कि 'नही, मैं तो खूब मजे मे हू।'

**गीदड़ भभकी**

झूठा रौब दिखाना।

**गीदी गाय गुलेंदा खाय, बेर बेर महुआ तर जाय, (पू०)**

जब कोई मनुष्य किसी चीज के लालच से बार-बार कही जाए, तब क०।

गीदी गाय = लपकी गाय।

गुलेंदा = महुए का फल।

**गीली लकड़ी सीधी हो सकती है**

बच्चे को सब सिखाया जा सकता है।

**गीली-सूखी सब जलती है**

अच्छी-बुरी सब चीज काम आ जाती है। अथवा आग मे सब जलता है।

**गुंडे चले बजार, बिनौले ढक रखियो**

गुंडे और बदमाशों से होशियार रहना चाहिए।

**गुजर गई गुजरान, क्या झोंपड़ी, क्या मैदान**

किसी ऐसे मनुष्य का कहना, जो जीवन के सुख-दुख भोग चुका है और जाने को तैय्यार बैठा है।

**गुजश्त ऊंचे गुजश्त, (फा०)**

बीती बात का विचार नही करना चाहिए।

**गुजश्ता रा सलवात, (फा०)**

जो हुआ सो अच्छा हुआ।

**गुड़ खाएं, गुलगुलों से परहेज**

कोई एक बुरा काम करके उसी तरह के दूसरे बुरे काम से बचने का ढोंग करना।

**गुड़ खायें पुये में छेद करें**

दे० ऊ०।

**गुड़ खायेगी तो आयेगी**

बदचलन औरत के लिए क०।

**गुड़ चुरावे तो पाप, तेल चुरावे तो पाप**

हर हालत मे चोरी तो चोरी ही कहलाएगी।

**गुड़ दिये मरे तो जहर क्यों दीजे**

मिठास से काम चल जाए तो सख्ती क्यो की जाए।

**गुड़ न दे तो गुड़ की-सी बात तो करे**

किसी को कुछ न दे, न सही; पर बात तो मीठी करे।

**गुड़ भरा हंसिया, खाते बने न उगलते, (पू०)**

जब कोई ऐसा काम सामने आ जाए, जिसे न करते बने, न छोड़ते, तब क०।

**गुड़ से बैंगन हो गए**

जब कोई सस्ती चीज महगी हो जाती है, तब क०।

**गुड़ियों के ब्याह में चियों की बेल, (स्त्रि०)**

जैसा काम वैसा साज-सामान।

बेल = भेट।

**गुदड़ी से बीबी आई, 'शेखजी किनारे हों,' (स्त्रि०)**

जब कोई ओछा आदमी प्रतिष्ठा पाकर इतराने लगे, तब क०।

गुदड़ी = वह बाजार, जहा पुरानी चीजे बिकती है।

**गुन सीख के औगुन सीखता है**

पढे-लिखे लड़के से क०, जब वह बुरे मार्ग पर चले।

**गुनियां तो गुन कहे, निर्गुनियां देख घिनाय**

समझदार तो समझदारी की बात कहता है, मूर्ख दूर भागता है।

**गुरु कीजे जान के, पानी पीजे छान के**

गुरु देखभाल कर बनाना चाहिए, पानी छानकर पीना चाहिए।

**गुरु गुड़ ही रहे, चेले चीनी हो गए**

चेला गुरु से भी आगे बढ़ गया। प्राय. व्यंग्य मे क०।

**गुरु-गुरु विद्या, सिर-सिर ज्ञान**

सबके पास न तो एक-सी विद्या होती है, और न सबको समझ एक-सी होती है।

**गुरु जी! चेले बहुत हो गए; बच्चा, भूखों मरेंगे तो आप चले जायेंगे**

किसी जगह आवश्यकता से अधिक आदमी इकट्ठे हो गए हो, और वे जाना नही चाहते हो, तब क०।

**गुरु तो ऐसा चाहिए, ज्यों सिकलीगर होय।**
**जनम जनम का मोरचा, छिन में डारे खोय।**

स्पष्ट।

सिकलीगर = लोहे पर धार रखनेवाला। पालिश करनेवाला।

**गुरु बड़ा कै चेला ?**

व्यंग्य में प्रश्न।

**गुरु बिन व्याकुल चेलवा, कंठ बिन बाउर गीत**
गुरु के बिना चेला वैसे ही निकम्मा होता है, जैसे बिना अच्छे गले के बाउर का गीत।
बाउर =एक गायक भिक्षु सम्प्रदाय।

**गुरु बिन मिले न ज्ञान, भाग बिन मिले न सम्पत्ति**
गुरु के बिना ज्ञान नही मिलता, भाग्य मे लिखे बिना धन-सम्पत्ति नही मिलती।

**गुरु, बैद और जोतसी, देव, मंत्रि, अरु राज।**
**इन्हें भेंट बिन जो मिले, होय न पूरन काज।**
गुरु, वैद्य, ज्योतिषी, देवता, मंत्री और राजा इनके पास खाली हाथ नही जाना चाहिए।

**गुरु, शुक्र को बादरो, रहै सनीचर छाय।**
**कहै घाघ सुन घाघनी, बिन बरसे नहिं जाय।**
लोक-विश्वास। यदि बृहस्पति और शुक्रवार को बादल हो और वे शनिवार तक बने रहे, तो अवश्य वर्षा होती है।
(घाघ अकबर के समय मे (सन् १५४२-१६०५) हिन्दी के एक कवि हुए है। उनकी कृषि सबधी कहावते प्रसिद्ध है।)

**गुरु से कपट, मित्र से चोरी।**
**या हो निर्धन, या हो कोढ़ी।**
स्पष्ट।

**गुरु से पहले चेला माल खाए**
(१) गुरु से पहले चेला माल उड़ाता है क्योकि वही भीख मागकर लाता है और रसोई बनाता है।
(२) गुरु से पहले चेला पिटता है, क्योकि वही सब काम से बाहर जाता है।

**गुलाम की जात से वफा नहीं**
नौकर पर विश्वास नही करना चाहिए।

**गुलाम साथ, तौ भी नाथ**
गुलाम अक्सर भाग जाया करता है, इसलिए साथ मे रहे, तो भी उसकी नकेल अपने हाथ मे रक्खे।
नाथ=नकेल।

**गुस्सा बहुत, जोर थोड़ा, मार खाने की निशानी**
स्पष्ट।
कमजोर से कहते है, जिसे गुस्सा बहुत आता है।

**गुस्सा हराम है**
क्रोध बुरी चीज है।

**गुस्से में अक्ल मारी जाती है**
क्रोध में मनुष्य विवेक खो बैठता है।

**गुस्से में बुराई-भलाई नहीं सूझती**
क्रोध में बुरा-भला नही दिखाई देता।

**गूंगा, अंधा, चुगदढ़िया और काना, कहैं कबीर सुनो भाई साधो, इनको नहिं पतयाना**
गूगे, अधे, छोटी दाढ़ीवाले और काने का विश्वास नही करना चाहिए।

**गूंगी जोरू भली, गूंगा नारियल न भला**
गूगी औरत अच्छी, पर ऐसा हुक्का जो पीने से बोले नही, किसी काम का नही।
(पहले नारियल के हुक्के बनते थे, इसलिए यह शब्द हुक्का के लिए रूढ़ हो गया है।)

**गूंगे का गुड़ खाया है?**
जो बोलते नही।
जब कोई व्यक्ति किसी बात का उत्तर नही देता, या किसी विषय मे बिल्कुल चुप रहता है, तब क०।
(गुड़ खाने पर गूगा उसका स्वाद नही बता सकता।)

**गूंगे का गुड़, खट्टा न मीठा**
क्योंकि गूंगा मुंह से बोल नही सकता। जब किसी बात की असलियत का पता न चले, तब क०। जब किसी की कोई समझ मे न आए, तब भी क०।

**गूंगे ने सपना देखा, मन ही मन पछताय**
उसे दुख होता है कि वह अपना सपना किसी को सुना नही सकता।

**गू का कीड़ा गू ही में खुश रहता है**
बुरे को बुरी सुहबत में ही बैठना अच्छा लगता है, या गदे को गदगी ही पसद आती है।

**गू का टोकरा सिर पर उठाता है**
बहुत निन्दनीय काम करनेवाले से क०।

**गू का पूत नौसादर**
बुरे घर मे भी सपूत पैदा हो सकता है।
(लोगों की धारणा है कि नौसादर विष्ठा को जलाकर बनाया जाता है। उसी से कहा० बनी।

नौसादर पेट साफ़ करने के काम आता है। इसलिए भी उसे मल का पूत कहा जा सकता है।)

**गू की दाक भूत और भूत की दाक गू**

जैसे का तैसा इलाज।

**गूगा बड़ा, क्या भगवान**

गूगे के सामने भगवान क्या चीज़।

(गूगा एक पीर हो गए है, जिनका नाम लेकर सर्प का ज़हर उतारते है। यहा 'गूगा' के स्थान पर 'गूगा' भी हो सकता है। वह अधिक ठीक जान पडता है। जो आदमी बोल ही नही सकता, वह भगवान से भी बड़ा है।)

**गूजर से ऊजड़ भली, ऊजड़ से भली उजाड़।**
**जहां गूजर को देखिए, दीजे उसको मार।**

स्पष्ट।

गूजर प्राय. जगल उजाड डालते है। इमीलिए ऐसा कहा गया है।

**गूदड़ में गिदौड़ा**

जब कोई धनी आदमी मलीन वेश मे रहे, तब क०। किसी अशिक्षित परिवार मे जब कोई पढा-लिखा और बुद्धिमान लडका हो, तब भी क०।

गिदौड़ा =एक मिठाई।

**गूदड़ में लाल नहीं छिपता**

श्रेष्ठ वस्तु बुरी जगह में भी नही छिपती।

**गू दर गू, मुर्गी का गू**

बहुत ही खराब वस्तु।

**गू नहीं छी-छी**

बुरी वस्तु हर हालत मे बुरी ही रहेगी । नाम बदलने से उसका गुण नही बदलता। बच्चो से बात करते समय मल के लिए छी-छी या छि-छि शब्द का प्रयोग करते है।

**गू में कौड़ी गिरे, तो दांतों से उठा ले**

इतना कंजूस!

**गू में न ढेला डाले, न छींटे पड़ें**

न बुरे काम में हाथ लगाओ, और न बदनामी उठानी पड़ें। जब कोई आदमी किसी नीच से झगड़ा या हँसी-दिल्लगी कर रहा हो, तब प्राय: उसे मना करने के लिए क०।

**गू से घिनौना कर दूंगा**

बुरी हालत बना दूंगा।

**गूलर का पेट क्यों फाड़ते हो ?**

ढकी-मुदी बात क्यों प्रकट करवाना चाहते हो ?

**गूलर का फूल, पीपल का मद, घोड़ी की जुगाली,**
**कभी न पावे, और पावे तो रैन दिवाली**

लोगों का विश्वास है कि गूलर का फूल, पीपल का मद और घोडी की जुगाली, ये चीज़े दिवाली की रात को ही देखने को मिल सकती है। पर यह कोरा अन्धविश्वास है। गूलर का फल छोटे-छोटे फूलो का समन्वय मात्र है। मद बहुत से पेड़ो मे नही वहना और सभी जानवर जुगाली भी नही करते।

**गृहस्थ धर्म बराबर कोई धर्म नहीं**

स्पष्ट।

**गेंठी संभाल, मधुरी चाल, आज न पहुंचब, पहुंचब काल, (पू०)**

गठरी सभाले रहो, मज़े की चाल चलो, आज नही तो कल पहुच ही जाएगे। किसी काम मे जल्दीबाज़ी नही करनी चाहिए। धैर्य्यवान को सफलता मिलती है।

***गेंड़े की ढाल और बिजली की तलवार***

सर्वोत्तम होती है।

(तलवार बनानेवाले कहा करत है कि वे बिजली से तलवार पर पानी चढ़ाते है।)

**गेंवड़े आई बरात, बहू को लगी हगास, (स्त्रि०)**

ऐन मौके पर जब कोई कही चला जाए, तब०।

गेवडा =गाव के बाहर का हिस्सा, गाव की सीमा।

**गेंवड़े खेती, सिखा सांप, भाई भयकरन, बाबो बाप, (ग्रा०)**

गाव के बिल्कुल पास की खेती, छप्पर का साप, भयकारी भाई, और झगड़ालू बाप, ये अच्छे नही होते।

**गेहूं की बाल नहीं देखी**

अनाड़ी से क०। जो बहुत भोलाभाला बने, उससे व्यंग्य मे भी कह सकते है।

**गेहूं की रोटी को फौलाद का पेट चाहिए**

गेहू की रोटी गरीबो को नही मिलती। वही लोग खा सकते है, जिनके पास पैसा आता है। गेहू को हजम करना एक मुश्किल काम है; यही भाव है। (साधारण जनता की हालत गिरी हुई थी। इस कहावत से यही प्रमाणित होता है।)

**ग़ैब का हाल खुदा जाने**

भविष्य की बाते ईश्वर ही जान सकता है।

**ग़ैर का सिर कद्दू बराबर**

जब दूसरे का माल खर्च करने मे कोई ज़रा भी न हिचके, तब क०।

**ग़ैर के लिए कुआं खोदेगा, तो आप ही गिरेगा**

दूसरे की हानि चाहनेवाला स्वय हानि उठाता है।

**ग़ैर ग़ैर ही है, अपना अपना है**

समय पर अपना आदमी ही काम आता है।

**गोंद पंजीरी और ही खाये, जचहा रानी पड़ि करहायें, (स्त्रि०)**

जिन्हे जरूरत है, उन्हे तो कोई चीज न मिले और दूसरे मौज उडाए, तब क०। गोद और मसाले की पजीरी बच्चा होने पर प्रसूता को दी जाती है। जचहा रानी—जच्चा, प्रसूता।

**गोज़-ए-शुतर, न जमीन का न आसमान का**

दे०—ऊट का पाद ।

**गोझे का घाव, रानी जाने या राव, (स्त्रि०)**

मर्म की बात या मर्म का घाव कोई जान नही सकता।

**गोद का खिलाया गोद में नहीं रहता**

अपना लडका भी काम नही आता। ब्याह होने पर बहू के वश मे हो जाता है।

**गोद का छोड़ पेट के की आस, (स्त्रि०)**

गोद के लड़के को छोडकर गर्भ मे जो लडका है, उसकी आशा करना। वर्तमान छोडकर भविष्य पर निर्भर होना।

**गोद में लड़का शहर में ढिंढोरा**

लडका गोद में और शहर मे ढिंढोरा पीट रहे हैं कि हमारा लड़का खो गया। जब कोई चीज़ पास ही रक्खी हो और इधर-उधर ढूढना फिरे, तब क०।

**गोदी का लड़का मर जाए, पेट आग बुझाये, (स्त्रि०)**

(१) गोद के लडके के मर जाने पर इस आशा से दुख कम हो जाता है, कि फिर लड़का होगा।

(२) जब गोद का लड़का मर जाता है, तो पेट उसके दुख को भुला देता है, अर्थात आदमी काम-काज मे लगकर दुख भूल जाता है।

**गोदी में बैठ के आंख में उंगली**

कृतघ्न मनुष्य के लिए क०।

**गोदी में बैठ के दाढ़ी नोंचे**

दे० ऊ०।

**गोधन, गजधन, कनकधन, रतनखान, बहुखान।**
**जब आया संतोष धन, सब धन धूल समान।**

स्पष्ट।

सतोष सबसे बड़ा धन है।

**गोबर की सांझी भी पहरी-ओढ़ी अच्छी लगती है, (स्त्रि०)**

सजावट बडी चीज़ है।

(साझी गोबर या मिट्टी की बनी उस प्रतिमा को कहते है, जिसे लडकिया क्वार के महीने मे खेल और पूजा के लिए बनाती है।)

**गोबर गनेश**

बुद्धू के लिए क०।

**गोर चमाइन गरबे मातल, (पू०)**

गोरी चमारिन अपने रूप के गर्व मे उन्मत्त रहती है। ओछा आदमी ऐश्वर्य पाकर इतरा जाता है।

**गोर में छोटे-बड़े सब बराबर**

सब मिट्टी हो जाते है।

गोर=कब्र।

**गोर में पांव लटकाए बैठी है**

मरने को है।

**गोरी का जोबन चुटकियों में**

(१) रूपवती स्त्री का यौवन छेडछाड़ मे ही खत्म हुआ जा रहा है।

(२) किसी का यौवन हमेशा नहीं रहता। देखते-देखते समाप्त हो जाता है।

(३) अच्छी चीज़ थोड़ी-थोड़ी करके ही खत्म हो

जाती है। (अंगूठे और पास की उंगली से किसी चीज को पकड़ना चुटकी भरना या लेना कहलाता है। सुंदर लड़कियों को सब कोई दुलार से चुटकी लेता है। किसी वस्तु की थोड़ी मात्रा को भी चुटकी कहते है। फिर 'चुटकियों में' एक मुहावरा भी है, जिसका अर्थ होता है शीघ्र, आनन-फानन। कहावत को इन तीनों अर्थों में देखने की आवश्यकता है।)

**गोरी तेरे संग, मैं, गई उमरिया बीत।**
**अब चाली संग छोड़के, यह ना रीत पिरीत।**
मरणासन्न व्यक्ति का अपनी आत्मा से कहना है। शब्दार्थ स्पष्ट ही है।

**गोरी मत कर गोरे रंग का गुमान,**
**यह है कोई दिन का मेहमान।**
रूप और यौवन का गर्व नहीं करना चाहिए। वह क्षणभंगुर है।

**गोरे चमड़े पर न जा, वह ही छछूंदर से है बदतर**
वेश्याओ से बचे रहने के लिए लड़के को सीख।

**गोयठा जले गोबर हँसे**
कंडे को जलता देखकर गोबर हँसता है। वह भूल जाता है कि अब उसकी भी बारी आएगी। मूर्ख के लिए क०।

**गोला बारूद कहीं जाए, तलब से काम**
आलसी या कृतघ्न नौकर के लिए क०।
तलब=वेतन।
(तलब के स्थान पर 'धमाका' शब्द का भी प्रयोग करते है।)

**गोश्त खाये गोश्त बढ़े, घी खाये बल होय।**
**साग खाये ओझ बढ़े, तो बल कहां से होय।**
मास खाने से मांस बढ़ता है, घी खाने से बल बढ़ता है और साग खाने से पेट बढ़ता है, बल नही होता।

**गोश्त खाये गोश्त बढ़े, साग खाए ओझरी**
दे० ऊ०।

**गोश्त खा लेते हैं हड्डियां फेंक देते हैं**
जो चीज हमें अच्छी लगे वही लेना चाहिए।

**गोश्त नाखून से कहीं जुदा होता है**
आपस में रिश्ते नहीं टूटते।

**गौरा रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी, भाग तो न लेगी**
अपनी आत्मनिर्भरता प्रकट करने के लिए एक ऐसे व्यक्ति का कहना, जिसका मालिक या आश्रयदाता उससे अप्रसन्न हो गया हो, और अलग कर देने की धमकी दे रहा हो।
गौरा=पार्वती। यहा अभिप्राय देवी से है।
सुहाग भेंट।
भाग—भाग्य।

**ग्रह अपना फल कर ही जाते हैं**
फलित ज्योतिष में विश्वास रखनेवाले का कथन।

**ग्वार खाए गंवार**
स्पष्ट।
(ग्वार की फलियो की तरकारी बनती है और दाल भी होती है।)

**ग्वालिन अपने दही को खट्टा नहीं कहती**
कोई अपनी चीज को बुरा नही बताता।

**ग्वाले का दही, महतो की भेंट**
गरीब की चीज़ बड़े हड़पते हैं।
महतो गाव का ज़मीदार या बडा।

**घटत छिन-छिन, बढ़त पलपल, जात न लागत बार।**
**कहत कबीर सुनो भाई साधो, सपना है संसार।**
स्पष्ट।

**घड़ी भर की बेशरमी, सारे दिन का आधार**
(१) संकोच छोड़कर किसी को किसी काम के लिए नाही कर देने से बहुत आराम रहता है।
(२) वेश्याओं के लिए भी क०।
('आधार' की जगह 'आराम' का प्रयोग भी कहा० में करते है।)

**घड़ी में औलिया, घड़ी में भूत**
जिसकी मानसिक स्थिति घड़ी-घड़ी बदलती रहे, उसके लिए क०।
औलिया=संत।

**घड़ी में गांव जले, नौ घड़ी भद्रा, (हिं०)**
गांव में आग लग गई है, पर नौ घड़ी तक भद्रा नक्षत्र है, जिसमें कोई काम नही किया जाता। इसलिए अब आग कैसे बुझे ?
आवश्यक कार्य के लिए टालमटोल करनेपर क०। ज्योतिषियों पर व्यंग्य भी कहावत में है। वे हर काम शुभ घड़ी मे ही करने को कहते है।
पाठा०—घड़ी में घर...।

**घड़ी में घड़ियाल है**
बस, घंटा बजने ही वाला है। मतलब, समय तेज़ी से बीत रहा है। कब क्या हो, पता नहीं।
घडियाल लोहे या कांसे के उस मोटे पत्तल को कहते है, जो समय बताने के लिए बजाया जाता है।

**घड़ी में तोला, घड़ी में माशा**
जिसका चित्त ठिकाने न हो, ऐसे व्यक्ति के लिए क०।

**घड़े में घड़ा नहीं भरा जाता, (व्यं०)**
खाली घड़े को तो कुएं से ही भर कर लाया जाना चाहिए, यदि एक खाली बर्तन को दूसरे बर्तन की चीज़ से भर दिया, तो उससे लाभ क्या हुआ ? एक बर्तन तो खाली रहेगा ही।

**घर घोड़ा, रूठा चाकर, इनका इतबार नहीं**
सवारी में न निकला हुआ घोड़ा और नाराज़ नौकर, ये मौके पर धोखा देते है।

**घये की मेरी, तवे की तेरी**
जो आग पर नीचे सिक रही है, वह मेरी, और तवे की तेरी। स्वार्थी के लिए क०।

**घर आई लक्ष्मी को लात मारना, (हिं०)**
अनायास मिलते हुए धन या मिलती हुई सुख-सुविधा को छोड़ना।

**घर आया नाग न पूजे, बांबी पूजन जाय, (हिं०)**
कोई काम जब बहुत आसानी से हो रहा हो, तब न करके बाद में उसके लिए कष्ट उठाना।

**घर आगे कुत्ते को भी नहीं निकालते**
(१) घर आए आदमी का तिरस्कार नही करना चाहिए।
(२) मौके पर कोई आ जाए, तो उसे आश्रय देना चाहिए।

**घर आए बैरी को भी न मारिए**
स्पष्ट।

**घर कर, घर कर, सत्तर बला सिर कर**
घर-गृहस्थी एक जजाल है।

**घर का आटा कौन गीला करे**
घर की चीज़ कौन बिगाड़े ?

**घर का और दिल का भेद हरेक के सामने न कहे**
स्पष्ट।

**घर का घुरवाहा कर दिया**
घर का सत्यानाश कर दिया।
घुरवाहा = घूरा।

**घर काज, बहू गींदों को, (स्त्रि०)**
मौके पर ग़ायब हो जाना।
(फैलन ने गीदो का अर्थ आंगन किया है। 'घर में काम और बहू आंगन मे'।)

**घर का जोगी जोगना, आन गांव का सिद्ध, (हिं०)**
घर के आदमी की क़द्र नही होती।

**घर का भेद जब ही पाया, चौक पूरन को ढकना आया, (पू०)**
घर की हालत का पता उसी समय चल गया जब चौक पूरने के लिए मिट्टी के सकोरे में आटा आया। आदमी के रहन-सहन और व्यवहार से उसकी आर्थिक स्थिति का ज्ञान हो जाता है।

**घर का भेदी लंका ढावे, (हि०)**
आपस की फूट से घर का नाश हो जाता है। राम ने जब लंका पर चढ़ाई की, तो रावण का भाई विभीषण उनसे जाकर मिल गया था। तभी लंका का नाश हुआ।

**घर की आधी भली, बाहर की सारी कुच्छ नहीं**
(१) अपने पास जो कुछ हो उसी में गुज़र करनी चाहिए, दूसरे पर निर्भर रहना ठीक नही।
(२) ऐसे निकम्मे व्यक्ति का कथन भी हो सकता है, जो बाहर जाकर परिश्रम नहीं करना चाहता।

**घर की चुटकी, बासी साग**
बहुत शेखी मारनेवाले के लिए क०। घर में चुटकी

भर आटा और बासी साग के सिवा कुछ नहीं, फिर भी बात बनाते हैं।

**घर की बला घर ही में**

घर की मुसीबत घर में ही रही।

(कुछ जातियों में बड़े या छोटे भाई की विधवा से ब्याह कर लेने की प्रथा प्रचलित है। उसी से मतलब है।)

**घर की बिल्ली और घर ही में शिकार**

जब घर का ही कोई आदमी या अपने आश्रित रहने वाला व्यक्ति धोखा दे, तब क०।

**घर की बीबी हांडनी, घर कुत्तों जोग, (स्त्रि०)**

जिस घर की स्त्री हमेशा बाहर घूमती रहती है, वह घर बर्बाद हो जाता है।

**घर की मुरगी दाल बराबर**

घर की चीज़ की क़द्र नहीं होती।

**घर की मूंछें ही मूंछें हैं**

किसी स्त्री का अपने निकम्मे पति के सम्बन्ध में कहना कि 'बस शेखी मारते है, काम कुछ नही करते।'

**घर के खीर खायें और देवता भला मानें, (हिं०)**

देवता के नाम से हम स्वयं ही खीर-पूड़ी खाते हैं, और चाहते यह है कि उससे देवता प्रसन्न हो जाए।

**घर के जले बन गये, और बन में लागी आग।**

**घर बिचारा क्या करे, जो कर्मों लागी आग।**

बहुत प्रयत्न करने पर भी जब कोई आदमी सफल-मनोरथ नही होता, तब०।

('घर के जले' के स्थान पर प्र० पा०—'घर के दाहे' है।)

**घर के पीरों को तेल का मलीदा, (मु०)**

जब घरवालों की अपेक्षा बाहर के लोगों के साथ अधिक अच्छा वर्ताब किया जाए, तब क०।

**घर के रोवें, बाहर के खाएं, बुआ देत कलंदर जाएं**

घर के लोगों को न पूछना, और बाहरवालों का आदर-सत्कार करना।

**घर के ही मर्द हैं**

ऐसे आदमी के लिए, जो काम-धंधा कुछ नहीं करता, और व्यर्थ स्त्री पर रौब जमाया करता है।

**घर खीर तो बाहर भी खीर**

(१) जो घर में अच्छा खाते हैं, उन्हें बाहर भी अच्छा खाने को मिलता है।

(२) दूसरों को जितना अच्छा खिलाओगे, उतना ही अच्छा वे तुम्हें भी खिलाएंगे।

(३) घर में अगर अच्छा खाने को मिलता है, तो बाहर भी मिले, यह आवश्यक नहीं।

**घर खोदे, ईंधन बहुत**

घर खोदने से काठ-कबाड़ बहुत मिल जाता है। घर को बर्बाद करने पर ही कोई उतारू हो, तो उसके लिए खर्च की क्या कमी ?

**घर घर का, साथ नर का**

किराए के मकान में न रहे, स्त्री का साथ न करे।

**घर-घर के जाले बुहारती फिरती है**

(१) जो औरत घर-घर फिरती रहे।

(२) जो हमेशा घर बदलती रहे।

या (३) जो हरेक की खुशामद करती फिरे; उसके लिए क०।

**घर-घर पीत न कीजे तो गांव-गांव तो कीजे**

अगर हर घर में एक मित्र न हो सके, तो हर गांव में तो एक मित्र होना ही चाहिए।

**घर-घर यही मटियाले चूल्हे हैं, (स्त्रि०)**

सब घरों का एक-सा हाल है। सब जगह कुछ न कुछ परेशानियां है (घरोघर मातीच्या चूला। म०)

**घर घरवाली से**

स्पष्ट। (सं०)—गृहिणी गृहमुच्यते।

**घर-घर यही लेखा, (स्त्रि०)**

दे०—घर घर यही मटियाले . . .।

(पूरी कहावत इस प्रकार है—ऊंचे चढ़ के देखा, घर-घर में ही लेखा। मराठी में भी है—घरोघरी एकच परी, न सांगेल तीच बरी।)

**घर-घर शादी, घर-घर ग़म**

सभी घरों में दुख-सुख लगा है।

**घर-घर शादी, घर-घर चैन**

सब जगह अमन-चैन।

अच्छे शासन के लिए भी क०।

**घर, घोड़ा, गाड़ी, इन तीनों के दाम लड़ाखड़ी**
घर, घोड़ा और गाड़ी, इन तीनों के दाम नक़द ले लेना चाहिए। अथवा ये तीनों चीजें अपने स्थान पर ही बिकती है, यानी जहां वे देखी जा सकें।

**घर घोड़ा, नखास मोल**
घोड़ा तो घर में है, और बाज़ार में उसका मोल करते फिरते हैं। जब कोई बिना माल दिखाए ही उसके दाम कहे, तब क०।

**घर चैन तो बाहर चैन**
घर में आदमी को सुख है, तो बाहर भी मिलता है।

**घर छोड़ हजीरा क़ायम, (स्त्रि०)**
घर छोड़ घूरे पर रहना। मूर्ख के लिए क०।

**घर जल गया, तब चूड़ियां पूछीं, (स्त्रि०)**
काम बिगड़ जाने पर जब कोई सुध ले, तब क०। (कथा है कि किसी स्त्री ने नई चूड़ियां पहनी। वह चाहती थी कि लोग उन्हें देखे और प्रशंसा करें। किसी का ध्यान उनकी ओर न जाते देख एक दिन उसने घर में आग लगा दी। लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। जब उसने हाथ उठाकर जलते हुए घर की ओर इशारा किया, तो किसी की नज़र चूड़ियों पर पड़ गई। उसने प्रश्न किया—अरे, चूड़ियां तुमने कब बनवाई। तब स्त्री ने उत्तर दिया कि 'यह प्रश्न अगर तुमने पहले ही पूछ लिया होता, तो मै अपने घर में आग क्यों लगाती ?')

**घर जले, घूर बतावे**
घर तो जल रहा है, कहता है धुआ हे।
अपने-आपको या दूसरे को धोखे में रखना।

**घर जले, गुंडा तापें**
किसी का नुकसान हो रहा हो, और दूसरे फालतू आदमी उससे लाभ उठाएं, तब क०।

**घर जले तो जले, चाल न बिगड़े**
पुरातन पंथियों के लिए क०।

**घर तंग, बहू जबरजंग**
(१) मोटी-ताज़ी स्त्री के लिए मज़ाक में कहते हैं।
(२) जब किसी ग़रीब घर में कोई खर्चीली औरत आ जाए, तब भी कह सकते हैं।

**घर न वर, (स्त्रि०)**
लड़की के लिए क० कि उसके लिए दो में से कोई चीज़ अच्छी नहीं मिल रही है, न घर, न वर।

**घर न बार, मियां मुहल्लेदार, (स्त्रि०)**
शेखीबाज के लिए क०।

**घर फूंककर बिर्रा मारना, (पू०)**
थोड़े से लाभ के लिए बड़ा नुकसान करना। घर में जब बर्र छत्ता बना लेती है, तो उसे भगाने के लिए छत्ते में आग लगा देते हैं।

**घर फूंक तमाशा देखना**
(१) कोरी दिखावट के लिए किसी काम में बेहिसाब पैसा खर्च कर देना।
(२) शान-शौकत में औकात से बाहर खर्च करना।

**घर फूटे, गंवार लूटे**
घर की आपसी लडाई से दूसरे फायदा उठाते हैं।

**घरबार तुम्हारा, कोठी-कुठले के हाथ न लगाना, (स्त्रि०)**
झूठा प्रेम दिखाना। दिखावटी आदर-सत्कार।

**घर बैठल आधा भला, (पू०)**
घर बैठे थोड़ा भी मिले, तो अच्छा। क्योंकि बाहर जाकर रहने से खर्च जो अधिक होता है।

**घर भर हंसिया न निगलने का, न थूकने का**
यह अशुद्ध है। (दे०—गुड़ भरा हंसिया।)

**घर भाड़े, हाट भाड़े, पूंजी को लगे ब्याज; मुनीम बैठा रोटियां झाड़े, दिवाला काढ़े काहे लाज। (व्यं०)**
घर भी किराए पर, दूकान भी किराए पर, पूंजी पर ब्याज चढ़ रहा है, मुनीम मुफ़्त की तनख्वाह पा रहा है, तब दिवाला निकालने में शर्म किस बात की ? बिना पूंजी के रोज़गार करनेवाले के लिए क०।

**घर भी बैठो, और जान भी खाओ, (स्त्रि०)**
किसी स्त्री का अपने निकम्मे लड़के या निखट्टू पति से क०।

**घर मिलता है तो वर नहीं मिलता; वर मिलता, तो घर नहीं मिलता, (स्त्रि०**
लड़की के विवाह का कहीं ठीक न पड़ना।

**घर में आई जोय, टेढ़ी पगड़ी सीधी होय, (स्त्रि०)**
घर में स्त्री के आ जाने पर सब अकड़ निकल जाती हैं, क्योंकि गृहस्थी का बोझ सिर पर आ जाता है। टेढ़ी पगड़ी गुंडे ही बांधते हैं। इसलिए कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि गृहस्थ बन जाने पर आदमी की इज्जत बढ़ जाती है।

**घर में खरच नहीं, औंठी पहिरती पुखराज जड़ल सौख डाहाये, (पू० स्त्रि०)**
घर में खर्च के लिए पैसा नहीं, फिर भी पुखराज-जड़ी अंगूठी पहिनने का शौक़ चर्राया है।

**घर में खरच ना, ड्योढ़ी पर नाच, (पू०)**
झूठी शान दिखाना।
(म०--घरांत नाहीं दाणा व मला श्रीमंत म्हणा।)

**घर में खाये नहीं, अटारी पर धुआं, (भो०)**
घर में खाने को नहीं, फिर भी अटारी पर धुआं कर रहे हैं, जिसमें कोई समझे कि भोजन बन रहा है!

**घर में घर, लड़ाई का डर, (स्त्रि०)**
एक ही घर में अगर दो परिवार रहते हों, तो उनमें लड़ाई का डर रहता है।

**घर में चने का चून नहीं, गेहूं की दो पो लइयो**
झूठी शान दिखानेवाले के लिए क०।

**घर में चिराग नहीं, बाहर मशाल**
झूठी तड़क-भड़क दिखाना।

**घर में जोरू का नाम बहू बेगम रख लो**
अपने घर में चाहे जो कर लो।

**घर में जो शहद मिले तो काहे बन को जाय**
अगर घर बैठे सब चीज मिल जाए, तो उसके लिए कोई कष्ट क्यों उठाए?

**घर में वथा 'हाय हम मरे'**
घर में चीज होते हुए भी उसके लिए इधर-उधर भटकते फिरना। एक मूर्खतापूर्ण काम।

**घर में दिया, तो मस्जिद में दिया, (स्त्रि०)**
पहले अपना घर संभालना चाहिए, फिर बाहर।

**घर में दिया न बाती, मुंडो फिरै इतराती**
झूठी शान दिखाने पर क०।
मुंडो =ऐसी स्त्री, जिसका सिरघुटा हो। एक गाली।

**घर में देखो चलनी न छाज, बाहर मियां तीरंदाज, (स्त्रि०)**
झूठी शान दिखानेवाले पर व्यंग्य।

**घर में धान न पान, बीबी को बड़ा गुमान, (स्त्रि०)**
गरीब होते हुए भी घमंड करना।

**घर में नहीं तागा, अलबेला मांगे पागा, (ग्रा०)**
स्पष्ट।
पागा=पगड़ी।

**घर में नहीं दाने, बुढ़िया चली भुनाने**
स्पष्ट।
(ऊपर की पांचों कहावतों का एक ही अभिप्राय है।)

**घर में नहीं बूर, बेटा मांगे मोतीचूर, (स्त्रि०)**
जब कोई ऐसी वस्तु मांगे, जिसके देने की सामर्थ्य न हो, तब क०।
बूर=शक्कर।

**घर में पक्के चूहे और बाहर कहे 'पय'**
झूठा दिखावा करना। घर में चूहे पके है, कह रहे हैं, दूध उबल रहा है।

**घर में बिलौटा बाघ**
घर में सब शेर हो जाते हैं।

**घर में भूनी भांग नहीं, और नेवते साठ, (स्त्रि०)**
शक्ति से बाहर काम करना।

**घर में रहे न तीरथ गये, मूड़ मुड़ाकर जोगी भये**
जीवन का कोई ध्येय पूरा न कर पाना। एक काम छोड़कर दूसरा करना, उसमे भी असफल रहना।

**घर में रहे ना तीरथ गए, मूंड़ मुंड़ा फजीहत भये**
दे० ऊ०।

**घर में हल न बलधया, मांगे ईख हलवया, (ग्रा०)**
घर में न तो हल है न बैल, फिर भी हरवाहा खेत जुताई की मजदूरी में ईख मांगता है। जब किसी से कभी कोई काम ही न लिया गया हो, फिर भी वह आकर झूठ-मूठ ही मजदूरी मांगे, तब०।

**घर यार के, पूत भतार के**
घर तो यारों का है, और लड़का पति का।
दुश्चरित्रा के लिए क०।

**घर रहे घर को खाय, बाहर रहे बाहर को खाय**

घर में रहता है, तो घरवालों को परेशान करता है, बाहर रहता है, तो बाहरवालों को। निठल्ला आदमी।

**घरवाले का एक घर, निघरे के सौ घर**

घरवाले को घर की चिन्ता रहती है। घर छोड़कर जा नही सकता। पर घरहीन स्वतत्र रहता है। कही भी जाकर रह सकता है।

**घर सुख तो बाहर चैन**

दे०—घर चैन तो . . . ।

**घर से खोयं, तो आंखें होयं**

जब आदमी का घर से कुछ जाता है, तब उसकी आखे खुलती हैं। नुकसान होने पर होश आता है।

**घर से बाहर भला, (स्त्रि०)**

(१) निकम्मे या लड़ाकू पति के लिए क०।

(२) घर से बाहर इसलिए भी अच्छा कि आदमी चिन्ताओ से मुक्त रहता है और काम-धघा भी कर सकना हे। यह अर्थ भी हो सकता है।

**घर ही में बैद, मरे कैसे ?**

घर में होशियार आदमी के रहते हुए भी काम बिगड़ जाए, तब क०।

**घाई की मेरी, तवे की तेरी (स्त्रि०)**

स्वार्थी के लिए क०।

दे०--घये की मेरी. . .।

**घाट-घाट का पानी पिया है**

ऐसे मनुष्य के लिए क०, जिसने बहुत कुछ भरा-भुगता हो।

**घायं-घायं तोरा, मन हां बाजे मोरा, (स्त्रि०)**

भीतर से वह तेरा बना रहे, पर लोग तो उसे मेरा ही जानते है।

किसी ऐसी स्त्री का, जिसके पति का दूसरी स्त्री से सम्बन्ध है, उससे ताना मार कर कहना।

**घायल की गत घायल जाने**

जिस पर बीतती है, वही जानता है।

**घास खाये बिन कटे, तो सब कोई खाय**

जिस चीज की आवश्यकता होती है, उसी से वह पूरी होती है।

**घास में क्या सांप नहीं फिरता ?**

अच्छी जगह क्या दुष्ट नहीं होते ?

**घी कहां गया ? खिचड़ी में; खिचड़ी कहां गई ? प्यारों के पेट में, (स्त्रि०)**

ऐसी स्त्री के लिए कही गई है, जिसका पर पुरुष से प्रेम है और जो उसे घर का माल-टाल खिलाती रहती है।

जब कोई वस्तु स्वयं अपने काम आ जाए, तब भी क०।

**घी का लड्डू टेढ़ा भी भला**

(१) स्वभाव से जो वस्तु अच्छी है, वह अच्छी ही रहेगी, फिर देखने मे कैसी ही क्यों न हो।

(२) प्रायः लडके के लिए क० कि वह कैसा ही हो, पर है तो अपना लड़का ही।

**घी के कुप्पे से जा लगा है**

जब किसी पैसेवाले से किसी की मैत्री या सम्बन्ध हो जाए, तब क०।

**घी-खिचड़ी में दाव है**

घर की मिल्कियत चाहते हैं। जब कोई मनुष्य, जितना उसे मिलना चाहिए, उतना पा लेने के पश्चात भी और आगे अपना अधिकार जताए, तब क०।

**घी-खिचड़ी हो रहे है**

दोनों एक हो रहे हैं।

**घी गिर गया, मुझे रूखी भाती है**

झेंप मिटाने के लिए बहाना।

**घी जाट का, तेल हाट का**

घी गांव का और तेल दूकान का अच्छा होता है, क्योकि गाव का घी ताजा होता है और दूकान पर तेल कई दिन का होने के कारण साफ़ मिलता है।

**घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो**

खर्च भी करो और इज्जत भी बनाए रक्खो।

**घी संवारे काम, बड़ी बहू का नाम, (स्त्रि०)**

साधन। काम तो पैसे से ही होता है, यश करनेवाले को मिलता है।

**घुटने नवेंगे तो पेट को ही**

घर का आदमी घरवालो की तरफ़ ही झुकता है।

**घूंसों में उधार क्या ?**
घूंसे का बदला तुरंत दिया जाता है।
**घोंघे में पकाया, सीपी में खाया**
ग़रीबी की हालत में रहना।
**घोड़ा और फोड़ा, जितना रोलों उतना ही बढ़े**
घोड़ा और फोड़ा, इनको जितना ही सहलाओ उतना ही बढ़ते है। मतलब, फोड़े को सहलाना ठीक नहीं। यहां घोड़े के सम्बन्ध मे सहलाने का अर्थ खुजौरा करने से है।
**घोड़ा चाहिए बिदायगी को, ज़रा फिरते से आइयो, (हि०)**
दूल्हा के लिए घोडा अभी चाहिए और कहते यह है कि थोडी देर मे आकर ले जाना। ज़रूरत पर चीज़ न दी जाए और उसके लिए टाल दिया जाय, तब क०।
पाठा०—घोडा चाहिए बिनायकी को ..।
**घोड़े का गिरा संभलता है, नज़रों का गिरा नहीं संभलता**
गई हुई प्रतिष्ठा नही लौटती।
**घोड़े की दुम बढ़ेगी तो अपनी ही मक्खियां हिलायेगा**
जब किसी एक व्यक्ति की उन्नति से दूसरो को कोई हित साधन होने की संभावना न हो, तब क०।
**घोड़े की सवारी चलता जनाज़ा**
(१) घोड़े पर धीरे-धीरे चलना चाहिए, जैसे जनाज़ा चलता है।
(२) घोड़े की सवारी खतरनाक है। गिरकर आदमी मर सकता है।
जनाज़ा अर्थी।
**घोड़े की हँसी और बालक का दुख जान नहीं पड़ता**
क्योंकि ये बोल नहीं सकते।
**घोड़े को लात, आदमी को बात**
घोड़े को ऐड से काबू में किया जा सकता है और आदमी को बात से।
**घोड़े-घोड़े लड़ें, मोची का ज़ीन टूटे**
बड़ों की लड़ाई में छोटों की हानि होती है।
**घोड़े पर सिर से कफ़न बांध के बैठना चाहिए**
इसलिए कि गिरकर मरने का डर रहता है।
**घोड़े बेचकर सोये हैं**
बेफ़िक्र हैं।
**घोड़े भैंसे की लाग**
दो एक-से व्यक्तियों की टक्कर।
**घोड़े मर गये, गधों का राज आया**
योग्य व्यक्तियों के न रहने पर मूर्खों की बन आती है।
**घोड़ों को घर कितनी दूर ?**
क्योंकि घर की ओर वह तेज़ी से चलता है।
काम करनेवाले को काम में देर नही लगती।

**चंचल नार की चाल छिपे नहीं, नीच छिपे न बड़प्पन पाय**
**जोगी का भेक नीक धरो, कोई करम छिपे ना भभूत रमाय।**
स्पष्ट।
भेक = भेष।
**चंचल नार छैल से लड़ी, खन अंदर, खन बाहर खड़ी**
दुश्चरित्रा के सम्बन्ध में।
खन = क्षण।
**'चंडी, घर लीपेगी ?' 'नहीं निगोड़े, खोदूंगी।'**
**'चंडी, घर खोदेगी', 'नहीं, निगोड़े लीपूंगी।' (स्त्रि०)**
ऐसी कलह-प्रिय औरत के लिए कहा गया है, जो हमेशा उल्टा काम करती है। उससे घर लीपने को कहा गया, तो कहती है नहीं खोदूगी। जब कहा गया कि अच्छा खोद डाल, तो कहती है, लीपूगी।
**चंद्रग्रहन में चक्कीराहे का क्या काम ?**
चंद्रग्रहण के मेले में चक्की टांकने वाले की क्या आवश्यकता? उसकी ज़रूरत तो घर पर ही पड़ती है, जहां चक्की है।
**चंदन की चुटकी, ना गाड़ी भर काठ**
अच्छी चीज़ थोड़ी ही अच्छी होती है। निकम्मी

चीज बहुत-सी भी हो, तो क्या लाभ?

**चंदन पड़ा चमार के, नित उठ कूटे चाम।**
**रो-रो चंदन महि फिरे, पड़ा नीच से काम।**

स्पष्ट।

महि = पृथ्वी।

**चंदे आब, चंदे महताब**

चंद्रमा की तरह सुन्दर, सूर्य की तरह उज्ज्वल। (किसी रूपवती की प्रशंसा में)

**चंपा के दस फूल, चमेली की एक कली।**
**मूरख की सारी रात, चातुर की एक घड़ी।**

चंपा के दस फूलों के मुकाबले में चमेली की एक कली बहुत है। मूर्ख का सारी रात का काम चतुर की एक घड़ी के काम के बराबर होता है।

**चंबेली चाव में आई, बखत्यारे साथ लाई**

चमेली लाड़ में आई, तो घर भर को (दावत में) लेकर आई। जब कोई अपने थोड़े-से आदर का लाभ उठाने लगे, तब क०।

**चंबेली चाल में आई, बख्तावर रेवड़ियां बांटे, (स्त्रि०)**

चमेली को चाव लगा, तो रेवड़ियों का प्रसाद बाटने लगी। जब कोई सूम खुशी में आकर खर्च करने लगे, तब क०।

बख्तावर रेवड़ियां=मनौती की रेवड़ियां।

**चकमक दीदा, खाय मलीदा, (स्त्रि०)**

दुराचारिणी के लि क०।

**चकरया चाकरी करके आप अपने हाथ बिकता है**

स्पष्ट।

चकरया = चाकरी करने वाला।

**चकवा चकवी दो जने, इन मत मारो कोय।**
**यह मारे करतार के, रैन बिछोहा होय।**

सताए हुए को नहीं सताना चाहिए। (कवियों का विश्वास है कि चकवा-चकवी का रात्रि के समय वियोग हो जाता है। एक नदी या तालाब के इस पार रहता है तो दूसरा उस पार। वहीं से वे एक दूसरे को करुण स्वर में पुकारा करते हैं।)

**चक्की तले घर तेरा, निकल सास, घर मेरा, (स्त्रि०)**

किसी उद्धत बहू का कहना।

**चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे, (स्त्रि०)**

पैसा खर्च करने से ही कुछ मिलता है।

**चख डाल माल धन को, कौड़ी न रख कफ़न को;**
**जिसने दिया है तन को, देगा वही कफ़न को।**

फक्कड़ का कहना।

**चचा चोर, भतीजा काजी**

(१) घर का एक आदमी अच्छा, दूसरा बुरा।
(२) न्याय में पक्षपात का डर हो, तब कहा जाता है।

**चचा बनाके छोड़ूंगा**

मतलब, हम आपकी अक्ल दुरुस्त कर देंगे। व्यंग्य में क०।

**चचेरे, ममेरे बड़तले बहुतेरे**

बड़े आदमियों के बहुत रिश्तेदार बन जाते हैं।

**चट मंगनी, पट ब्याह; टूट गई टंगड़ी, रह गया ब्याह**

होनहार के लिए क०।

**चटोरा कुत्ता, अलोनी सिल**

चटोरे आदमी को जो मिल जाए, वही बहुत है। अथवा चटोरे आदमी को जब कहीं निराश होना पड़े, तब भी कह सकते है।

**चटोरा खावे अपना घर, बटोरा खावे दोऊ घर**

चटोरा तो अपना ही घर खाता है, पर मुफ़्तखोरा अपना और पराया, दोनों ही घर खा लेता है।

**चटोरी जबान, दौलत की हान**

चटोरा आदमी घर बर्बाद कर देता है।

**चढ़ जा बेटा सूली पर, भगवान भली करेंगे**

(१) बैठे-ठाले जब कोई अपने को किसी मुसीबत में डाल दे, तब उससे व्यंग्य में क०।
(२) जब कोई आदमी किसी को ऐसी सलाह दे, जो खतरे से भरी हो, तब भी (सलाह देने वाले से) क० कि आपको क्या, 'चढ़ जा बेटा....' मरेंगे तो हम।

**चढ़ती कला, जागती जोत**

देवी की ज्योति के लिए क०। आशीर्वाद भी है।

**चढ़ती दरगाह**

संत पुरुष के लिए कहते हैं कि वह चलती मस्जिद है।

**चढ़ते बरसे आर्द्रा, उतरत बरसे हस्त।**
**कितना राजा डांड़ ले, रहे अनंद गृहस्त। (कृ०)**
आर्द्रा नक्षत्र के आरंभ में और हस्त के अंत में यदि वर्षा हो, तो इतनी अच्छी पैदावार होती है कि राजा कितना ही दड क्यों न ले, किसान को फिर भी लाभ रहता है।
(आर्द्रा वर्षा का नक्षत्र है। आषाढ़ में लगता है और हस्त क्वार में। डांड़ लेने से मतलब यहां लगान से है।)

**चढ़ मार, गूलर पक्के**
बढ़ो, हाथ मारो, यही मौका है।

**चढ़ी कढ़ाई तेल न आया, तो कब आएगा? (स्त्रि०)**
मौके पर कोई चीज न मिले तो कब मिलेगी?

**चढ़ेगा सो गिरेगा**
काम करने पर असफलता होती ही है।

**चढ़े, पर न चढ़ आव; सिर दीखे न पांव**
काम किया और कर नहीं जाना। अनाड़ीपन पर क०।

**चना और चुगल मुंह लगा बुरा**
चना खाने में और चुगल की बात भी सुनने में अच्छी लगती है; पर बाद में दोनों से ही कष्ट होता है।

**चना और चुगल मुंह लगा छूटता नहीं**
एक बार जब चना खाने और चुगल की बात सुनने की आदत पड़ जाती है, तो वह छूटती नहीं।
(नोट—चुगलखोर खुशामदी होता है और यहां चुगल की बात सुनने से ही अभिप्राय है।)

**चना कहे, मेरी ऊंची नाक, एक घर दलिए, दो घर हांक।**
**जो खावे मेरा एक टूक, पानी पीवे सौ-सौ घूंट।**
चना खाने से प्यास बहुत लगती है।
(यहां नाक के दो अर्थ है—(१) चने में जो नोक निकली रहती है वह। (२) इज्जत। (मेरी ऊंची नाक अर्थात मेरी बड़ी इज्जत है।)

**चना मर्द नाज है**
चना बहुत पुष्टिकर होता है।

**चने का मारा मरता है**
आदमी की जब मौत आती है, तो अत्यन्त साधारण कारण से भी मर जाता है।

**चने के साथ कहीं घुन न पिस जाए**
बड़े के साथ कहीं ग़रीब की शामत न आ जाए।

**चने चबाओ या शहनाई बजाओ**
दो काम एक साथ नहीं किए जा सकते।

**चने चिरौंजी हो गए, गेहूं हो गए दाख।**
**घर में गहने तीन हैं, चरखा, पीढ़ी, खाट। (स्त्रि०)**
चने तो चिरौंजी की तरह अलभ्य हो गए हैं और गेहूं किशमिश की तरह। घर में अब तीन ही कीमती चीजें बची हैं—चरखा, पीढ़ी और खाट, और सब बिक गया। किसी ऐसे व्यक्ति की स्थिति का वर्णन, जो पहले अच्छी हालत में था, किन्तु अब ग़रीब हो गया है।

**चपनी भर पानी में डूब मरो**
मतलब, तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

**चपनी लिखकर सिर पर धरो,**
**निकल पड़ा या निकल पड़ी। (मु०, स्त्रि०, लो० वि०)**
(लोगों का विश्वास है कि उक्त तुकबंदी को शेख फरीद के नाम के साथ एक चपनी पर लिखकर प्रसूति के सिर पर रख देने से शीघ्र प्रसव हो जाता है।)

**चपरासी बे सताये नहीं रहते**
कुछ लिए बिना नही मानते।

**चबोकड़ सो लबोकड़, (स्त्रि०)**
बहुत बातूनी झूठा होता है।
चबोकड़ मुह चलानेवाला, 'चाब' से बना है।
लबोकड़=लबरा, झूठा।

**चमगीदड़ों के घर मेहमान आए, हम भी लटके, तुम भी लटको**
समाज जैसा करे, वैसा ही करो।

**चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए**
कंजूस के लिए क०।

**चमड़े की जबान है, भूल-चूक हो ही जाती है**
जब किसी के मुंह से कुछ-का-कुछ निकल जाए, तब क०।

**चमार की छोकड़ी, चंदन नाम**
गुण धर्म के अनुसार नाम न हो, तब क०।

**चमार को अर्श पर भी बेगार**
गरीब को सभी जगह कष्ट भोगने पड़ते हैं।
अर्श=स्वर्ग।

**चमार चमड़े का यार**
(१) ऐसा नीच पुरुष, जो केवल अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए किसी से प्रेम करे, स्वार्थी पुरुष।
(२). चमार की गुजर चमड़े से होती है, इसलिए उसी काम से उसे मतलब रहता है, यह अर्थ भी निकलता है।

**चमारों के कोसे ढोर नहीं मरते, (ग्रा०)**
किसी के चाहने मात्र से किसी का नुकसान नही हो जाता।

**चरसी यार किसके, दम लगाया खिसके**
नशेबाज को अपने नशे से मतलब रहता है। दम लगाई और खिसक गए।

**चर्बी छाई आंखों में तो नाचन लागी आंगन में**
मदाध औरतो के लिए क०।
(आखो मे चर्बी छाना, एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है, बेशर्म बन जाना या गर्वोन्मत्त होना।)

**चल चकहे, मेरे मुंह मत लग, (स्त्रि०)**
मुझसे बात मत कर। (फटकार)

**चल छांव, मैं आई हूं, जुमला पीर मनाई हूं, (स्त्रि०)**
किसी बहुत नजाकत-पसद औरत का कहना, जिसे रास्ता चलने मे कठिनाई हो रही है। अपनी छाया से कहती है कि तू चल, मैं अभी आई। मैंने सब पीरो को मना रक्खा है। उनकी मदद से मैं बात की बात मे तेरे पास पहुच जाऊंगी।

**चलत फिरत धन पैये, बैठे देगा कौन?**
उद्यम से ही धन मिलता है, बैठे रहने से नही।

**चलता फिरता ना माल, बैठा ऊ मर जाय, (पू०)**
(१) परिश्रमी भूखा नही मरता, आलसी ही मरता है।
(२) होनहार के लिए भी क०।

**चलती का नाम गाड़ी, गाड़ी का नाम उखड़ी**
दुनिया के उल्टे ढंग पर क०। जो चलती है, उसे तो गाड़ी कहते हैं और जो जमीन में गड़ी है, उसे उखड़ी।
(केवल 'चलती का नाम गाड़ी' भी कहते हैं जिसका अर्थ दूसरा होता है; यानी जिसकी चल जाए, वही सब कुछ है, बाकी टापा करें।)
उखड़ी=उखली।

**चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना**
चालू काम मे विघ्न डालना।

**चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।**
**दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय।**
ससार की नश्वरता पर क०। धरती और आसमान के बीच मे जो आएगा, उसे मरना ही होगा।

**चलती में कौन कसर लगाता है?**
हर आदमी अपने रोब और दबदबे से पूरा फायदा उठाता है।

**चलती हवा से लड़ती है**
जो हर आदमी से बात-बात मे लडे। लडाकू स्त्री के लिए क०।

**चलते चोर लंगोटी लाभ**
चोर को भागते समय जो मिले वही बहुत।
पाठा०—भागते चोर की लगोटी भली।

**चलते बैल के चूतड़ में लकड़ी करना**
काम करते हुए आदमी को छेड़ना।

**चलते हाथ-पांव उठा ले**
ईश्वर से प्रार्थना करना, जिससे अशक्त होकर न मरे।

**चलते हाथ-पांव सलूक कर लो**
जीते-जी भलाई कर लो।

**चल न सकूं, मेरा कूदन नाम**
डीग हाकनेवाले पर क०।

**चलना भला न कोस का, बेटी भली न एक।**
**देना भला न बाप का, जो प्रभु राखे टेक।**
सवारी का न होना, अकेली बेटी और पिता का ऋण, ये तीनों अच्छे नही।
(यह बंगला मे भी है—चला भाल नय एक क्रोश, बेटी भाल नय एक। मागा भाल नय बापेर काछे

यदि विधि राखे टेक।)

**चलना है, रहना नहीं, चलना बिस्वे बीस।**
**ऐसे सहज सुहाग पर, कौन गुंधावे सीस।**

संसार में आकर जब एक दिन जाना ही है, तब सुख-भोग के साधनों को इकट्ठा करने से क्या लाभ? सहज सुहाग—थोड़ी देर का सुहाग।

**चलनी चम्मा, घोड़ लगम्मा, कायथ गुलम्मा, ये तीनों नहीं कोई कम्मा**

चलनी का चमड़ा, घोड़े की लगाम, और नौकरी करनेवाला कायस्थ, ये तीनों किसी काम के नही होते। यानी उनसे और कोई काम नही हो सकता।

**चलनी दूसे सूप को, जिसमें बहत्तर छेद**

जब कोई अपने बड़े ऐब न देखकर दूसरो के साधारण से ऐब देखता फिरे, तब क०।

दूसना—दोष देना, बुरा-भला कहना।

(बंगला मे भी है—'चालनी बले छूच तोरे पोदे केन छेद। आपन दोष देखे ना जार सब्वागेई बेंधा।')

**चलनी में गाय दुहें, करमों को क्या दोष? (स्त्रि०)**

जानबूझकर मूर्खतापूर्ण काम करके भाग्य को दोष देना। चलनी में गाय दुहने से तो सब दूध बाहर निकल ही जाएगा।

**चल बसे जो लोग थे इस्लाम के, रह गए बाकी मुसलमान नाम के**

स्पष्ट।

**चल मरघट को लकड़ियां सस्ती हैं**

कंजूस से हँसी में क०।

**चल मेरे चरखे चर्रखचूं, कहां की बुढ़िया, कहां का तू**

अपने ही मन की कहे जाना, दूसरे की न सुनना।

(इसकी एक मनोरंजक कहानी है, जो अक्सर बच्चो को सुनाई जाती है—किसी जंगल में एक बुढ़िया शेर, चीता, भालू आदि हिंसक जंतुओं से घिर गई। जब वे उसे खाने को तैयार हुए, तो बुढ़िया बोली—अभी तो मैं बहुत दुबली हूं। अभी मैं अपनी लड़की के यहां जा रही हूं। तुम लोग कुछ दिनों ठहरो। जब मैं वहां से खा-पीकर खूब मोटी-ताजी होकर आ जाऊं, तब मुझे खा लेना। सब ने बुढ़िया की बात मान ली और उसे छोड़ दिया। बुढ़िया जब लौटी, तो अपने साथ एक चरखा लेती आई और उसी के अंदर बैठ गई। जानवर जब उससे कहते—आ बुढ़िया, अपना वादा पूरा कर। तो वह चरखे के भीतर से ही जवाब देती 'चल मेरे चरखे चर्रखचू, कहां की बुढ़िया, कहां का तू'। यह सुनकर जानवरों ने समझा कि यह तो बुढ़िया नहीं, कुछ और मुसीबत है, और डर के मारे वहां से भाग गए। इस तरह बुढ़िया ने अपनी जान बचा ली। कहानी से शिक्षा यह मिलती है कि बल से बुद्धि बड़ी है।)

**चला-चली का सौदा प्यारे, भला-भली कर लेओ**

संसार में आकर एक दिन जाना है, कुछ भलाई कर लो।

**चला-चली की राह में भला-भली कर लेओ**

दे० ऊ०।

**चली चली आई सौत के पीहर, (स्त्रि०)**

जब कोई जानबूझकर बरबादी के रास्ते पर चले, तब क०।

(सौत के मायके जाने पर आदर-सत्कार तो दूर रहा, गालिया सुनने को मिल सकती हैं और मार भी पड़ सकती है।)

**चली चली बी मालों आई**

जब कोई अफवाह उडते-उड़ते किसी जगह पहुचे, तब क०।

**चलं न जाने, आंगन टेढ़ा, (स्त्रि०)**

जब किसी काम को करने की युक्ति न जानता हो, पर उसके लिए साज-सरंजाम को दोष दे, तब क०।

पाठा०—नाच न जाने आगन टेढ़ा।

**चलं रांड़ का चरखा और चलं बुरे का पेट**

गरीब रांड़ पेट के लिए चरखा चलाया करती है और बुरे आदमी का कुपच के कारण पेट चलता रहता है। जब कोई किसी से चलने के लिए कहता है, और वह नही जाना चाहता, तब वह प्रायः हंसी में उपर्युक्त वाक्य कहकर टालता है।

**चलौ न जाए, गठरी मुड़ायचो, (पु०, स्त्रि०)**

चलते बनता नहीं, ऊपर से गठरी सिर पर।

शक्ति से बाहर काम करने पर क०।

**चली सखी चलिए वहां, जहां बसें ब्रजराज।**
**गोरस बेचत हरि मिलें, एक पंथ दो काज। (स्त्रि०)**

स्पष्ट।

(इस दोहे की अंतिम अर्द्धाली 'एक पंथ... ही कहावत के रूप में प्रयुक्त होती है।)

**चश्म बद्दूर, आंखें मोती चूर**

इन मोती जैसी सुन्दर आंखों पर किसी की बुरी नज़र न पड़े, एक तरह की शुभकामना।

**चश्मे मा रोशन, दिले मा खुश, (फा०)**

आंखों की रोशनी, दिल की खुशी। लड़के के लिए क०।

**चसका लगा बुरा**

किसी चीज़ की लत बुरी होती है।

**चसका दिन-दस का, पराया खसम किसका?**

पराई चीज़ अपनी नहीं हो सकती।

**चहार चीज़ अस्त तोहफ-ए मुल्तान; गर्द, गरमा, गदा ओ गोरिस्तान, (फा०)**

मुलतान की चार चीजें मशहूर है—धूल, गरमी, फ़कीर और कब्रें।

**चहार शम्बह नदारद, (फा०)**

चहार शम्बह फारसी में बुधवार को कहते है और हिन्दी मे बुध (बुद्धि) अक्ल को कहते है। जब किसी को व्यंग्य मे मूर्ख बनाना होता है, तब क०।

**चांद आसमान चढ़ा सबने देखा**

वैभव पर सबकी नज़र जाती है। बढ़ते हुए को सब देखते है।

**चांद का टुकड़ा**

सुंदर वस्तु।

**चांद को गहन लग गया**

जब किसी सच्चरित्र की कीर्ति में धब्बा लगे, तब क०।

जब कोई रूपवती लड़की किसी कुरूप से ब्याही जाए, तब भी क०।

**चांद चढ़े कुल आलम देखे**

चंद्रमा का उदय होने पर सारा संसार देखता है। बात खुल जाने पर सबको ज्ञात हो ही जाती है।

**चांदनी मार गई**

घोड़े के लिए कहते हैं, जिसकी पीठ कमज़ोर हो।

**चांदनी में फस्त खुलवाना मना है**

नस छेदकर शरीर के दूषित रक्त को बाहर निकलवाने को फस्त खुलवाना कहते हैं। यह काम शुक्ल पक्ष में नहीं करवाया जाना चाहिए।

**चांदनी में शहद नहीं होता**

शुक्ल पक्ष में मधुमक्खियां मधु इकट्ठा नहीं करतीं। एक लोक-विश्वास।

**चांद ने खेत किया**

एक मुहा०,—चंद्रमा उदय हुआ।

**चांद पै खाक डालने से नहीं छिपता**

सज्जनों की सज्जनता को उनकी बुराई करने से कोई आंच नहीं आती।

**चांद में मैल नहीं!**

(१) चांद एक साफ़ चीज़ है।

(२) खोपड़ी साफ़ यानी गंजा है।

**चांदी का चश्मा लगाते है**

रिश्वत लेनेवाले के लिए क०।

**चांदी का जूता सिर पर**

किसी को रिश्वत देने पर क०।

(मराठी मे है—चांदीचा जोड़ा लोखंडास नरम करतो।)

**चाक को तदबीर के मुमकिन नहीं करता रफू।**
**सूजने तदबीर सारी उम्र गो सीती रहे।**

भाग्य के छेद को बंद करना संभव नही। तदबीर की सुई से तुम चाहे सारी उम्र उसे सीते रहो।

**चाक-चौबंद, टका नालबंद**

बढ़िया घोड़ा, और नाल बंधाई एक टका। गलत मितव्ययिता।

**चाकर के आगे कूकर, कूकर के आगे पेशखेमा**

जब नौकर से किसी काम के लिए कहा जाए, और वह उसे स्वयं न करके किसी दूसरे को उसे करने के लिए भेजता है, तब क०। काम को एक दूसरे पर टालना।

पेशख़ेमा=वह तंबू, जो पहले से आगे भेज दिया जाता है।

**चाकर को उज्र नहीं, कूकर को उज्र है**

कुत्ते को किसी काम के करने में उज्र हो सकता है, पर नौकर को नही होता।

(भावार्थ =नौकर की अपेक्षा कुत्ता अधिक स्वतंत्र होता है। नौकर जब नाराज़ हो, उसका दृष्टिकोण।)

**चाकर से कूकर भला, जो सोवे अपनी नींद**

नौकर से कुत्ता अच्छा होता है, जो अपनी नींद सोता है।

**चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर**

नौकरी करनी है तो मालिक का हुक्म मानो, हुक्म नहीं मानना है, तो नौकरी मत करो।

**चाकरी में आकरी क्या?**

नौकरी में हीला-बहाना क्या?

**चाकी फेरी, हुई चून की ढेरी, (ग्रा०)**

चक्की चलाई नही कि चून तैयार है। परिश्रम से ही काम होता है।

**चातुर का क़र्ज़ मन में निस्तार**

(१) कर्ज समझदार आदमी से ही लेना चाहिए। अथवा (२) समझदार आदमी को ही कर्ज़ देना चाहिए।

**चातुर का काम नहीं, पातुर से अटके।**
**चातुर का काम यही, लिया दिया सटके।**

समझदार आदमी वेश्या के फंदे में नही पड़ते। वेश्या का काम ही लोगों को मूर्ख बनाकर पैसा खीचना है।

**चातुर की चेरी भली, मूरख की नार से**

मूर्ख की स्त्री होने से चतुर की दासी होना अच्छा।

**चातुर को चौगुनी, मूरख को सौगुनी**

(१) चतुर को दूसरे की सम्पत्ति चौगुनी और मूर्ख को सौगुनी दिखाई देती है। (२) चतुर अगर अपनी बुद्धि को चौगुना समझता है, तो मूर्ख सौगुना।

**चातुर तो वैरी भला, मूरख भला न मीत।**
**साध कहै हैं, मत करो, कोइ मूरख से प्रीत।**

मूर्ख मित्र से चतुर दुश्मन अच्छा। मूर्ख से मित्रता नहीं करनी चाहिए।

**चातुर नार नरकूढ़ से, ब्याह होय पछताव।**
**जैसे रोगी नीम को, आंख मींच पी जाय।**

चतुर स्त्री मूर्ख के साथ ब्याह होने पर मन ही मन पछताती है, पर कुछ कह नहीं सकती। रोगी जैसे नीम के कड़ुए घूंट को चुपचाप पी जाता है, उसी तरह वह भी कष्ट सहन करती है।

**चापलूसी का मुंह काला**

चापलूसी अच्छी चीज़ नही।

**चाम का घर कुत्ता लिये जाता है**

(१) जहां मुफ़्त का खाने को मिलता है, वहां सब इकट्ठे होते है। अथवा (२) घर मज़बूत बनवाना चाहिए, जिससे शीघ्र नष्ट न हो जाए। (कुत्ते को चमड़ा विशेष प्रिय होता है।)

**चाम का चमोटा, कूकर रखवाल**

चमड़े की चीज़ की रखवाली के लिए यदि कुत्ते को छोड़ दिया जाए, तो वह तो उसे लेकर चम्पत हो जाएगा।

**चाम के चंडू चलल पहाड़, पीछल टंगड़ी टूटल कपार**

दुबले पतले आदमी ने पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश की, तो टाग पीछे हुए और सिर फट गया।

(सामर्थ्य से बाहर काम नहीं करना चाहिए।)

**चाम के दाम**

चमड़े के भाव अर्थात बहुत सस्ती चीज़।

(मुहम्मद तुग़लक ने सन् १३३० मे सोने-चांदी के अभाव में ताबे का सिक्का चलाया था। कहावत में उसी ओर सकेत है।)

**चार अफ़ीमी और तीन हुक्का**

लड़ाई की जड़। चार अफीमचियों का तीन हुक्कों में काम कैसे चल सकता है?

**चार गोड़वा बांधा जाए, दो गोड़वा न बांधा जाए**

चार पैर के पशु को कहीं भी बांध रखो, पर दो पैर के मनुष्य को नहीं बांधा जा सकता।

**चार घर चौ भैया, तेकरा बीच में भीखन भैया, (स्त्रि०)**

चार घरों में चार भाई रहते हैं और उनके बीच

में रहते हैं मीखन भाई। जब कोई विरोधियों के बीच में अकेली पड़ जाए, तब क०।

**चार चोर चौरासी बनिया, एक-एक करके लूटा**

चार चोरों ने चौरासी बनियों को एक-एक करके लूट लिया।

(कथा है कि चौरासी बनिए कहीं जा रहे थे। चार चोरों ने उन्हें देख लिया। उन्होंने जब एक बनिए को लूटा, तो बाकी उसकी मदद न करके खड़े तमाशा देखते रहे। तब चोरों ने एक-एक करके उन सब की लुंजिया-पुंजिया छीन ली। शिक्षा यह कि एका न होने से हानि उठानी पड़ती है।)

**चार जात गावें हरबोंग, अहीर, डफाली, धोबी, डोम**

ये चार जातियां बेतुका गाती हैं—अहीर, डफाली, धोबी और डोम।

**चार दिन का रंगचंग, छोड़ डाढ़ीजरवा मोरा संग, (स्त्रि०)**

मुझे चार दिन का यह रंगचंग नही चाहिए, दाढ़ीजले, मेरा साथ छोड़!

अपने दुष्ट पति से किसी स्त्री का कथन।

**चार दिन की आइयां, और सोंठ बिसाहन जाइयां**

अभी चार दिन आए नहीं हुए, और सोठ खरीदने जा रही हैं!

जब कोई नई विवाहिता प्रौढ़ की तरह बात करे, तब क०।

(सोंठ की आवश्यकता बच्चा होने पर ही पड़ती है।)

**चार दिन की चमक चौदस**

चार दिन की चांदनी। थोड़े दिनों का राग-रंग।

**चार दिन की चमर जोतिस**

फैलन ने इसका यह अर्थ दिया है कि 'चार दिन पहले चमार था, वह अब ज्योतिषी बन गया।' किन्तु यह कहावत बुंदेलखंड में भी प्रचलित है और उसका यह अर्थ लगाया जाता है कि कोई चमार यदि ज्योतिषी बन जाए, तो उसका वह ज्योतिष-ज्ञान दो-चार दिन ही चल सकता है। इस प्रकार ऊंची जाति के लोगों ने ज्ञान पर अपना एकाधिकार जताया, जब कि ज्ञान सब के लिए है, यदि वह ज्ञान है तो।



**चार दिना की चांदनी, फेर अंधेरा पाख**

वैभव स्थायी नहीं रहता।

**चार पांव का घोड़ा चौंकता है, दो पांव का आदमी क्या बला है?**

मनुष्य से सब डरते हैं।

**चार पाए बरो किताबे चंद, (फा०)**

पशु के ऊपर किताबें लदी हुई। पढ़े-लिखे मूर्ख के लिए क०।

(यह 'गुलिस्तां' के वाक्य से है।)

**चार बेद और पांचवां लबेद**

डंडे के सामने सब हार मानते हैं।

बहुत अफलातूनी छांटनेवाले से क०।

लबेद = लबोदा, छड़ी।

**चार महीने हाल का, चार महीने ताल का, चार महीने पाल का**

वर्षा ऋतु में ताज़ा, जाड़े में तालाब का और गर्मियों में घड़े में रखा पानी पीना चाहिए।

**चार साल बुरा हवाल**

घोड़े के लिए कहा गया है कि उसके शुरू के चार साल अच्छे नहीं होते।

**चार हाथ पांव सबके हैं**

सब में कुछ न कुछ करने का बूता है।

**चारू सो भारू**

जो बहुत खाते है, वे अधिक बोझ भी ढो सकते हैं। बैल के लिए कहा गया है। कहा० का यह अर्थ भी हो सकता है कि जो बहुत खाता है, वह भार-स्वरूप बन जाता है।

**चारों रास्ते मुंह खुले**

जो करना हो करो, सब रास्ते खुले हैं।

**चालीस बरस का रेजा**

जब कोई अपनी बहुत कम उम्र बताए।

रेजा = लड़का।

**चालीस सेरा ऊत**

पूरा मूर्ख।

**चालीस सेरी बातें कहते हैं**

पक्की या नपी तुली बात क०।

**चाव घटे नित के घर जाए।**
**भाव घटे कुछ मुख के मांगे।**
**रोग घटे कुछ औखद खाए।**
**ज्ञान घटे कुसंगत पाए।**
नित्य किसी के घर जाने से प्रेम कम होता है, मुह से कुछ मांगने से इज्ज़त कम होती है, दवा खाने से रोग कम होता है और कुसंगत मे बैठने से ज्ञान में कमी आती है।

**चावल पचे टावल**
चावल शीघ्र हज़म होता है।

**चाह करूं, प्यार करूं, चूतड़ तले अंगार करूं, जल जाए तो मैं क्या करूं, (स्त्रि०)**
दिखावटी प्रेम जताने पर क०।

**चाह करे ताकी चाकरी कीजे।**
**ना करे ताका नाम न लीजे।**
जो तुमसे प्रेम करे, उसकी नौकरी भी कर लो; जो प्रेम न करे, उसका नाम भी न लो।

**चाह चमारी चूहड़ी, सब नीचन की नीच**
चाह रूपी चमारी और मंगिन सब नीचों में नीच है। लोभ बुरी चीज़ है।

**चाहत की चाकरी कीजे।**
**अनचाहत का नाम न लीजे**
दे०—चाह करे...।

**चाहने के नाम गधी ने भी खेत खाना छोड़ दिया था**
प्रेम ऐसी चीज़ है कि एक बार गधी ने भी उसके चक्कर में पड़कर खाना-पीना छोड़ दिया था।

**चाहले की भैंस**
ऐसे मनुष्य की स्त्री, जो उसे खूब लाड़-प्यार से रखता हो। मोटी-ताजी औरत के लिए क०।

**चाहे कोदों दला ले, चाहे मंड़ुवा पिसा ले, (स्त्रि०)**
तू जो कहेगा, वही करूंगी। अथवा एक काम कुछ भी करा ले।
कोदों और मंडुवा हल्की किस्म के अनाज होते हैं।

**चिंडाल न छोड़े मक्खे, न छोड़े बाल, (हिं०)**
ऐसे मनुष्य के लिए क०, जो सब तरह की चीज़ें खा ले।
चिंडाल = चंडाल।

**चिंता ज्वाल सरीर, बन, दाह लगे न बुझाय।**
**प्रकट धुआं न देखिए, अंदर ही धुंधुआय।**
स्पष्ट।

**चिकनया फ़कीर, मखमल का लंगोट, (स्त्रि०)**
जब कोई साधारण मनुष्य हैसियत से बाहर शौक़ करे।

**चिकना घड़ा, बूंद पड़ी और ढल गई**
निर्लज्ज के लिए क०।

**चिकना घड़ा हो गया है**
बेशर्म बन गया है।

**चिकना देख फिसल पड़े, (स्त्रि०)**
(१) किसी के रूप-यौवन पर मुग्ध हो जाने पर क०।
(२) पैसे के लालच में आ जाने के लिए भी कह सकते है।

**चिकनी-चुपड़ी बातों से पेट नहीं भरता**
कोरी बातों से काम नहीं चलता।

**चिकनी बातें जिन पतयाओ**
मीठी बातों में मत आओ।

**चिकने घड़े पर पानी**
निर्लज्ज के लिए क०, जिस पर कोई बात असर नही करती।

**चिकने गलवा मलवा के, (ग्रा०)**
माल-टाल खानेवाले के चिकने गाल होते है।

**चिकने गाल तिलनियां के और जरे-बुरे भुरजिनिया के, (स्त्रि०)**
तेली की स्त्री तेल का काम करती है, इसलिए उसके गाल चिकने रहते है, और भड़भूजिन चूंकि भाड़ झोकती है, इसलिए उसके गाल काले-कलूटे रहते है।
(आदमी की चाल-ढाल पर उसके व्यवसाय का असर पड़ता है।)

**चिकने मुंह को सब ताकते हैं**
बड़े आदमी की सब खुशामद करते हैं।

**चिट्ठी न परवाना, मार लाये मुल्क बेगाना**
जब कोई बिना कहे-सुने किसी की चीज़ हथिया ले, तब क०।
बेगाना = पराया।

**चिड़ा मरन, गंवार हांसी**
एक का नुकसान, और दूसरा हँसता है।
चिड़ा=चिड़िया, नरपक्षी।

**चिड़िया अपनी जान से गई, खानेवाले को स्वाद न आया**
परिश्रम से किए गए काम की जब सराहना न की जाए, तब क०।

**चिड़िया अपनी जान से गई, लड़का खुश न हुआ, (स्त्रि०)**
दे० ऊ०।

**चिड़िया और दूध**
असंभव व्यापार। चिड़िया के दूध नहीं होता।

**चिड़िया करे खोंचा, चिड़ा करे नोंचा**
चिड़िया तो एक-एक तिनका लाकर घोंसला बनाती है और चिड़ा नोंच-नोंच कर फेंकता है।
(जब घर का एक आदमी तो परिश्रमपूर्वक संचय करे और दूसरा बेरहमी से खर्च करे।)

**चिड़िया की चोंच में चौथाई हिस्सा**
कमजोर या सीधेसादे को थोड़ा हिस्सा ही मिलता है।

**चिड़िया की जान गई, लड़के का खिलौना**
किसी के दुख की परवाह न करके जब कोई उल्टा उस पर हँसे।

**चिड़िया को शाहीन से क्या काम ?**
स्पष्ट।
शाहीन=एक प्रकार का बाज पक्षी।

**चिड़ीमार टोला, भांत-भांत का पंछी बोला**
जहां किसी मजमे में हर आदमी अपनी अलग राय दे रहा हो, वहां क०।
(आगरे में चिड़ीमार टोला नाम का एक बाजार है, जहां शाम को सब तरह के आदमी दिखाई देते हैं, और बहुत शोरगुल और बकझक रहती है।)

**चिड़ीमार हमेशा भूखे नंगे रहते हैं**
स्पष्ट।

**चित भी मेरी, पट भी मेरी**
हर तरह से अपना ही लाभ चाहना।

**चिराग गुल, पगड़ी गायब**
जहां ऐसे बदमाश इकट्ठे हुए हों कि थोड़ी-सी भी असावधानी से भले आदमियों को हानि पहुंचने का डर हो। कुव्यवस्था के लिए भी क०।

**चिराग जला, दांव गला**
चोरों के लिए क०। चिराग जलने से उनका दांव नहीं लगता।

**चिराग तले अंधेरा**
जहां विशेष न्याय, सुरक्षा अथवा विचार की आशा हो, वहां ही जब कोई अनहोनी बात हो जाए, तब क०।
जैसे—पुलिस चौकी के पास ही चोरी हो जाना या पढ़े-लिखे से कोई ऐसी भूल हो जाना, धार्मिक स्थान में दुराचार, जो नहीं होना चाहिए।

**चिराग में बत्ती और आंख पै पट्टी, (स्त्रि०)**
जो शाम से ही सोने की तैयारी करे, उसके लिए क०।

**चिराग रोशन मुराद हासिल, (मु०)**
(१) पीरों की दरगाह में दीए जलाकर रखो और अपनी मनोकामना पूरी करो।
(२) नक्शबंदी नाम के फकीरों की टेर, जो हाथ में दीपक लेकर भीख मांगा करते हैं। उनकी इस टेर का मतलब होता है कि हमारा दीपक जल गया। हमें भीख देकर अपनी मुराद पूरी करो।
(३) रात में दीपक जलने के बाद ही चोर-उचक्कों की मुराद पूरी होती है, तब वे चोरी कर सकते हैं। कहावत का यह मतलब भी हो सकता है।

**चिल्लड़, चमोकन, चिथड़ा, ये तीनों विपत का बखेड़ा**
जुएं, मार खाना और चिथड़े, ये तीनों गरीब के हिस्से में पड़ते हैं।

**चिल्लड़ चुनने से भगवा हलका होवे, (स्त्रि०)**
कोरे दिखावटी प्रयास से कहीं सिद्धि मिलती है।
(कहावत का मतलब यह है कि कोई साधु अगर चाहे कि कपड़ों को चीलरों से मुक्त रखने से ही उसके पापों का बोझ हलका होगा, तो यह संभव नहीं।)
भगवा=साधुओं के गेरुए वस्त्रों को कहते हैं।

**चिल्लड़ मारे, कुत्ता खाए**
जुएं को मार कर अलग करना और कुत्ता खा जाना। छोटी-सी चीज़ के विषय में अपने को पाक-साफ़ बताकर बड़ी चीज़ हड़प जाना।

**चिह निस्बत ख़ाक रा ब आलमें पाक, (फ़ा०)**
पृथ्वी और आकाश में क्या सम्बन्ध?

**चींटी का बिल नहीं मिलता, कहां छिपूं**
कहीं गुजारा नहीं।

**चींटी की आवाज़ अर्श पर**
निर्बल की भगवान सुनता है।
अर्श = आसमान, स्वर्ग।

**चींटी की जो मौत आनी होती है, तो पर निकलते हैं**
जब कोई छोटा आदमी बहुत इतराकर चलने लगता है, तब क०।

**चींटी के घर नित मातम**
चींटियां नित्य मरती हैं। साधारण आदमी को कोई न कोई कष्ट लगा ही रहता है।

**चींटी के पर निकले और मौत आई**
दे०—चींटी की जो मौत. . . ।

**चींटी को मौत ही की बला बस है**
ग़रीब के लिए थोड़ा-सा कष्ट भी बहुत होता है।

**चींटी दल**
बड़ी भीड़।

**चींटी चाहे सागर थाह**
सामर्थ्य से बाहर काम करने का धृष्ट प्रयास करना।

**चींटी ससरने को जगह नहीं**
बहुत संकीर्ण जगह।
ससरना = निकलना, रेंगना।

**चीज़ न राखे आपनी, चोरों गाली देय, (स्त्रि०)**
किसी विषय में स्वयं सावधान न रहकर दूसरों को दोष देना।

**चीड़फाड़ के अंग्रेज़ डाक्टर उस्ताद हैं**
स्पष्ट।

**चीरा है जिसने वही नीरेगा, (हिं०)**
जिसने मुंह दिया है, वही भोजन भी देगा।
नीरेगा = नीर यानी पानी देगा।

**चीरे चार, बघारे पांच**
किसी सास का अपनी बहू के सम्बन्ध में कहना कि यह तरकारी के चार टुकड़े काटकर पांच बघारती है। (व्यंग्य में ऐसे आदमी के लिए कहते हैं, जो बात अधिक करे, पर काम करे थोड़ा।)

**चील का मूत**
ऐसी वस्तु जो मिल न सके।

**चील के घर में पारस होता है**
चील के घर में सोना मिलता है।
(चील अक्सर सोने के गहने उठा ले जाती है। लोगों का विश्वास है कि वह ऐसा इसलिए करती है कि जब तक सोना नज़दीक न हो, तब तक उसके बच्चे आंखें नहीं खोलते।)

**चील के घर मांस कहां?**
चील के घोंसले में मांस नहीं होता, क्योंकि वह जो कुछ लाती है, सब खा लेती है।
जब कोई किसी के पास से ऐसी वस्तु पाने की आशा करे, जो उसके पास कभी रहती ही न हो; तब क०।

**चील के घर में मांस की धरोहर**
एक मूर्खतापूर्ण कार्य। चील के घर में मांस होने से वह तुरंत खा जाएगी।

**चील बैठे तो एक खड़ ले ही उड़े**
चील जहां बैठती है वहां से एक तिनका ले ही कर उड़ती है। कार्यशीलता का उदाहरण।

**चील-सा मंडराया और कबूतर-सा बींदता फिरता है**
हमेशा इस ताक में रहता है कि जो मिले, वही उठा ले।
बींदना = फुदकना।

**चुंगल भर आटा साईं का, बेटा जीवे माई का**
भीख मांगनेवाले फ़कीरों की टेर।

**चुगलख़ोर ख़ुदा का चोर, (मु०)**
चुगलखोर ईश्वर का शत्रु होता है। मतलब—बुरा आदमी होता है।

**चुगला बैठा नीम पै, दे साले के तीन सै**
स्पष्ट।
बच्चों की तुकबंदी।

**चुटके का खैये, उकटे का न खैये**
ग़रीब आदमी के यहां भले ही खा ले, पर ऐसे के यहां न खाए, जो खिला कर एहसान जताए।
चुटका=चुटकी मांग कर पेट भरनेवाला, ग़रीब।
उकटा=एहसान जतानेवाला।

**चुटिया को तेल नहीं, पकौड़ों को जी चाहे, (स्त्रि०)**
साधारण चीज़ के लिए पैसा नहीं, मंहगी के लिए मचलना।

**चुड़ैल पर दिल आ गया तो फिर परी क्या चीज़ है**
प्रेमी रूप-कुरूप नहीं देखता। प्रेम अन्धा है।

**चुड़ैल पर दिल आ जाए, तो वह भी परी है**
कुरूप से कुरूप स्त्री से भी अगर प्रेम हो जाए, तो वह भी फिर सुदर लगती है।

**चुनिए, चुविए, पोसलौं धिया।**
**आइल दमदा, ले गैल धिया।**
· मां का बेटी के सम्बन्ध मे कहना कि मैंने उसे खिला-पिलाकर बड़ा किया, और दामाद आकर ले गया।

**चुप आधी मर्ज़ी**
दे०—अल खामोशी नीम रजा।
(सं०—मौनं सम्मति लक्षणम्।)

**चुप की दाद खुदा देगा**
चुपचाप कष्ट सहन कर लेनेवाले की सहायता ईश्वर करता है।

**चुपड़ी और दो-दो**
बढ़िया माल और बहुत-सा।
प्रायः ऐसे मनुष्य के संबंध में कहते हैं, जिसे अच्छे अधिकार प्राप्त हों और वेतन भी ऊंचा मिलता है।

**चुरावे नथवाली, नाम लगे चिरकुटवाली का, (स्त्रि०)**
बड़े के अपराध के लिए छोटा पकड़ा जाए।
चिरकुट=चीथड़ा।

**चुल्लू-चुल्लू साधेगा तो दुआरे हाथी बांधेगा**
जो थोड़ा-थोड़ा संचय करेगा, वह दरवाजे पर हाथी बांध सकता है।
(भंगेड़ी भी इसे कहा करते हैं।)

**चुल्लू पानी, तंग जिंदगानी**
आर्थिक कष्ट में रहनेवाले का कहना।

**चुल्लू-उल्लू, लोटे में गड़गप्प**
भंगेड़ियों का कहना।

**चूका और गया**
जो चूकता है, वह हानि उठाता है।

**चूका और मरा**
दे० ऊ०।
(बंदर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग मारते समय यदि चूक जाए, तो वह नीचे गिर कर मर जाता है। उसी से आशय है।)

**चूचियों में हाड़ टटोलना**
जो वस्तु जहां है ही नहीं, वहां उसे तलाश करना।

**चूतड़ से कान गांठते हैं**
(१) जो आदमी दरवाजे से कान लगाकर दूसरे की बात सुने, उसके लिए क०।
(२) किसी बात के सिर-पैर कोएक करने को भी क०।

**चूतड़ों से सुपारी फोड़ना**
सुख-चैन में दिन काटना।

**चूतिया मर गए, औलाद छोड़ गए**
यानी आप जैसा मूर्ख हमने नहीं देखा।
जब कोई किसी को मूर्ख बनाना चाहे, तब उसकी ओर से भी क०।

**चूतियों ने गांव मारा है?**
मूर्खों ने भी कभी कोई काम किया है?

**चून खाए मुसंड होवे, तला खाए रोगी**
रोटी खाने से आदमी तगड़ा होता है और तली हुई चीजें खाने से रोगी।

**चूना और चमार, कूटे पर ठीक रहता है**
स्पष्ट।
(चूने को पानी मिलाकर जितना कूटा जाता है, उतना ही उसमें लस आता और वह मजबूत बनता है।)

**चूना, चूची, दही, ये बंगाला नहीं**
बंगाल का चूना और दही अच्छा नहीं होता। वहां की स्त्रियों के स्तन भी छोटे होते हैं।

**चूनी कहे 'मुझे घी से खा'**
(१) चूनी कहती है कि घी के साथ खाने से ही मैं

स्वादिष्ट बन सकती हूं।

साधारण अन्न को भी अच्छा बनाकर खाने में पैसा खर्च होता है।

(२) चूनी जैसे साधारण अन्न का यह दंभ कि वह चाहता है कि उसे घी के साथ खाया जाए। यह अर्थ भी होता है।

चूनी=मटर का आटा।

**चूमचाट के खा लिया**

(१) चटोरपन में पैसा साफ कर देना।

(२) किसी को बिल्कुल बर्बाद कर देना।

**चूमा झाड़ खाओ, लड्डू न तोड़ो**

ब्याज या मुनाफा खा लो, पूंजी बर्बाद न करो।

**चूल्हा छोड़ भंसार में जाओ**

हमें कोई मतलब नहीं; तुम चाहे जो करो।

भंसार मनसार, भाड़।

**चूल्हा झोंके चांवर हाथ**

चूल्हा झोंक रहे है और पंखा हाथ मे लिय हुए है, गर्मी से बचने के लिए। काम में नजाकत दिखाना।

**चूल्हे आग न घड़े पानी, ऊपर ही ऊपर जा गंवानी, (स्त्रि०)**

एक स्त्री का दूसरी को कोसना कि तेरे चूल्हे में न तो आग रहे, न घड़े मे पानी, और तू ऊपर ही ऊपर जहन्नुम में जा।

**चूल्हे का राव लाव ही लाव पुकारे, (स्त्रि०)**

चूल्हे का देवता हमेशा लाओ, लाओ, और लकड़ी लाओ ही पुकारता रहता है।

पेट अथवा पेटू के लिए क०।

**चूल्हे की न चक्की की, (स्त्रि०)**

ऐसी औरत जो गृहस्थी का कोई काम न जानती हो।

**चूल्हे चक्की, सब ही काम पक्की, (स्त्रि०)**

चतुर गृहिणी के लिए क०।

**चूल्हे पीछे सोवें और टेहरी को टोयवें, (स्त्रि०)**

चूल्हे के पीछे सोते हैं और मटकी टटोलते रहते हैं। आर्थिक कष्ट भोगनेवाले के लिए क०।

**चूहा बजावे अपनी और जात बतावे अपनी**

काम से आदमी की जात परख ली जाती है।

**चूहा बिल में समाता न था, कानों बांधा छाज, (स्त्रि०)**

जब कोई स्वयं अपनी देख-भाल न कर पाए, ऊपर से कोई झंझट मोल ले ले, तब उसके लिए क०।

**चूहा बिल्ली का शिकार है**

स्पष्ट।

**चूहे का बच्चा बिल ही खोदेगा**

सहजात स्वभाव नही छूटता।

**चूहे का बिल ढूंढ़ना**

शर्म से कहीं छिपने की कोशिश करना।

**चूहे हाथ लगी हल्दी की गिरह, पंसारी ही बन बैठा (स्त्रि०)**

चूहे को एक हल्दी की गांठ मिल गई, उसे लेकर वह अपने को पंसारी समझ बैठा।

जब कोई थोड़े-से पैसे से अपने को धनी अथवा थोड़ी-सी विद्या से अपने को विद्वान समझ ले, तब क०।

**चेना जी का लेना, चौदह पानी देना, ब्यार चले तो लेना न देना, (कृ०)**

चेना की खेती के संबंध में कहा गया है कि वह एक मुसीबत की चीज़ है। बहुत पानी देना पड़ता है और अगर गरम हवा चल जाए तो मामला साफ है। (चेना एक हलकी किस्म का अनाज है। वनस्पतिशास्त्र मे उसे Panicum miliaceum कहते हैं।)

**चेने के बंस में सपूत भये माड़हा, (पू०)**

जब किसी निकम्मे घर मे थोड़ा-बहुत होशियार लड़का पैदा हो जाता है, तब व्यंग्य में क०।

(माड़हा या माढ़ा चेने की तरह ही एक हल्की किस्म का अन्न होता है।)

**चेरी सबके पांव धोवे, अपने धोती लजावे**

अपने हाथ से अपना काम करने में लोगों को शर्म आती है, फिर वे उसी प्रकार का दूसरों का काम भले ही करें।

**चेले चीनी हो गए, गुरु गुड़ ही रहे**

दे०—गुरु गुड़ ही रहे . . .।

**चेले लावें मांगकर, बैठा खाए महंत।**
**राम भजन का नाम है, पेट भरन का पंथ।**
महंतो और साधुओ के सम्बन्ध मे लोकज्ञान का निचोड़।

**चोट लगी पहाड़ की, और तोड़ें घर की सिल,** (स्त्रि०)
जब कोई बाहर का गुस्सा घर मे उतारता है।

**चोट्टी कुतिया, जलेबियों की रखवाली**
भक्षक का ही रक्षक होना।

**चोर और मोट, कसके बांधे के चाहे,** (पू०)
चोर और गठरी को मजबूती से बाधना चाहिए।

**चोर और सांप की बड़ी धाक होती है**
उनसे सब डरते है।

**चोर और सांप दबे पे चोट करता है**
चोर और साप को जब निकलने का रास्ता नही मिलता, तो वे चोट करते है।

**चोर का कोई हिमायती नहीं**
चोर का कोई साथ नही देता।

**चोर का जी कितना?**
चोर डरपोक होता है।

**चोर का भाई गठकटा**
जो जैसा होता है, उसके यार-दोस्त भी वैसे ही होते है।

**चोर का भाई गठ्ठीचोर**
दे० ऊ०।
गठ्ठीचोर=अमानत मे खयानत करनेवाला, विश्वासघाती।

**चोर का मन बकचे में**
चोर की नजर गठरी पर ही रहती है।

**चोर का माल सब कोई खाए।**
**चोर की जान अकारथ जाए।**
चोर का माल दूसरे उडाते है, और चोर बेचारा मुफ्त मे फसता है।

**चोर का मुंह चांद-सा**
क्योकि (१) चेहरे से वह अपने को निर्दोष साबित करता है।
(२) उसके चेहरे पर चाद की तरह स्याही पुती रहती है, जिससे उसका चोर होना साबित हो जाता है।

**चोर का शाहिद चिराग़**
चोर की गवाही चिराग ही दे सकता है, और चोर रोशनी मे चोरी नही करता।

**चोर का सिर नीचा**
चोर किसी के सामने आख उठाकर नही देख सकता।

**चोर का हाल, सो मेरा हाल**
अपनी सफाई मे कहते है कि यदि मैंने कोई ग़लती की हो तो मुझे वही दड दिया जाए, जो चोर को दिया जाता है।

**चोर की और सांप की धाक बड़ी होती है**
दे०—चोर और साप की ...।

**चोर की ज़मानत नहीं होती**
चोर की कोई जमानत नही करता। कोई उसका हिमायती नही होता।

**चोर की जोरू कोने में सिर देकर रोती है**
चुपचाप रोती है। खुलकर कैसे रो सकती है? लोग यदि रोने का कारण पूछे, तो क्या बताएगी?

**चोर की दाढ़ी में तिनका**
किसी भी तरह के इशारे को अपने ऊपर समझकर जब कोई व्यक्ति तिनक उठता है।
(इसकी कथा है कि एक काजी किसी चोरी के मामले पर विचार कर रहा था। जिन मनुष्यो पर भी सदेह था वे सब उसके सामने खडे थे। जब असली अपराधी के सबध मे वह कुछ निर्णय नही कर सका, तो उसने कहा—'चोर वह है जिसकी दाढी मे तिनका लगा है।' उसके ऐसा कहने पर सब ज्यो के त्यो खडे रहे, पर जो चोर था वह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरकर देखने लगा कि कही मेरी ही दाढी मे तो तिनका नही है। यह देख काजी ने उसे ही चोर ठहराया और उसके पास से चोरी का माल भी बरामद हुआ।)

**चोर की नजर गठरी पर**
चोर हमेशा चोरी की ताक में रहता है।

**चोर की मां कोठी में सिर देकर रोती है**

दे०—चोर की जोरू...।

**चोर के ख्वाब में बकचे**

चोर सपने में भी चुराने के लिए गठरियां देखता है।

**चोर के घर में छिछोर**

चोर के घर से भी कोई चोरी कर ले, तब क०।

**चोर के घर मोर**

जब चालाक के साथ भी कोई चालाकी करे, तब क०। (कथा है कि एक चोर कहीं से सोने का हार चुराकर लाया, जिसे एक मोर ने निगल लिया। चोर बेचारा पछताता रह गया।)

**चोर के पेट में गाय, आप ही आप रंभाय**

आदमी का अपराध उसकी बातों से ही प्रकट हो जाता है।

**चोर के पैर नहीं होते**

चोर कभी खड़ा नहीं रहता, तुरन्त भाग जाता है। 'चोर के पैर कितने' भी क०।

**चोर के मन में चोरी बसे**

जिसकी जो आदत होती है, वह छूटती नहीं।

**चोर के हाथ में दीया**

उसके लिए सहायक भी हो सकता है और उसे पकड़वा भी सकता है।

दिया=दीपक।

**चोर को अंगारी मीठ, (भो०)**

अपनी निर्दोषिता सिद्ध करने के लिए चोर जलता अंगारा भी जीभ पर रख लेता है।

(अपने बुरे काम को भी वह भला समझता है। प्राचीन काल मे यह निर्णय करने के लिए कि किसी व्यक्ति ने कोई अपराध किया है या नहीं, उसकी जीभ या हाथ पर जलता अंगारा रखने की प्रथा प्रचलित थी। इसे दिव्य परीक्षा कहते थे। कहावत उसी पर आधारित है।)

**चोर को चोर ही पहचाने**

जैसे को तैसा ही पहचान सकता है।

**चोर को चोर ही सूझे**

जो जैसा होता है, वह दूसरे को भी वैसा ही समझता है।

**चोर को चोरी ही सूझे**

बुरे को बुरा काम ही सूझता है।

**चोर को चौकीदार करना**

निरी मूर्खता है। वह तो सब चुरा ले जाएगा।

**चोर को पकड़िए गांठ से, छिनाल को पकड़िए खाट से**

नहीं तो अपराध प्रमाणित करना मुश्किल होता है।

गांठ से=मालसहित।

खाट से=पलंग पर।

**चोर को पनहई दूर ही से सूझे है, (पू०)**

चोर को जूता दूर से नजर आ जाता है।

(हमेशा उसे मार खाने का भय बना रहता है।)

**चोर गठरी ले गया, बेगारियों को छुट्टी हुई**

जब बेमन से कोई काम किया जा रहा हो, और कारण-वश उससे छुटकारा मिल जाय, तब क०।

**चोर चकार चूके, लेकिन चुगल न चूके**

चोर या उठाईगीरा भले ही चूक जाए, लेकिन चुगल नहीं चूकता। वह चुगली करके ही रहता है।

**चोर चुरावे गर्दन हिलावे**

चोर चोरी करके इन्कार करता है।

**चोर-चोर मौसेरे भाई**

समान व्यवसाय या स्वभाववाले व्यक्ति आपस में शीघ्र मिल जाते है। जब एक के बुरे काम का दूसरा समर्थन करे।

**चोर चोरी कर गया, मूसलों ढोल बजा**

चोर खुले आम चोरी कर ले गया। कुप्रबंध की हद।

**चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया, (स्त्रि०)**

बुरी आदतों को कितना ही दबाया जाए, पर वे रह-रह कर प्रकट हो उठती है।

हेराफेरी=चीजों को इधर से उधर करना।

(कथा है कि एक चोर अपने पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए साधु हो गया। पर उसकी पुरानी आदत ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। रात में अपने सब साथियों के सो जाने पर चोरी करने की प्रबल इच्छा उसके मन मे जाग्रत हो उठती। तब वह अपने एक साथी के सिर के नीचे की गठरी निकाल कर दूसरे

के सिर के नीचे और दूसरे की पहले के नीचे रख देता। इस प्रकार चोरी करने की अपनी हवस को मिटा लेता, साथ ही चोरी के दुष्कर्म से भी बचा रहता।

**चोर जाते रहे कि अंधियारी**

दे०—अंधियारी गई कि चोर. . .।

**चोर न जाने चोर की सार**

चोर ही चोर के तौर-तरीके जानता है।

**चोर न जाने मंगनी के बासन ?**

चोर को तो चुराने से काम, उसे इससे क्या मतलब कि वे तुम्हारे अपने हैं या दूसरे के।

**चोर, जुआरी, गठकटा, जार और नार छिनार।**
**सौ सौगंधें खाएं जो, भूल न कर इतबार।**

स्पष्ट।

जार=पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला पुरुष।

इतबार=विश्वास।

**चोर, ढोर, दोनों हाज़िर है**

माल समेत चोर पकडा गया।

**चोर लाठी दो जने, हम बाप-पूत अकेले**

चोर ने लाठी लेकर बाप-बेटे पर हमला कर दिया और जो कुछ उनके पास था छीन लिया।

तब लडके ने बात बनाई कि हम करने क्या, चोर और लाठी दो जने थे और हम बाप-बेटे अकेले थे !

जब कोई अपनी कमज़ोरी छिपाने के लिए अनर्गल बात कहे, तब क०।

**चोर ले न साधु पूछे**

चोर को चोरी से काम। फिर चाहे चीज़ किसी साधु की हो अथवा किसी और की।

**चोर ले न साह छुए**

अचल सम्पत्ति के लिए क०, जिसे न चोर चुरा सकता है और न साहूकार ही ले सकता है। सुरक्षित चीज़।

**चोरवा के मन बसे ककड़ी का खेत**

चोर हमेशा चोरी की ताक में रहता है।

**चोर सब घर ले भरे**

पकड़े जाने पर वह अपने सब साथियो के नाम बता देता है, यहां तक कि निरपराधियों को भी फंसा देता है।

**चोर से कहे 'तू चोरी कर' और साह से कहे 'तू जागता रहियो'**

ऐसे व्यक्ति के लिए क०, जो लड़ाई मे स्वय अलग रहकर दोनों पक्षों को उकसाता रहता है।

**चोर हथेली पै जान लिये फिरता है**

मरने से नहीं डरता।

**चोर और चोरी कभी बंद नही होनी**

दुनिया बनी तब से चली आई है।

**चोरी और मुंहजोरी**

कसूर भी करे और जवाब दे।

**चोरी और सरहंगी**

तुम चोर हो या सिपाही, जो उल्टा हमे डाटते हो ?

**चोरी और सिरज़ोरी**

एक तो कसूर करे और ऊपर से रोब दिखाए।

**चोरी और सीनाज़ोरी**

दे० ऊ०।

**चोरी करके साहू बनते हो**

स्पष्ट।

**चोरी का गुड़ मीठा**

मनुष्य-प्रकृति है कि उसे बाहर की अथवा मुफ्त की चीज़ अच्छी लगती है।

प्रायः पराई स्त्री से सम्बन्ध रखनेवाले से क०।

**चोरी बे-थांग नही होती**

भेद बिना चोरी नहीं होती।

**चोरी बेसुराग नहीं निकलती**

बिना सुराग के चोरी का पता नहीं चलता।

**चोली-दामन का साथ है**

घनिष्ठ संबंध के लिए क०।

**चौकी गांववालों को लूट खाती है**

पुलिस के कर्मचारियों पर व्यंग्य।

(चौकी से मतलब पुलिस की चौकी या थाने से है।)

**चौदह विद्यानिधान**

सब विद्याओं में निपुण। प्रायः व्यंग्य मे कहते हैं।

**चौदहवीं रात के चांद को गहन लगा**

पूर्ण चंद्र को ग्रहण लगा। जब किसी का ऐसा अनिष्ट हो जाए, जो होना नही चाहिए था; तब क०।

**चौबे गए छब्बे होने, दुबे ही रह गए**
लाभ की आशा से कोई काम किया जाए और उसमें उल्टी हानि हो जाए, तब क०।

**चौबे मरें तो बंदर हों, बंदर मरें तो चौबे हों**
मथुरा के चौबों पर व्यंग्य में क०। वहां चौबे और बंदर दोनों ही बहुत है।

**छः चावल और नौ पखाल पानी**
साधारण काम के लिए बहुत आडंबर।
पखाल - मशक ।

**छः महीने मिमयानी, तो एक बच्चा बियानी (ग्रा०)**
शोरगुल बहुत, पर काम थोडा।

**छछूंदर के सिर में चमेली का तेल !**
जब कोई बहुत क्षुद्र व्यक्ति बढ़-चढ कर बातें करे। (अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल। छछूंदर के सिर में चमेली का तेल।)

**छछूंदर छोड़ना**
ऐसा काम करना, जिससे दो आदमियो में झगड़ा हो।

**छज्जू गेले छः जना, छज्जू एले नौ जना, (भो०)**
छज्जू छ. आदमियों के साथ गए और नौ के साथ लौटे।
(१) व्यर्थ अपने मित्रो की सख्या बढाने पर क०।
(२) किसी काम में मुनाफे के साथ लौटने के लिए भी कह सकते है।

**छज्जे की बैठक बुरी, परछावन की छांह।**
**दोरे का रसिया बुरा, नित उठ पकरे बांह।**
छज्जे का बैठना, पराए घर की छांह, और पड़ौस का रसिया बुरा होता है; वह हमेशा तंग करता है।

**छटी का खाया-पिया सब निकल गया**
बुरी तरह असफल हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।
छट्ठी (छठी) जन्म के छठे दिन का संस्कार।

**छटी का दूध याद आ गया**
बहुत परेशान हुए। अक्ल ठिकाने आ गई।

**छटी के पोतड़े अब तक नहीं धुले**
अभी तक बच्चे ही हैं।
पोतड़े=मल-मूत्र के कपड़े।

**छटी के राजा**
छठी के दिन ही राजा बन गए। व्यंग्य में क०। (राजतिलक तो बड़े होने पर ही होता है।)

**छट्टी न चिल्ला, हराम का पिल्ला**
तेरी न छठी हुई है और न चालीसा, तू हराम का बच्चा है। गाली।
चालीसा =मुसलमानों में जन्म के चालीसवें दिन का संस्कार।

**छतरपती, घटे पाप बढ़े रती, (हिं०)**
बच्चों के छींकने पर क०।
रती शोभा, यश।

**छत्तीस प्रकार के भोजन में सत्तर-दो बहत्तर रोग भरे हैं, (हिं०)**
भोजन से नाना प्रकार के रोग भी होते हैं।

**छत्री का भगत, न मूसल का धनुक, (हिं०)**
मूसल का धनुष नहीं बन सकता, उसी प्रकार क्षत्रिय कभी भक्त नही बन सकता। जाति-विद्वेषमूलक न कि सत्य, पर उस समय की धारणा।

**छत्री का शोहदा, कायथ का बोदा, बामन का बैल, बनिया का ऊत**
क्षत्रिय शोहदा, कायस्थ बोदा, ब्राह्मण मूर्ख और बनिया ऊत होता है। (कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि क्षत्री अगर शोहदा, कायस्थ बोदा, ब्राह्मण मूर्ख और बनिया ऊत हो, तो ये किसी काम के नही।)

**छदाम में लड़ाई, पैसे में सुघड़ भलाई, (स्त्रि०)**
छदाम के झगड़े को पैसा देकर निपटाना चाहिए। मतलब—व्यर्थ का झगड़ा ठीक नहीं।
छदाम =पैसे का चौथाई भाग।

**छप्पर पर फूंस नहीं रहा**
बिल्कुल दिवाला निकल गया।

**छब गठरी में, जोबन रकाबी में, (स्त्रि०)**
खूबसूरती अच्छे वस्त्रों से होती है और यौवन अच्छे भोजन से।

(गठरी से अभिप्राय पहिनने के कपड़ों से है, जो गठरी में बंधे रहते हैं और रकाबी से अभिप्राय उसमें रखे जानेवाले भोजन से है।)

**छब्बे होने गये थे, दुबे भी न रहे, (हिं०)**
जब लाभ के स्थान पर उल्टी हानि हो, तब क०।

**छल का फल बुरा होता है**
स्पष्ट।

**छल्लो, छलं आई**
जो स्त्री दूसरों को बहुत छला करती थी, वह स्वयं ही छलकर आ गई!
छल्लो=छलनेवाली स्त्री, एक तिरस्कार-सूचक संबोधन।

**छहत्तर बोर का तवा बांध कर आना**
अच्छी तरह तैयार होकर आना। एक तरह की चुनौती।
(छहत्तर बोर की बंदूक होती है। मतलब यह है कि तुम इतना मोटा तवा बांध कर आना, जो हमारी छहत्तर बोर की बंदूक की गोली को सह सके।)

**छाज बोले सो बोले, चलनी भी बोले, जिसमें बहत्तर सौ छेद, (स्त्रि०)**
जब कोई स्वयं अपनी त्रुटियां न देख कर दूसरे की आलोचना करे, तब क०।
चलनी=आटा छानने की चलनी।
छाज=सूप।

**छाजा, बाजा, केश, तीन बंगाले बेश।**
**चूना, चूची, दही, तीन बंगाले नहीं।**
स्पष्ट।
छाजा=छज्जा, छत।

**छाती का जमा**
कष्टदायक आदमी।

**छाती का सौदा है**
हिम्मत का काम है।

**छाती छलनी होना**
बहुत दुख पाना।

**छाती पर मूंग दलते हैं**
निकट रह कर परेशान करते हैं।

**छाती पै कोई नहीं धर देगा**
मरने पर सब यहीं पड़ा रहेगा।

**छाती पै धर के कोई नहीं ले जाता**
दे० ऊ०।

**छाती पै बाल नहीं, भाल से लड़ाई**
सामर्थ्य न होते हुए भी बड़े काम का बीड़ा उठाना। छाती पर बाल होना बहादुरी का चिह्न माना जाता है।
भाल=भालू, रीछ।

**छान का क्या घर? और मेंढक का क्या डर?**
स्पष्ट।
छान=छप्पर।

**छानी पर फूस नहीं, ड्योढ़ी पर नाच, (पू०)**
झूठी शान।

**छाया हुवा घर पाया, और बांधी पाई टट्टी।**
**दूसरे का जनमा लड़का पाया, चुम्मा लें के चट्टी।**
किसी ने ऐसी विधवा से ब्याह कर लिया, जिसके पास खूब पैसा था और एक पुत्र भी था। उसी को लक्ष्य कर के कहावत कही गई है। जब किसी को मुफ़्त का माल मिल जाए, तब प्रयोग।

**छाया बड़ी माया है, (हिं०)**
आश्रय बड़ी चीज है।

**छावत मंड़वा, गावत गीत; पिया बिन लागत सब अनरीत, (स्त्रि०)**
प्रियतम के बिना घर बनाना या गीत गाना नहीं सुहाता।

**छिटांक चून, चौबारे रसोई, (स्त्रि०)**
झूठा आडंबर।
चौबारा=चौपाल।

**छिटांक सतुवा, मथुरा में भंडार**
गांठ में केवल एक छटांक सतुआ, और मथुरा में जाकर साधुओं को भोज देंगे। वही झूठा आडंबर।

**छिनाल का बेटा 'बबुआ रे, बबुआ!,' (स्त्रि०)**
(१) छिनाल के लड़के को सब दुलराते हैं, इसलिए कि उसकी मां से बात करने का मौक़ा मिलेगा।
(२) कहावत का यह अर्थ भी हो सकता है कि

छिनाल अपने लड़के को दुलराती है 'बबुआ' कह कर। देखो इसके ढंग।

**छिनाल लुगाई, चातुर सिपाही**

ये छिपते नहीं।

**छींकत नहाइए, छींकत खाइए, छींकत रहिए सोय।**
**छींकत पर घर न जाइए, चाहे सर्व सुवर्ण का होय।** (हिं०)

छीक के संबंध में अन्ध-विश्वास कि छीकते नहाना, भोजन करना और सोना अच्छा होता है। पर छींक आने पर दूसरे के घर नहीं जाना चाहिए, चाहे वह सोने का ही क्यों न हो।

**छींकते गए, झींकते आए**

छीकते गए और रोते आए। फलित ज्योतिष के अनुसार छीक आने पर चलना अशुभ माना जाता है। उसी से मतलब है। पर अर्थ यह भी हो सकता कि खाली हाथ आए।

**छींकते ही नाक कटी**

छीकते ही काम बिगड़ा।

(यह कहावत इस प्रकार भी प्रचलित है कि 'छींकते की नाक नही काटी जाती', जिसका अर्थ है कि छीकने से यद्यपि अशकुन होता है, किन्तु उसके लिए किसी की नाक नही अलग की जाती।)

**छींके ही पै रक्खी मिलेगी**

यथास्थान रक्खी मिलेगी।

छीका—रस्सियों का जाल, जो खाने-पीने की चीजें रखने के लिए छत से लटकाया जाता है।

**छीली छाली टैंया-सी**

साफ़-सुथरी, सुडौल।

(टैंया बड़ी कौड़ी को कहते हैं।)

**छीले चार, बघारे पांच** (स्त्रि०)

दे०—चीरे चार...।

**छुआ और मुआ**

दुष्ट के लिए क० कि जिसे वह छू देता है, वह फिर बचता नहीं।

**छुओं न छांव, अलगहे नांव**

आज तक मैंने कभी किसी को छुआ भी नहीं, फिर भी मेरा नाम 'अलगहा' रख दिया गया है। अर्थात मुझे व्यर्थ बदनाम कर रक्खा है।

(अलगहा झाड़-फूंक करनेवाले को कहते हैं।)

**छुपे रुस्तम**

व्यंग्य में चालाक आदमी के लिए क०।

(यों रुस्तम फ़ारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान हो गया है।)

**छुरी खरबूजे पर गिरी तो खरबूजे का जरर, खरबूजा छुरी पर गिरा तो खरबूजे का जरर**

हर हालत में जब एक की हानि हो रही हो, तब क०।

(दो आदमियों के झगड़े में निर्बल ही पिसता है, कहावत का यह भाव भी है।)

**छुरी तले दम लो**

अन्त तक धैर्य्य से काम लो।

**छुरी पर कद्दू, कद्दू पर छुरी**

हर हालत में बात वही है। कद्दू ही कटेगा।

**छुरी पाता हूं, तो आपको नहीं पाता।**
**आपको पाता हूं, तो छुरी नहीं पाता।**

किसी के प्रति अपना तीव्र रोष और विद्वेष प्रकट करना।

**छुरी भली न कटारी,** (स्त्रि०)

दोनों ही प्राण-लेवा हैं।

**छूंछा का संग न साथी, महल्ला दुआरे झूमले हाथी** (भो०)

ग़रीब का कोई साथ नहीं देता, पर भले आदमी के दरवाज़े हाथी झूमता है।

**छूछी कढ़ाई, मजीर का फोरन**

खाली कढ़ाही को मोरचा ही खा लेता है।

बेकार पड़े रहने से चीज खराब हो जाती है।

**छूंछी हांड़ी बाजे टन-टन**

खाली बर्तन अधिक आवाज करता है।

बुद्धिहीन बहुत बोलता है। अथवा कम पैसेवाला अधिक दिखावा करता है।

**छूछे फटके उड़-उड़ जाए**

खाली या घुने हुए अनाज में कोई वजन नहीं होता। फटकने पर वह उड़ जाता है।

(१) मूर्ख साधनहीन से किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं करनी चाहिए।

(२) कम बुद्धिवाला मनुष्य परीक्षा मे बहुत कम खरा उतरता है।

(३) जो जितना कम जानता है, वह उतना ही दम भी करता है।

**छूट भलाई, सारे गुन (स्त्रि०)**

भलाई छोड कर और सब गुण है।

बुरे मनुष्य के लिए क०।

**छूटल घोड़ा भुसौले ठाढ़, (पू०)**

(१) किसी चीज़ को पाने की लालसा, जब आदमी घूम फिर कर फिर उसी जगह पहुच जाए, जहा वह चीज़ मिल रही है, तब क०। बच्चे प्राय खाने-पीने की वस्तु के लोभ से बार-बार रसोईघर का चक्कर लगाते है, तब मा कहा करती है।

(२) जब किसी मनुष्य का कही ठिकाना न हो और वह घूम फिर कर उसी जगह आ जाए, तब भी क०।

मुसौला — भुस रखने की जगह।

(प्र० पा०—छूटी घोड़ी मुसैले खडी।)

**छूटो बैल भुसौरी में**

दे० ऊ०।

**छेरी जी से गई, खानेवालों को सवाद न आया (स्त्रि०)**

किसी के आत्म-त्याग या परिश्रम की जब प्रशसा न की जाए, तो क०।

**छैल छींट, बगल में ईंट**

(१) ऐसा व्यक्ति जो बहुत शौकीनी से रहता हो, पर जिसके पल्ले कुछ न हो।

(२) बेतुके शौक के लिए भी कह सकते है।

**छोटा घर, बड़ा समधियाना, (स्त्रि०)**

जहां स्थान की सकीर्णता की वजह से कोई काम अच्छी तरह न किया जा सके, अथवा लोग बैठ न सकें, वहां क०।

(समधियाना लड़की या लड़के के ससुर के घर को कहते हैं। पर समधियाना वह दस्तूर भी कहलाता है जो समधियों या समधिनों के पहली बार मिलने पर होता है। यह बड़े गाजे-बाजे के साथ किया जाता है और इस अवसर पर सभी सगे-सबंधी और सजातीय स्त्रियां बुलाई जाती है। उसी से कहावत बनी। यह बुदेलखड मे 'सकरे मे समधियाना' इस रूप मे प्रचलित है।)

**छोटा मुंह बड़ा निवाला**

(१) सामर्थ्य से बाहर काम करने की चेष्टा करना।

(२) किसी की ऐसी चीज़ को हथियाना, जो हज़म न हो सके।

(३) बेजोड संबध के लिए भी कह सकते है।

निवाला=कौर।

**छोटा मुंह बड़ी बात**

बडो के सामने धृष्टता दिखाना।

**छोटा सब से खोटा**

छोटा सब से खराब।

(प्राय हँसी मे ही कहते है।)

**छोटा सो मोटा**

ठिंगना आदमी तगडा होता है।

**छोटी ननद अंगिया का बद, बडी ननद बिजली बसंत, (स्त्रि०)**

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जो अपनी छोटी ननद को प्यार करती है, पर बड़ी से घबराती है।

**छोटी बूंद बरसे चौंकाए, आलस सभी मिट ए**

किसी चिताग्रस्त या उद्विग्न मनुष्य के लिए कहा गया है कि छोटी बूद बरसने से ही वह चौंक उठता है और सतर्क हो जाता है। पति के आने की प्रतीक्षा मे बैठी विरहिणी के लिए कह सकते हैं।

**छोटी-मोटी कामनी, सब ही विष की बेल।**
**बैरी मारे दांव से, यह मारे हँस खेल।**

स्पष्ट।

कामनी-कामिनी, स्त्री।

दाव से—मौक़ा पाकर।

**छोटी-सी गौरय्या, बाजों से नज्जारा, (पू०)**

जब कोई सामान्य मनुष्य बड़ो का मुकाबला करे, तब क०।

गौरैय्या = चिड़िया विशेष जो घरों में रहती है।

**छोटी-सी बछिया, बड़ी-सी हत्या, (हिं०)**

जो पाप बड़ी गाय के मारने से लगता है, वही छोटी बछिया के मारने से भी। बुरा कर्म तो हर हालत में बुरा ही रहेगा।

**छोटे मियां तो छोटे मियां, बड़े मियां सुभान अल्लाह**

प्रायः हँसी में ही कहते हैं कि छोटे मियां जो हैं, सो तो हैं ही, पर बड़े मियां उनसे भी बढ़-चढ़ कर हैं।

**छोटे-से गाजी मियां, बड़ी-सी दुम**

यह एक तुकबंदी का अंग है। प्रायः लड़कों से हँसी में उस समय कहते हैं, जब वे कोई बहुत ढीला-ढाला वस्त्र पहिन लेते है।

**छोड़ चले बंजारे की सी आग**

किसी ऐसी स्त्री का कथन, जिसका प्रेमी उसे छोड़ कर चला गया है।

बंजारे घुमक्कड़ जाति के लोग है। वे जहां ठहरते है, वहां भोजन बना कर और खा पीकर फिर आगे बढ़ जाते हैं। भोजन के लिए वे जो आग सुलगाते है, वह वही पड़ी रहती है। उसी से कहावत में अभिप्राय है। पर आग से मतलब यहां 'प्रेम की आग' से भी है।)

**छोड़ जाट, पराई खाट**

जब कोई मनुष्य किसी के साथ बहुत अत्याचार कर रहा हो। उदाहरण के लिए ज़बर्दस्ती किसी की चीज पर कब्जा कर लिया हो।

**छोड़ झाड़ मुझे डूबन दे, (स्त्रि०)**

ऐ झाड़। मुझे मत पकड़। मै तो डूब कर ही रहूंगी। जब कोई आदमी ग़लत काम करने का इरादा करके उसे न करना चाहे और उसके लिए कोई बहाना बनाए कि अब मैं अमुक कारण से ऐसा नही कर रहा हूं। (कथा है कि एक स्त्री आत्महत्या करने के इरादे से तालाब में कूद पड़ी। पर बाद में घबराई और प्राणरक्षा के लिए उसने झाड़ी पकड़ ली। लोग जब उसे बचाने दौड़े तो वह चिल्लाई—'नही नहीं, मैं तो डूबकर ही रहूंगी। छोड़ झाड़, मुझे डूबने दे।')

**छोड़े गांव का नाम क्या?**

जिससे अब कुछ प्रयोजन ही नहीं, उसकी चर्चा से क्या लाभ?

**छोड़े गांव से नाता क्या?**

छोड़े हुए स्थान से अब हमें मतलब क्या?

**छोड़ो, बो बिल्ली, चूहा लंडूरा ही जाएगा, (स्त्रि०)**

किसी बिल्ली ने चूहा पकड़ लिया। उसकी दुम कट गई। तब कहा जा रहा है कि 'बिल्ली रानी, चूहे को छोड़ो। उसकी दुम कट गई, कोई बात नहीं। वह बिना दुम के ही जिएगा।' अभिप्राय यह कि—'बस बहुत हो गया, अधिक ज्यादती न करो।'

**ज**

**जंगल जाट न छेड़िए, हट्टी बीच किराड़।**
**भूखा तुर्क न छेड़िए, हो जाए जी का झाड़।**

जंगल में जाट को, दूकान में दूकानदार को और भूखे तुर्क को नहीं छेड़ना चाहिए, नही तो ये जान की आफ़त कर देते है।

**जंगल में खेती नहीं, बस्ती में नहीं घर**

कही कुछ न होना।

**जंगल में मंगल, बस्ती में कड़ाका**

जंगल में मोज, नगर मे उपवास। उल्टा काम।

**जगल में मंगल, बस्ती में बीरान।**

**जा घर भांग न संवरे, वह घर भून समान।**

भंगेड़ियों का भंग छानने की प्रशंसा में कहना।

**जंगल में मोती की क़द्र नहीं**

वहां कौन मोती की परख करे?

**जंगल में मोर नाचा, किसने जाना?**

अपनी योग्यता, धन-संपत्ति या वैभव को ऐसे स्थान पर दिखाने से क्या लाभ, जहां अपना कोई परिचित मौजूद न हो अथवा जहां उसकी कोई क़द्र न कर सके।

**जख्मी दुश्मनों में दम ले तो मरे, न दम ले तो मरे**

दोनों तरह से संकट। शत्रुओं को अगर मालूम

हो जाए कि अभी यह जिंदा है, तो वे मार डालेंगे। और सांस लेना बद कर देने से तो मर ही जाएगा।

**जग जला तो जलने दे, मैं आप ही जलती हूं, (स्त्रि०)**
स्वयं मुसीबत में हू, दूसरे की मुसीबत क्या देखूं।

**जग जानी देस बखानी**
ऐसी बात, जिसे सब जानते हों।

**जग जीता मोरी कानी, वर ठाढ़ होय तब जानी**
जब एक आदमी दूसरे को धोखा दे, लेकिन दूसरे ने भी उसे धोखा दे रखा हो, तब क०।
(कथा है कि कुछ लोगो ने धोखा देकर एक कानी लडकी का ब्याह एक लडके के साथ ठीक किया। वर पक्ष के लोगो को जब इसका पता चला, तो वे एक लगडे को दूल्हा बनाकर ले गए। ब्याह हो जाने पर कन्यापक्ष के लोगो ने कहा—'जग जीता मोरी कानी', तब वरपक्ष की ओर से जवाब मिला 'वर ठाढ होय तब जानी।' अर्थात दूल्हा जब खडा हो, तब तुम्हे पता चलेगा कि जीत किसकी रही, तुम्हारी कानी लडकी की या हमारे लगडे वर की।)

**जग दर्शन का मेला है**
यह संसार मिलजुल कर ही रहने की जगह है।

**जगन्नाथ का भात, जिसमे झगड़ा न झांसा**
ऐसा काम, जिसमे शंका की गुजाइश न हो।
(जगन्नाथपुरी के मदिर मे भात का प्रसाद बटता है। उसे जात-पात का विचार किए बिना सब लोग सहर्ष स्वीकार करते है। कहा० उसी पर आधारित है।)

**जगन्नाथ के भात को किनने न पसारो हाथ?**
ऊ० दे०।
जगन्नाथ जी के प्रसाद की महिमा मे कहा गया है।
(प्र० प्रा०—जगन्नाथ के भात को जगत पसारे हाथ।)

**जग में देखत ही का नाता**
(१) संसार के सब नाते झूठे हैं।
(२) जब तक मनुष्य जीता है, तभी तक सब नाते है।

**जच्चा और बच्चा दोनों जियें, (स्त्रि०)**
आशीर्वाद।

**जड़ काटते जायं, पानी देते जायं**
(१) जब कोई आदमी किसी चीज को बनाने जाकर अपनी मूर्खता से उसे बिगाड रहा हो।
(२) धोखेबाज मित्र के लिए भी कह सकते है

**जड़ का पकड़ो, शाखाओ को क्या पकड़ते हो ?**
मूल चीज की ओर ही ध्यान देना चाहिए।

**जतने के तीन रोटी, ततने की टिकड़ी।**
**अलग करो तीन रोटी, एने लावा टिकड़ी (पू०, स्त्रि०)**
जितने (आटे) की तीन रोटिया बनी है, उतने की एक टिकडी बनी है। तीन रोटिया अलग करो, टिकडी ही लाओ। इसलिए कि एक मोटी रोटी खाने से तो एक ही रोटी मानी जाएगी और तीन खाने से तीन रोटियो की गिनती की जाएगी।

**जनती न ढोल बजता, (स्त्रि०)**
किसी स्त्री का अपने मूर्ख पुत्र के सबध मे कहना, जिसके कारण घर की बदनामी हो रही है।
(लडका पैदा होने पर ढोल बजता है। साथ ही ढोल बजने का अर्थ ढिंढ़ोरा पिटना या बदनामी होना भी है।)

**जनना और मरना बराबर है, (स्त्रि०)**
प्रसव में स्त्री को बडा कष्ट होता है।

**जनम के कमबख्त, नाम बख्तावरसिंह**
गुण के विरुद्ध नाम।

**जनम के दुखिया, नाम सदासुख**
दे० ऊ०।

**जनम के दुखिया, करम के हीन, तिनका देव तिलंगवा कीन**
स्पष्ट।
(फौज का सिपाही कभी घर पर नही रह पाता, इसलिए ऐसा कहा गया है।)

**जनम के मंगता, नाम दाताराम**
दे० ऊ०।
(इस तरह की सब कहावतो का यह अर्थ नही है कि वे गुण के विरुद्ध नाम होने पर ही प्रयुक्त की जाती हो। वास्तव मे वे व्यंग्य मे किसी को नीचा बताने के लिए ही कही गई हैं।)